गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

ओ३म्

आर्य्य सम्वत् १९७२९४९०१९-२०

विक्रमी सम्वत् १९७४, १९७५

आर्य्य-जन्त्री तथा डायरेक्ट्री स० १९१८

शालिबाहन १८४०

दयानन्दाब्द ३४

सम्पादक-राजपाल मैनेजर

आर्य्य-पुस्तकालय व सरस्वती-आश्रम—अनारकली, लाहौर ।

हरप्रकार की आर्यसामाजिक पुस्तकें, वेदशास्त्र, उपनिषद, स्मृतियां उन के भाष्य उर्दू व हिन्दी और महर्षि दयानन्द कृत पुस्तकें, आर्य्य-पुस्तकालय व सरस्वती आश्रम अनारकली मे सस्ती मिल सकती हैं । सूचीपत्र मुफ्त भेजा जाता है ।

कमरशल प्रेस अनारकली लाहौर में लाला हरदयाल के प्रबन्ध से मुद्रित हुई

COMPILED

उर्दू लिपि ।।) हिन्दी ।।)

ओ३म्

संख्या — विषय सूची — पृष्ठ

एक आवश्यक निवेदन

आर्य्य जन्त्री व दर्शायित्री निकालने का काम बहुत ही घाटे का सौदा है कागज़ छपवाई और इसकी तय्यारी की मेहनत के अतिरिक्त १७५) रुपये केवल आर्य्य संस्थाओं में फार्म छपवा कर भेजने पर खर्च हो गये हैं यह काम केवल आर्य्य समाजके काम की रिपोर्ट जनता के सन्मुख रखने के लिये किया जाता है, गत वर्षों में विज्ञापनों से माकूल आमदनी हो जाती थी, परन्तु इस वर्ष केवल दो तीन के अतिरिक्त कोई विज्ञापन नहीं लिया गया। गत वर्षों की अपेक्षा कागज़ का दाम चार गुना बढ़ चुका है, इन सब प्रतिकूल बातों के होते हुये इसका दाम नहीं बढ़ाया गया, उर्दू और आर्य्य-भाषा दोनों भाषाओं में छापा गया है। आशा है कि आर्य्य पुरुष, आर्य्य समाजें इसको खरीद कर आगामी वर्ष के लिये मेरे उत्साह को बढ़ायेंगे।

आपको जब कभी किसी आर्य्य सामाजिक पुस्तक की आवश्यकता हो सदैव आर्य्य पुस्तकालय व सरस्वती आश्रम अनारकली लाहौर से खरीदें।

राजपाल मैनेजर

आर्य-पुस्तकालय, लाहौर

कलकत्ता के प्रसिद्ध डाक्टर एस, के वर्मन की विख्यात औषधियों का विज्ञापन।

हाल की सूची बिना मूल्य मिलती है।

२४ वर्षसे हिन्दोस्तानमें जारी है?

नकली वर्म्मन और झूठी तारीफ से बचो

हैज़ा के असली अर्क काफ़ूर वास्ते लाजबाब औषधि, समय पर हैज़ा से बचने वाली असल अर्क काफ़ूर ही है और इसके प्रयोग से ९९ फी सदी रोगी अच्छे हो जाते हैं। यह प्रत्येक बाल बच्चे वाले और मुसाफिरों को अवश्य रखना चाहिये। मूल्य फी शीशी ।) आना डाक व्यय चार शीशी तक ।-) आना।

कसोला टानिक—प्रत्येक के लिये शक्ति बढ़ानेकी औषधि है इसमें अफीम छुड़ाने और मदिरा के दोषों को मिटाने के विशेष गुण हैं हौलनाक धड़कन और कलेजेकी निर्बलता में कसोला टानिक ज़ोर देता है। परिश्रम, रात को जागना, कुश्ती, कसरत, गाने और पढ़ने के पहिले कसोला टानिक पीने से थकावट न होगी। मूल्य १) फी शीशी डाकव्यय ।-) आना।

दमा की दवा—फौरन दमा को दबाती है दम चाहे जितना ज़ोर से उठता हो, इस औषधि के दो ही एक खुराक के पीनेसे दबजाता है। कुछ समय तक इस दवाके लगातार प्रयोग से लोगों का दमा जड़से चलाजाता है मू० फी शीशी १) डाक व्यय ३ शीशी तक ।-)

लाल शरबत—कलेजे की कमज़ोरी व खांसी व लागरी को दूर करना चाहते हो तो लाल शर्बत पिलाओ। पैदायश के समय से होशयार होने तक दवा एकसां फायदा करती है पीने में मीठा और रङ्गलाल होनेके कारण बालक बड़े चाव से पीते हैं। आपभी अपने बच्चों को प्रयोग करके आजमाइश करलीजिये। मू० फी शीशी ।) आना डाक खर्च ।) आना

फस्लीबुखार व तेहाल की दवा—(१) यह मलेरिया कीड़ों को मारदेती है इसलिये ४,५ खुराक से ज्वर का आना बन्द होजाता है (२) यह रक्त को गाढ़ा करती है। और खराबी दूर करती है (३) यह तिल्ली को घटाती है शरीरमें बल पैदाकरती है। मू० बड़ी शी॥≈) डाक खर्च ।≈) आने

इबडायड साल्सा—पोटासएडोटायड़ा चन्द चीज़ों के मिलाने से यह साल्सा बनायागया है, इसलिये बएतबार उन सालिसों के यह अक्सीर का हुकम रखता है। गर्मी, गठिया, बिगड़े हुए खूनसे जिल्द का फटना या घाव होना इत्यादि थोड़े दिनों के सेवन से नयाखून पैदा करता है और सदैव के लिये चङ्गा कर देता है। मू० ३२ खुराक की शीशी २) रु० डाक खर्च ।≈) आना

कुव्वत की गोलियां-३४ वर्षसे सारे हिंदोस्तानमें मशहूर हो रही हैं ताकत देनेवाली मशहूर दवायें फास्फोर्स स्टेकना डायना मिला कर यह गोलियां बनी हैं। इसलियेमगज,रीढ़, रग और खून को ताकत देनेका खास दावा रखती है। ज्यादा मेहनत जवानी की खराबी बेएतदाली ख्वाह किसी वजह से हो। इन गोलियों के सेवन से प्रथम ही दिन फायदा मालूम होने लगता है। बदन में ताकत और मिजाज में गर्मी मालूम होने लगती है। चेहरे पर रौनक और जवानी में जईफी(बुढ़ापे)की सी हालत टूटेहुए जिस्म में दुबारा जोशलाती है। मू० ३० गोलियों की शीशी व हफ्ते की खुराक का १) रु० डाक खर्च १ से ४ शीशी तक ।-)

नोट-हर जगह व हर शहर में एजेन्ट और मशहूर दवा फरोशों के यहां हमारे यहां की दवायें मिलती हैं।

डाक्टर एस, के वर्म्मन नं० ५ व ६ ताराचन्ददत्त स्ट्रीट कलकत्ता।

विख्यात श्रीयुत देवीदयालुजी की रची हुई हिन्दी

शाक भाजी अर्थात् सब्ज़ी तरकारी

मुफे २८७

जिस की उर्दू भाषा में सहस्रों पुस्तकें बिक चुकी हैं, और जिसके हिन्दी एडीशन की अध्यापक चिरकाल से बाट देख रहे थे। हिन्दी जानने वाले स्त्री, पुरुष मात्र के लिये हिन्दी टाइप में अत्यन्त स्वच्छ और उत्तम छपकर बिक्री के लिये तैयार है। पहली बार केवल १००० कापी छपवाई है। जो आशा है शीघ्र ही बिक जावेंगी, इसलिए ग्राहकों को उचित है कि शीघ्र मंगालें ताकि निराश न रहना पड़े। मूल्य१=)

हिन्दी तसहील-उल-तर्जुमा।

अर्थात् अंग्रेजी अनुवाद सिखाने की अत्युत्तम पुस्तक (प्रथम भाग) मुफे ८६ जो उर्दू में वर्षों से न केवल पंजाब, किन्तु भारतवर्ष मात्र के भी विविध प्रान्तों में प्रचलित है और जिस के हिन्दी ऐडीशन की अध्यापक चिरकाल से बाट देख रहे थे अब हिन्दी टाईप में अत्यन्त स्वच्छ और उत्तम छपकर बिक्री के लिये तैयार है। ग्राहक बहुत जल्द मंगवाएं। मूल्य केवल ५ आने।

हिन्दी रोमन का रिसाला

अर्थात्

हिन्दी जानने वालों को अति सुगमता से अंग्रेज़ी अक्षरों में रोमन के क़ायदे से हिन्दी सिखाने की अमूल्य पुस्तक जो अत्यन्त परिश्रम से हिन्दी जानने वालों के हितार्थ तैयार की गई है। मूल्य केवल दो आने

मिलने का पताः—

मैनेजर इम्पीरियल बुक-डिपो,

चांदनी चौक, देहली।

आर्य्य-दर्शयित्री १९१८

ईश्वर प्रार्थना।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ता-
द्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः।
सतश्च योनिमसतश्च विवः॥१॥

यजु० १३। ३॥

व्याख्यान-हे महीय परमेश्वर! आप बड़ों से भी बड़े हो आप से बड़ा वा आप के तुल्य कोई नहीं है, सब जगत् में व्यापक हो सब जगत् के प्रथम आप ही हो, सूर्य्यादि लोक सीमा से युक्त आप से प्रकाशित हैं, इन को पूर्व रच के आप ही धारण कर रहे हो, इन सब लोकों को विविध नियमों से पृथक् २ यथायोग्य वर्त्ता रहे हो, आप के आनन्दस्वरूप होने से ऐसा कोई जन संसार में नहीं है जो आप की कामना न करे, किन्तु सब ही आप को मिला चाहते हैं, तथा आप अनन्त विद्यायुक्त हो सब रीति से रक्षक आप ही हो, सो ही परमात्मा अन्तरिक्षान्तर्गत दिशादि पदार्थों को विवृत करता है वे अन्तरिक्षादि उपमा सब व्यवहारों में उपयुक्त होते हैं और वे इस विविध जगत् के निवासस्थान हैं, सत् विद्यमान स्थूल जगत् असत् अविद्या चक्षुरादि इन्द्रियों से अगोचर इस विविध जगत् की योनि आदि कारण आप को ही वेदशास्त्र और विद्वान लोग कहते हैं, इस से इस जगत् के माता पिता आप ही हैं, हम लोगों के भजनीय इष्टदेव हैं॥

सम्पादकीय वक्तव्य

आर्य जन्त्री व डायरेक्ट्री का पहिला नम्बर सन् १८९८ में प्रकाशित हुआ और आज यह बीसवां नम्बर आर्य-जनता की सेवा में भेंट किया जाता है। जिस उत्साही पुरुष ने आर्य जन्त्री व डायरेक्ट्री के विचार को कार्य-रूप में आर्य जनता के सन्मुख उपस्थित किया। उस को आर्यसमाजों से बड़ी आशा थी, उस का ख्याल था, कि जिस प्रकार सभ्य देशों में इतिहास की कदरो कीमत को समझा

जाता है उसीप्रकार आर्य पुरुषों की सभ्य सोसायटी भी आर्य जन्त्री व डायरेक्ट्री की कठिनता को समझकर उस को पूर्ण करने में पूरी सहायता देगी । परन्तु डायरेक्ट्री का गत २० वर्ष का फायल बतलाता है कि आर्य पुरुषों ने इस ओर सर्वदा लापरवाही से काम लिया है । जिस का परिणाम यह हुआ कि डायरेक्ट्री का बहुतसा भाग प्रति वर्ष अपूर्ण ही रहता है । डायरेक्ट्री के एडीटोरियल नोट इस बात की साक्षी देते हैं।

गत वर्ष जब मैंने डायरेक्ट्री का चार्ज लिया तो मुझे इस बात का पूरा भरोसा था कि मैं आगामी वर्ष डायरेक्ट्री को हर प्रकार से परिपूर्ण बनाऊंगा । क्योंकि भाग्य से आर्यसमाज के कसीरूल अशांत (अधिक छपने वाला) अखबार प्रकाश के एडीटोरियल स्टाफ में होने से मुझे यह सुभीता है, क्योंकि मैं अखबार के द्वारा आर्यसमाजों का ध्यान उन के कर्तव्य की ओर दिला सकता हूं, चुनांचे अपनी नियमित स्कीम के अनुसार मैंने भारतवर्ष की सब आर्य प्रतिनिधिसभाओं, स्कूलों, गुरुकुलों और सब इन्स्टीट्यिशनों के नाम डायरेक्ट्री के फार्म खानापुरी के लिये भेज दिये । और जितनी बड़ी से बड़ी अपील हो सकती थी उन को भरने के लिये की गई । इन फार्मों की एक मास तक इन्तजारी के बाद दूसरे रिमायन्डर कोर्डी द्वारा भेजे गये। वही फार्म प्रकाश, आर्य गज़ट सत्यधर्म-प्रचारक, आर्यमित्र और समाचार पत्रों में छपवाये गये । केवल यही नहीं वरन प्रकाश द्वारा प्रति दूसरे सप्ताह फार्मों की खानापुरी के लिये आर्यसमाजों के अधिकारी महाशयों को ध्यान दिलाया गया तीन साढ़े तीन सौ इन्स्टीट्यिशनों के सिवाय बाकी के कान पर जूं तक न रेंगी । फार्म, कार्ड सब हज़म कर गये ।

आर्यसमाज जैसी सभ्य सभा के अधिकारी गणों की ओर से एक ऐसे ज़रूरी कार्य्य के सम्बन्ध में इतनी लापरवाही वास्तव में शोचनीय है । आर्य्यसमाज की इस सर्द मेहरी से मैं निराश नहीं हुआ । और डायरेक्ट्री को हर प्रकार से पूर्ण करने के लिये मैंने प्रकाश, आर्य्यगज़ट, सत्यधर्म प्रचारक के फायलों से बहुत कुछ सहायता ली है और आप देखेंगे कि बमुकाबिले पिछली डायरेक्टरियों के यह कितनी परिपूर्ण व स्पष्ट और तारीखवार है और अन आवश्यकीय बातों को छोड़ कर कितनी ज़रूरी बातें इस में दर्ज हैं। आर्य्य-समाजों के नाम जो फार्म भेजे गये उन में एक प्रश्न यह था कि समाज के आस पास में कोई ऐसा स्थान है जहां समाज की स्थापना करने की आवश्यकता हो । और यदि उपदेशक महाशय जांय। तो किस के पास ठहरें। यह एक ऐसा आवश्यक प्रश्न था कि जिस के जवाब पर आगामी वर्ष कितनी नई आर्य्य समाजें खुल सकतीं थीं। परन्तु बहुत कम आर्य्य समाजों ने इसका उत्तर दिया है। इसी प्रकार दूसरी अति आवश्यकीय प्रश्न यह किया गया था कि गत वर्ष की निस्बत कितने मेम्बर बढ़े हैं। ताकि ज्ञात हो सके कि इस साल में आर्य्यसमाज की अवस्था उन्नति पर है या अवनति पर, परन्तु शोक है कि इस अति अवश्यकीय प्रश्न का उत्तर भी बहुत कम आर्य्यसमाजों ने दिया है। इससे ज्ञात होता है कि आर्य समाज का पग आगे को नहीं वरन पीछे की ओर है। नवीन आर्य्य समाजों की

संख्या बहुत ही कम है। परन्तु ऐसी आर्य समाजों की संख्या बहुत अधिक है जो किसी समय में थीं। मगर जिन की स्थिति आज नहीं है।

आर्य्य निनिधि सभाओं के अधिकारियों को इस हीन दशा पर विचार करना चाहिये। इसी प्रकार के और भी कई एक आवश्यकीय प्रश्न थे जिन का यदि उत्तर दिया जाता तो आर्य्य समाज के सम्बन्ध में एक ट्रैक्ट तय्यार हो जाता। जिस से प्रत्येक मनुष्य आर्य्य समाज और उसकी इन्स्टिट्यूशनों की उन्नति व अवनति का अनुमान किया जा सकता।

आर्य्य डायरेक्ट्री आर्य्य समाज के लिये किस कदर लाभ दायक हो सकती है। इसका अनुमान आप एक बात से लगा सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने आर्य्य समाज के इतिहास की तय्यारी के लिये भारत की आर्य्य समाजों में ढोंग लगा रहे है। यदि २० साल आर्य्य डायरेक्ट्री पूर्ण होती तो कम से कम २० साल तक का इतिहास तो उनको डायरेक्टरी से मिल सकता था। अब भी समय है कि आर्य्य समाज डायरेक्टरी की कठिनता को समझ कर उसको पूर्ण करने के लिये सहायता दे।

एक साल के लिखने से मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि जब तक आर्य्य प्रतिनिधि सभायें इस कार्य्य में सहायता न देंगी। तब तक यह काम पूर्ण न होगा इस लिये प्रतिनिधि सभाओं से विशेष तौर पर निवेदन है कि वह अपनी २ समाजों के सम्बन्ध में इन्स्टिट्यूशनों के विवरण पूर्ण करने में सहायता दें। क्योंकि यह काम सारे आर्य्य समाज का है अन्त में प्रकाश, आर्य्यगज़ट, सत्यधर्म प्रचारक, आर्य्यमित्र के सम्पादक महाशयों का धन्यवाद किया जाता है। जिन्हों ने अपनी आर्य्य डायरेक्ट्री पूर्ण करने में मेरी सहायता की।

राजपाल सम्पादक

आर्य्य जन्त्री व डायरेक्ट्री सन् १९१८ ई०

आर्य्यसमाज के विज्ञानिक (इल्मी) व क्रियात्मिक (अमली) सिद्धान्तों का सार

आर्य्यवर्त के लिखे पढ़े लोगों में से बहुत कम ऐसे होंगे जो ऋषि दयानन्द के नाम नामी से परिचित न होंगे। ऋषि दयानन्द ने जो कुछ उपकार भारत निवासियों पर किया है। उसको वर्णन करने के लिये एक दफ्तर दरकार है। भारत निवासी गफलत की नींद में ऐसे सोये हुए थे कि उनको अपने धर्म का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं रहा था, ऋषि ने तमाम लोगों को जता कर ज़ोर से कहा कि तुम्हारी नींद में ही बहुत सा समय बीत चुका है। धर्म कर्म नष्ट हो चुका है, अब तुम्हारा धर्म कोई दिन का मेहमान है। अगर तुम्हारी यही दशा रही तो दूसरे और तुम्हें हड़प कर जावेंगे। तुम उनकी ज़ाहिरी नुमायश पर मत भूलो तुम्हारा असली धर्म वैदिक धर्म है। और वह ईश्वरी ज्ञान है इस में ऐसे २ रत्न भरे हैं, जिन को प्राप्त करने से जहां मनुष्य संसार में सुख से आयु व्यतीत कर सकता है वहां मुक्ति के लिये भी मसाला जमा करके उसको प्राप्त कर सकता है, ऋषि ने इसी पर बस नहीं किया। बल्कि वह रत्न निकाल कर रख दिये। वह ही रत्न आर्य्य

समाज के इल्मी व अमली सिद्धान्त हैं। इल्मी सिद्धान्त वह है जो इल्म की कसौटी पर पूरे उतरते हैं जिनको मानना प्रत्येक आर्य्य का मुख्य कर्तव्य है। अमली सिद्धान्त वह है जिन पर अमल करना आर्य्य मात्र के लिये ज़रूरी है।

आर्य्य समाज के इल्मी सिद्धान्त

१-सब सत्य विद्याओं और विद्या से जो पदार्थ जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२-ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व-शक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, अमर, अनादि, अनूपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व-व्यापक, अभय, अनादि, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३-वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

४-वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) सृष्टि के आदि में प्रगट हुये।

५-वेद ईश्वरी ज्ञान है और सच्चे तीर्थ पार उतारने वाले हैं।

६-वेद स्वतः प्रमाण बाकी सब पुस्तकें वेद के अनुसार होने से परतः प्रमाण हैं।

७-ईश्वर अवतार नहीं लेता।

८-ईश्वर के अतिरिक्त और कोई वस्तु पूजनीय नहीं।

९-ईश्वर जीव प्रकृति अनादि हैं, और भिन्न २ हैं।

१०-ईश्वर, जीव, चेतन और प्रकृति जड़ है

११ ईश्वर एक है परन्तु जीव अनेक हैं

१२-ईश्वर सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ है

१३-जीव कर्म करने में स्वतन्त्र उसका फल भोगने में ईश्वर के आधीन है।

१४-जीव के अपने अच्छे व बुरे कर्मों का दंड अवश्य मिलता है।

१५-मरने के पश्चात् तमाम कारवाई व्यर्थ है और मृतक श्राद्ध वेद विरुद्ध है।

१६-आवागमन का सिलसिला अनादि है जीवात्मा अपने कर्मानुसार भिन्न २ योनियों में जाता है।

१७-वर्ण गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार है न कि जन्म से।

१८-मनुष्यों का विभाग वर्ण के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र।

१९-सृष्टि प्रवाह रूप से अनादि है।

२०-आदि सृष्टि में मनुष्य युवा उत्पन्न हुये

२१-सृष्टि का आरम्भ तिब्बत में हुआ

२२-मनुष्यों का विभाग नाम के अनुसार आर्य्य, दस्यु॥

२३-मुक्ति सर्वदा नहीं, किन्तु मियादि (नियत समय) है। मुक्ति अच्छे कर्मों से होती है।

२४-स्वर्ग, नर्क, सुख, दुख का नाम है

अमली सिद्धान्त

(१) वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना, सुनाना।

(२) सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

(३) सब काम धर्मानुसार यानी सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये।

(४) संसार की भलाई यानी शारीरिक आत्मिक और मानसिक उन्नति करना।

(५) सब से प्रेम पूर्वक धर्म के अनुसार यथायोग्य वर्तना।

(६) अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति करना।

(७) अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना ॥

८-सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र और प्रत्येक हितकारी नियम पालन में स्वतन्त्र रहना।

९-पंच महायज्ञ-(१) प्रातःसायं सन्ध्या ईश्वरस्तुति, प्रार्थना, उपासना करना। (२) प्रातःसायं हवन करना। (३) जीवित माता पिता का श्राद्ध। (४) जो कुछ घर में पका हो उस में बली देना और कीड़े इत्यादि के लिये भाग निकालना।(५) अतिथि घर में आये हुये विद्वान सुकर्मी की प्रतिदिन सेवा करना।

१०-पांच यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह)। पांच नियम-(शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) पर चलना होगा।

११-बालक २५ वर्ष की आयु तक और बालिका १६ वर्ष की आयु तक गुरुकुल में ब्रह्मचर्य रख कर विद्या प्राप्त करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें, तत्पश्चात् बानप्रस्थ और सन्यास ले लेना।

१२-द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य के लिये यज्ञोपवीत का पहिनना आवश्यक है और रंडुआ होने की अवस्था में दूसरी शादी न करें, बल्कि नियोग से सन्तान उत्पन्न करना।

१३-गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होकर भी ब्रह्मचर्य को स्थिर रखना।

१४-गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार शादी करना।

१५-दश से अधिक औलाद (सन्तान) पैदा न करना।

१६-धार्मिक कार्य्यों में स्त्री, पुरुष समान अधिकारों का ख्याल करना और स्त्री को अर्द्धाङ्गिनी ख्याल करते हुए, उसका सत्कार करना।

१७-अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्रियों को माता और बहिन जानना।

१८-मांस और मादक द्रव्यों से घृणा करना।

१९-योग्य और अयोग्य को देखकर दान देना।

२०-सोलह संस्कार अर्थात् गर्भाधान, पुंसवन, समन्तोनयन, जाति-कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न-प्राशन, चूड़ा-कर्म, कर्ण-वेध, उपनयन, विद्यारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास, अन्त्येष्ठि संस्कार अवश्य करना।

जीवन को सफल करने वाली पुस्तकें

स्वामी सत्यानन्दजी की सत्य उपदेश माला—इस में भक्तिमार्ग, कर्मयोग, राजयोग और ज्ञानयोग की महिमा वर्णन करके मुक्ति के साधन बतलाये हैं मूल्य ॥।)

स्वामी सर्वदानन्दजी का आनन्द संग्रह स्वामीजी के शिक्षादायक धर्म उपदेशों और लेखों का संग्रह मू० उर्दू।≈) हिंदी॥)

मोतियों का हार—श्रीमान् ला० हंसराज जी का चित्र सहित जीवन चरित्र और उन के व्याख्यान और लेखों का संग्रह मूल्य उर्दू ।।≈)

फूलों का गुच्छा प्रोफैसर दीवानचन्द जी एम. ए. के शिक्षा दायक लेखों का संग्रह मूल्य ॥≈)

काशी यात्रा ≡)

वैदिक सभ्यता में धन का स्थान -)

राजपाल मैनेजर आर्य्य पुस्तकालय
अनारकली लाहौर।

आर्य पुस्तकालय अनारकली, लाहौर ।

आर्य्य पुस्तकालय में अधिक पुस्तकें गुरुकुल की मलकीयत है, इसलिये पुस्तकालय से पुस्तकें खरीदना गुरुकुल की सहायता करनी है और पुस्तकें भी सस्ती दी जाती है

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र उर्दू ५)
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास दो भाग २)
(प्रो० बालकृष्ण एम. ए. कृत
सत्यार्थ-प्रकाश उर्दू १≈)
जीवन-चरित्र स्वामीजी उर्दू ॥≈)
हनुमान जी का जीवन चरित्र १)
आर्य्य डायरी १९१८ उर्दू हिन्दी (दोनों-इकट्ठी) सुनहरी जिल्द ।≈)
पारिवारिक दृश्य ।≈), बीर मातायें ॥)

आर्यमुनिजी कृत पुस्तकें

मानवार्य्यभाष्य३)गीतायोगप्रदीपार्य्यभा१॥≈)
बाल्मीकि रामायण प्रथम भाग ४)
,, दूसरा भाग ३)
न्यायार्य्यभाष्य२॥), वैशेषिकार्य्य भाष्य २॥)
योग १), वेदांत ३), सांख्य १॥-)
मीमांसा पहिला भाग ५)
,, दूसरा भाग ३)
उपनिषद् ८ उपनिषदें पहिला भाग ३)
,, २ ,, दूसरा भाग ४)
आर्य्य मंतव्य प्रकाश पहिला भाग ॥≈)
,, दूसरा भाग १)
महाभारत आर्य्य भाष्य १ भाग ३)
,, दूसरा भाग ४)

बाबू शिव ब्रतलाल वर्मा कृत पुस्तकें

राजस्थान १।) सच्ची देवियां ।≈)
रामायण १॥) सच्ची स्त्रियां ।≈)
सति वृत्तांत ॥) चितौड़ का शाका ≈)॥
हमारी मातायें ॥) राजपूतनी का विवाह≡)
राजस्थान की बीर रानियां ।≈)
भारतकाशुजाहबआलिमस्त्रियोंकेकारनामे।-)

स्त्रियोपयोगी पुस्तकें

काशी यात्रा ≡)
गृह शिक्षा ≡) गृहणी ॥)
गृह धर्म्म ।≈) चितौड़ का शाका -)
नारायणीशिक्षा १।) नारी धर्म ≈)
स्त्री-रत्न ।≈) नारी महत्व ।)
पाक प्रकाश ≡) पतिव्रत धर्म)॥
बाल बोधनी १≈) पतिव्रत धर्म प्रकाश ≈)
स्त्री हितोपदेश।≈) भोजन विधि ≈)
सच्ची स्त्रियां ।≈) सौभाग्यवती ≈)
स्त्री शिक्षा ≈) सती वृत्तांत ≈)
सुबोधकन्या ≡) स्त्री सुबोधनी५भाग १।)
स्त्री आरोग्यता ॥) सती बनवास ॥)
नारि धर्म विचार १ भाग ॥)
,, ,, २ ,, १)
भारत की बीर और विदुषि स्त्रियों के कारनामे ।-), सच्ची देवियां ।≈)

इनके अतिरिक्त दयानन्द वैदिक पुस्तकालय अजमेर, इंडियन प्रेस इलाहबाद, कन्या महा विद्यालय जालंधर, पं० राजारामजी, महात्मा मुन्शीरामजी, मास्टर दुर्गाप्रसादजी, ला० शहजादारामजी, पं० तुलसीरामजी, स्वामी दर्शनानन्दजी, तथा अन्य महाशयों के पुस्तक सब यहां से मिलती हैं सूचीपत्र मुफ्त भेजा जाता है ।

राजपाल मैनेजर
आर्यपुस्तकालय व सरस्वती आश्रम,
अनारकली लाहौर ।

ज्योतिष चमत्कार ।

वैदिक ऋषियों ने ज्ञान और विद्या को ही सब से उत्तम और बढ़िया बतलाया है और सर्व प्रकार के आनन्द का निकास भी इसे ही माना है, यहां तक कि मोक्ष प्राप्ति का साधन भी ज्ञान को ही दर्शाया है । पारस देश के महात्मा सादी भी कह गये हैं, "बेइल्म नतवां खुदाराशनाख्त" अर्थात् विद्या के बिना मनुष्य परमेश्वर को भी नहीं पा सकता, यह एक जगत् विदित सत्य है, कोई महात्मा भी इस से इन्कार नहीं कर सकता ।

यह ब्रह्माण्ड उस जगत् निर्माता प्रभु की महिमा को जतलाने का एक साधन है, अतः जिसने उस महाप्रभु के रचे हुए ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त नहीं किया, वह न तो उस की महिमा को जान सकता है और न ही उसे पहिचान सकता है । बिना प्रभु के जाने किसी को मोक्ष नहीं मिल सकता, इसलिये उस पुरुष की मुक्ति भी नहीं हो सकती ।

यही कारण है कि न केवल बुद्धिमान विचारशील पुरुष ही अपने सन्मुख इस तपायमान सूर्य्य और कान्तिमय चन्द्र तथा चमकते दमकते तारों के अद्भुत और अद्वितीय पिण्डों को देख कर उन के सूक्ष्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिये व्याकुल होजाते हैं, वरंच छोटे २ बालक भी इनका वृतान्त जानने के लिये बार २ अपने माता पिता तथा गुरुजनों से कई प्रकार के प्रश्न करते हैं । और उन के माता पिता उन के परचावे के लिये जो उत्तर देते हैं, उस समय के लिये वह उसी को सुनकर सन्तुष्ट होजाते हैं । परन्तु यदि कोई विचार-शील पुरुष हो तो वह अवश्य विचार करता है कि यह अद्भुत पिण्ड मिश्रत हैं या अमिश्रत (सादा) गतियुक्त हैं या स्थिर और इनका परस्पर यह जो अटूट और गम्भीर सम्बन्ध है, यह अपने आप होगया है या किसी महान् प्रबन्ध में बन्धे हुए वह पिण्ड दिन रात निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं । इन विचारों में निमग्न हुआ विचार सागर की थाह तक पहुंचने के लिये वह कई प्रश्न अपने हृदय में स्थापित करता है । यथा-

१-यह सृष्टि क्या है ?

२-यह स्वयं बन गई है या किसी की बनाई हुई है ?

३-यदि बनाई गई है तो किस पदार्थ से बनाई गई है ?

४-यदि यह सृष्टि किसी पदार्थ से बनाई गई है, तो वर्त्तमान सृष्टि उसका आदि या अन्तिम रूप है अथवा यह सदा से बनती विगड़ती चली आई है । और भविष्यत सृष्टि में भी ऐसे ही बनने विगड़ने का क्रम जारी रहेगा ?

५ वर्त्तमान सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई और कबतक यह इसी प्रकार स्थिर रहेगी?

६-अनगणित नक्षत्रों और असंख्य ग्रहों उपग्रहों में सूर्य्य मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर यह सातों नक्षत्र ही क्यों विशेष है, जिन के नाम पर दिनों के नाम नियत किये गये हैं ?

७ यह सब नक्षत्र एक ही परिधि पर घूम रहे हैं या ऊपर तले अथवा समीप या दूर हैं और हमारी पृथिवी से प्रत्येक का अन्तर कितना २ है और हम पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है ?

८-नानाप्रकार के पदार्थों से भूषित इस पृथिवी पर मनुष्यों के प्रकट होने से पूर्व

यह जड़ जन्तु विद्यमान थे या पीछे उत्पन्न हुए।

९–सृष्टि के आदि में केवल एक पुरुष या एक जोड़ा पुरुष स्त्री का उत्पन्न हुआ, अथवा बहुत से स्त्री पुरुष उत्पन्न कियेगये ?

१०–यदि बहुत से उत्पन्न किये गये या एक उत्पन्न किया गया तो कैसे उत्पन्न हुआ?

११–आदि में जब मनुष्य पैदा हुए तो किस अवस्था में अर्थात् बालक पैदा हुए अथवा बूढ़े या जवान ?

इन सब प्रश्नों के उत्तर में ईश्वर के पवित्र ज्ञान वेद को छोड़ कर और सब पुस्तकें जो ईश्वरीज्ञान कहलाती हैं चुप हैं और यदि परचावे के लिये कुछ उत्तर दिये गये हैं तो उन से ऐसे विचारों में व्याकुल आत्माओं की सन्तुष्टि होने के स्थान उन की व्याकुलता बढ़ती है । यही कारण है कि तत्त्वदर्शी और विद्वानों ने इस विषय में धार्मिक शिक्षा की अपेक्षा करके अपना पग अनुभव और अन्वेषण के क्षेत्रमें बढ़ाया और अपने अनर्थक परिश्रम और नाना प्रकार के प्रयत्नों द्वारा सत्यमार्ग पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की।

स्वर्गवासी महाशय सर सय्यद अहमद का वचन है कि "हमारे सन्मुख दो वस्तुएं विद्यमान हैं एक ईश्वर की वाणी और दूसरे उसका कार्य्य इन दोनों में भेद नही होना चाहिये, यदि भेद है तो कार्य्य विद्यमान है जिस में किसी को आना कानी नहीं होसकती, अतः वाणी ही मिथ्या है। तात्पर्य यह कि विद्वानों और तत्त्व-वेताओं के विचारों में परिवर्तन आरम्भ हुआ और यही परिवर्तन मानी हुई धर्म्म पुस्तकों को ईश्वरीज्ञान मनवाने में विघ्न रूप हुआ । वे लोग उन पुस्तकों के विरुद्ध शब्द उठाने के लिये विवश हुए, उन में बहुतों को नाना प्रकार के कष्ट सहन करने पड़े, फिर भी उन्होंने निर्भय होकर सत्यका प्रकाश किया उनकी इस विषय की खोज का सारांश हम अपने शब्दों में बतलाते हैं।

१–कोई समझदार पुरुष यह कल्पित बात नहीं कहसकता कि यह भान्ति २ के जीव जन्तु और नाना प्रकार के उद्भिद पदार्थ, यह चांद, सूर्य, तारे और यह हमारी पृथिवी एकाएक बन गये हैं और पहिले कुछ भी नहीं थे अर्थात् यह सब वस्तुएं पहिले अभाव अवस्था में थी और अब बन गई।

२–यह सारा जगत् और इसकी हरएक वस्तु में सत्य-स्वरूप प्रकृति ही है और इस महान् गति के नियमानुसार प्रभावों के अधीन ही यह प्रकृति प्रभावित होकर नाना प्रकारके अद्भुत रूपों में प्रकट हुई है। और एक ही नाश रहित गति संयोग वियोग कार्य कर रही है,इसी संयोगका नाम सृष्टि उत्पत्ति और वियोग का नाम प्रलय है । यह उत्पत्ति और प्रलयका चक्कर अनादि और अनन्त है।

३–इस ब्रह्माण्ड के यह सब लोग मिश्रित और गतियुक्त हैं और परस्पर आकर्षिनकी असीम शृंखलाओं में बन्धे हुए हैं। और इन सब में वायव, आग्नेय जलीय अथवा पार्थिव परमाणु विद्यमान् हैं और नियमानुसार न्यूनाधिक के कारण ही भिन्न २ रूप धारण किये हुए हैं।

४–कोई पिण्ड ऐसा नहीं जिसके नियम केवल अपने लिए ही और और स्वाधीन हों प्रत्युत सब पिण्डों में ऐसे नियम और प्रबन्ध हैं जो ज़ंजीर की कड़ियों की भांति परस्पर मिले हुए हैं और सब में एक ही

उत्तम रीति और उत्तम नियम काम कर रहा है हां न्यूनाधिक्य के कारण प्रभाव में भिन्नता पाई जाती है।

ये सब पिण्ड और इन की शक्तियें तथा गति आकर्षण बिना कारण और व्यर्थ नहीं हैं, प्रत्युत घड़ी के पुर्जों या शरीर के खंडों की भांति सब आवश्यक और उपयोगी हैं।

५-जो बना है वह अवश्य बिगड़ेगा और बिगड़ने के लिये एक विशेष समय की आवश्यकता है। (परन्तु उन लोगों ने सृष्टि उत्पत्ति या प्रलय काल का ठीक २ समय प्रकट नहीं किया)

६ अनेक गोलों और अनगणित नक्षत्रों में सूर्य ही शिरोमणि है वह इस ज्योतिर्मय ब्रह्माण्ड का राजा है शेष क्रः ग्रह व उपग्रह उस की सभा में उच्चाधिकारी हैं और अन्य सब तारागण प्रजा की भान्ति कार्य्य दान में उनके सहायक हैं।

७-सब ग्रह व उप ग्रह परिमाण, प्रकाश और गति के विचार से एक से नहीं, कई तो स्वयं प्रकाशमान हैं और कईयों में अपनी प्रकाश नहीं केवल दूसरों के प्रकाश से प्रकाशमान प्रतीत होते हैं।

८-मनुष्य की उत्पत्ति इस पृथिवी पर अन्य सजीव और उद्भिद् पदार्थों के पीछे हुई। दूसरे लोकों में भी सजीव पदार्थ विद्यमान हैं।

९-उद्भिद् व सजीव पदार्थों की भान्ति आदि में पुरुष भी बहुत से उत्पन्न हुए।

१०-आदि में जो पुरुष उत्पन्न हुए वह युवावस्था में थे और वह बड़े विचारशील और कान्तिमय थे।

नोट-नं० ९ व १० के विषय में कई पुरुष डार्विनथियूरी को मानने वाले इन विचारों पर आक्षेप करते हैं उनका विचार इस के विपरीत यह है कि सजीव पदार्थों से शनैः २ उन्नति करके ही मनुष्य बन गये पर उनका विचार सर्वमान्य नहीं हुआ है।

११-जिस शक्ति के आधीन प्रकृति में गति उत्पन्न हुई है और जीव प्रकट हुए हैं, वह शक्ति मानुषी ज्ञान की सीमा से बाहर है और वह शक्ति अज्ञ अज्ञेय है। हां हम लोग उसे असीम अनादि और अनन्त मानने के लिये बाधित हैं।

१२-सूर्य्य केवल अपनी धुरी पर घूमता है, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि तथा पृथिवी सूर्य के चारों ओर भी घूमते हैं। चांद पृथिवी के गिर्द घूमता हुआ सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगाता है।

१३-अहोरात्रि (दिन, रात) का घटना बढ़ना, ऋतु परिवर्तन तथा सूर्य और चन्द्र को ग्रहण लगना यह सब बातें पृथिवी और चान्द की गति के परिणाम हैं।

१४ सूर्य्य का अन्तर पृथिवी से लगभग नौ करोड़ सताईस लाख मील है, और उस का अर्द्ध व्यास (आधा कुतर) आठ लाख पैंसठ सहस्र मील है। सूर्य्य २५ या २६ दिन में अपनी धुरी पर घूमता है।

चान्द की दूरी पृथिवी से लगभग दो लाख अड़तीस सहस्र मील है और उसका अर्द्ध व्यास दो सहस्र एक सौ साठ मील है और यह २७. ३२२ दिन में पृथिवी की परिक्रमा कर लेता है। इनके अतिरिक्त बुध जिसका नाम अत्तार्द है और शुक्र जिसको ज़ोहरा भी कहते हैं मंगल (मुश्तरी) शनिश्चर (ज़ुहल) तथा इस पृथिवी की दूरी और उनके घूमनेका समय उन लोगों ने निश्चित किया जो नीचे चित्र में दिया जाता है।

ग्रहों उपग्रहों का अन्तर सूर्य से और उनकी चाल आदि बताने वाला चित्र जो अंग्रेजी अस्ट्रानोमी के अनुवाद रूप पुस्तक अर्द नजूम पृष्ठ ७१० से लिया गया है।

नाम ग्रह	लगभग दूरी पृथिवी से	लगभग दूरी सूर्य से	दिन जो सूर्य के चारों ओर घूमने में लगाता है	अर्द्ध व्यास (आधा कुतर)	अपनी धुरी पर घूमने में जितना समय लगाता है।
	मील	मील			
बुध (अत्तार्द)	१३२८२५६	३५९१०,०००	८७.९६ दिन	२९९२ मील	२४ घंटे ५ मिन्ट
शुक्र (ज़ोहरा)	३३९३७०४	६७००००००	२२४.७०	७६६०	२३ घंटे २१ मिन्ट
पृथिवी		९२७०००००	३६५.२६	७९१८	२३ घंटे ५६ मिन ४.०९ सैकिण्ड
मंगल (मर्रीख)	१०३७२९५२	१४१००००००	६८६.९८	४२००	२४ घंटे ३७ मिन्ट २२.७ सैकिण्ड
गुरु (मुश्तरी)	५१४१८२०३	४८३००००००	४३३२.६	८६०००	९ घंटे ५५ मिन्ट
शनि (जुहल)	१६८५५२५६८	८८४००००००	१०७५९	७१०००	१० घंटे १४ मिन्ट २३.८ सैकिण्ड
यूरेनिस	०	१७८००००००	३०६८७	३१७००	प्रतीत नहीं हुआ।
नेपच्यून	०	२७९००००००	६०१२७	३४५००	,,

जो सूर्य सिद्धान्त के मतानुसार ग्रहों उप-ग्रहों की दूरी चाल आदि को दर्शाता है।

नाम ग्रह	सूर्य की परिक्रमा का समय		अपनी धुरी पर घूमने का समय	पृथिवी से दूरी
बुध	८७.९७५	३२९८९६८ योजन	१८ दिन	१३१३ ७२ मील
शुक्र	२२४.७१	८४२५७९ ,,	२८ दिन	३३६३९१२ ,,
मंगल	६८७ ०४	२५७६०९८ ,,	४५ दिन	१०२९७९९२,,
बृहस्पति	४३३२.५८	६३६३८७८	१ वर्ष	५४४९११२ ,,
शनिश्चर	१०७६६ ४२ दिन	४०५६७०३७,,	२½ वर्ष	१६२२६१७५२,,
चन्द्र	२७.३२३ पृथिवी की परिक्रमा में	१०२४५१ ,,	१½ दिन	४०३४००
सूर्य		१३६९९४४ ,,	एक मास	५४७२१७६

सूर्य-सिद्धान्त की बतलाई हुई दूरी और ग्रह चक्र तथा अंग्रेजी अस्ट्रानोमी द्वारा जाने गये अन्तर और ग्रह चक्र में थोड़ा बहुत भेद है अर्थात् शनिश्चर के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के परिक्रमा काल में कुछ भेद नहीं प्रत्युत उन में अनुकूलता पाई जाती है हां शनिश्चर के परिक्रमा काल में कुछ ७ दिवस का अन्तर है, परन्तु अन्तरों में बड़ा भारी भेद पाया जाता है।

अब इस बात का ध्यान रखते हुए कि गणित की सत्यता उसके फल की सत्यता पर निर्भर है जब हम देखते हैं कि सूर्य ग्रहण चन्द्र ग्रहन दिन का घटना बढ़ना ऋतु परिवर्तन नक्षत्रों का उदय अस्त यह सब व्यापार आर्य्यवर्त के ऋषियों की बतलाई हुई रीति और यूरोप के ज्योतिषियों के बतलाए हुए नियमों के अनुसार ठीक ठीक समय पर होते रहते हैं तब एक ऐसे पुरुष के लिये जो भ्रम से मुक्त और सत्य का अभिलाषी है, यह कहना बड़ा कठिन हो जाता है कि अमुक उत्तम हैं और अमुक मध्यम।

फिर जब हम देखते हैं कि स्वयं यूरोप निवासी आर्य्यवर्त्त के ऋषियों की ज्योतिष विद्या में निपुणता स्वीकार करते हैं तो हमें विवश होकर स्वीकार करना पड़ता है कि वह इस विद्या में अन्य देशों के ज्योतिषियों के गुरु थे। देखिये माननीय कर्नलटाड साहिब अपनी अद्वितीय पुस्तक राजस्थान में बड़े दुखित हृदय से लिखते हैं कि:-"हम इन ऋषियों की खोज कहां करें, जिनका नक्षत्रों का ज्ञान इस समय तक यूरोप के विद्वानों को आश्चर्य्यान्वित कर रहा है"।

ऋषि महर्षियों ने योग बल और ईश्वरी ज्ञान की सच्ची और निश्चित शिक्षा के द्वारा नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त किया और उनकी परस्पर दूरी और चालों का अनुमान ही नहीं किया प्रत्युत ठीक २ और निश्चित गिनती स्थिर की है जिस के द्वारा साधारण से साधारण पुरुष भी बिना देख भाल और दूरवीक्षण (दूरबीन) की सहायता के नक्षत्रों का उदय अस्त और उन की चालें ठीक २ बतला सकता है जिस में तनिक भी भेद नहीं होता है। परन्तु यूरोप के विद्वान् देख भाल अनुमान और दूरवीक्षण की सहायता से हरबार धूम्र-केतुओं (दुम दार सतारों) के टकरा जाने का भय प्रकट करते रहते हैं जो अन्त को निर्मूल सिद्ध होकर उनकी उच्च योग्यता पर धब्बा लगाते हैं। उन्होंने आजतक कोई ऐसे नियम नहीं बनाए जिन की विद्यमानता में दूरवीक्षण की सहायता से ग्रहों की चाल का चित्र ठीक उतर सके। अनुमान में भूल सम्भव है और अनुमान द्वारा जो विचार बनाए गये हों उन में भूल की सम्भावना होसकती है, अतः हम सूर्यसिद्धान्त की बतलाई हुई दूरी और चाल पर विश्वास करने के लिये बलपूर्वक अनुरोध करते हैं।

अर्ज़ नजूम जो ज्योतिष का एक ग्रन्थ है उस में २२७ पृष्ठ पर उसके सयोग्य ग्रंथ कर्ता एस्ट्रानोमी की बेबसी को स्वयं स्वीकार करते हैं और बतलाते हैं कि बुध (अत्तार्द) एक मिश्रित पिण्ड है उसका कुछ वृत्तान्त भी हमें विदित नहीं, दूरवीक्षण द्वारा जैसे और ग्रहों के ऊपरी तलका वृतान्त ज्ञात हुआ है अत्तार्द का कुछ प्रतीत नहीं होता, फिर पृष्ठ २७० पर धूम्र-केतुओं का वर्णन करते हुए प्रकट करते हैं कि हमारे ज्योतिषी ग्रहों पर दूसरे ग्रहों के प्रभाव गणन करने भूल कर जाते हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट है

कि आर्य्यवर्त्त के ऋषियों का स्थान अन्य देशीय ज्योतिषियों के स्थान से बहुत ऊंचा है

आगे हम ज्योतिष विद्याज्ञाताओं के शिरोमणि-सिद्धान्त के कर्ता के बतलाए हुए उन गुप्त भेदों को पाठकों के सन्मुख उपस्थित करते हैं, जिनमें सृष्टि उत्पत्ति और ज्योतिष का और कई ज्ञातव्य विषयों का वर्णन है और उन श्लोकों को आप के सन्मुख रखते है जिन में पूर्वोक्त प्रश्नों के उत्तर उत्तम रीति से और विस्तार पूर्वक दिये गये हैं।

सूर्य्य सिद्धान्त अध्याय १२ श्लोक १२ में लिखा है कि परब्रह्म परमात्मा सब का आधार स्थान है।

वह जीव से भिन्न और प्रकृति के गुणों से रहित पचीस सूक्ष्म तत्त्वों से अलग और एक रस है।

श्लोक १३ प्रकृति की तीनों अवस्थाओं सत्, रज, तम (प्रकृति की अन्तिम अवस्था) के भीतर बाहर सभी स्थानों में व्यापक आकर्षण शक्ति के स्वामी परमेश्वर इस सृष्टि के आदि में उन प्रकृतियों में आकर्षण शक्ति का संचार करते हैं।

श्लोक १४ यह सब ओर से अन्धकार में ढंपा हुआ, प्रकाशमान गोलाकार बन गया, इस में आदि से बखेरे हुए प्रकृति के के परमाणु प्रथम रूपवान बन गये। १५वें श्लोक से २१वें तक के श्लोकों में सृष्टि उत्पत्ति का क्रम वर्णन कियागया है।

श्लोक २२ अहङ्कारमूर्ति धारण ब्रह्म (महत्व अहङ्कार में विद्यमान परमात्मा या उत्पन्न करने की शक्ति) मन (गति) का चक्र चलाते हैं तब चेतन और जड़ उत्पन्न होते हैं।

श्लोक २३ इस गति से आकाश वायु अग्नि जल धरती क्रम से एक २ गुण की वृद्धि से पांच महाभूत उत्पन्न हुए।

श्लोक २४ तब अग्नि से सूर्य्य सोम से चन्द्र तेज से मंगल पृथिवी से बुध आकाश से बृहस्पति जल से शुक्र वायु से शनिश्चर उत्पन्न होते हैं।

श्लोक २५ फिर सर्वव्यापक परमात्मा इस गोले को १२ राशियों और २७ नक्षत्रों में विभक्त करते हैं (कल्पित विभाग है)।

श्लोक २६ गोले बनाने के पश्चात् पृथिवी पर उद्भिद और जड़ जन्तुओं को बनाफिर मनुष्यों को उत्पन्न किया और उन में भी गुणों के अनुसार उत्तम, मध्यम, नीच तीन भाग किये गये।

श्लोक २७ यह सेव प्रथम कर्म्मानुसार गुण कर्म के विचार से वेदोक्त रीति के अनुसार स्थापित कियागया।

प्रथम अध्याय में ब्रह्म दिन और ब्रह्म रात्रिका निरूपण करते हुए मनुष्यों के सम्वतसर अर्थात् वर्ष बननेका वर्णन करके युगका परिमाण ४३२०००० वर्ष निश्चित कियागया है और श्लोक २० में ऊपर कहे हुए युग के परिमाण के हज़ार युग अर्थात् ४३२०००००० वर्ष का भूत सिंहारि कल्प या वर्तमान सृष्टि की आयु का वर्णन किया गया है।

श्लोक ४५, ४६, ४७ में सूर्य्य-सिद्धान्त के निर्माण काल को सृष्टि के आदि से १९५३७२०००० वर्ष पीछे बतलाया गया है

दूसरे अध्याय के श्लोक १२ व १३ में वक्र अनुवक्र, कुटिल, मन्द, मन्दतर, सम, शीघ्र, अति शीघ्र, आठ प्रकार की गति प्रकट करके बतलाया है कि अतिशीघ्र, शीघ्र मन्द, मन्दतर, सम यह पांच सीधी गतियां हैं और कुटिल, वक्र, अनुवक्र यह तीनों वक्र अर्थात् उलटी गति हैं।

श्लोक ५३, ५४ में मंगल १६४ बुध

१४४ बृहस्पति १३० शुक्र १६३ शनिश्चर ११५ अंश होने पर गति आरम्भ होती है और मंगल १६६ बुध २१६ बृहस्पति २३० शुक्र १६७ शनिश्चर २४५ अंश बीतजाने पर वक्र गति को त्याग देते हैं।

अध्याय १३ श्लोक ६ में सूर्य का मकर राशि से मिथुन राशि तक उत्तरायण और कर्क राशि से धन राशि तक दक्षिणायण बतलाई है। और श्लोक १२ में तिथि का ज्ञान दिया है कि चन्द्रमा को सूर्य से १२ अंश जाने के लिये जितना समय लगता है वह तिथि कहलाती है।

श्लोक ५३ अध्याय १२ में बतलाया है कि पृथिवी गोल है और इसी कारण से सब लोग अपने २ स्थान को ऊपर समझते हैं अन्यथा आकाश में स्थित गोले में निचाई कहां है और ऊंचाई कहां है।

श्लोक ६५ व ६६ में लिखा है कि वृष मिथुन, कर्क सिंह, राशी में सूर्य कर्क रेखा से नीचे रहने वालों को दिखाई नहीं देते और वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ राशी के सूर्य मकर रेखा से ऊपर रहने वालों को दिखाई नहीं देते।

श्लोक ६७ और भू मध्य रेखा और मकर रेखा के बीच रहने वाले लोग मकर आदि राशि में सूर्य को सदा देखते हैं।

श्लोक ७५ दूर वाली कक्षा बड़ी है, और समीप वाली कक्षा छोटी है, इसी कारण कक्षा अंश बृहत् (बड़े) व अल्प (छोटे) होते हैं।
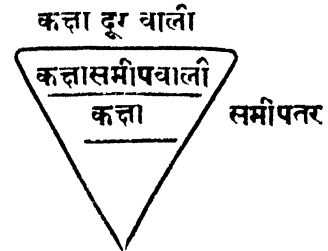
श्लोक ७७ एक समय में सब से छोटी कक्षा वाले चन्द्रमा के भगन अधिक होते हैं, परन्तु शनिश्चर बड़ी कक्षा वाले के भगन थोड़े होते हैं।

८८ व ८६ तक के श्लोकों में चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनिश्चर की कक्षाओं का वर्णन है जिन से उन का क्रमशः एक दूसरे से ऊपर होना सिद्ध है

श्लोक ८६ में नक्षत्रों की कक्षा २५६८६००१२ योजन बतलाई है।

श्लोक ६० में ब्रह्माण्ड की कक्षा १८७१२०८०८६४०००००० योजन बतलाई है इस के भीतर ही सूर्य की किरणों का फैलाव है।

ब्रह्माण्ड	१८७१२०८०८६४०००००० योजन
नक्षत्र	२५९८९००१२ योजन
शनिश्चर	१२७६६८२५५
बृहस्पति	५१३७५७६४
मङ्गल	८१४६९०९
सूर्य्य	४३३१५००
शुक्र	२६६४६३७
बुध	१०४३२०८
चन्द्र	३२४०००

पृथिवी

प्रकट है कि सूर्य्य-सिद्धान्त के कर्ता ने ज्योतिप के गुप्त रहस्यों का प्रकाश बहुत ही उत्तम रीति से किया है और सर्व साधारण को आकर्षित कर लिया है।

अब स्वभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है कि सूर्य्य-सिद्धान्त के कर्ता ने यह पूरा ज्ञान किस शिक्षक से प्राप्त किया और उस शिक्षक का गुरु कौन था, इस के उत्तर में सूर्य्य-सिद्धान्त के सयोग्य कर्ता विशाल हृदय से और प्रसन्नता पूर्वक अपने गुरु को प्रकट करते हैं अपना परम-गुरु परमात्मा स्वीकार करते हुए उस सत्य ज्ञान और कल्याणी वाणी वेदका महत्त्व बखान करते हुए लोगों को सीधा मार्ग दिखाते हैं।

अब हम उन वेद मन्त्रों को उद्धृत करते हैं जिन से लाभ उठाकर प्राचीन ऋषि मुनियों ने एक दूसरे के पीछे ज्योतिप चमत्कार दिखाया और जिन में सूर्य-सिद्धान्त की बतलाई हुई सच्चाईयां बीज रूप से विद्यमान हैं।

पवित्र वेद ने ज्योतिप विद्या के छिपे भेदों को प्रश्नोत्तर के ढङ्ग में और उपिमाओं द्वारा न अलङ्कार के ढंग पर भी इतनी उत्तमता और जानकारी हम तक पहुंचाई है। कि जिन को भलीप्रकार जानने पर कोई बात छिपी नहीं रहती। सब पुराने पुरुषाओं ने जो रेखा गणित में अति निपुण थे। और ाचीन सृष्टि मुनियों ने ज्योतिप विद्या में

अति निपुणता प्राप्त करके आदि गुरु कहलाने का सौभाग्य वैदिक शिक्षा के प्रकाश से प्रकाशमान होकर ही प्राप्त किया और सूर्य्य-सिद्धान्त के कर्ता ने भी उसी वैदिक ज्ञान को अपने शब्दों में सर्वसाधारण तक पहुंचाया। चारों वेदों में सहस्रों मन्त्र ज्योतिष विद्या के छिपे हुए भेदों को प्रकाश करने वाले विद्यमान हैं। और नक्षत्र, राशि करण, योग, तिथि, वार, शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष, अमावस्या और पूर्णमासी, सूर्य्य-मास, चन्द्र-मास, ऋतु सम्वतसर का ज्ञान दरसाते हैं। और सूर्य्य का मध्य में स्थिर होना दूसरे सितारों और पृथ्वी के सूर्य्य की प्रदक्षिणा करना स्पष्ट शब्दों में बतलाया और पृथिवी से सप्त सितारों का क्रमण चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य्य, मङ्गल, बृहस्पति, शनिश्चर का एक दूसरे से ऊपर होना बतलाया है। इस विषय विस्तृत हो जाने के कारण उन हीं मन्त्रों के हवाले दर्ज करते हैं जिन में उपरोक्त प्रश्नों के उचित उत्तर वर्तमान हैं।

(१) यजुर्वेद अ०१७मं०३०-उसी ब्रह्म में कारण-रूप प्राण और सब लोक लोकान्तरों की उत्पत्ति का अनादि कारण प्रकृति स्थिर है, प्रकाशमान हृदय योगीजन उसको प्राप्त करते हैं। वह सब जड़ और चेतन्य का स्वामी है। वह स्वयंभू है, वह अद्वितीय है। सृष्टि के सब पदार्थ उस में वर्तमान हैं। ऐ मनुष्यो! तुम उसी को ब्रह्म जानो।

(२) यजु० अ०१७ मं०३१-के अन्त का भाग जो सब सृष्टि का उत्पादक (पैदा करने वाला) वह जीव से भिन्न चेतन शक्ति (अभ्य पुरुष) है, जो सब में व्यापक होता हुआ भी अलग है।

(३) यजु० अ०५ मं ३०-ऐ सृष्टि-कर्ता जैसे आकाश सर्व पदार्थों में व्याप्त है, वैसे ही आप में सब व्यापक और आप सर्वाधार हैं।

(४) ऋ० मं १० सूक्त १२९ मंत्र ७-ए मनुष्यो! जिस से यह सृष्टि पैदा हुई है और जो धारण और प्रलय करता है वह इस जगत् का स्वामी है। जिस सर्व व्यापक में यह सब जगत उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है तो उस को ही ब्रह्म जानो दूसरे को सृष्टिकर्त्ता मत मानो।

(५) ऋग्वेद मं०१० सू०१२९ मं३-यह जगत् उत्पत्ति से पूर्व अंधेरे में ढंपा हुआ तम अवस्था को प्राप्त हुआ अंधेरे की तरह जिस में कुछ भी पहिचान न मिले एक रस था। उस सृष्टिकर्त्ता ने अपनी सामर्थ से प्रथम महातत्त्व को उत्पन्न किया।

(६) यजु० अ०३२ मं १-सर्व प्रकाशमान होने से परमात्मा का नाम अग्नि है प्रलय के समय न बदलने के कारण उस का नाम आदित्य है। सब को धारण करने के कारण उसका नाम वायु है। आनन्द स्वरूप होने से उस का नाम चन्द्रमा है। शुद्ध स्वरूप होने से उसका नाम शुक्र है, महान होने से उस को ब्रह्म कहते हैं। और सर्व व्यापक होने से आपः कहलाता है और सर्व उत्पादक होने से उसी को प्रजापति कहते हैं।

(७) यजुर्वेद अध्याय ३१ मं० ३-यह सृष्टि परमात्मा की सामर्थ से पैदा होती है। और यह सृष्टि उस परब्रह्म की बड़ाई को दर्शाती है। परमात्मा (पुरुष) परिपूर्ण सर्व व्यापक इस जगत् से भी महान है यह सब पृथ्वी आदि चराचर जगत उस का एक पाद

कहलाता है तीन पाद सूक्ष्म जगत व प्रकाश में वर्तमान रहते हैं।

(८) यजुर्वेद अ० ३१ मं ४—वह परमात्मा उन तीनों पाद सूक्ष्म-जगत व प्रकाश के सूक्ष्म होते हुये भी अलग ही हैं। यह जगत जो उस की सर्वशक्ति का छोटा सा खेल है। जो एक अंश या एक पाद कहलाता है और यह उत्पत्ति और प्रलय के चक्कर से बार बार उत्पन्न होता है। और नाश होता है। परमात्मा ही इस जगत के सब जड़ और चेतन में व्यापक है।

(९) यजु० अ ३१ मं १२—उस ब्रह्म परमात्मा की सृष्टि में चन्द्रमा (आधिक चलने वा) चंचल होने के मन से उत्पन्न हुआ माना है और सूर्य्य (पहिचान कराने वाला) होने के नेत्र से उत्पन्न हुआ माना है।

(१० यजु० अ १७ मं ३२—प्रथम

(नोट) चूंकि आकाश उत्पन्न नहीं होता है। बल्कि वह प्रथम से ही वर्तमान रहता है। परन्तु प्रकृति के कारण प्रमाणु जो सम अवस्था में परिपूर्ण रहते हैं। आकाश (अवकाश) दृष्टिगोचर नहीं होता है। इसलिये किसी शास्त्रकारों ने आकाश की उत्पत्ति प्रथम ही बतलाई है। परन्तु वास्तविक हिलना डुलना ईश्वरी हिलने डुलने के होती है। जब प्रमाणुओं में एक प्रकार के प्रमाणुओं के आपस में मिलने की शक्ति काम करती है। तब आकाश दिखलाई देता है। और प्रथम वायु फिर अग्नि फिर जल फिर पृथ्वी उत्पन्न हुये हैं, जिस को पवित्र वेद से बतलाया है और इसी आशय को सूर्य्य—सिद्धान्त के बाहरवें अध्याय के श्लोक २१ में दर्शाया है।

वायु तत्व उत्पन्न होती है। फिर अग्नि तत्व फिर जल तत्व और फिर पृथ्वी वनस्पति का उत्पन्न स्थान पैदा होता है।

(११) सूर्य्य-सिद्धान्त के कर्ता ने अध्याय १२ के श्लोक २४ में अग्नि से सूर्य्य सोम से चन्द्रमा, तेज से मंगल, पृथ्वी से बुध, आकाश से बृहस्पति, जल से शुक्र, वायु से शनिश्चर की उत्पत्ति जो दिखलाई है। वह वेद भगवान के नियमित शब्दों में ही बन्द है। पवित्र वेद में अग्नि और सूर्य्य और सोम चन्द्रमा आदि में सम्बन्ध जतलाने के बजाय यह शब्द उल्टे एक ही अर्थ को बतलाने वाले हैं। और इधर उधर मन्त्रों से ज्ञात होता है। यह ही नहीं बल्कि विविध मन्त्रों में सूर्य्य को अग्नि नाम से चन्द्रमा को सोम नाम से मंगल को बाहु बलवान और बुध को वैश और बृहहस्पति को मुक्ता और गुरु और शुक्र को (वीर्य्य) और जल से उपमा दी है। और शनिश्चर को मूर्धा से उपमा दी है। और जहां यह उन की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं, साथ ही ठहरने की जगह यानी एक सितारे से दूसरा सितारा ऊपर है या नीचे भेद को खोल देते हैं यदि सब सृष्टियों को एक पुरुष मान लिया जावे तो शनिश्चर को मूरधा स्थानी और बृहस्पति को मुख स्थानी और मंगल को बाहु स्थानी और सूर्य्य को अग्नि स्थानी यानी जठराग्नि जिस में अन्न पकाने वाली अग्नि वर्तमान रहती है। और शुक्र को जांघ की जगह और बुध को टांग और चन्द्रमा को पृथ्वी के निकट और पृथ्वी को पाद स्थान बतला कर सब भेदों को बतलाया जो निम्न लिखित हैं।

जिस को सूर्य्य—सिद्धान्त के कर्ता ने अध्याय १२ के श्लोक ८५ से ८९ के हिस्से अव्वल तक चन्द्रमा, बुध, शुक्र, सूर्य्य, मंगल, बृहस्पति शनिश्चर के लकीरों का वर्णन करते हुये उन का एक दूसरे से ऊपर नीचे आना सिद्ध किया है।

(१२) अथर्ववेद० कां०१० सू० ८ मं० ४-में बतलाया है कि एक वृत्त खींचो जो १२ राशियों से सम्बन्ध रखता हो। और उस के केन्द्र से तीन लकीरें पूरे वृत्त को तीन सम भागों में विभाजित करती, खींचने से जाड़ा, ग्रीष्म वर्षा चार चार मास की एक ऋतु होती है और फिर इन को बराबर के दो भागों में विभाजित करने से वसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हिमन्त, शिशर ऋतुयें दो दो मास की हो जाती है और फिर इन को बराबर के दो दो भागों में विभाजित करने से एक सूर्य्य मास यानी एक राशि में सूर्य्य की गति निकल आती है। जो ३६०° अंश पूरी होती है। यानी सूर्य्य के वर्ष के पूरे ३६० अंश होते हैं और एक सूर्य्य के उदय होने से अस्त होने और अस्त होने से उदय होने तक का समय ठीक ६० घड़ी होता है। इस में घटी बढ़ी नहीं होती। यह अनुमानिक विभाग राशि के नाम से पुकारी जाती है।

(१३) अथर्ववेद कां १९ सू० ७ मं० २ में २८—नक्षत्र कृतिका रोहिणी इत्यादि स्पष्ट शब्दों में गिनाये हैं और यह कहना बेजा न होगा कि ज्योतिष विद्या की नींव

(नोट) ३६५ दिन ५ घड़ी ३१ पल ५० विपल में सूर्य्य अपने ३६० ही अंश पूरे करता है।

इन २८ नक्षत्रों पर ही निर्भर है। जिन को यह नक्षत्र चन्द्रमा के मालूम न हों तो वह सूर्य्य की राशि का ज्ञान नहीं जान सकते और इन दोनों की जानकारी न रखते हुये ज्योतिष विद्या का सवार अपने घोड़े को एक पग नहीं चला सकता और यदि चलावेगा तो पग पग पर ठोकर खा औंधे मुंह अंधेरे के गहरे गढ़े में गिर जावेगा।

(१४) ऋग्वेद मं० १० सू० १९० मं० २,३,४—यह विख्यात मंत्र जो सन्ध्या के मन्त्रों में वर्तमान है बतलाता है कि ईश्वर के ज्ञान प्रकृति और क्रिया से यह ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ है, प्रलय और स्थिति का कर्ता ईश्वर ही है ब्रह्माण्ड में क्रिया फैली और विविधि प्रकार के सितारे बने और उन की परिक्रमाओं का सिलसिला कायम हुआ दिन रात पक्ष बीते साल सम्वतसर इस से पैदा हुए और जैसे पहिले बने थे, वैसे ही अब बनाये।

(१५) अथर्ववेद सूक्त ८ मं १ व २—यह सृष्टि एक एक प्रमाणु से मिल कर बनी है जिस में पृथ्वी, जल, पावक और वायु आदि भूतों से बनाने वाले नाना रूप वाले ईश्वरीय गुणों ने भूमि, सूर्य चन्द्रादि गति वाले लोकों को सृजा है।

(१६) ऋग्वेद मंडल १ सूक्त २५ मं ८ व ९-जो विद्वान् ईश्वर के नियम व प्रबन्ध का जानने वाला भिन्न उत्पत्ति सूर्य्य चन्द्रमा की चालों से १२ महीनों द्वादस मास और अधिक मास (अर्थात् तेहरवां महीना) जो सूर्य के महीनों और चन्द्रमा के महीनों के अन्तर बराबर करने को बनाया जाता है। जानता है

वह काल के सब भागों को जानकर उपकार करता है।

(१७) यजुर्वेद अध्याय ३१ मंत्र ९-ऐ मनुष्यो ! जो विद्वान् पंडित और जो साधू और जो ऋषि वेद मंत्रों के अर्थ जानने वाले सब से पहिले सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न होते हैं वह प्रतिष्ठा योग्य परमात्मा को मन में धारण करते हैं और वह वेद परमात्मा के दिये हुये ज्ञान के अनुसार उसकी पूजा करते हैं। उस को तुम भी जानो।

(१८) ऋग्वेद मं० ३ सू०१ मं० २० २१-मनुष्यों को जन्म जन्म में कर्मानुसार उत्पन्न होने के भेद को समस्त संसार के मनुष्यों में तफरीक के लिहाज़ से प्रबोधित कराया जाता है।

आवागमन के समर्थन में सहस्रों मंत्र मौजूद हैं। मगर बाज साहेबान यह प्रश्न उठाया करते हैं कि अमैथुनी सृष्टि में जो लोग पैदा हुये उन में से भी चार ऋषि, अग्नि, वायु, आदित्य, आङ्गिरा की आत्माओं में ही वैदिक ज्ञान क्यों दिया गया, उन सब का क्यों न सर्वोत्तम न बनाया। और उसके लिये भी वेद मंत्रों से जवाब चाहते हुये दिखाई देते हैं। इसलिये हम एक वेद मंत्र पेश करते हैं। जिस में चार ऋषियों को सर्वोत्तम बतलाये जाने की कारण भी यही सब से उत्तम कर्म बतलाये हैं। और साथ ही असल वेदमंत्र को भी पेश करते हैं जिससे किसी प्रकार का सन्देह न रहे।

(१९) ऋग्वेद मं०१ सूक्त २७ मं०४-हे प्रकाश स्वरूप ज्ञान स्वरूप परमात्मा ! आप पुण्य आत्माओं में (जिन के पिछले कर्म उच्च थे मुराद अग्नि, वायु आदित्य अंगिरस ऋषियों से है। नई २ ऋषियों के ढेर गायत्री आदि मन्त्रों से युक्त जिन को प्राप्त करके ही प्राणी मात्र का कल्याण होता है। उपदेश किया है हमारी आत्माओं में भी अच्छे प्रकार की जिये।

(२०) ऋग्वेद मं०१सू०६ मं०४-सबसे महान डील डौल व प्रकाश व आकर्षण शक्ति इत्यादि समान स्थान, निश्चल बड़ा ही महतत्व को प्राप्त हुआ। प्रकाश लोक और पृथिवी के बीचोबीच स्थापित की हुई गर्मी व प्रकाश का उत्पादक बलवान आकर्षण शक्ति द्वारा विकार से रहित एक ढंग पर प्रतिष्ठा के योग्य अपनी स्त्री के समान गाय के समान सब लोकों को अपने वश में रखता है।

(२१) ऋग्वेद मं०३ सू०३ मं०५-ऐ सुश्री बन्धुओ ! दिव्य गुण वाला चन्द्रमा का रथ चित का आकर्षित करने वाला प्राण और जल पर जिसका बड़ा प्रभाव जिस से प्राणी मात्र सुखी होते हैं। जो नाना प्रकार के फल फूल उगाता है शीघ्र गामी (अपने मार्ग को शीघ्र समाप्त करने वाला, शक्ति का संचार करने वाला, भिन्न भिन्न प्रकार के पदार्थों का पोशक ऐश्वर्यवान सर्व लोकों में विख्यात चन्द्रमा सूर्य्य से प्रकाश धारण करता है।

(नोट) तारों का समूह जिसको संस्कृत में सप्त ऋषि और अंग्रेजी में गार्डज़ अर्थात् रक्षक और अर्बी में दुब्ब अकबर और दुब्ब असगर के नाम से पुकारा जाता है। और यह तारों का समूह और अन्य तारों के बुर्जों के जानने के लिए मार्ग दर्शक का काम दिया करते हैं। और हर दो समूह के सितारों में सात २ सितारे ही हैं। जिन की शक्ल यह है।

(२१) ऋग्वेद मंडल ५ सू०५९मं०७-में बतलाया है कि ध्रुव तारे के निकट पक्षियों के समूह को दो समूह सितारों के चक्कर लगाते हैं जो ज्योतिष ज्ञान का आधार हैं और काम करने वालों को सब ओर से प्राप्त होते हैं।

ज द
o .... o
सितारा कुतबी उत्तरी ध्रुव
o .... o .... o
व अ

सब से प्रथम जब आकाश में दृष्टि चक्कर लगाती है। तो अपने सप्त ऋषि या सात सहेलियों का झुमका देख कर फिर ध्रुव को खोज लेती है। तत्पश्चात शतभिषा जो सौ सितारों का समूह है देख कर एक के पश्चात् दूसरे बुर्जों के समाचार प्राप्त करती जाती है। और इसी बात को वेद भगवान ने स्पष्ट ढंग पर बतलाया है।

(२३) ऋग्वेद मं०६सू०७मन्त्र९-इस मन्त्र में बतलाया गया है कि सब लोकों कुरों में विशेष करके सात सितारे सूर्य्य चन्द्रमा, मंगल बुध,बृहस्पति, शुक्र,शनिश्चर की परिधि अन्त का स्थान घूमने का ज्ञान से लोग जानते हैं, वह ज्ञानी कहलाते हैं।

(२४) ऋग्वेद मं०५ सू०५४ मंत्र४-इस वेद मंत्र ने जगत को बतलाया कि जो सात सितारे दिनों को गिनाते हैं वह ही अन्य सब लोकों को प्रबन्ध में रक्खे हुये है। और वह दुख देने वाले नहीं हैं। किन्तु दुःखों का नाश करने वाले हैं। फलित ज्योतिष के मानने वाले और ग्रहों के मान से लूटने वालों को इस मंत्र को ध्यान दे कर सत्य हृदय से करना चाहिये।

(२५) अथर्व०कां०८ अनु०१ मं०२१-सृष्टि के लय का हिसाब समझने के लिये यह जानो कि वह संख्या दस लाख तक शून्य देने के पश्चात् २, ३, ४ नम्बरवार लगाने से वर्षों की संख्या होती है यानी ४३२००००००० वर्ष है।

उपरोक्त वेद मन्त्रों को ही हम नमूने के तौर पर पेश करके हम प्रश्नोत्तर करने के लिये पूर्ण समझते हैं। तो भी थोड़े मन्त्रों के हवाले और पेश करते हैं मगर मुख्तसिर तौर पर उन में वर्णन की हुई जानकारियों का वर्णन हैं। इच्छादित गण स्वयं वेद मन्त्रों को देखकर सन्तोष करें और हम जोर से इस का अनुरोध करते हैं।

(१) ऋग्वेद मं० ५ सूक्त ५६ मं ५—सूर्य्य तिर्छा प्रकाश करता है और पृथ्वी का आधार है।

(२) ऋग्वेद मं० ६ सू० ४७ मं० २१—सूर्य्य पृथ्वी के आधे भाग को प्रकाशित करता है।

(३) यजु०अ० १७ मंत्र७९—सूर्य्य की किरणें सात रंग की हैं।

(४) यजु अ०३३ मं०२—धूम्रकेतु पूछ वाले सितारे वायु से तेज को प्राप्त होते हैं वरण शील पावक नाना प्रकार से प्रकाश के निमित यत्न करते हैं। उनको जानो।

५) ऋग्वेद मं० ७सू०१८मं० २४-आकाश की तकसीम सात पर करनी चाहिये।

(६ ऋग्वेद मं०६ सूक्त२४मन्त्र ३-सूर्य्य के चारों ओर सम्पूर्ण कुरह (लोक) घूमते हैं।

(७) अथर्व कां०१३-सूर्य्य ग्रहण के विषय में हैं। सूर्य्य चन्द्रमा ने तुझे अन्धकार से घेर लिया है देव लोक में तेरा प्रकाश

है चन्द्रमा ने केवल एक मात्र छिपा दिया है।

(८) ऋग्वेद मं०६ मं ४-में उपदेश है कि दिन रात से ही महीने बनते हैं, महीने से ऋतु होते हैं। ऋतुओं से वर्ष पूरा होता है।

इन सब वेद मंत्रों के प्रमाण देने के पश्चात् यदि विषय को समाप्त करदें तो एक बड़ा भारी अन्तर कि वेद मन्त्र तो सूर्य के चारों ओर प्रदक्षिणा करना बतलाते हैं। परन्तु सूर्य सिद्धान्त पृथ्वी के चारों ओर सूर्य का घूमना मानता है। क्या यह शिक्षा भी पवित्र वेद की है! या पवित्र वेद की शिक्षा से उल्टी है मनुष्यों के हृदय में यह शंका डालने वाली बात होगी। इसलिये हम स्पष्ट करते हैं कि सूर्य-सिद्धान्त के कर्ता इस बात को भली भांति जानते थे कि सूर्य के चारों ओर पृथ्वी घूमती है मगर उन्हों ने साधारण मनुष्यों को समझाने के लिये पृथ्वी के चारों ओर सूर्य को घूमता हुआ स्पष्ट करके एक उत्तम पैमाने पर हिसाब स्थिर किया कि गलती ज़रा भी न हुई। और यह उन का परम उपकार हुआ जैसाकि रेखा गणित के कर्ता ने खत और सतह की परिभाषा जानते हुए स्लेट कागज़ पर खत खींच कर जिस में चौड़ाई मौजूद होती है समझाते हैं। और आप लोग अवश्य प्रसन्न होंगे। यदि हम यह सिद्ध कर दें कि चाहे पृथ्वी का घूमना मानों चाहे सूर्य का। हिसाब में गलती नहीं होती उस का कारण वह है जो अर्जुलनजूम के कर्ता ने पृष्ठ ११२, ११३ पर दर्ज फर्माया है। हम उसको उर्दू भाषा के शब्दों में पाठकों की भेंट करते हैं।

इस बात के समझाने के लिये चार बड़े प्रसिद्ध सितारों के बुर्ज लेते हैं जो आकाश के चारों ओर एक ही वृत में उपस्थित हैं एक का नाम जबार है दूसरे का सम्बुला तीसरे का अकरब (बिच्छू) चौथे का हूत (मछली) है यदि तुम रात को १२ बजे आकाश पर दक्षिण की ओर दृष्टि करो तो दिसम्बर के महीने में तो इन सितारों के बुर्जों में तुम को केवल जबार दिखाई देगा।

मार्च में सम्बुला जून में बिच्छू और सितम्बर में हूत यानी मछली यदि दूसरे वर्ष दिसम्बर में फिर देखोगे तो फिर वही जबार दिखाई देगा। अब ज़रा देखो कि इस बात से क्या सिद्ध होता है। तुम जानते हो कि आधी रात के समय सूर्य हम से पृथ्वी की दूसरी ओर पर होता है। इसलिये जब हम दिसम्बर में अर्द्ध रात्रि को जबार को देखते हैं उस समय सूर्य पृथ्वी की दूसरी ओर पर होना चाहिये। अब जो चित्र नीचे खींचते हैं उसको देखो॥
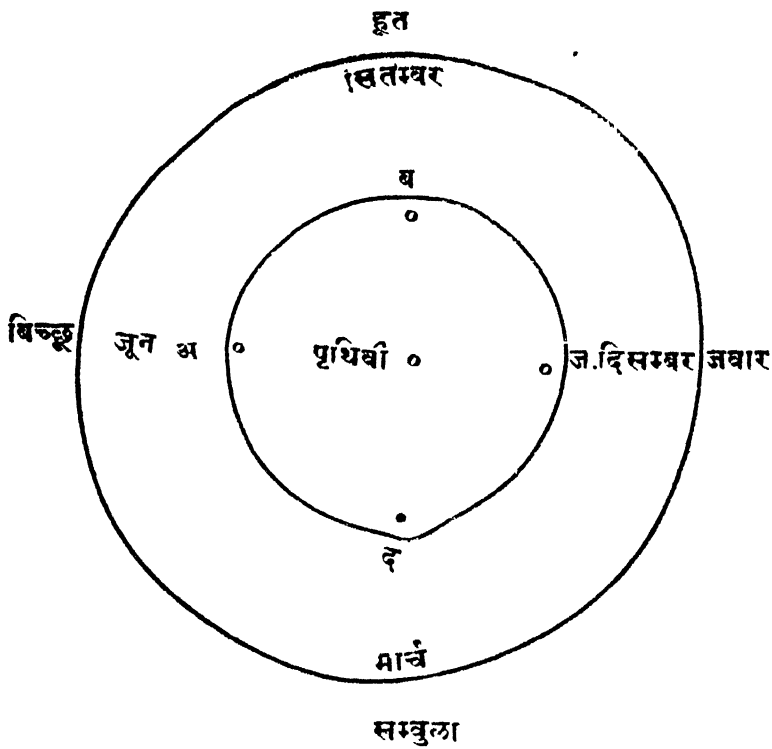
इस में पृथ्वी केन्द्र में है और जहां जवार का स्थान है सूर्य्य उसके सन्मुख की ओर होना चाहिये। इस लिये सूर्य्य का स्थान अक्षर अ, पर जो छोटे वृत में लिखा है होना चाहिये और मार्च के महीने में आधीरात को हमें सम्बुला जहां दिखाई देगा उस समय सूर्य्य अवश्य पृथिवी के दूसरी ओर होगा। जहां नुक्ता शून्य व है। इसी प्रकार जून के मास में शून्य, ज, पर और सितम्बर के मास में द, पर होगा अर्थात सूर्य्य प्रथम, अ, पर फिर ब, ज, द, पर आता है। और इस के पश्चात् फिर घूमना आरम्भ करता है। परन्तु वास्तव में यह सूर्य्य की प्रदक्षिणा नहीं है, मगर जाहिर में ऐसा ही मालूम होता है। यदि सूर्य्य को केन्द्र में स्थिर करके पृथ्वी को उस के चारों ओर घूमता हुआ मान लें तो भी इन बातों में कोई अन्तर नहीं होता जैसे:—
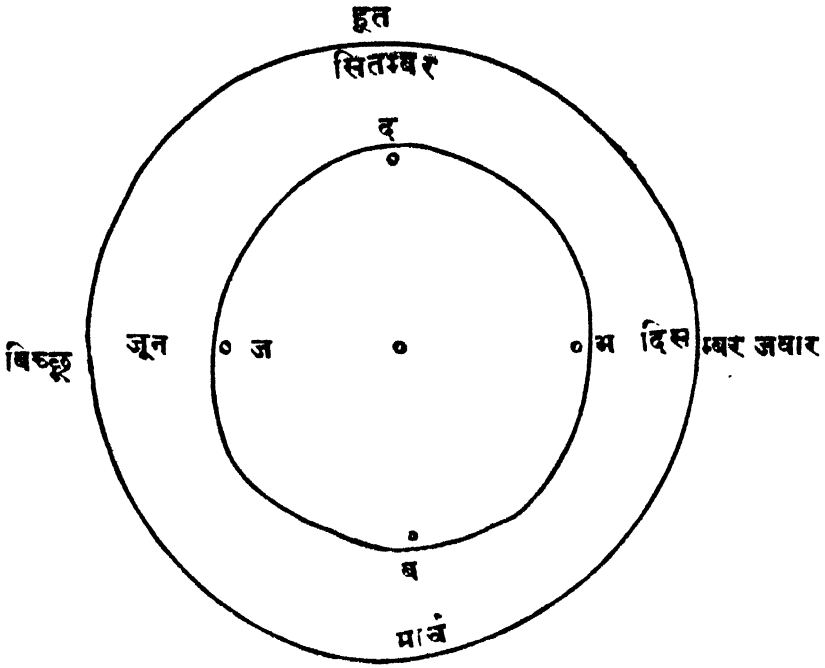
यदि शरद् ऋतु बड़े दिन के निकट पृथ्वी को अ स्थान पर समझो तो पृथ्वी के एक ओर सूर्य्य होगा तो दूसरी ओर जवार होगा और वसन्त ऋतु में पृथ्वी स्थान ब पर होगी तो पृथ्वी के एक ओर सम्बुला बुर्ज होगा दूसरी ओर सूर्य्य व इसी प्रकार से इस लिये चाहे पृथ्वी को स्थिर मानों चाहे सूर्य्य को हिसाब में कोई अन्तर नहीं आता, ज्योतिष विद्या का कर्ता तो यहां तक लिखता है कि अब इन दोनों में से किस किस को ठीक जाने किस को गलत—

ता०—१०—८—१७

शादीराम आर्य्य पानीपत

घर बैठे संस्कृत सीखलो—यदि आप बिना किसी की सहायता के घर बैठे संस्कृत सीखना चाहते हैं, तो संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० सातवलेकर जी की बनाई हुई पुस्तक "संस्कृत का स्वयं शिक्षक" मंगवा कर पढ़ें, इस से दो मास में संस्कृत आजाती है मूल्य भाग पहिला १।) भाग दूसरा १।)

मिलने का पता:—

राजपाल मैनेजर आर्य्य–पुस्तकालय,

अनारकली लाहौर।

आर्य्य और ईस्वी महीनों की तुलना।

पाठकगण ! इस लेखद्वारा हम युरोपीय (ईसाई) तथा पंचांगों की तुलना करना चाहते हैं, और यह दिखाना चाहते हैं, कि आर्य्य पंचांग में कुछ विशेषता है। दृष्टान्त के लिए हम पहिले महीनों के नाम लेते हैं और यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे कि युरोपीय तथा आर्य्य पंचांग में बारह महीनों के प्रचलित नाम क्या हैं, उनके शब्दार्थ क्या हैं।

युरोपीय महीनों के नाम।

जनवरी (January)—यह वर्षका प्रथम मास (Astronomy) ज्योतिष। है जिसे रोमनिवासियों ने एक देवता जेनस को समर्पित किया और उसके नाम पर महीने का नाम रखा। उनका विश्वास था, कि इस देवता के दो शीर्ष थे, इसलिए यह दोनों ओर (आगे, पीछे) देख सक्ता था। यह देव आरम्भ देव था जिसको प्रत्येक काम के आरम्भ में मनाया जाता था। चूंकि जनवरी वर्ष का प्रथम मास है इसलिए इसका नाम जेनसदेव के नाम पर रखा गया।

फर्वरी (February)—प्रायश्चित का महीना।

मार्च (March)—लड़ाई के देवता 'मार्स' के नाम पर रखा गया।

अप्रैल (April)—वह महीना जब पृथ्वी से नये २ पत्ते, कलियां और फलफूल उत्पन्न होते हैं। यह नाम उस महीने की ऋतु का द्योतक है।

मई (May)—यह महीना प्रारम्भिक भाग। भावार्थ यह है कि इस मास में ऋतु ऐसी शोभायमान होती है जैसे नवयुक तथा नवयुवतियां।

जून (June)—छठा महीना जो आरम्भ में केवल २६ दिन का होता था। इसके नामका शब्दार्थ छोटा महीना है। महाराज जूलियस सीज़र के समय से ३० दिन का मानने लगे हैं।

जौलाई (July)—जूलियस सीज़र के नाम पर, जो इस महीने में पैदा हुआ था यह नाम रखा गया।

अगस्त (August)—महाराज अगस्टस सीज़र के नामपर यह नाम रखा गया। चूंकि जूलियस सीज़र के नाम पर रखा जाने वाला जौलाई का महीना ३१ दिनका होता था और है, इसलिए अगस्टस सीज़र ने अगस्त का महीना भी उतने ही अर्थात् ३१ दिन का रखा। और यह महीना ३१ दिनका चला आता है।

सितम्बर (September)—शब्दार्थ सातवां महीना क्योंकि रोमनिवासी अपना वर्ष मार्च से प्रारम्भ करते थे।

अक्तूबर (October)—शब्दार्थ आठवां महीना। रोमनिवासियों के अनुसार आठवां महीना।

नवम्बर (November)—शब्दार्थ, नवां महीना। रोमनिवासियों के अनुसार नवां महीना।

दिसम्बर (December)—शब्दार्थ, दसवां महीना। रोमनिवासियोंके अनुसार दसवां महीना।

ऊपर दिये हुए शब्दार्थों से ज्ञात होगा कि अंग्रेजी महीनों में कुछ के नाम देवताओं के नाम पर, कुछ के ऋतु के अनु-

सार, कुछ के महाराजों के नाम पर और शेष के क्रम के अनुसार नाम रखे गये हैं।

आर्य्य महीनों के नाम।

महीनों के नामों के शब्दार्थ समझने से पहले, हमें कुछ ज्योतिष के सिद्धान्त समझ लेने चाहियें, क्योंकि इनके बिना शब्दार्थ समझ में न आवेंगे।

१. आर्य्य ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक अंडाकार वृत्त में ३६५-२४ दिन में घूमती है। यह अंडाकार मार्ग बारह भागों में विभाजित है, और उन १२ भागों के नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, हैं। इन १२ भागों के नाम भी, जो १२ राशियों के नाम से विख्यात है, ज्योतिष की एक विशेष बात बतलाते हैं। इस अवसर पर उसके सविस्तार वर्णन से लेख लंबा हो जायगा।

२. यदि हम सूर्य और पृथ्वी की सापेक्षगति को (relative motion) समझ लें तो विदित हो जायगा कि पृथ्वी को स्थिर मानकर, सूर्य को पृथिवी के चारों ओर घूमता मान लें तो भी वही दृश्य दीखेंगे जो सूर्य को स्थिर और पृथ्वी को घूमता हुआ मानकर वास्तव मे होते हैं। इसका साधारण दृष्टान्त यह है कि यदि किसी रेलवे स्टेशन पर दो रेलगाड़ी खड़ी हों और उनमें से एक चलना आरम्भ करदे तो प्रत्येक गाड़ी के मुसाफिरों को दूसरी गाड़ी चलती दीख पड़ेगी। इसी सिद्धान्त के आधार पर शास्त्रकारों ने—यद्यपि वह मानते हैं, कि सूर्य के चारों ओर घूमती है—सरलता के लिए पृथ्वी को स्थिर और सूर्य्य को उसके चहुं ओर घूमता हुआ मानकर गणना की है परन्तु आर्य्य ज्योतिष-शास्त्र से अनभिज्ञता के कारण सर्वसाधारण यह मान बैठे हैं कि वास्तव में सूर्य ही घूमता है और पृथ्वी नहीं।

यदि पृथ्वी घूमते घूमते अपने मार्ग के किसी विशेष भाग कन्या में होती है तो पृथ्वी आज कन्या नाम के भाग अथवा कन्या राशि में है यह कहने के स्थान में हम कहते है कि सूर्य आज कन्या राशि के हैं अथवा आजकल कन्या की संक्रांति वर्त्तमान हैं। सं० २ वर्ष में यही बारह महीनों के नाम पड़े हैं।

३. जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक अंडाकार वृत्त में घूमती है, ठीक उसी प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर एक अंडाकार वृत्त में २७ दिन ८ घंटे में घूम आता है। इसका मार्ग २७ भागों में विभाजित है और प्रत्येक भाग को नक्षत्र कहते हैं। २७ नक्षत्रों के नाम यह हैं :—

१. अश्विनी, २. भरणी, ३. कृत्तिका, ४. रोहणी, ५. मृगशीर, ६. आर्द्रा, ७. पुनर्वसु, ८. पुष्य, ९. अश्लेषा, १०. मघा, ११. पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३. हस्त, १४. चित्रा, १५. स्वाति, १६. विशाषा १७. अनुराधा, १८. ज्येष्ठा, १९. मूल, २०. पूर्वाषाढ, २१. उत्तराषाढ, २२. श्रावण, २३. धनिष्ठा, २४. शतिषा, २५. पूर्वाभाद्रपद, २६. उत्तराभाद्रपद, २७. रेवती।

आज स्वाति नक्षत्र है इसका अभिप्राय यह है कि आज चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर के मार्ग के स्वाति नामक भाग में है।

४. हम पृथ्वी पर रहने वाले हैं, पृथ्वी के साथ २ घूमते हैं। इस कारण हमको पृथ्वी स्थिर प्रतीत होती है और सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों घूमते दीख पड़ते हैं।

५. जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी होती है तो चन्द्रमा का वह अर्ध भाग जिस पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है पृथ्वी की ओर होता है। इसी कारण ऐसी अवस्था में चन्द्रमा सम्पूर्ण प्रकाशवान् दीखता है। अतः पूर्णमासी को जब चन्द्रमा पूर्ण प्रकाशित होता है, चन्द्रमा और सूर्य पृथ्वी के दोनों ओर उलटी दिशा में होते हैं।

आर्य्य महीनों के नाम नक्षत्रों के नाम पर रखे गये हैं। पूर्णमासी को जैसा नक्षत्र होता है उस महीने का नाम उसी नक्षत्र पर रखा गया है, क्योंकि पूर्णिमा को सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी के दोनों ओर उलटी दिशा में होते हैं। ॐ

१२ नक्षत्रों के नाम नक्षत्रानुसार इस प्रकार हैं:—

महीना	नक्षत्र	महीना	नक्षत्र
१ चैत्र	चित्रा	७ आश्विन	अश्वनी
२ वैशाख	विशाखा	८ कार्त्तिक	कृत्तिका
३ ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	९ मार्गशिर	मृगशिरा
४ असाढ़	पूर्वाषाढ़	१० पौष	पुष्य
५ श्रावण	श्रवण	११ माघ	मघा
६ भाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	१२ फाल्गुन	उत्तरा फाल्गुनी

ॐ इसमें सूर्य सिद्धान्त प्रमाण है।

भचक्रं भ्रमणं नित्यं नाक्षत्रं दिनमुच्यते।
नक्षत्र नाम्ना मासास्तु ज्ञेयाः पर्वान्त योगतः।

अर्थात् दैनिक भचक्र का भ्रमण करना ही नाक्षत्रिक दिन है।

पूर्णिमान्ताधिष्ठित नक्षत्र के नाम से मास का नाम जानना चाहिये।

सर डबल्यू जोन्स की (Sir W. Jones) यह भी सम्मति है, कि आर्य्यों के महीनों के नाम इत्यादि से पूरा पता लगता है, कि आर्य्य ज्योतिष अत्यन्त पुरानी है। आर्य्यों में प्राचीन काल में वर्ष पौष मास से प्रारम्भ होता था जब दिन अत्यंत छोटा और रात अत्यन्त बड़ी होती है। इसी कारण मार्गशिर मास का द्वितीय नाम का अग्रहनय था, जिसका अर्थ यह है, कि वह महीना जो वर्ष आरम्भ होने से पहले हो।

पाठकगण! आपने अंग्रेज़ी और आर्य्य महीनों के नामों की कहानी सुनी इस विवरण से विदित हो जायगा कि एक और जहां अंग्रेज़ी महीनों के नाम देवता, महाराजा ऋतु इत्यादि के अनुसार रखे गये हैं, दूसरी ओर आर्य्य महीनों के नाम वैज्ञानिक रीति से रखे गये हैं, जिन के केवल नाम-मात्र से ज्योतिष के बड़े सिद्धान्तों का पता चलता है। प्राचीन आर्य्य पुरुष ज्योतिष में अवश्य विशेष ज्ञान प्राप्त कर चुके थे और उनके ज्ञान के टूटे फूटे चिन्ह आज तक आर्य्य समाज में पाये जाते हैं। क्या अच्छा हो यदि हम प्राचीन आर्य्य सभ्यता का मान करें, और उसके बचे बचाये चिन्हों से उसका पता लगा कर समाज के सामने रखें जिससे देश का कल्याण हो।

अवकाश तिथि पत्र १९१८

* पञ्जाब प्रान्त *

नौरोज़	१ जनवरी	मंगल
लोहड़ी	१२ ,,	शनिश्चार
सोमावती अमावस	११ फरवरी	सोमवार
बसन्त पञ्चिमी	१५ ,,	शुक्रवार
शिव-रात्री	१२ मार्च	सोमवार
होली	२५ से २८ मार्च	सोमवार
स्टरहालडे	आज्ञा गवर्नमेंट	
वैसाखी	१२ अप्रैल	शनिवार
रामनौमी	१९ ,,	शुक्रवार
शब्बरात	१५ मई	शनिवार
सालगिरह कैसरहिन्द	३ जून	सोमवार
मेला भद्रकाली	५ जून	बुधवार
मेला जोली	१२ जून	बुधवार
निर्मला एकादशी	२० जून	वीरवार
जमातुल विदा	५ जुलाई	शुक्रवार
सोमावती अमावस	८ ,,	सोमवार
ईदुल्फितर	१० जुलाई	बुधवार
व्यास-पूजा	२३ ,,	मंगलवार
रखड़ी	२२ अगस्त	वीरवार
जन्माष्टमी	२९ ,,	वीरवार
ईदुज्जुहा	१६ सितम्बर	सोमवार
अनन्त चौदस	१९ सितम्बर	वीरवार
दुर्गा अष्टमी	१३ अक्तूबर	शनिवार
मुहर्रम	१३ से १६ अक्तू०	रवि से बुध
दशहरा	१४ अक्तूबर	सोमवार
दिवाली	३ नवम्बर	इतवार
भैया दोयज	५ ,,	मंगल
रहलत गुरुगोविन्दसिंह	९ ,,	शनिवार
लुकड़ी	१८ ,,	सोमवार
जन्म गुरुनानकदेवजी	१८ नवम्बर	सोमवार
आखिरी चहारशम्बा	४ दिसंबर	बुधवार
बड़ादिन	२५ से ३१ दिसम्बर	

अवकाश तिथि पत्र १९१८

संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध

नौरोज	१ जनवरी	मंगलवार
ग्यारहवींशरीफ	२५ ,,	शुक्रवार
मकर शंकरान्त	३१ ,,	रविवार
मौनी अमावस	११ फरवरी	सोमवार
बसन्त पञ्चिमी	१५ ,,	शुक्रवार
शिवरात्री	११ मार्च	सोमवार
होली	२५ से २७ मार्च	सोम० से बुध तक
आठ का मेला	३ अप्रैल	बुधवार
रामनौमी	१९ ,,	शुक्रवार
स्टरहालडे	आज्ञा गवर्नमेंट	
वफातशअलीमुर्तजा	२४ ,,	बुधवार
शबबरात	१५ मई	शनिवार
सालगिरहकैसरहिन्द	३ जून	सोमवार
जमातुलविदा	५ जुलाई	शुक्रवार
सोमावती अमावस	८ ,,	सोमवार
ईदुल्फितर	१० ,,	बुधवार
व्यास-पूजा	२३ ,,	मंगलवार
नागपञ्चमी	१२ अगस्त	सोमवार
रक्षा बन्धन	२२ ,,	बृहस्पति
श्रीकृष्णजन्म	२९ ,,	बृहस्पति
ईदुज्जुहा	१६ सितम्बर	मंगल
अनन्तचौदस	१८ ,,	बृहस्पति
तातील कलां	१६ सितम्बर वा १६ अक्टूबर	(१ माह)
,,	२१ सितम्बर ता २६ अक्टूबर	(१ माह)
भालिय अमावस	५ ,,	शनिवार
मुहर्रम	७ से १६ अक्तूबर	सोम से बुध
दुर्गाष्टमी	१३ ,,	रविवार
दशहरा	१४ ,,	
दिवाली	३ नवम्बर	
देवउत्थान	१४ ,,	बृहस्पति
काशी स्नान	१८ ,,	,,
आखरी चहार शम्बा	४ दिसम्बर	बुधवार
बड़ा दिन	२५ से ३१ दिसम्बर	

आर्य्यों के मुख्य त्योहार १९१८

नाम अवकाश	माह	दिन
दयानन्दबोध उत्सव	११ मार्च	सोमवार
वीरतीज पं० लेखराम	१५ ,,	शुक्रवार
स्थापना गुरुकुल	२५ ,,	सोमवार
बर्षी पं० गुरुदत्त	१० अप्रैल	बुधवार
श्रीरामजन्म	१९. अप्रैल	शनिवार
श्रीकृष्ण जन्म	२९. अगस्त	बृहस्पति
विजय दशमी	१४ अक्तूबर	सोमवार
ऋषि दयानन्द परलोक गमन	३ नवम्बर	रविवार

गुरुकुलों में मनाये जाने वाले त्योहार।

(१) आर्य्यसमाज की स्थापना का दिन	चैत शुदि ५
(१) रामजन्मदिन	,, ,, ९
(३) श्रावणी	सावण वदि १५
(४) जन्म अष्टमी	भाद्रपद वदि ८
(५) स्वामी विरजानन्द जी की मृत्यु का दिन	आश्विन वदि १३
(६) विजय दशमी	४ आश्विन सुदि स लेकर १० तक
(७) ऋषि उत्सव	कार्तिक वदि १४
(८) दयानन्दाब्द	,, सुदि १
(९) शङ्करान्त माघी	१ माघ
(१०) बसन्त पञ्चमी	माघ सुदि ५
(११) गुरुकुल जन्म उत्सव	फाल्गुण वदि १४
(१२) दीक्षा रात्री	,, ,, १०
(१३) वीर उत्सव	,, सुदि ३
(१४) गुरुदत्त जी की मृत्यु	चैत वदि १४
(१५) राजेश्वर का जन्म दिन	३ जून

त्योहारों के दिन गुरुकुलों को स्वसज्जित करके विशेष उत्सव मनाये जाते हैं भाषण होता है और पद्य सुनाये जाते हैं।

लाहौर की मुख्य छुट्टिया

होला मुहल्ला	२८ मार्च	वीरवार
मेला भद्रकाली	५ जून	बुधवार
मेला जोड़	१२ ,,	,,
उर्स दाता गंजबख्श	२५ नवम्बर	

आर्य्य डायरी १९१८

हिन्दी व उर्दू दोनों भाषाओं में इकट्ठी छापी गई है आर्य्य समाज के विषय में जितना जानकारी इस डायरी से आप को मिल सकती है और किसी से नहीं।

सुनहरी जिलद मूल्य ॥/)

राजपाल मैनेजर
आर्य्य पुस्तकालय
लाहौर।

फरवरी १९१८ आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ शालिवाहन १९३९

दयानन्दाब्द ३५ आर्य्य सं० १९७२९४९०१८

२८ दिन	फरवरी १९१८	रवि उत्त अयन १३३६	माघ १९७४	माघ व दि १९७४ तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नाम	घड़ी	पल	राशि चन्द्रमा नाम	घड़ी	पल	दिन मान घड़ी	पल	सूर्य्य का उदय घण्टा	मिनट	अस्त घण्टा	मिनट	पर्व तथा तारा चक्र
शु	१	१८	२०	५	२७	३	ह	४७	५८				२७	१	६	३६	५	२५	
श	२	१९	२१	६	३१	३३	चि	५३	१५	तुला	२०	२९	२७	४	६	३	५	२६	
र	३	२०	२२	७	३५	१४	स्वा	५७	२२				२७	८	६	३५	५	२६	
चं	४	२१	२३	८	३७	४२	वि	६०	०	वृश्चिक	४०	१८	२७	१२	६	३४	५	२६	
मं	५	२२	२४	९	३०	५६	अ	१	१८				२७	१५	६	३३	५	२६	
बु	६	२३	२५	१०	३८	५५	अ	५	१३				२७	१८	६	३२	५	[illegible]	
बृ	७	२४	२६	११	३७	३५	ज्ये	५	९	धन	४	८	२७	२२	६	३	५	[illegible]	
शु	८	२५	२७	१२	३०	६	मू	३	४०				२७	२६	६	३०	५	२९	
श	९	२६	२८	१३	३१	४	पू	०		मकर	१६	५०	२७	२८	६	३१	५	२९	
र	१०	२७	२९	१४	२७	१५	उ	१३	२१				२७	३१	६	३०	५	३०	
चं	११	२८	३०	अम	२७	८	श्र	४९	१८	कुम्भ	२५	१६	२७	३५	६	३०	५	३१	सोमावती [अमावस्या
मं	१२	२९	फा	मशु १	१६	३६	श	४५	३७	मीन	३१	३१	२७	३८	६	२९	५	३	
बु	१३	जअ	२	२	१०	५१	पू	४१	४८				२७	३१	६	२९	५	३२	
बृ	१४	२	३	३	५	०	उ	३८	३७	मेष	३७	३८	२७	४५	६	२८	५	३३	
शु	१५	३	४	४	५३	५२	रे	३४	१८				२७	४८	६	५	५	३४	वसन्त पंचमी
श	१६	४	५	५	४८	४१	अ	३८	२९				२७	५२	६	२६	५	३४	
र	१७	५	६	६	४५	३६	भ	२९	२५	वृष	३५	५९	२७	५५	६	२६	५	३५	
चं	१८	६	७	७	४१	४२	कृ	२८	२८				२७	५८	६	२५	५	३६	
मं	१९	७	८	८	३८	५०	रो	२८	४२	मिथुन	५८	३५	२८	१	६	२५	५	३६	
बु	२०	८	९	९	३	३६	मृ	३०	६				२८	८	६	२४	५	३७	
बृ	२१	९	१०	१०	३७	३७	आ	३२	४२				२८	९	६	२४	५	३८	
शु	२२	१०	११	११	३०	०	पु	३६	३४	कर्क	१७	२	२८	१३	६	२३	५	३९	
श	२३	११	१२	१२	४१	३१	पु	४१	१७				२८	१७	६	२२	५	३९	
र	२४	१२	१३	१३	४९	५७	श्ले	४७	१८	सिंह	४१	२२	२८	२१	६	२१	५	४०	
चं	२५	१३	१४	१४	५२	५८	म	५३	३१				२८	२०	६	२१	५	४१	
मं	२६	१४	१५	पू०	६१	०	पू	५०	१८				२८	२९	६	२०	५	४२	
बु	२७	१५	१६	१	०	०	उ	०	०	कन्या	११	८	२८	३३	६	९	५	४३	
बृ	२८	१६	१७	२	०	५	ह		६२				२८	२७	६	१८	५	४४	

मार्च १९१८ | आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ | शालिवाहन १८३९

दयानन्दाब्द ३४ | आर्य्य सं० १९७२९४९०१९

३१ दिन	मार्च १९१८	जमादिउल अ. १३३६	फाल्गुण १९७४	फाल्गुण वदि १९७४			नक्षत्र			राशी चन्द्रमा			दिनमान		सूर्य्य का उदय		सूर्य्य का अस्त		पर्व तथा तारा चक्र
				तिथि	घड़ी	पल	नाम	घड़ी	पल	नाम	घड़ी	पल	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
शु	१	१७	१८	३	५	८	ह	६	४३	तुला			२८	४१	६	१६	५	४४	
श	२	१८	१९	४	९	३६	चि	१२	५४		३९	९	२८	४५	६	१५	५	४५	
र	३	१९	२०	५	१३	८	स्वा	१६	३६				२८	४९	६	१४	५	४६	
सो	४	२०	२१	६	१५	३९	त्रि	२०	१९	वृश्चिक	४	२	२८	५३	६	१३	५	४७	
मं	५	२१	२२	७	१६	३८	अ	२२	४४				२८	५७	६	१३	५	४७	
बु	६	२२	२३	८	१६	३९	ज्ये	२४	०	धन	०	४४	२९	१	६	१३	५	४७	
बृ	७	२३	२४	९	१५	२	मू	२४	२				२९	५	६	१२	५	४८	
शु	८	२४	२५	१०	२२	२२	पू	२२	४८	मकर	३७	१६	२९	९	६	११	५	४९	
श	९	२५	२६	११	८	४९	उ	२०	३८				२९	१३	६	१०	५	५०	
र	१०	२६	२७	१२	४	१५	श्र	१७	४७	कुम्भ	४६	३	२९	१७	६	९	५	५१	
सो	११	२७	२८	१४	५३	२८	ध	१४	१९				२९	२१	६	९	५	५१	
मं	१२	२८	२९	अ	४७	३९	श	१०	२५	मीन	५२	२१	२९	२६	६	८	५	५२	शिवरात्रि दयानन्द बोध उत्सव
बु	१३	२९	च.	शु	४१	३४	पू	९	२०				२१	३०	६	७	५	५३	
बृ	१४	३०	२	२	३५	५१	उ	२	१३	मेष	५८	२२	२९	३४	६	६	५	५४	
शु	१५	ज.	३	३	३०	३०	रे	५४	५५				२९	३८	६	५	५	५५	वीर तीज लेखराम
श	१६	२	४	४	२७	२७	अ	५२	२				२९	४२	६	४	५	५६	
र	१७	३	५	५	२१	११	भ	४९	५१	वृष	६	२९	२९	४६	६	३	५	५६	
सो	१८	४	६	६	१७	३६	कृ	४८	३२				२९	५०	६	२	५	५७	
म	१९	५	७	७	१५	३५	रो	४८	३२	मिथुन	१८	३२	२९	५४	६	१	५	५८	
बु	२०	६	८	८	१४	१	मृ	४९	३७				२९	५८	६	०	६	५९	
बृ	२१	७	९	९	१४	६	आ	५१	५६	कर्क	३६	२७	३०	१	५	०	६	०	दिन रात बराबर
शु	२२	८	१०	१०	१५	३१	पु	५५	४५				३०	५	५	५४	६	१	
श	२३	९	११	११	१८	९	पु	६०	०				३०	९	५	५८	६	२	
र	२४	१०	१२	१२	२१	५२	श्ले	०	१६	सिंह	०	१६	३०	१३	५	५७	६	३	
सो	२५	११	१३	१३	२६	२४	म	५	५४				३०	१७	५	५७	६	३	गुरुकुल का जन्म
मं	२६	१२	१४	१४	२५	२७	पू	१२	११	कन्या	२८	४७	३०	२१	५	५६	६	४	
बु	२७	१३	१५	पू	३६	२१	उ	१८	३३				३०	२५	५	५५	६	५	होली समाप्त
बृ	२८	१४	१६	वै	४१	१६	ह	२४	५३	तुला	५६	११	३०	२८	५	५४	६	६	
शु	२९	१५	१७	२	४५	४७	चि	२७	२९				३०	३२	५	५४	६	६	
श	३०	१६	१८	३	४९	६	स्वा	३०	४१				३०	३६	५	५३	६	७	
र	३१	१७	१९	४	५१	२९	वि	३९	३६	वृश्चिक	२३	२७	३०	४०	५	५२	६	८	

अप्रैल १९१८ आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ शालिवाहन १८४०

दयानन्दाब्द ३४ आर्य्य सं० १९७२९४९०१९

३० दिन	अप्रैल १९१८	जमादिउल सफर १३३६	[illegible] १९७४	चैत्र वदि १९७४ तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नाम	घड़ी	पल	राशी चन्द्रमा नाम	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	सूर्य्य का उदय घण्टा	मिनट	अस्त घण्टा	मिनट	पर्व तथा तारा चक्र
सो	१	१८	२०	५	५२	२०	अ	४३	१२				३०	४४	५	५१	६	९	
मं	२	१९	२१	६	५२	३	ज्ये	४३	५०	धन	४३	५०	३०	४८	५	५०	६	१०	
बु	३	२०	२२	७	५०	२९	मू	४४	७				३०	५२	५	५०	६	१०	
बृ	४	२१	२३	८	४७	४४	पू	४३	१०	मकर	५७	४१	३०	५६	५	४९	६	११	
शु	५	२२	२४	९	४४	२	उ	४१	१४				३१		५	४८	६	१२	
श	६	२३	२५	१०	३९	४४	श्र	३८	२९				३१	४	५	४७	६	१३	
र	७	२४	२६	११	३४	८	ध	३५	८	कुम्भ	६	४८	३१	८	५	४६	६	१३	
सो	८	२५	२७	१२	२८	२१	श	३१	१८				३१	१२	५	४५	६	१४	
मं	९	२६	२८	१३	२२	३१	पू	२७	१८	मीन	१३	१८	३१	१६	५	४५	६	१५	
बु	१०	२७	२९	१४	१६	३३	उ	२३	१२				३१	२०	५	४४	६	१६	वर्षा पं० गुरुदत्तजी
बृ	११	२८	३०	अ	१०	४१	रे	१९	१५	मेष	१९	१५	३१	२४	५	४३	६	१७	
शु	१२	२९	३१	२	५३	५९	अ	१५	४२				३१	२८	५	४२	६	१८	
श	१३	र	वै	३	५५	४१	भ	१२	३७	वृष	२७	२	३१	३२	५	४२	६	१८	वैसाखी
र	१४	२	२	४	५२	१५	कृ	१०	१५				३१	३६	५	४१	६	१९	
सो	१५	३	३	५	४९	४८	रो	८	५७	मिथुन	३८	३५	३१	४०	५	४०	६	२०	
मं	१६	४	४	६	४८	२५	मृ	८	२४				३१	४४	५	३९	६	२१	
बु	१७	५	५	७	४८	२२	आ	९	२८	कर्क	५५	५९	३१	४८	५	३८	६	२२	
बृ	१८	६	६	८	४९	३४	पु	११	२९				३१	५१	५	३८	६	२२	
शु	१९	७	७	९	५२	५	पु	१४	५८				३१	५५	५	३७	६	२३	श्रीरामजन्म
श	२०	८	८	१०	५५	५३	श्ले	१९	१४	सिंह	१९	१४	३१	५८	५	३६	६	२४	
र	२१	९	९	११	६		म	२४	३८				३२	२	५	३६	६	२४	
सो	२२	१०	१०	१२		१४	पू	३०	४७	कन्या	५७	२४	३२	६	५	३५	६	२५	
मं	२३	११	११	१२		४	उ	३७	१४				३२	[illegible]	५	३४	६	२६	
बु	२४	१२	१२	१३	१०	६	ह	४३	३७				३२	१२	५	३४	६	२६	
बृ	२५	१३	१३	१४	१४	५९	चि	४९	३५	तुला	१६	३६	३२	१५	५	३३	६	२७	
शु	२६	१४	१४	पू	१९	१०	स्वा	५४	४५				३२	१८	५	३२	६	२८	
श	२७	१५	१५	वै	२२	३१	वि	५८	५९	वृश्चिक	४२	५६	३२	२२	५	३२	६	२८	
र	२८	१६	१६	२	२४	२८	अ	५०					३२	२५	५	३१	६	२९	
सो	२९	१७	१७	३	२५	४५	ज्ये	२	२				३२	२८	५	३०	६	३०	
मं	३०	१८	१८	४	२५	१५	मू	३	४८	धन	३	४८	३२	३१	५	३०	६	३०	

मई १९१८ | आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ | शालिवाहन १९४०

दयानन्दाब्द ३४ | आर्य्य सं० १९७२९४९०१९

दिन	मई १९१८ ई०	रज्जब १३३६	वैशाख सम्वत् १९७५	वैशाखवदि १९७५ तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नाम	घड़ी	पल	राशि चन्द्रमा नाम	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	सूर्य्य का उदय घण्टा	मिनट	अस्त घण्टा	मिनट	पर्व तथा तारा चक्र
बु	१	१९	१९	५	२३	३९	मू	४	२१				३२	३४	५	२९	६	३१	
बृ	२	२०	२०	६	२०	५५	पू	३	४७	मकर	१८	२०	३२	३७	५	२९	६	३१	
शु	३	२१	२१	७	१७	१३	उ	१	५७				३२	४०	५	२८	६	३२	
श	४	२२	२२	८	१२	२७	श्र	५६	४२	कुम्भ	२८	११	३२	४३	५	२७	६	३३	
र	५	२३	२३	९	७	५	ध	५२	३१				३२	४६	५	२७	६	३३	
चं	६	२४	२४	१०	८	५	श	४८	१७	मीन	३४	१८	३२	४९	५	२६	६	३४	
मं	७	२५	२५	१२	४५	१९	पू	४४	२८				३२	५२	५	२६	६	३४	
बु	८	२६	२६	१३	४१	२८	उ	४०	२१	मेष	४०	२८	३२	५५	५	२५	६	३५	
बृ	९	२७	२७	१४	३६	४३	रे	३६	४६				३२	५८	५	२४	६	३६	
शु	१०	२८	२८	अ	३२	३४	अ	३३	२७	वृष	४९	४९	३३	१	५	२४	६	३६	
श	११	२९	२९	शु	२८	७	भ	३०	५६				३३	४	५	२३	६	३७	
र	१२	नव	३०	२	२४	२१	कृ	२९	१८	मिथुन	५८	१९	३३	७	५	२३	६	३७	
चं	१३	२	३१	३	२१	५४	रो	२८	४०				३३	१०	५	२२	६	३८	
मं	१४	३	ज्ये	४	२०	३४	मृ	२९	१४				३३	१३	५	२१	६	३९	
बु	१५	४	२	५	२०	२६	आ	३०	१९	कर्क	१५	३१	३३	१६	५	२१	६	३९	शबरात
बृ	१६	५	३	६	२८	२७	पु	३३	१६				३३	२०	५	२०	६	४०	
शु	१७	६	४	७	२३	४७	पु	३८	१५	सिंह	३८	१५	३३	२३	५	१९	६	४१	
श	१८	७	५	८	२७	१६	श्ले	४३	२४				३३	२६	५	१९	६	४१	
र	१९	८	६	९	३१	४७	म	४९	२३				३३	२८	५	१८	६	४२	
चं	२०	९	७	१०	३६	२८	पू	५५	४१	कन्या	५	५९	३३	३०	५	१८	६	४२	
मं	२१	१०	८	११	४१	२३	उ	६०	०				३३	३२	५	१८	६	४२	
बु	२२	११	९	१२	४६	२८	ह	२	१३	तुला	२५	१५	३३	३५	५	१७	६	४३	
बृ	२३	१२	१०	१३	५०	२२	चि	८	१७				३३	३७	५	१७	६	४३	
शु	२४	१३	११	१४	५३	३७	स्वा	१३	३४				३३	३९	५	१६	६	४४	
श	२५	१४	१२	पू०	५५	४६	वि	१८	३	वृश्चिक	१	११	३३	४१	५	१६	६	४४	
र	२६	१५	१३	ज्य	५६	४७	अ	२१	२५				३३	४२	५	१६	६	४४	
चं	२७	१६	१४	२	५६	२२	ज्ये	२३	२५	धन	२३	२५	३३	४४	५	१५	६	४५	
मं	२८	१७	१५	३	५४	३३	मू	२४	१६				३३	४५	५	१५	६	४५	
बु	२९	१०	१६	४	५१	५३	पू	२४	०	मकर	३८	३६	३३	४६	५	१५	६	४५	
बृ	३०	१९	१७	५	४८	०६	उ	२२	२०				३३	४७	५	१५	६	४५	
शु	[illegible]	२०	१८	६	४३	२९	श्र	२०	२	कुम्भ	४८	२८	३३	४८	५	१४	६	४६	

जून १९१८   आर्य्य जन्त्री सन् १९१८   शालिवाहन १८४०

दयानन्दाब्द ३४   आर्य्य सं० १९७२९४९०१२

३० दिन	जून सन् १९१८ ई०	शाबान १३३६ हिजरी	जेठ सम्वत १९७५	जेष्ठ वदि सम्वत् १९७५			नक्षत्र			राशि चन्द्रमा			दिन-मान		सूर्य्य का उदय		सूर्य्य का अस्त		पर्व तथा तारा चक्र
				तिथि	घ०	पल	नाम	घड़ी	पल	नाम	घड़ी	पल	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
शा	१	२१	१९	७	३८	४	घ	१६	२४				३२	५०	५	१४	६	४६	
र	२	२२	२०	८	३२	१६	श	२४	७	मीन	१५	३३	३३	११	५	१४	६	४६	
सो	३	२३	२१	९	२६	१४	पू	८	२२				३३	२२	५	१४	६	४६	सालगिरह कैसर
मं	४	२४	२२	१०	२०	११	उ	५	२८				३३	५३	५	१३	६	४७	
बु	५	२५	२३	११	१४	८	रे	६	१०	मेष		७	३३	५५	५	१३	६	४७	मेला भद्रकाली
बृ	६	२६	२४	१३	८	१४	अ	६	१३				३३	५६	५	१३	६	४७	
शु	७	२७	२५	१४	३	१	भ	५३	८	वृष	८	२०	३३	५७	५	१२	६	४८	
श	८	२८	२६	अ	५७	१६	कृ	५१	२७				३३	५८	५	१२	६	४८	
र	९	२९	२७	जे	५४	१५	रो	४९	३२	मिथुन	२	४	३४	०	५	१२	६	४८	
सो	१०	३०	२८	२	५१	८	मृ	४८	२०				३४	१	५	१२	६	४८	
मं	११	रम	२९	३	१०	३०	आ	३८	१७	कर्क	२	५८	३४	२	५	१२	६	४८	पहिला रोज़ा
बु	१२	२	३०	४	१०	११	पु	१०	२०				३४	३	५	११	६	४९	
बृ	१३	३	३१	५	११	१४	पु	१५	७	सिंह	१७	३	३४	४	५	११	६	४९	
शु	१४	४	अ	६	३३	१७	श्ले	२७	३				३४	५	५	११	६	४९	
श	१५	५	२	७	२६	२८	म	२	५०				३४	६	५	११	६	४९	
र	१६	६	३	८	६०	०	पू	७	१०	कन्या	२४	२५	३४	७	५	१०	६	५०	
सो	१७	७	४	८	१	३	उ	१४	८				३४	१०	५	१०	६	५०	
मं	१८	८	५	[illegible]	५	४२	ह	१४	८	तुला	५३	३९	३४	११	५	१०	६	५०	
बु	१९	९	६	१०	१०	३८	चि	२६	३६				३४	१२	५	९	६	५०	
बृ	२०	१०	७	११	१५	५०	स्वा	२६	४२				३४	१३	५	९	६	५१	निर्जला एकादशी
शु	२१	११	८	१२	१९	३०	वि	३१	३६	वृश्चिक	२०	४८	३४	१५	५	९	६	५१	
श	२२	१२	९	१३	२२	४६	अ	३७	१२				३४	१६	५	९	६	५१	
र	२३	१३	१०	१४	२४	१०	ज्येष्ठा	४०	३८	धन	५२	१४	३४	१५	५	९	६	५१	
सो	२४	१४	११	पू	२४	१०	मू	४२	१४				३४	१३	५	१०	६	५१	
मं	२५	१५	१२	अ	२५	३७	पू	४४	०	मकर	५८	४६	३४	१०	५	१०	६	५२	
बु	२६	१६	१३	२	२५	३९	उ	४४	९				३४	१२	५	१०	६	५०	
बृ	२७	१७	१४	३	२१	१९	श्र	४२	३८				३४	१०	५	१०	६	५२	
शु	२८	१८	१५	४	७	३२	ध	३०	२३	कुम्भ	८	५६	३४	९	५	१०	६	५०	
श	२९	१९	१६	५	१२	५५	श	३६	२९				३४	८	५	१०	६	५०	
र	३०	२०	१७	६	७	३६	पू	३४	०	मीन	१६	२	३४	६	५	११	६	४९	
						५४		३०	२				३४	५	५	११	६	४९	

सितम्बर सन् १९१८ | आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ | शालिवाहन १९४०

दयानन्दाब्द ३४ | आर्य्य सं० १९७२९४९०१९

३० दिन	सितम्बर १९१८ ई०	ज़िलकाद १३३६ हिजरी	भाद्रपद संवत १९७५	भाद्रपद वदि सम्बत् १९७५			नक्षत्र			राशि चन्द्रमा			दिनमान		सूर्य्य का उदय		सूर्य्य का अस्त		पर्व तथा तारा चक्र
				तिथि	घड़ी	पल	नाम	घड़ी	पल	नाम	घड़ी	पल	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
र	१	२४	१७	११	१८	४	पु	४७	५	कर्क	३२	०	३१	२८	५	४२	६	१८	
चं	२	२५	१८	१२	१७	२१	पु	४७	८				३१	२४	५	४३	६	१७	
मं	३	२६	१९	१३	१८	३१	श्ले	५२	४	सिंह	५२	४	३१	२०	५	४४	६	१६	
बु	४	२७	२०	१४	२०	३१	म	५६	२२				३१	१६	५	४५	६	१५	
बृ	५	२८	२१	अ.	२३	३९	पू	६०	०				३१	१२	५	४६	६	१४	
शु	६	२९	२२	शु	२७	५३	,,	१	४३	कन्या	१८	१५	३१	९	५	४६	६	१४	
श	७	ज़ि.	२३	२	३२	३७	उ	७	३५				३१	५	५	४७	६	१३	
र	८	२	२४	३	३६	३५	ह	१३	५५	तुला	४६	५७	३१	१	५	४८	६	१२	
चं	९	३	२५	४	४२	२८	चि	१९	५९				३०	५८	५	४८	६	१२	
मं	१०	४	२६	५	४६	४८	स्वा	२६	१६				३०	५४	५	४९	६	११	
बु	११	५	२७	६	५०	३०	वि	३१	३०	वृश्चिक	५	१२	३०	५०	५	५०	६	१०	
बृ	१२	६	२८	७	५२	५१	अ	३५	५४				३०	४६	५	५१	६	९	
शु	१३	७	२९	८	५४	७	ज्ये	३८	०	धन	३८	०	३०	४२	५	५२	६	८	
श	१४	८	३०	९	५४	६	मू	४०	५०				३०	३८	५	५२	६	८	
र	[illegible]	९	३	१०	५२	४७	पू	४१	४१	मकर	५६	३८	३०	३४	५	५३	६	७	तातील १ माह
चं	१६	१०	आ	११	५०	१३	उ	४१	१२				३०	३०	५	५४	६	६	
मं	१७	११	२	१२	४६	४२	श्र	३९	२९				३०	२६	५	५५	६	५	
बु	१८	१२	३	१३	४०	३९	ध	३६	४७	कुम्भ	८	८	३०	२२	५	५६	६	४	
बृ	१९	१३	४	१४	३७	१४	श	३३	१०				३०	१८	५	५६	६	४	
शु	२०	१४	५	पू	३१	३७	पू	३०	१२	मीन	१६	७	३०	१४	५	५७	६	३	
श	२१	१५	६	आ	२५	५२	उ	२६	८				३०	१०	५	५८	६	२	
र	२२	१६	७	२	१९	१३	रे	२२	१	मेष	२२	१	३०	७	५	५९	६	१	
चं	२३	१७	८	३	१३	४३	अ	१७	५९				३०	३	५	५९	६	१	
मं	२४	१८	९	४	८	०	भ	१४	१०	वृष	२८	२४	३०	५८	५	०	६	०	
बु	२५	१९	१०	५	३	३९	कृ	१०	५२				२९	५५	[illegible]	१	६	५९	
बृ	२६	२०	११	७	५५	१०	रो	८	२०	मिथुन	३७	२२	२९	५१	५	२	६	५८	
शु	२७	२१	१२	८	५१	२३	मृ	६	२३				२९	४७	५	३	६	५७	
श	२८	२२	१३	९	४९	४५	आ	५	२९	कर्क	५०	४६	२९	४४	५	३	६	५७	
र	२९	२३	१४	१०	४९	२४	पु	५	५२				२९	४०	५	४	६	५५	
चं	३०	२४	१५	११	५०	१८	पु	७	१				२९	३६	५	५	६	५६	
													२९		५	५	६	५५	

अक्टूबर १९१८ **आर्य्य जन्त्री सन् १९१८** **शालिवाहन १८४०**

दयानन्दाब्द ३४ **आर्य्य सं० १९७२-९४९०१९**

३१ दिन	अक्टूबर १९१८ ई०	जिलहिज्जा १३३६ हि०	आश्विन सम्वत १९७५	आश्विन वदि १९७५ तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नाम	घड़ी	पल	राशी चन्द्रमा नाम	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	सूर्य्य का उदय घण्टा	मिनट	अस्त घण्टा	मिनट	पर्व तथा तारा चक्र
मं	१	२५	१६	१२	१६	२६	श्ले	१०	१२	सिंह	१०	१२	२९	३२	६	६	५	५४	
बु	२	२६	१७	१३	१५	३९	म	१४	१२				२९	२८	६	६	५	५४	
बृ	३	२७	१८	१४	५९	५७	पू	१९	१४	कन्या	३५	३९	२९	२४	६	७	५	५३	स्वामी बृजानन्दजी की मृत्यु
शु	४	२८	१९	अ	६०	०	उ	२४	५०				२९	२०	६	८	५	५२	
श	५	२९	२०	,	४	४५	ह	२	२०				२९	१६	६	९	५	५१	
र	६	३०	२१	आ	९	३६	चि	३७	३४	तुला	४३		२९	१२	६	१०	५	५०	
च	७	मु	२२	२	६	४५	स्वा	३३	३९				२९	८	६	१०	५	५०	
मं	८	२	२३	३	१९	१३	वि	४९	२५	वृश्चिक	३१	१	२९	४	६	११	५	४९	सन १३३७ हिजरी प्रारम्भ
बु	९	३	२४	४	२२	४८	अ	१३	१३				२९	०	६	१२	५	४८	
बृ	१०	४	२५	५	१५	७	ज्ये	१७	३६	धन	१७	३१	२८	५६	६	१३	५	४७	
शु	११	५	२६	६	२६	३७	मू	२९	८				२८	५२	६	१४	५	४६	
श	१२	६	२७	७	२६	१०	पू	६०	०				२८	४८	६	१४	५	४६	
र	१३	७	२८	८	२१	३४	उ	०	२८	मकर	१५	२६	२८	४४	६	१५	५	४५	
चं	१४	८	२९	९	१३	६	श्र	[illegible]	[illegible]				२८	४०	६	१६	५	४४	विजयादशमी
मं	१५	९	३०	१०	१९	२९	ध	१६	३	कुम्भ	२७	४४	२८	३६	६	१७	५	४३	
बु	१६	१०	३१	११	२०	४	श	१२	२४				२८	३२	६	१८	५	४२	
बृ	१७	११	का	१३	१०	२१	पू	१०	०	मीन	३५	५३	२८	२८	६	१८	५	४२	
शु	१८	१२	२	१४	१४	०	उ	४६	०				२८	२४	६	१९	५	४१	
श	१९	१३	३	पू	५३	२	रे	४१	१४	मेष	४१	१४	२८	२०	६	२०	५	४०	
र	२०	१४	४	का	४७	७	अ	७३	४९				२८	१७	६	२१	५	३९	
चं	२१	१५	५	२	४१	२६	भ	३३	५७	वृष	४८	५	२८	१३	६	२१	५	३९	
मं	२२	१६	६	३	३६	१३	कृ	३०	३०				२८	९	६	२२	५	३८	
बु	२३	१७	७	४	३१	३९	रो	१७	३६	मिथुन	१६	३३	२८	५	६	२३	५	३७	
बृ	२४	१८	८	५	२६	५६	मृ	२५	३०				२८	१	६	२४	५	३६	
शु	२५	१९	९	६	२५	१६	आ	२४	२४				२७	५८	६	२४	५	३६	
श	२६	२०	१०	७	२३	४३	पु	२४	३०	कर्क	९	२८	२७	५४	६	२५	५	३५	
र	२७	२१	११	८	२३	२७	पु	२५	३७				२७	५०	६	२६	५	३४	
चं	२८	२२	१२	९	२४	३२	श्ले	२८	१५	सिंह	२८	१५	२७	४६	६	२७	५	३३	
मं	२९	२३	१३	१०	२६	४४	म	३२	६				२७	४३	६	२७	५	३३	
बु	३०	२४	१४	११	३०	९	पू	३४	४९	कन्या	१३	१४	२७	४०	६	२८	५	३२	
बृ	३१	२५	१५	१२	३२	२८	उ	४२	४९				२७	३७	६	२९	५	३१	

दिसम्बर १९१८ आर्य्य जन्त्री सन् १९१८ शालिवाहन १८४०

दयानन्दाब्द ३५ आर्य्य सं० १९७२९४९०१९

३१ दिन	दिसम्बर	सफर १३३७ हिजरी	माघ १९७५	माघ वदि १९७५ तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नाम	घड़ी	पल	राशी चन्द्रमा नाम	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	सूर्य्य का उदय घण्टा	मिनट	अस्त घण्टा	मिनट	पर्व तथा त्याग चक्र
र	१	२६	१६	१३	२६	४२	स्वा	१८	५१				२६	१२	६	४६	५	१४	
सो	२	२७	१७	१४	३१	१७	वि	२४	४३	वृश्चिक	८	१५	२६	११	६	४६	५	१४	
मं	३	२८	१८	अ	३४	३५	अ	३९	४०				२६	१०	६	४६	५	१४	
बु	४	२९	१९	मा	३७	२८	ज्ये	३३	४१	धन	३३	४१	२६	८	६	४६	५	१४	आखरी बुध
बृ	५	३०	२०	२	३८	५४	मू	३६	३०				२६	७	६	४७	५	१३	
शु	६	र	२१	३	३०	५६	पू	३८	१	मकर	५३	६	२६	६	६	४७	५	१३	
श	७	२	२२	४	३७	४५	उ	३८	२१				२६	५	६	४७	५	१३	
र	८	३	२३	५	३५	१०	श्र	३७	२६				२६	४	६	४७	५	१३	
सो	९	४	२४	६	३१	४८	ध	३५	३०	कुम्भ	६	२८	२६	२	६	४८	५	१२	
मं	१०	५	२५	७	२७	२९	श	३२	४६				२६	१	६	४८	५	१२	
बु	११	६	२६	८	२२	२७	पू	२९	३०	मीन	१५	१९	२६	०	६	४८	५	१२	
बृ	१२	७	२७	९	१७	५	उ	२५	४२				२५	५८	६	४८	५	१२	
शु	१३	८	२८	१०	११	२०	रे	२२	४१	मेष	२१	४१	२५	५७	६	४९	५	११	
श	१४	९	२९	११	५	२४	अ	२७	३३				२५	५५	६	४९	५	११	
र	१५	१०	पू	१२	४	१५	भ	१३	३०	वृष	४७	३५	२५	५४	६	४९	५	११	
सो	१६	११	२	१४	४९	६	कृ	९	५१				२५	५३	६	४९	५	११	
म	१७	१२	३	पू	४४	२२	रो	६	३९	मिथुन	३५	२८	२५	५१	६	५०	५	१०	बारवफ़ात
बु	१८	१३	४	पा	४१	२५	मृ	४	१७				२५	४९	६	५०	५	१०	
बृ	१९	१४	५	२	३९	२	आ			कर्क	४७	२०	२५	४७	६	५१	५	९	
शु	२०	१५	६	३	३७	४२	पु	२	१३				२५	४६	६	५१	५	९	
श	२१	१६	७	४	३७	४५	पु	२	५४				२५	४५	६	५१	५	९	
र	२२	१७	८	५	३९	६	श्ले	४	४९	सिंह	४	४९	२५	४४	६	५१	५	९	
सो	२३	१८	९	६	४१	४२	म	८	२				२५	४५	६	५१	५	९	
मं	२४	१९	१०	७	४५	२४	पू	१२	२६	कन्या	२८	४७	२५	४६	५	५१	५	९	
बु	२५	२०	११	८	४६	५९	उ	१७	४८				२५	४८	६	५०	५	१०	किसमिसडे
बृ	२६	२१	१२	९	५५	१	ह	२३	५१	तुला	५७	३	२५	५०	६	५०	५	१०	
शु	२७	२२	१३	१०	५७	२७	चि	३०	२४				२५	५१	६	५०	५	१०	
श	२८	२३	१४	११	६०	०	स्वा	३६	५				२५	५२	६	५०	५	१०	
र	२९	२४	१५	११	२	२४	वि	४२	३७	वृश्चिक	२६	०	२५	५३	६	४९	५	११	
सो	३०	२५	१६	१२	९	५५	अ	४७	४८				२५	५४	६	४९	५	११	
मं	३१	२६	१७	१३			ज्ये	५२	७	धन	५२	७	२५	५५	६	४९	५	११	

आर्य्य-दर्शायित्री १९१८

प्रतिनिधि सभाओं के विवरण।

श्रीमती आर्य्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य्यप्रतिनिधि सभा।

इस सभा में पूर्व की भांति निम्न प्रतिनिधि सभायें सम्मिलित हैं।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
,, ,, ,, संयुक्त प्रान्त
,, ,, ,, राजस्थान
,, ,, ,, मध्य-देश
,, ,, ,, बंगाल बिहार
,, ,, ,, बम्बई

अन्तरङ्ग सभासद तथा अधिकारियों की संख्या प्रान्तों के लिहाज़ से निम्न प्रकार है

पंजाब	७
संयुक्त प्रान्त	५
राजस्थान	१
मध्य-देश	१
बंगाल बिहार	०
बम्बई	१
	१५

इन के अतिरिक्त पंडित विष्णुलालजी शर्म्मा एम. ए. एल. एल. बी. बरेली तथा बा० द्वारिकादासजी इंजिनियर प्रतिष्ठित सभासद और हैं।

अधिकारी

म० रामकृष्णजी वकील प्रधान
नारायणप्रसाद मु० अधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन-मन्त्री
पं० निहालचन्दजी पेन्शनर डिप्टीकलेक्टर कोषाध्यक्ष
बा० द्वारिकादासजी स्टेट इंजिनियर पुस्तकाध्यक्ष

सभा की आर्थिक दशा।

गत वर्ष का शेष	१८९१॥≈)११
आय	५३२।≈)४
योग	२४२४-)३
व्यय	४६३।≡)६
वर्षान्तका शेष	१९६०॥-)९

पुस्तकालय

उपस्थित पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है-

भाषा	पुस्तकों की संख्या
संस्कृतार्य्य भाषा	२७४
उर्दू	६१
योग	३३५

सार्वदेशिक भवन।

जो श्रीमती जानकीदेवी के वक़्फ़ नामे द्वारा सभा के नाम है सभा के अधिकार में है। उसका एक भाग किराये पर सभा ने दे रक्खा है, कुछेक तबेला किराये

पर है सभा को उनका किराया वसूल होता है।

एक व्यक्ति ने स्वर्गगामी म० ज्योतिः प्रसाद का अपने को मुतवना कहकर सभा के ऊपर भवन के सम्बन्ध में नालिश की थी जिस में सभा को पूर्ण विजय प्राप्त हुई—

सभा के सार्वदेशिक भवन में एक पाठशाला है जिस के अध्यापक पं० शिवदत्त जी पांडे हैं यह महाशय यथा समय प्रचार का कार्य्य भी करते हैं।

प्रचार।

यथासाध्य प्रचार में भी सभा सहायता देती है दिसम्बर में लखनऊ के कांग्रेस के अवसर पर १००० पुस्तकें पंचमहायज्ञविधि की वितरणार्थ आर्य्यसमाज लखनऊ के लिखने पर भेजी गई, उस से पहले हरिद्वार के कुम्भ के मेले पर वैदिक धर्म्म का प्रचार बड़े स्केल पर किया था।

श्रीमती परोपकारणी सभा

सदर दफ्तर अजमेर।

श्रीमती परोपकारणी सभा का संगठन महर्षि स्वामी १०८ दयानन्दजी सरस्वती ने खुद अपने शुभ हाथों सम्वत् १८८३ में अजमेर में रक्खी थी। इस का उद्देश्य वेदों शास्त्रों और महाऋषि के ग्रन्थों को छाप कर उनका प्रचार करना कराना है और देश देशान्तरों में वैदिक धर्म का प्रचार कराना है॥

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अजमेर में महर्षि दयानन्दजी का एक वैदिक यन्त्रालय है जिस में महर्षि के ग्रन्थ छपा करते हैं इस के अतिरिक्त उन का अपना एक बाग भी है जिस में महर्षि दयानन्द की अस्थियां (हड्डियां) दबाई हुई हैं। और भी बहुतसा रुपया बंकों में जमा है। महर्षि दयानन्द ने जब सभा का निर्माण किया तो उस में भिन्न भिन्न प्रान्तों के २३ अधिकारी साहेबान को इस में सम्मिलित किया। परन्तु अब निम्न लिखित १४ सज्जनजन इस के मेम्बर हैं।

राजपूताना—महाराजा प्रतापसिंहजी वालिये ईडर राजाधिराज नाहरसिंह शाहपुरा नरेश महाशय हरबिलास शार्दा महा० रामविलास शार्दा, पं० वंशीधरजी, म० गौरीशङ्करजी, राणा विजयसिंहजी, कुंवर उमीदसिंहजी ठाकुर नरेन्द्रसिंहजी कुल ६

संयुक्त प्रान्त—पं० घासीरामजी, बाबू गंगाप्रसाद, पं० विष्णुलाल, लाला पुरुषोत्तम नारायण ४

बम्बई प्रान्त—सेठ रणछोड़दासजी १

बङ्गलौर (मैसूर) —बाबू रामगोपाल १

पंजाब—प्रोफेसर रामदेव व राय मूलराज, लाला हंसराज, भगत ईश्वरदास, लाला लाजपतिराय, प० रामभजदत्त, लाला रोशन लाल, महात्मा मुंशीरामजी ८

अधिकारियान—प्रधान मेजर जनरल सर प्रतापसिंह शाह बहादुर वालिये ईडर

मन्त्री श्रीमान राजाधिराज सर नाहरसिंह वालिये शाहपुरा, उपमन्त्री म० हरबिलास शार्दा।

पर उपकारिणी सभा में महा अंधेर

ऋषि ने जिस उद्देश्य के लिये पर उपकारिणी सभा बनाई थी, शोक है कि वह सभा कई वर्षों से इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर रही है। चाहिये तो यह था कि इस में सारे संसार के आर्य्यसमाज की आवाज़

सुनी जाती । लेकिन इस में किसी आर्य्य समाज की आवाज़ की सुनवाई नहीं होती अजमेर के कुछ मनुष्योंने इसमें एक पार्टी बना रक्खी है जो मन मानी काररवाइयां करते हैं। महर्षि की तसानीफ़ के असल मसविदा जात जो एक बड़े भारी बस्ते में बंद थे आज परोपकारिणी सभा के दफ्तर में नहीं मिलते महर्षि के ग्रन्थ हर नये एडीशन में गलतियों से भर पूर होरहे हैं। परन्तु इसकी कोई रोक टोक नहीं की जाती

आर्य्यसमाजों का कर्तव्य।

इस प्रकार के अन्धेर खातों ने पर उपकारिणी सभा की इज्जत समाजों की नज़रों से गिरा दी है, बावजूद इस के यह कुम्भकरण की नींद सोई हुई सभा जागने का नाम नहीं लेती!इसलिये आवश्यकता है कि प्रत्येक आर्य्यसमाज घोर आन्दोलन करके प्रस्ताव सभा के पास भेजे और इस प्रकार इसका उठानेका प्रयत्न करे समाचार मिला है कि सभा जाग उठी है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब लाहौर

स्थापना—आर्य्य समाजिक जगत में आर्य्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) लाहौर सब से बड़ी संस्था है जो वैदिक धर्मप्रचार का कामकर रही है। इसकी शक्ति और सहायता सब सभाओं से दृढ़ है। और इस के कार्य्यका क्षेत्र भी सब सभाओं से विस्तृत है। यही एक सभा है जिस के कार्य्य को देखकर आर्य्यसमाज को जीती जागती शक्ति समझा जाता है।

यह सभा १८८५ ई० में स्थापित हुई और दिसम्बर सन् १८९५ ई० में इस की बाकायदा रजिस्टरी कराई गई। ३१ चैत्र सम्वत् १९७३ को इस ने अपने जीवन का बत्तीसवां वर्ष समाप्त किया।

अधिकारी—श्रीमान् लाला रामकृष्ण जी वकील सभा के प्रधान हैं। और श्रीमान् महाशय कृष्णजी बी. ए. सम्पादक प्रकाश लाहौर इस के मन्त्री हैं, इन दो महानुभावों के समय में सभा ने बहुत उन्नति की है।

सभा के आधीन आर्य्य समाजें—सभा के आधीन इस समय आर्य्य समाजें हैं, परन्तु इस से यह न समझना चाहिए कि पंजाब भर में सभी इतनी समाजें हैं, परन्तु ऐसी भी समाजें हैं जिन का सम्बन्ध किसी प्रतिनिधि सभा के साथ नहीं है।

सभा के काम—सभा की स्थापना के चार उद्देश हैं:-

(१) वेदों की पढ़ाई और उपदेशक पैदा करने के लिये विद्यालय स्थापित करना। इस उद्देश की पूर्ति के लिये सभा ने हरिद्वार पर गुरुकुल खोल रक्खा है। बड़ी कामयाबी के साथ चल रहा है और जिस का हाल अलग दिया गया है। धार्मिक और इल्मी पुस्तकों की लायब्रेरी स्थापित करना इस अभिप्राय को पूरा करने के लिये एक बृहद लायब्रेरी पंजाब वैदिक पुस्तकालय के नाम से लाहौर में खुली हुई है। वैदिक धर्म्म और अन्य मतों की पुस्तकों के विषय में पंजाब भर में यह सब से बड़ी लायब्रेरी है और सभा की ओर से प्रति वर्ष एक माकूल रकम लायब्रेरी को बढ़ाने के लिये खर्च की जाती है।

३—सभा का तीसरा उद्देश्य—वैदिक धर्म सम्बन्धी अच्छा साहित्य पैदा करना है। इस उद्देश्य को सभा का ट्रैक्ट विभाग पूरा कर रहा है। पंडित शिवशङ्करजी काव्यतीर्थ

की पांच विद्वत्तायुक्त पुस्तकें वेदतत्वप्रकाश के सिलसिले में छप चुकी हैं इन के अतिरिक्त बीसियों अभिमाना छोटे २ ट्रैक्ट हज़ारों की संख्या में छप चुके हैं।

सभाका उपदेशक विभाग—सभा का चौथा उद्देश्य देशान्तरों और द्वीपान्तरों में वैदिकधर्म प्रचार कराना है। इस उद्देश्य के लिये सभाका उपदेशक विभाग है। जिस के अधिष्ठाता सभा के स्तुत मन्त्री श्रीमान् महाशय कृष्णजी बी.ए. हैं। जिनके अपने अमूल्य समय का अधिक भाग भी वैदिक धर्मप्रचार में ही खर्च होता है।

सभाके आधीन इस समय निम्नलिखित योग्य उपदेशक काम कर रहे हैं।

(१) महोपदेशक श्री पं० पूर्णानन्दजी (२) पं० परमानन्दजी बी. ए. (३) पं० चन्द्रभानुजी (४) पं० ब्रह्मानन्दजी (५) पं० रामलालजी (६) पं० लोकनाथजी (७) पं० जीवनलालजी (८) स्वामी रामानन्दजी (९) पं० आशानन्दजी (१०) पं० भगतरामजी (११) पं० भोजराजेश्वरजी (१२) पं० हरदयालुजी (१३) महाशय कृष्णजी अमृतसरी (१४) पं० हंसराजजी (१५) पं० हाकिमरायजी (१६) पं० पूर्णचन्द्रजी (१७) पं० उदयचन्द्रजी (१८) पं० जगन्नारायणजी (१९) पं० रामशरणजी (२०) पं० उदयभानुजी (२१) पं० मंगलदेवजी (२२) पं० मुरारीलालजी (२३) पं० शिवदत्तजी (२४) पं० रोशनदेवीजी।

सभा के भजनीक—ठाकुर प्रवीणसिंहजी (२) पं० अमीचन्दजी (३) म० गिरधारीलालजी (४) म० विजयचन्द्रजी (५) प० वीरसेनजी (६) म० धर्मदेवजी (७) म० नाथूशर्म्माजी (८) म० सत्यव्रतजी (९) म० श्यामलालजी (१०) पं० खेतरामजी (११) पं० बालमुकन्दजी (१२) म० देवीसिंहजी (१३) म० दयारामजी (१४) म० सन्तरामजी (१५) म० हरवंशलालजी सभाके आनरेरी उपदेशक इनके अतिरिक्त हैं।

सभाका दफ्तर—सभाका दफ्तर इसकी अपनी बड़ी भारी इमारत गुरुदत्त भवन में वाके है। जो रावी रोड पर भाटी दरवाज़ा के बाहर एक रमणीक स्थान पर बनी हुई है। यह इमारत अभी पूर्ण रीति से तय्यार नहीं हुई। आजकल इस में सभा का दफ्तर और वैदिक पुस्तकालय के अतिरिक्त एक बड़ा लेक्चर हाल है। जिस में एक हज़ार से अधिक मनुष्य बैठकर व्याख्यान सुन सकते हैं।

आजकल इस हाल में आर्य्यकुमारसभा लाहौर के व्याख्यान हुआ करते हैं।

आयव्यय—सम्वत् १९७३ में वेद प्रचार फण्ड में २४०२२) आय और २०१०६) रु० खर्च हुए और गुरुकुल की आय ११५७३६) और खर्च ११०७३८) रु० खर्च था।

वेदप्रचारफण्ड इस समय ४५३४३) रु० शेष है गुरुकुल फण्ड में २७२०९४) रु० हैं लेखराम मेमोरियल फण्ड में १६५७६)रु० हैं कुलका कुल शेष इस समय ७७५७४१) रु०

नवीन समाजें—इस वर्ष में निम्नलिखित १२ नवीन समाजें सभाके उपदेशकों ने स्थापित की हैं।

नवीन आर्य्यसमाजों के नाम

नाम समाज	जिला	नाम मन्त्री
(१) मुनपेड़	गुड़गांव	ठाकुर तुलीचंद
(२) बनौड़	पटियाला	०
(३) सरसान	रोहतक	चौ० जीतसिंह
(४) मीरपुरखास	सिन्ध	म० गुरदत्तमल
(५) खेड़ा	पटियाला	मेरीराम

(६) अजरा पटियाला हंसराज
(७) तलाण्डी साबू ० ०
(८) चन्नू फिरोज़पुर ०
(९) अलावलपुर जालन्धर कर्मचन्द
(१०) तजोंडीभंडरां स्यालकोट जगन्नाथ
(११) खरड़ अम्बाला गण्डाराम
(१२) अहमदपुर सिन्ध सोभराज
शरकिया

आर्य प्रतिनिधि सभा इन्द्रप्रस्थ (देहली)

यह सभा १० मार्च सन् १९१२ को देहली में स्थापित हुई और ५ वर्ष से लगातार काम कर रही है। देहली, रोहतक, गुड़गांव, मेरठ और जींद राज्य की २८ समाजों के ३३ प्रतिनिधि इस में सम्मिलित हैं।

अधिकारी—लाला कुन्दनलालजी प्रधान चौबे भूलसिंह व चौबे हरीसिंह उपप्रधान म० रामप्रसादजी मन्त्री लाला शिवदयाल कोषाध्यक्ष म० हरीचन्द्रजी पुस्तकाध्यक्ष।

बजट—दो हज़ार रुपया वार्षिक का बजट पास किया गया है।

उत्सव—गत वर्ष ६ अधिवेशन अन्तरङ्ग सभा के हुए १९१६ में दो उत्सव हुए एक देहली में सदर बाज़ार में और दूसरा नारनोल में इन दोनों उत्सवों पर वैदिक धर्म्म का बहुत ही प्रचार हुआ।

सभा के उपदेशकों ने १०४ संस्कार कराये और ३ स्थानों में शास्त्रार्थ और ७ मेलों पर प्रचार किया। और भी कई जगह प्रचार किया।

उपदेशक पं० प्रसादीलाल पं० जीवन प्रसाद पं० हरीचन्द पं० सदानन्द और पं० दीनदयालु जी उपदेशक व चार भजनीक काम कर रहे हैं इसके अतिरिक्त दस बारह आनरेरी उपदेशक कार्य्य कर रहे हैं।

नवीन सात आर्य्य समाजें गत वर्ष में स्थापित हुई जिन की नामावली निम्न लिखित है।

(१) वालन्द, (२) मातनहेली (३) सालावास (४) स्वर्गथल (५) करतारपुर (६) वाली रियासत (७) पाटोदी (८) लोचब।

निम्न लिखित प्रान्तों में निम्न लिखित समाजें सभा के आधीन हैं।

जिला देहली में ४० जिला रोहतक में ७५ जिला गुड़गांव में ३६ जिला हिसार में २ जिला करनाल में २ पाटोदी राज्य में २ जींद राज्य में १२ जिला पोठा में ५ आर्य्य समाजें हैं।

आयव्यय—सन् १९१६ ई० में २३३१॥) रु० आय और २३३४) रु० व्यय हुए।

श्रीमती आर्य प्रादेशक प्रतिनिधि सभा पंजाब सिन्ध विलोचिस्तान।

प्रादेशक प्रतिनिधि सभा का दफ्तर लाहौर आर्यसमाज अनारकली मन्दिर के अन्दर है। इसके अधिकारी निम्नलिखित हैं
प्रधान श्रीमान् महात्मा हंसराजजी।
उपप्रधान पं० गणेशदत्तजी
मंत्री लाला रामानन्दजी बी.ए.वकील लाहौर
कोषाध्यक्ष पं० मतिकरामजी बी. ए. टीचर

वैतनिक उपदेशक—२७ हैं, उन के नाम निम्न लिखित हैं:—

(१) म० रामचन्द्रजी शास्त्री (२) पं० अमरनाथजी (३) पं० मस्तानचन्दजी बी.

ए. (५) पं० ऋषिदेवजी बी. ए. (६) पं० तुलसीरामजी शास्त्री (७) पं० चाननरामजी (८) पं० वसन्तरामजी (९) पं० यज्ञदत्तजी (१०) पं० जगतरामजी (११) चौधरी निरंजनसिंहजी (१२) मि. एस. एस. केपा. (१३) स्वामी योगानन्दजी (१४) पं० शिवशरणजी (१५) लाला सोहनलालजी (१६) म० हरिचन्द्रजी (१७) म० मोहनलालजी (१८) म० भगतरामजी (१९) पं० मंशीराम जी (२०) म० मंगलसेनजी (२१) चौधरी सिंहरामजी (२२) म० दूनीचन्द्रजी (२३) पं० यज्ञदत्तजी (२४) पं० हरिदेवजी शर्मा (२५) पं० शिवदत्तजी (२६) म० गुरुदत्त जी (२७) म० बद्रीनाथजी इन उपदेशकों व भजनीकों को जो गुजारा दिया जाता है। और वैदिकधर्मप्रचार के लिये उन्हें जो सफर करना पड़ता है, उस पर सभा हर महीने लगभग एक सहस्र रुपया खर्च कर रही है। इस सभा के साथ जो समाजें नियमानुसार सम्मिलित हो चुकी हैं, उन की संख्या लगभग १५० के है। इन सब समाजों के उत्सव इत्यादि का प्रबन्ध सभा ही करती है।

स्वतन्त्र उपदेशक—सभा के स्वतन्त्र उपदेशक भी हैं। जो बड़े उत्साह से अपना समय निकालकर धर्म उपदेश के लिये जहां भी सभा भेजती है, चले जाते हैं। उन के नाम निम्न लिखित हैं :—

(१) श्री महात्मा हंसराजजी
(२) श्री लाला साईंदासजी प्रिंसपल दयानन्द कालिज
(३) लाला दीवानचन्द्रजी एम. ए. प्रोफैसर दयानन्द कालिज
(४) लाला हरिचन्द्रजी एम. ए. प्रोफैसर
(५) देवीदयालजी बी. ए. प्रोफैसर
(६) पं० हरिचन्द्रजी बी. ए.
(७) लाला दीवानचन्द्रजी एम. ए. हेडमास्टर दयानंद स्कूल होशियारपुर
(८) पं० राजारामजी शास्त्री प्रोफैसर
(९) पं० जगतरामजी शास्त्री वेदतीर्थ
(१०) बख्शीरामरत्नजी शास्त्री बी.ए.बी.टी.
(११) पं० भगवद्दत्तजी ए. एस. स्कालर
(१२) ,, रलयारामजी वाणप्रस्थी
(१३) पं० फकीरचन्द्रजी वाणप्रस्थी
(१४) ,, रामगोपालजी शास्त्री
(१५) ,, सन्तरामजी वेदरत्न वेदभूषण
(१६) लाला रामप्रसादजी बी. ए.
(१७) ,, ,, बी. ए. बी. टी.
(१८) ,, रामसहायजी बी. ए.
(१९) ,, खुशहालचंदजी सम्पादक
(२०) पं० दौलतरामजी शास्त्री
(२१) मेहता सावनमलजी दत्त
(२२) मास्टर रामचन्द्रजी बी. ए. अम्बाला
(२३) लाला किशोरीलालजी
(२४) पं० देवीदत्तजी
(२५) मास्टर सत्यदेवजी
(२६) पं० मतिकराजजी बी. ए.

वजीफा—मद्रास प्रांत में वैदिकधर्मप्रचार कराने के लिये सभा एक मद्रासी महाशय मि. एस. एस. कीपा को २५) रुपये मासिक का वज़ीफा (स्वलक) देरही है जो लाहौर में आर्य्यसमाज के ग्रंथ पढ़ रहा है। और सभा की ओर से एक महाशय गोविन्दराम जी शास्त्री मद्रास में प्रचार करते रहे हैं।

साहित्य—सभा की ओर से कई पुस्तकें निकल चुकी हैं जिन की सूची इस जगह नहीं दी जासकती, परन्तु इस के नीचे यह वर्णन कर देना उचित है।

सभा की ओर से दो समाचार पत्र निकलते थे। जिन में से आर्य्यभाषा का

पत्र आर्य्य-सभा लोगों की विशेष दया दृष्टि न होने की वजह से मुद्दत हुई बन्द हो चुका है। उर्दू का पत्र आर्यगज़ट दिन प्रति दिन उन्नति करता चला जा रहा है। इस समय इस की अशाअत (छपाई) दो सौ कम ३००० है। इस के सम्पादक लाला खुशहालचन्दजी खुरशीद हैं, इस की सालाना कीमत (वार्षिक मूल्य) २) रु० है।

पिछले मेला कुम्भ हरिद्वार पर पांचसौ रुपये के आर्य्य ट्रैक्ट व किताबें (पुस्तकें) मुफ्त बांटी गई थीं।

सभा की पूंजी—सभा के पास जूलाई सन् १९१७ के अन्त में २४ हज़ार रुपया नक़द था और यह खुशी की बात है कि आर्य्यसमाजों की ओर से वेदप्रचार फण्ड दशांश का रुपया अब विशेष शीघ्रता के साथ आरहा है।

शास्त्रार्थ वेदप्रचार—इस सभा के पास बहुत ही विद्वान पंडित हैं, जो सनातन धर्मियों, ईसाइयों, मुसल्मानों, जैनियों, नास्तिकों और सब अन्य वैदिक धर्मियों से हर विषय पर शास्त्रार्थ कर सकते हैं। इस सभा के पंडितों ने कई शास्त्रार्थ बड़े मारके के किये हैं और अब भी जहां कहीं ऐसी आवश्यकता आ पड़ती है। तो इस सभा के पंडित वहां पहुंच जाते हैं, इस प्रकार जहां प्रचार की अधिक आवश्यकता और मांग हो वहां की सभा के मन्त्री जी को लिखने पर उपदेशक भेजे जासकते हैं, इस गरज के लिये लाला रामचन्द्रजी वकील मंत्री आर्य्य प्रादेशक प्रतिनिधि सभा पंजाब सिन्ध बिलोचिस्तान लाहौर से पत्र व्यवहार होना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रदेश।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त सूबेजात मुत्तहिदा में वैदिकधर्मप्रचार के लिये २९ दिसम्बर सन् १८८६ ई० को स्थापित हुई और तीस वर्ष लगातार वैदिक धर्म का प्रचार कर रही है। इस सभा का कार्य्यालय व दफ्तर आर्य्यसमाज मन्दिर बुलन्दशहर में बाके है।

वर्त्तमान अधिकारी—प्रधान कुंवर हुकम सिंहजी रईस और मन्त्री सेठ मदनमोहन जी एम. ए. मुन्सिफ हैं।

समाजें इस सभा के आधीन इस समय २६३ आर्य्य समाजें हैं।

सब प्रतिनिधि सभाओं के विषय में इस प्रतिनिधि सभा के आधीन सब से अधिक आर्य्य समाजें हैं। गत वर्ष में २२ नवीन आर्य्य समाजें स्थापित हुई जो इस बात का ज़िन्दा प्रमाण है कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा में जाता है और उस में काम होरहा है।

उप प्रतिनिधि सभायें सभा के आधीन मुजफ्फर नगर और सहारनपुर के जिलों में दो उप प्रतिनिधि सभायें हैं।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की भांति इस सभा ने भी अपने कर्मचारियों के लिये प्रावीडिण्ट फण्ड खोल दिया है। और उस के साथ ही प्रत्येक कर्मचारी के काम का दर्ज करने के लिये सर्विसबुक खोली गई है।

सभा के उपदेशक—सभा के आधीन इस समय १८ उपदेशक हैं—

(१) पं० बसन्तलालजी (२) पं० निरंजनदेव (३) पं० नरोत्तम मिश्र (४) पं० बद्रीनाथ (५) दुनीचन्द (६) अयोध्याप्रसाद (७) शिवदत्त (८) प्यारेलाल (९) पं० दान-

सहाय (१०) पं० गुरुदत्त (११) सालिगराम (१२) पं० दीवानचन्द (१३) पं० शिवशर्मा (१४) पं० हरिशङ्कर (१५) पं० द्वारिकादास (१६) पं० आर्य्यमित्र (१७) ठाकुर विहारीसिंह (१८) पं० मधुदत्त (१९) पं० वंशीधर (२०) पं० रामचन्द्र (२१) पं० रामानुज (२२) स्वामी मंगलानन्द पुरी और पांच भजनीक काम कर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित महाशयों का बतौर आनरेरी प्रचारकों के सभा का काम कर रहे हैं, मुंशी इन्द्रजीतजी महाशय भूपालदेवजी ठाकुर गुमानसिंहजी बाबू बनारसीलालजी और पं० रामनिधजी महाशय बसन्तसिंह म० रघुनाथ मिश्र जी म० रामप्रशाद ठाकुर रामप्रशाद ठा० रामचन्द्र सिंह और ठा० खुमानसिंहजी प्रचार विभाग के अधिष्ठाता बाबू श्रीरामजी हैं।

सभा के आनरेरी उपदेशक--स्वामी सर्वदानन्दजी, स्वामी अनुभवानन्दजी, स्वामी परमानन्दजी, स्वामी कृष्णानन्दजी, पं० घासीरामजी एम. ए., बाबू ज्वालाप्रसादजी वकील, सेठ मदनमोहनजी एम.ए. बाबू नन्दलालसिंहजी बाबू गजाधरसिंहजी बा० रामनारायण, मंत्री नारायणप्रसादजी, पं० रामप्रसादजी, मुख्तार बाबू श्यामसुन्दरदासजी, बा० केदारनाथजी, पं० नन्दकिशोर देवशर्मा बा० अलखमुरारीलाल वकील पं० रामचन्द्र बा० पूर्णचन्द्र वकील।

इंस्टीट्यूशन--सभा की ओर से एक गुरुकुल वृन्दावन बड़ी योग्यता के साथ चल रहा है जिसका ब्योरे वार हाल गुरुकुलों में दर्ज है इस के मुख्याधिष्ठाता मुं० नारायणप्रसादजी हैं इस गुरुकुल की एक शाखा रामविद्यालय सकीट जिला एटा में चल रही है।

(२) सभा के आधीन अखबार आर्य मित्र आर्य्य-भाषा में बड़ी योग्यता से चल रहा है। इस के सम्पादक पं० हरिशङ्कर जी हैं।

(३) सभा की ओर से आर्य्य-भास्कर प्रेस आगरा में बड़ी सफलता से चल रहा है जिसमें आर्य्य-मित्र और अन्य पुस्तकें छपती हैं। बाबू नाथूमलजी इस के अधिष्ठाता हैं।

(४) सभा की ओर से एक ट्रैक्ट विभाग है। बड़ी २ उत्तम पुस्तकें छपवाने का काम करता है, इस विभाग की बदौलत आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य्य-समाज का बहुत अच्छा साहित्य हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू में पैदा किया है। प्रसिद्ध फ़ाज़िल पं० गंगाप्रसादजी एम. ए. की सब पुस्तकें इसी ट्रैक्ट विभाग की ओर से छपी हैं।

(५) आर्य्यसमाज रक्षा निधि--यह संस्था आर्य्यसमाज की रक्षा के लिये जारी है। इस के अधिष्टाता कुंवर हरिप्रसादसिंहजी वकील बांदा हैं।

(६) एक और संस्था विद्या विभाग के नाम से सभा की ओर से ज़ारी है। इस के अधिष्ठाता मुं० नारायणप्रसादजी हैं, जहां किसी तालीमी संस्था के खोलने और किसी को सहायता देने की आवश्यकता होती है वहां विद्या विभाग अपना कार्य्य करता है।

(७) खुदागंज ग्राम--इस ग्राम को श्रीमती गंगादेवी और बाबू रामस्वरूप रईस फ़रुखाबाद ने इस सब गांव को बमय इस के जुमिला अधिकारों के सन् १९०६ ई० में आर्य्य प्रतिनिधि सभा के हवाले किया था इस के अधिष्ठाता कुंवर खुमानसिंहजी हैं, इस की वार्षिक आय में से ६२५) अन्यान्य संस्थाओं को दिया जाता है।

आय व व्यय--गत वर्ष में सभा की

१०२४१।।।) आय और ५७४५२) रुपये व्यय हुए और सभा की अपनी ज्यायदाद सवा लाख की अनुमान से है।

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान मालवा अजमेर।

राजस्थान में प्रचार करने के लिये यह सभा २८ वर्ष से स्थापित है। इस का दफ्तर अजमेर में है और इस के जनरेल इजलास श्री स्वामी दयानन्दजी के स्थापित किए हुए वैदिक यन्त्रालय अजमेर में होते हैं।

सभा के अधिकारी राव राजा तेजसिंह जी जोधपुर (प्रधान) बाबू गौरीशङ्करजी बैरिस्टर (उप प्रधान) बा० जगराजगोपालजी (मन्त्री) बाबू चान्दकरणजी वकील (उप मन्त्री)

आधीन समाजें—यह सभा ५० आर्य्य समाजों में वैदिक धर्म्मप्रचार का काम करा रही है। जिन के नाम आर्य्यसमाजों की सूची में अलग दर्ज किए गए हैं।

उपदेशक—सभा के आधीन दस उपदेशक राजपूताने में प्रचारका काम कर रहे हैं :-

(१) पं० नरसिंह शर्मा, (२) पं० जगन्नाथ शुक्ल, (३) पं० भद्रदत्तजी, (४) पं० विनायकरावजी, (५) पं० गोपालदत्तजी, (६) पं० रामेश्वरचन्द्रजी, (७) पं० लक्ष्मीदत्तजी, (८) पं०छोगालालजी, (९) पं०शिवनाथसिंह, (१०) मोतीलाल शर्मा इस के अतिरिक्त कई आनरेरी उपदेशक भी हैं।

राजस्थान में आर्य्यसमाजों की दशा बहुत अच्छी नहीं सिवाय दोचार बड़ी आर्य्यसमाजों के शेष आर्य्यसमाजें अपने वार्षिक उत्सवों में वेदप्रचार के लिये अपील नहीं करतीं। यही कारण है कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा की माली हालत अच्छी नहीं गत वर्ष में सभा को ३८२७) रुपये की कुल आमदनी हुई।

सभा दो विद्यार्थियों को १३) रुपये मासिक शुल्क देकर प्रेम महाविद्यालय वृन्दाबन में पढ़ा रही है।

इस सभा ने अछूत-जाति के बालकों के लिये एक पाठशाला भी खोल रक्खी है जो अब दयानन्द स्कूल अजमेर के आधीन कर दी गई है रियासत धौलपुर की आर्य्य समाज इसी सभा के आधीन है। इसलिये धौलपुरका समाज गिराये जाने पर सभा का एक डिपुटेशन महाराजा साहेब के पास गया और अन्त में महाराजा साहेब ने स्वीकार कर लिया कि समाज मन्दिर को पुनः बनवाया जावे।

आर्य्यसमाज की गति इस समय मन्द पड़ रही है, इस के अनुसार इस प्रतिनिधि सभा ने भी गत वर्ष में कुछ उन्नति नहीं की आशा है कि अधिकारी महाशय इस वर्ष अधिक उत्साह से काम करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा ब्रह्मा

सदर मुकाम रंगून ४४ स्ट्रीट।

यह सभा पहिली जुलाई सन् १९०९ में आर्य्यसमाज मेम्यू के वार्षिक उत्सव के मौके पर स्थापित हुई और उस समय से बराबर काम कर रही है।

अधिकारियान—मिस्टर एस. एल. सिंह

बी. ए. वकील प्रधान डाक्टर गुरुदत्तजी मन्त्री व कोषाध्यक्ष

पूर्व इस के पं० धनीदत्त इस के उपदेशक थे लेकिन उन की वापसी पर सभा ने आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से पंडित परमानन्दजी बी. ए. और ठाकुर नरायणसिंह उपदेशकान की सेवाएं मांगी गई। सभा ने इन दोनों महानुभावों को ब्रह्मा भेज दिया। उन के जाने से वैदिक धर्म्मका ब्रह्मा में प्रचार बहुत अच्छा होगया और ब्रह्मी लोग भी वैदिक धर्म्म के शैदाई (चाहने वाले) बन गये। पं० परमानन्द के रंगून में कई अंग्रेजी व्याख्यान भी हुए। जिन का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा, बहुत से लोगों ने वैदिक संस्कार कराए ब्रह्मा की प्रतिनिधि सभा के साथ ५ आर्य्यसमाजें हैं अब यह दोनों उपदेशक पंजाब वापिस आने वाले हैं।

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्यप्रदेश) विदर्भ

मुख्यस्थान—नरसिंहपुर

यह सभा आर्य्यसमाज नरसिंहपुर के वार्षिकोत्सव के समय सन् १८६६ ई० में श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के परमशिष्य श्री स्वामी आत्मानन्दजी सरस्वतीजी की अध्यक्षता में स्थापित हुई थी। इस प्रकार से इस सभा को स्थापित हुए १७ वर्ष व्यतीत होचुके हैं। सभा को कार्य्य करते हुए यह १८वां वर्ष है।

इस सभा की रजिस्टरी स्थान नागपुर में ता० २१ मार्च सन् १६०७ ई० को एक्ट २१ सन् १८६० के अनुसार होचुकी है।

सभा के अधिकारी—वर्त्तमान में सभा के प्रधान पं० काशीरामजी तिवारी, मालगुजार सुहागपुर निवासी हैं तथा उपप्रधान श्रीयुत् म० घनश्यामसिंह गुप्त बी. एस. सी. एल. एल. बी. (वकील) दुर्ग निवासी हैं। मन्त्री श्रीयुत पं० चन्द्रगोपाल मिश्र बी. ए. एल. एल. बी. (वकील) हर्दा निवासी हैं। तथा सहायक, मन्त्री श्रीमान् पं० गणेशप्रसाद शर्मा नरसिंहपुर निवासी हैं।

सभा का आय व्यय—१ अप्रैल १६१६ से ३१ मार्च सन् १७ तक सभा के कोष में आय वेदप्रचारफण्ड में ४५२।≈)३ तथा आर्य सेवक द्वारा ४४४) हुई थी और व्यय कुल १०५६।।।≈) हुआ है। शेष लगभग २००)थे

सभा के आधीन संस्थाएं—इस सभा के आधीन ३८ आर्य्यसमाजें हैं। गत १७ वर्षों में अनेक आर्य्यसमाजें टूटी व स्थापित हुई हैं। इस वर्ष आर्य्य-मित्र सभा जबलपुर और भी स्थापित हुई है। इस की एक उपसभा सन् ११-१२ में बरार प्रान्त में स्थापित हुई थी जिस की कार्य्यवाही विधिवत् नहीं पाई जाती। कार्य्यकर्त्ता गण विशेष ध्यान ही नहीं देते और नहीं के बराबर ही है। श्रीमती सभाके आधीन १ अनाथालय है, जिसे सभाने सन् १६०६ में खोला था, जो स्वर्गवासी डाक्टर रामप्रसादजी गुप्त स्मारक अनाथालय नरसिंहपुर के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका वृत्तांत पृथक दर्शाया जाता है।

गुरुकुल मध्यभारत—हुशंगाबाद भी इस सभाके आधीन है, जिसे श्रीयुत महाशय नन्हेंलाल मुरलीधरजी ने विशेष परिश्रम से खोलकर सभाके आधीन कर दिया है। यह गुरुकुल शहर हुशंगाबाद में नर्मदानदी के तट पर शहर से पश्चिम दिशा में है। हुशङ्गाबाद स्टेशन इटारसी जङ्कशन के पास

ही है जहां जी.आई. पी. रेलवे द्वारा गमन करना पड़ता है। वृत्तान्त गुरुकुल का भी पृथक दर्शाया जाता है।

इस प्रान्त में एक और भी गुरुकुल विद्यालय रायपुर है, जिसे पं० सूर्य्यदत्त शर्मा ने स्थान रायपुर में खोला है सन् १९१६ में इस गुरुकुलका इस सभा से तथा किसी समाज से सम्बन्ध नहीं है। परन्तु इस को आर्य्यसमाज रायपुर के सभासदों द्वारा विशेष सहायता मिला करती है।

एक आर्य्य संस्कृत पाठशाला दुर्ग में है, जिसे आर्य समाज दुर्ग ने स्थापित किया था तथा आर्य्य वैदिक पाठशाला नरसिंहपुर कतिपय कारणों से सन् १९१६ से बन्द कर दी गई है।

आर्य्य पुत्री पाठशाला—चान्दपुर तथा जबलपुर आर्य्य समाज के आधीन कार्य्य अच्छा करती चली आरही हैं। कन्या-पाठशाला भोपाल में भी एक मित्रसभा के आधीन है, जिसके कार्य्य की इस वर्ष अच्छी प्रशंसा हुई है।

सभाका पत्र-श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश व विदर्भ की ओर से गत १३ वर्ष से "आर्य्य-सेवक" पत्र प्रकाशित होता चला आरहा है, जो पहले मासिक रूप में प्रकाशित हुआ करता था। परन्तु गत३ वर्ष से पाक्षिक प्रकाशित हुआ करता है, आजकल सम्पादक पं० गणेशप्रसाद शर्मा हैं तथा उपसम्पादक ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्दजी

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई प्रदेश।

मुख्य-स्थान—आर्य्यसमाज मन्दिर गिरगांव काकड़वाड़ी बम्बई।

स्थापना—यह सभा सन् १९०५ में बम्बई के एक प्रथम आर्यन कान्फ्रेंस के मौके पर स्थापन हुई पूज्यपाद स्वामी श्री नित्यानन्दजी महाराज, श्री पं० तुलसीराम जी स्वामी, श्रीमान् पं० आत्मारामजी, श्री लाला द्वारिकासजी, श्री पं० शिवशङ्करजी काव्यतीर्थ इत्यादि महानुभावों के उत्तमोत्तम व्याख्यान हुए। सभा की स्थापना के पूर्व इस प्रदेश में केवल ७–८ समाजें सामान्य दशा में अपना २ प्रचार का कार्य्य करती थीं सभा की स्थापना के प्रथम ही वर्ष में १९ समाजें हुईं अब जून सन् १७ के अन्त में २९ समाजें स्थापित हैं।

सभाके अधिकारी—सेठ रणछोड़दास भवानजी प्रधान, (२) डा० कल्याणदासजी उपप्रधान, (३) म० गिरजाशङ्करजी बी. ए. एल. एम. एस. मन्त्री, (४) डा० प्राणजीवनदास नारायणदास उपमन्त्री अहमदाबाद (५) म० झवेरचन्दजी उपमन्त्री सूरत, (६) म० जमनादास नारायणदास चाहवाला कोषाध्यक्ष, (७) म० गिरधरदास दामोदरदास मोदी पुस्तकाध्यक्ष, (८) बाबू चन्दुलाल आडीटर।

उपदेशक—८ हैं, (१) स्वामी ओङ्कारसच्चिदानन्दजी महाराज, (२) पं० बालकृष्ण जी शर्म्मा बम्बई, (३) पं० मणिशङ्कर शर्मा बम्बई (४) पं० आर्य्यभद्रमहाशङ्करजी (५) पं० जगन्नारायण शास्त्री (६) पं० बृजलाल शर्मा (७) भजनोपदेशक म० दाताजी (८) भजनोपदेशक म० खुशाल भाई।

पाठशाला-मीठा भाई पाठशाला और उपदेशक क्लास की संस्कृत पाठशाला है।

आयव्यय—अनुमान ७हज़ार आय और इसी के अनुसार व्यय भी है।

साप्ताहिक-पत्र—सभा की ओर से आर्य्य

प्रकाश नामक साप्ताहिक पत्र १३ वर्ष से निकलता है, उसका सम्पादन म० प्रभु भाई और छगन भाई शर्मा की ओर से होता है सभाके पास निजका प्रेस होने से आर्थिक उन्नति भी होने की सम्भावना है।

गुरुकुल विद्यालय-सभाके आधीन १ गुरुकुल है, इसके सभपति श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी और उप मन्त्री म० नेगनदासजी हैं, गुरुकुल में इस समय ६० से अधिक ब्रह्मचारी विद्या लाभ कर रहे हैं, गुरुकुलका वार्षिक व्यय २००००) रुपये।

—

आर्य प्रतिनिधि सभा बङ्गाल बिहार।

स्थान—बांकीपुर

यह सभा १८८२ में स्थापित हुई और १९१० में इस की रजिस्टरी कराई गई, इसके आधीन सम्प्रति ६० समाजें हैं। इस के प्रधान आनरेबल बाबू श्यामकृष्ण और मन्त्री बाबू परमेश्वरप्रसाद वर्म्मा हैं।

सभा के वैतनिक उपदेशक-पं० गौरीशङ्कर शर्मा।

अवैतनिक-पंडित राजकिशोर पांडेय, (२) पं० रामचन्द्र द्विवेदी, (३) पं० कृष्ण लाल, (४) पं० घनश्याम मिश्र, (५) पं० हरिवंश शर्मा (६) पं० शिवनाथ मिश्र (७) पं० शङ्करदत्तजी (८) स्वामी मुनीश्वरानन्द जी (९) बा० जनकधारीलाल (१०) बा० परमेश्वरप्रसाद वर्म्मा (११) बा० रासबिहारीलाल (१२) बा० जगदीशनारायण जी प्रचारका कार्य्य करते हैं।

वार्षिक प्रचार-हरिहर क्षेत्र (सोनपुर) ब्रह्मपुर, बकसर, बिहटा, डुमरसन और राजगिरि आदि मेलाओं में बड़े ही धूमधाम से प्रचार किया जाता है।

गुरुकुल का निश्चय-गुरुकुलार्थ स्थान वैद्यनाथ (देवघर) जिला (डुमका) उपयुक्त समझा गया है, गुरुकुलार्थ ३० बिगहा ज़मीन भी प्राप्त करली गई है। बहुत शीघ्र गुरुकुलका कार्य्य आरम्भकर दिया जायगा गुरुकुल सभा के प्रधान बाबू नीलाम्बरप्रसाद वकील और मन्त्री बा० परमेश्वरप्रसाद वर्मा हैं। गुरुकुल सभा के भूतपूर्व मन्त्री डाक्टार लक्ष्मीपति की असमयिक मृत्यु के कारण कार्य्य में कुछ शिथिलता आगई है, इस सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के सदस्य बा० मिथिलाशरणसिंह वकील बांकीपुर और बा० हरगोविन्द गुप्त उपमन्त्री कलकत्ता आ० स० हैं।

श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा मारीशस।

मुख्य कार्य्यालय पोर्टलुई

अधिकारी वर्ग।

प्रधान	म० केहरसिंहजी
उप प्रधान	म० रघुनाथराय
,,	,, जगनन्दन
मन्त्री	ला० माधवलाल
उप मन्त्री	म० शिवशरण तथा हीरालाल
कोषाध्यक्ष	,, रामेश्वर
पुस्तकाध्यक्ष	,, गयासिंह
आडीटर	,, मोती मास्टर

इन के अतिरिक्त ४ अन्तरङ्ग सभासद और हैं।

उपदेशक।

पं० काशीनाथजी पं० वासुदेवजी।

वेदप्रचार का व्यय अनुमानिक रु० ६००) के है।

भारद्वाज पुस्तकालय तथा आर्य्यसमाज मन्दिर वोर्टलुई में है।

सभाके आधीन ३६ आर्य्यसमाज काम कर रहे हैं।

आर्य्य परोपकारिणी सभा मोरीशस।

स्थान वार्इलुइ। कैपीटल ६०००) रु०

उद्देश्य

१–इस सभाके सभासदों के अन्त्येष्टी कर्म के लिये खर्च करना।

२–आर्य्य वर्ग की आत्मिक तथा ज्ञान सम्बन्धी उन्नति करना।

अधिकारी वर्ग

प्रधान रा० मोती
उप प्रधान रघुनाथराय
मन्त्री शिवशरण
उप मन्त्री हीरालाल
कोषाध्यक्ष केहरसिंह
उपकोषाध्यक्ष माखनलाल

जायदाद।

वोर्टलुई तथा वाकुआ में है।

बाकी आय ६००) रु० के लगभग है।

उप-सभाओं के विवरण में

उपसभा जिला गुरुदासपुर।

अधिकारियान–प्रधान सरदार रणजीतसिंहजी रईस छीना मन्त्री लाला दीवानचन्दजी वकील गुरुदासपुर।

सन् १९१२ में यह उपसभा बनाई गई थी आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक पं० पूर्णानन्दजी जिला हाजा की आर्य्य समाजों में प्रचारका काम करते हैं, उन की कोशिश से इस इलाके में अच्छा प्रचार हो गया है। और कई नई समाजें भी बन गई हैं, प्रचारके साथ २ शुद्धिका काम भी जारी है।

उप सभा के आधीन समाजें–बटाला, श्रीगोविन्दपुर, फतेहगढ़, घी के बांगर, गुरुदासपुर।

आर्य्य समाजें जो नियमानुसार कार्य्य नहीं करती, परन्तु इन में आर्य्य पुरुष मौजूद हैं–भागोवाल, डेरानानक, मीरोवाल भामड़ी, धमान, कोटली सूरतमलो, सहारी।

जिला की अन्य आर्य्य समाजें–बहरामपुर, दीनानगर, सोचानिया, मीरागूदल, डलहौजी शकरगढ़।

नाममात्र आर्य्यसमाजें–बयानपुर, छीना जोगी चम्बा, धारीवाल, कोट सन्तोषराय पठानकोट, सुजानपुर, चम्बा, शाहपुर, अखलासपुर, कोटमैना, दोधूचक, नूरकोट, कंजरोड़, चम्बाडीह, धुराडलाकोटली जरई और चालीस हज़ार रुपये की बिल्डिङ्ग मौजूद हैं।

२–उपसभा मुजफ्फरगढ।

मुख्यस्थान–मुजफ्फ़रगढ़।

सभा के मन्त्री के नाम विवरण भेजने के लिये पत्र लिखा गया उत्तर आया कि "उप सभाका अन्त्येष्टि संस्कार होने वाला है, इसलिये इसके विवरण के छापने की आवश्यकता नहीं।"।

यह अति खेद की बात है कि जिला मुजफ्फरगढ़ में इतनी आर्य्यसमाजों के होते

हुए और पं० गङ्गाराम जैसे पुरुषार्थी पुरुष की उपस्थिति में उपसभा का अन्त्येष्टि संस्कार हो।

जिला मुजफ्फरगढ़ की आर्य्यसमाजों को उपसभा में नई रूह फूंकनी चाहिए।

३–उपसभा करनाल।

मुख्यस्थान–पानीपत।

अधिकारी–प्रधान चौधरी सिङ्गारसिंह जी जालवान निवासी मन्त्री लाला खेमचन्दजी पानीपत।

यह उपसभा जनवरी सन् १९०४ से स्थापित है जिला करनाल की लगभग १ सौ आर्य्यसमाजें इस सभा के आधीन हैं।

उपसभा द्वारा प्रचार का फल है कि लगभग चार हज़ार मनुष्यों को यज्ञोपवीत पहिना कर द्विज बनाया गया और पांच हज़ार व्याख्यानों से ३ लाख मनुष्यों के कानों में वैदिकधर्म्म की ध्वनि पहुंचाई गई एक सौ के लगभग शास्त्रार्थ हुए। और खास थानेसर में गुरुकुलकाङ्गड़ी की शाखा स्थापित हुई जिस में इस समय ६० ब्रह्मचारी शिक्षा पा रहे हैं, शाखा की पूंजी लगभग डेढ़ हज़ार बीघा आराजी।

४–उपसभा अम्बाला।

मुख्यस्थान–अम्बाला।

यह सभा १२ वर्ष से स्थापित है परन्तु इसका कार्य्य श्रीमती सभा के आधीन हो कर गत वर्ष से काम नियमानुसार होता है

अधिकारी–प्रधान डाक्टर भानारामजी मन्त्री म० नारायणसिंहजी।

इसके साथ जिला अम्बाला की गुरुकुल पार्टी की सब समाजें सम्बन्ध रखती हैं

गत वर्ष में कोई नवीन आर्य्यसमाज उपसभा के द्वारा स्थापित नहीं हुई।

इस वर्ष बारौन, मलाना, राद्दौर, बूड़िया, छछरौली, साढीपुरा में नवीन आर्य्य समाजें स्थापित हुई।

पूंजी–का हिसाब सभामें रहता है।

(१) पं० बालमुकन्द, (२) पं० दुर्गादत्त (३) पं० गंगासहाय (४) पं० मुंशीराम ने भी काम किया है।

गत वर्ष की निस्बत सभाका काम उन्नति पर है।

५--उपसभा हिसार।

यह सभा प्रवेशक प्रतिनिधिसभा के आधीन है और जिला हिसार व और स्थानों में आवश्यकतानुसार प्रचारका प्रबन्ध रखती है कई समाजें प्रति वर्ष नवीन स्थापित होती हैं और जाट लोगों के विचार बदलने में इस की सहायता से बहुत काम हुआ है। इसके कार्य्यकर्त्ता हिसार समाज के ही अधिकारी हैं।

६--उपसभा सहारनपुर।

यह सभा जिला सहारनपुर में वैदिक धर्म्म चार के लिये सन् १९०१ से स्थापित है। आर्य्य प्रतिनिधि उपसभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध में नियमानुसार यह सभा सम्मिलित है और इसका वर्ष भी पहिली अक्तूबर से ३० सितम्बर तक है, सदर मुकाम सहारनपुर है।

कार्य्य–जिले भर में प्रचार कई स्थानों में छोटे २, शास्त्रार्थ, शुद्धि और संस्कार अछूत जातियों में और स्थानों परभी अछूत जाति पाठशालाएं खोलने का प्रबन्ध हो रहा है।

अधिकारी—श्रीमान् राय शङ्करसहायजी वकील प्रधान कुंवर हरप्रसादसिंहजी वकील हरीकोट बान्दा मन्त्री, इस के अतिरिक्त २७ सभासद बने एक कमेटी नियम बनाने के लिये नियत हुई ३-४ उपदेशक काम कर रहे हैं।

७—उपसभा बुन्देल खण्ड प्रान्त।

आर्य्य सम्मेलन बुन्देलखण्ड बान्दा का अधिवेशन १४-१५ मार्च सन् १९१५ को हुआ, इस में पास हुआ कि बुन्देलखण्ड प्रान्त की जिस में झांसी, बान्दा, हमीरपुर, उरई और सब देशी राज्य जो बुन्देलखण्ड में और बुन्देलखण्ड एजेंसी से सम्बन्धित हैं, एक उप प्रतिनिधि सभा आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त के आधीन बनाई जावे, इसलिये यह सभा स्थापित हुई ८००) आसा रुपया चन्दा हुआ।

गुरुकुलों के विवरण

गुरुकुल विश्व-विद्यालय काङ्गड़ी हरिद्वार।

स्थापना—आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की आज्ञा से महात्मा मुंशीरामजी (वर्तमान स्वामी श्रद्धानन्दजी ने) इस विद्यालय को गङ्गा के किनारे दानवीर मु० अमनसिंहजी की दान की हुई भूमि पर २४ मार्च सन् १९०२ को स्थापित किया।

ब्रह्मचारियों की संख्या—विद्यार्थियों की साधारण संख्या से यह शिक्षालय आरम्भ हुआ था, २० से ३० ब्रह्मचारियों की संख्या प्रति वर्ष और प्रवेश होती रही, जो ब्रह्मचारी गुरुकुल से उत्तीर्ण होकर चले गये या तालीमका कोर्स पूरा करने में उत्तीर्ण न होने के कारण गुरुकुल से अलग होना पड़ा उन सब की संख्या कम करके ३२२ विद्यार्थी १ अषाढ़ सम्वत् १९७४ को गुरुकुल में उपस्थित थे।

महाविद्यालय—चौधवीं श्रेणी ११ छात्र तेरहवीं श्रेणी में १९ बारहवीं में ९ ग्यारहवीं श्रेणी में १८ मीज़ान ५७ लड़के।

विद्यालय—दसवी कक्षा में २३ विद्यार्थी नवीं श्रेणी में, ३४ आठवीं श्रेणी में २१ सातवीं श्रेणी में २३ छठी में २७ पांचवी में १७ चौथी में ३५ तीसरी में ३४ दूसरी में १९पहिली में ३२योग२६५+५७=३२२ विद्यार्थी।

महाविद्यालय का स्टाफ—श्री महात्मा मुंशीरामजी आचार्य्य गुरुकुल ने वैशाखी के दिन संन्यास आश्रम में प्रवेश किया आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनके पीछे लाला रामकृष्णजी वकील जालन्धर को मुख्याधिष्ठाता और प्रोफैसर रामदेव को आचार्य के पद पर नियत किया।

(१) प्रो० रामदेवजी आचार्य व मुख्य-उपाध्याय आर्य्य सिद्धान्त व लाइफ मेम्बर (२) प्रो० बालकृष्णजी एम. ए. उप आचार्य अर्थशास्त्र व इतिहास (३) पं० सूर्य्यदेवजी वैदिक साहित्य (४) योगेन्द्रनाथ न्याय, सांख्य, वेदान्ततीर्थ, दर्शनशास्त्र (५) प्रो० सेवारामजी एम. ए. अंग्रेजी (६) प्रो० टीकमदासजी एम. ए. अंग्रेजी (७) पं० प्राणनाथजी विद्यालङ्कार इतिहास (८) प्रो० घनश्यामजी गोस्वामी रसायन शास्त्र (९) म० मुखरामजी बी. ए. रसायन व लाइफ मेम्बर (१०) पं० चन्द्रमुनीजी विद्यालङ्कार

वेद (११) प्रो० ... के गई वनस्पति (१२) प्रो० रामचन्द्रजी एम. ए. प्रोफेसर गणित (१३) प्रो० सुधाकरजी एम.ए. प्रो० मनोविज्ञान फिलासफी (१४) पं० इन्द्रजी वेदालङ्कार विद्यावाचस्पति वेद व संस्कृत साहित्य (१५) पं० विश्वनाथजी विद्यालङ्कार दर्शन शास्त्र (१६) पं० बुद्धदेवजी संस्कृत साहित्य गुरुकुल विद्यालय में इन प्रोफेसरों में से भी कई एक प्रोफेसर पढ़ाते हैं। परन्तु खास गुरुकुल के लिये निम्न लिखित अध्यापक हैं।

(१) पं० गुरुदत्तजी विद्यालङ्कार मुख्याध्यापक लाइफ मेम्बर (२) पं० कृष्ण ... शास्त्री संस्कृत साहित्य व दर्शन (३) पं० वेदव्रतजी शास्त्री संस्कृत साहित्य व व्याकरण (४) पं० शशिभूषणजी विद्यालङ्कार संस्कृतसाहित्य व दर्शन (५) पं० रामचन्द्र जी अंग्रेजी के अध्यापक हैं। (६) पं० गौरी शङ्करजी भट्ट सुलेख अध्यापक (७) पं० चन्द्रभद्रजी विद्यालङ्कार गणित अध्यापक (८) पं० जगन्नाथजी विज्ञान अध्यापक (९) मा० नेहालसिंहजी जिमनाशियम व ड्रिल मास्टर

नोट दिसम्बर १९१९ में नीचे की श्रेणियां गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भेजी गई थीं। और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का स्टाफ इस से अलग है, जिनका विवरण अलग व उचित स्थान में किया जावेगा।

चैद्यकी प्रबन्ध—खेल कूद में किसी ब्रह्मचारी के यदि चोट लग जावे। या किसी प्रकार असावधानी के कारण किसी को कोई कष्ट होजावे तो उस की दवा डाक्टर सुखदेवजी करते हैं। जिनको गतवर्ष आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लाइफ मेम्बर स्वीकार किया है। डाक्टर सुखदेवजी लेकिन लाइफ मेम्बर होने की हैसियत से ७०) रुपये माहवार लेने के अधिकारी थे तो भी वह अपनी कुर्बानी से जातीयसहके कारण हस्बदस्तूर साबिक ३०) रु० भोजन ही लेते हैं और ३४) रु० मासिक दान की सूरत में गुरुकुल को वापिस कर देते हैं। ब्रह्मचारियों की स्वास्थ्य और तोल से उनके संरक्षकों को आकाश्दा प्रति मास सूचना दी जाती है।

इसी विभाग के साथ आयुर्वेदिक औषधियों का भी प्रबन्ध है। आवश्यकतानुसार उनसे भी काम लाया जाता है स्कूल के विद्यार्थियों को ... डाक्टर जी स्कूल घण्टा में नियमानुसार शिक्षा देते हैं। आर्य्य-सिद्धान्त के विद्यार्थी को बीमारी ... औषधियों के गुण और प्रयोगों ... विषय पर अच्छा जानकार ... बहुत पहुँचाते रहते हैं, ब्रह्मचारियों के इलाज के अतिरिक्त एक बाहरी दवाखाना भी है। जहां आस पास के देहाती लोग आकर इलाज कराते हैं और दवा लेते हैं। इन देहातों के पास कोई सरकारी शफ़ाखाना न होनेसे लोगोंको गुरुकुल के शफ़ाखाना से बड़ी काबिलकद्र सहायता पहुंच रही है।

आश्रम—स्कूल और कालिज के दोनों आश्रम अलग २ हैं। विद्यालयका आश्रम उपरोक्त मुख्याध्यापक के आधीन है। महाविद्यालय के सुपरिण्टेण्डेण्ट एक प्रोफेसर हैं। दोनों आश्रमों का निरीक्षण गुरुकुलाचार्य के आधीन है।

भोजन—ब्रह्मचारियों को मांस खाने का तो सब शास्त्रों ने निषेध किया है। ब्रह्मचारियों को आवश्यकतानुसार भोजन साधारण व मिर्च मसालों और खटाई आदि से बिलकुल रहित दिया जाता है। तीन पाव दूध और एक छटांक घी प्रत्येक ब्रह्म-

...जो दिन भर ... जाता है। ... की परीक्षा गुरुकुल का ... नियमानुसार ... है।

तालीम की ओर से जो पाठ विधि आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब ने गुरुकुल के लिये आरम्भ में नियत की थी उस में बड़ा परिवर्तन होगया है। आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल के नियमों को बदलते समय पाठ विधि पर विचार करने के लिये एक उपसभा नियत की हुई है। जिन के अधिवेशन आजकल जारी होते हैं, लगभग थोड़े ही समय में नयी पाठ विधि सभा में पेश होने वाली है।

स्कूल में व्याकरण, महाभाष्य आर्य्य भाषा व अंग्रेजी में रियाज़ी, इतिहास, भूगोल, संस्कृतसाहित्य पढ़ाया जाता है। कालेज में अंग्रेजी, वेद, साहित्य, मोडरन, संस्कृत साहित्य के विषय प्रत्येक विद्यार्थी को लाज़मी तौर पर पढ़ने होते हैं। कृषि के छात्र विशेष ढङ्ग में संस्कृतसाहित्य से अलग कर दिये जाते हैं।

परीक्षायें—... परीक्षायें ज़बानी ली जाती हैं और उस के अनन्तर सब परीक्षायें लेख-बद्ध होती हैं। विद्यालय और महाविद्यालय की परीक्षाओं के नियम भिन्न हैं। महाविद्यालय में परीक्षा वर्ष में चार होती हैं, गुरुकुल में सब परीक्षायें अध्यापक और प्रोफेसर स्वयं ही लेते हैं। बाहरसे मुमतहिन नियत नहीं होते। अधिकारी परीक्षा के सब ममतहिन महाविद्यालय के प्रोफेसर होते हैं।

भोजन व्यय व पालन-गुरुकुल में शिक्षा तो मुफ्त ही दी जाती है। पुस्तकों, अध्यापकों का यत्न, नक्शों और चार्टों का ब्रह्मचारियों से कुछ नहीं लिया जाता पुस्तकें और नक्शे मुफ्त दी जाती हैं। भोजन व्यय के लिये कुछ माहवारी फीस संरक्षकों से ली जाती है।

गऊशाला रोगी ब्रह्मचारियों और स्टाफ की आवश्यकता के लिये एक गऊशाला भी है।

संस्थायें—साहित्य परिषद् प्राचीन इल्म अदब व साहित्य के विषय में छानबीन करने और विद्या के भण्डार की खोज के लिये एक इल्मी अंजुमन साहित्य परिषद् के नाम से गुरुकुल में जारी है। जिस में संस्कृत ... के बड़े ... विषय पढ़े जाते हैं। गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर ... कान्फ्रेंस के नाम से इस सभा के अधिवेशन हुआ करते हैं। जिन में ... विद्वान अपने निबन्ध सुनाया करते हैं। ... वर्षों में कई पुस्तकें इस सभा की ओर से प्रकाशित हो चुकी हैं। साहित्य परिषद् के अतिरिक्त और भी बहुत सी संस्थायें हैं।

पुस्तकालय—पुस्तकालय एक प्रकाशमान ... विस्तृत और ऊंचे हाल में रक्खा हुआ है। संस्कृत व अंग्रेजी आर्य्य भाषा उर्दू सब भाषाओं में प्रत्येक विषय पर मुस्तनद ... लिटरेचर मौजूद है। १५ हज़ार रुपये से अधिक की पुस्तकें इस में हैं। और जो पुस्तकें दानी महाशयों ने अपनी ओर से गुरुकुल के पुस्तकालय को भेट की हैं वह इनसे पृथक हैं पुस्तकों की कुल संख्या दस हज़ार के लगभग है।

गुरुकुल से एक संस्कृत और अंग्रेजीका माहवारी रिसाला निकलता है।

निरीक्षक—गुरुकुल में महाविद्यालय की पढ़ाई के निरीक्षण के लिये बाहर के प्रोफे-

सर और खास विद्वानों को मदऊ किया जाता है, जो २ महाशय निरीक्षक नियत किये गये थे उन में से निम्न लिखित ने गुरुकुलका मआइना किया।

(१) प्रोफेसर रामतरायजी गवर्नमेंट कालिज, लाहौर।

(२) डाक्टर राधाकुमुन्द मुकरजी

(३) रेवरेन्ड इंडरयूज़

(४) श्रीपाद दामोदर सात्वलेकरजी

इन महाशयों ने गुरुकुल के विषय में बहुत ही जबरदस्त सम्मति लिखी है।

स्नातक-गुरुकुल में अब तक ३३ स्नातक निकल चुके हैं।

(१) पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति (२) पं० विश्वनाथजी (३) पं० प्राणनाथजी (४) पं० ब्रह्मदत्तजी (५) पं० चन्द्रमणिजी (६) पं० [illegible] (७) पं० बुद्धदेवजी (८) इत्यादि कई महाशय गुरुकुल में भिन्न २ विषय के अध्यापक हैं। और [illegible] का कामकर रहे हैं। कुछ आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण करके चिकित्सा का काम कर रहे हैं। दो स्नातक अमरीका में हैं। उन में एक स्नातक [illegible] कारखाने में ड्रैफ्ट सौ डालर माहवारी पर असिस्टेण्ट डायरेक्टरका काम करता है। पं० ब्रह्मदत्तजी आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप मन्त्री हैं। और प्रचारका काम कर रहे हैं।

गत वर्ष गुरुकुल से आर्यसमाजों के उत्सवों पर पं० बुद्धदेवजी पं० जयदेवजी पं० इन्द्रजी पहुँच कर प्रचार का कार्य करते हैं। गुरुकुल का एक ब्रह्मचारी ब्रह्मा में एक सौ रुपये माहवार पर केमिस्ट का कार्य कर रहा है।

गुरुकुल इन्द्र-प्रस्थ के समाचार।

गुरुकुल कांगड़ी में ३ सौ से अधिक विद्यार्थियों के एक जगह एकत्रित होजाने से स्थान की कमी मालूम होती थी। कई वर्षों से इस के दो भागों में विभक्त करने का विचार हो रहा था कभी मायापुर में श्रेणियां ले जाने का विचार किया जाता था, और कभी और कहीं लेजाने का।

अन्त में सेठ रघुमलजी देहली निवासी ने अपने बड़े भाई की यादगार (स्मारक) में इन्द्रप्रस्थ में गुरुकुल बनाने के लिये १ लाख रुपया दान देने की प्रतिज्ञा की ५० हजार मकानात के लिये, इसलिये दिसम्बर १९१६ से गुरुकुल की पहिली पांच श्रेणियां वहां रक्खी गई हैं। प्रबन्धकर्त्ता का कार्य्य पं० [illegible] चन्दजी रिटायर्ड इक्जीक्यूटिव [illegible] करते हैं। और मुख्याध्यापक का काम पं० [illegible] करते हैं।

आयव्यय-गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की आय [illegible] गुरुकुल कांगड़ी के हिसाब में [illegible] हैं। गुरुकुल की [illegible] आय व्यय [illegible] सम्वत् १९७३ निम्न लिखित है।

आय ११५७०५॥-) व्यय ११[illegible]

गुरुकुल मुलतान।

स्थापना-गुरुकुल मुलतान की स्थापना श्री महात्मा मुंशीरामजी के शुभ करकमलों से १० [illegible] सन् १९०६ को देव वन्धू में हुई उस समय से अब तक इस गुरुकुल में बहुत से परिवर्तन हुए अब शहर के उत्तर में हजूरीबाग में मुंशी परमानन्दजी वकील की कोठियों में यह गुरुकुल लगता है। एक कोठी में आश्रम है दूसरे में विद्यालय।

शिक्षा—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की स्कीम के अनुसार है। इस गुरुकुल में दस श्रेणियों तक शिक्षा दी जाती है। यहां के ब्रह्मचारी कांगड़ी के अधिकारी परीक्षा में सम्मिलित होते हैं।

गत वर्ष छः ब्रह्मचारियों ने अधिकारी परीक्षाएं पास कीं एक ब्रह्मचारी अंग्रेजी व संस्कृतसाहित्य में प्रथम रहा और एक इतिहास में प्रथम रहा।

प्रबन्ध—इस गुरुकुल की मालिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब है, इस के आधीन एक उप सभा है, महाशय गोपालजी बी. ए. इस के मुख्याधिष्ठाता हैं।

आय—गुरुकुल की वार्षिक आय लगभग २० हज़ार रुपये है, जिस में से आधे ब्रह्मचारियों के शुल्क यानी फीस की सूरत में आता है शेष आधा चन्दा द्वारा इकट्ठा होता है।

मकानात—जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है। गुरुकुल के मकान अपने नहीं, शहर मुलतान के दक्षिण ओर राम कुण्ड के समीप ४० बीघा भूमि हासिल की गई है। और मकानात की तामीरात शीघ्र ही आरम्भ होने वाली है। रुपये के लिये चन्दों की अपील हो रही है। आर्य जनिता से प्रार्थना है कि विशेष ध्यान से गुरुकुल की सहायता करें।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र।

स्थापना—इस शाखा की स्थापना श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की आज्ञानुसार श्रीमहात्मा मुंशीरामजी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी द्वारा १९६९ को हुई।

प्रथमोत्सव—इस शाखा का प्रथमोत्सव १६ एप्रिल सन् १९१२ तदनुसार प्रथम वैशाख १९६९ में हुआ।

स्थान—गुरुकुल का स्थान रमणीक वन में थानेश्वर शहर से डेढ़ मील की दूरी पर स्वर्गवासी बा० ज्योतिस्वरूपजी रईस थानेश्वर की दान की हुई १०० बीघा भूमि में कुरुक्षेत्र जंकशन से तीन मील पर है।

प्रबन्ध—इस शाखाका प्रबन्ध मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी के अनुसार श्रीमान् लाला नौबतरायजी प्रबन्धकर्त्ता के आधीन है प्रबन्धादि की सहायता के लिये एक सहायक सभा है, जिसके प्रधान मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी तथा उप प्रधान ला० नौबतरायजी तथा डा० भानारामजी हैं, मन्त्री बा० गोपीनाथजी तथा उप मन्त्री ला० श्रद्धारामजी तथा ४५ अन्य सभासद हैं।

ब्रह्मचारी—इस शाखा में ६४ ब्रह्मचारी हैं, जो सात श्रेणियों में विभक्त हैं।

अध्यापक—पं० विष्णुमित्रजी मुख्याध्यापक, पं० मेधारामजी शास्त्री तथा पं० नानूरामजी संस्कृताध्यापक, मास्टर हरिगोपालजी, पं० रेवतीप्रसादजी, पं० दीपचन्द्रजी मा० छज्जूरामजी, म० कर्त्तारचन्द्रजी गणितादि विषयों के अध्यापक हैं, अध्यापक ही अधिष्ठाता का कार्य करते हैं।

परीक्षा—वर्ष में ४ परीक्षाएं होती हैं। जिन के परीक्षक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी की आज्ञा के अनुसार गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफैसर होते हैं।

स्वास्थ्य—स्वास्थ्य यहां का बहुत ही उत्तम है, रोगी ब्रह्मचारियों की संख्या बहुत ही कम होती है। ब्रह्मचारियों का तोल प्रति मास अच्छा बढ़ता है।

शिक्षा—इस शाखा में शिक्षा प्रत्येक प्रकार की गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षा के अनुसार होती है।

भवन—इस शाखा में निम्नलिखित स्थान बन चुके हैं, आश्रम, विद्यालय, भण्डार, स्नानगृह, गोशाला, धर्मशाला।

औषधालय—चिकित्सा का कार्य्य डा० शिवरामजी करते हैं। शाखा की ओर से बाहर के रोगियों को भी दवाई दी जाती है।

वाटिका—जिस में कुछ प्रकार के फलों के पेड़ लगाये गये हैं। प्रति दिन के खर्च का शाक उत्पन्न किया जाता है।

सभायें—ब्रह्मचारियों की भाषण शैली को ठीक करने के लिये एक संस्कृत की और एक भाषा की सभा प्रति सप्ताह होती है। जिस में ब्रह्मचारियों की वक्तृतायें होती हैं।

	आय	व्यय
संवत् १९६९	१५६४४|||=)|||	१३१०२||=)
,, १९७०	१७१५५|||=)|||	१८५४०-)||
,, १९७१	१४१३०||-)||	१३७३१|||≡)||
,, १९७२	१८१७३||≡)||	१८८७३||-)
,, १९७३	२००४३|||=)|||	१८८२०|||=)

ज्यायदाद—शाखा के पास ६०० बीघे का एक कैथल ग्राम है, २५० बीघा अन्य भूमि तथा दो दुकानें हैं। स्थिर कोष कोई नहीं है, जिसके लिये आर्य्य जाति को ध्यान देना चाहिए।

आवश्यकता—विद्यालय भवन के दो कमरे और यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्म्मशाला की आवश्यकता है।

गुरुकुल महाविद्यालय बृन्दावन।

प्रारम्भिक—श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध द्वारा स्थापित।

सन् १९०५ में सभा ने गुरुकुल सिकन्दराबाद को अपना गुरुकुल ठहराकर उस का आवश्यक सुधाकर प्रारम्भ किया, अनुभव से सिकन्दराबाद का जल वायु दूषित और रोगोत्पादक सिद्ध हुआ, अतः सभा ने ३ वर्ष के बाद स्थायी रीति से यहां से हटाकर गुरुकुल को फर्रुखाबाद रक्खा, फर्रुखाबाद में गुरुकुल का कार्य्य अच्छी तरह से चलता रहा। गुरुकुल का स्थिर स्थान बृन्दावन ठहरने पर सन् १९११ में गुरुकुल बृन्दावन लायागया, बृन्दावन आने से गुरुकुल अपनी वास्तविक दशा में आया, छः ही वर्ष में १०० एकड़ के लगभग भूमि गुरुकुल के अधिकार में आगई और डेढ़ लाख के मालियत की इमारतें गुरुकुल भूमि में बन गईं। गुरुकुल के आधीन ३ बड़ी २ वाटिकायें हैं। जिन में आम, अमरुद, अनार, बेर, सेव, केले, खिरनी, नींबू, जामुन आदि के पेड़ बहुत से हैं।

गुरुकुलका स्थान—गुरुकुल बृन्दावन स्टेशन के ठीक सामने आध मील की दूरी पर है, गुरुकुलका मार्ग स्टेशन से कच्चा था परन्तु बम्बई के प्रसिद्ध दानवीर कुं० मोतीसिंह लालसिंह ने उसे पक्का करा देने की बात पक्की करके रुपया भी भेज दिया है, पक्की सड़क बन रही है विश्वास है कि आगामी उत्सव से पहिले तय्यार होजावेगी।

ब्रह्मचारियों की संख्या आदि—गुरुकुल में इस समय १३० ब्रह्मचारी हैं, १३ श्रेणी खुल चुकी हैं, १४वीं श्रेणी फरवरी १८ में खुल जायेगी और दिसम्बर १९१८ से यहां से स्नातक निकलने शुरु होजावेंगे।

गुरुकुल के महाविद्यालय में निम्न लिखित विषय पढ़ाये जाते हैं :—

(१) वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौत, गृह्यसूत्र, प्रातिशांख्य तथा साङ्गोपाङ्ग सहित।

(२) दर्शन—प्राचीन और नवीन दोनों पढ़ाये जाते हैं, जिससे यहां के स्नातक न केवल प्राचीन दर्शनों के पण्डित बनते हैं, किन्तु दर्शन के नवीन ग्रन्थों के भी और वे नवीन दर्शन के काशी आदि के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर सक्ते हैं।

सिद्धान्त—आर्य्य-सिद्धान्त की शिक्षा, समस्तमतों की शिक्षा के मुकाबिले के साथ दी जाती है और व्याख्यान देना सिखलाया जाता है।

वैद्यक—आयुर्वेद की शिक्षा शरीरशास्त्र (Physiology) और शल्प-शास्त्र Surgery के साथ दी जाती है, एक आयुर्वेदाचार्य और एक असिस्टेण्ट सर्जन इस विषय की शिक्षा के लिए नियत हैं।

अंगरेजी—बी. ए. के स्टैंडार्ड तक शिक्षा दी जाती है।

पश्चिमी दर्शन—योरुपियन दर्शन की शिक्षा पूर्वीय दर्शन के मुकाबिले के साथ दी जाती है।

नोट (१) पदार्थ विद्या (Science) की शिक्षा यही केवल १०वीं श्रेणी तक दी जाती है, परन्तु इरादा है कि महाविद्यालय के विषयों में यह और बढ़ाया जायगा

नोट (२) श्रीस्वामीजी महाराज के लेखानुसार व्याकरण की शिक्षा अष्टाध्यायी और महाभाष्य के द्वारा ही दी जाती है, सिद्धान्त-कौमुदी आदि दूषित ग्रन्थ न अस्तीरूप में न उनका रुपान्तर करके किसी प्रकार भी नहीं पढ़ाये जाते हैं।

नोट (३) शिक्षा देने के लिये समस्त विषयों के अच्छे विद्वान् संग्रह किये गये हैं गुरुकुल के अध्यापक वर्ग में ३ग्रेजुएट और १४ संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के विद्वान् हैं।

नोट (४) यहां के ब्रह्मचारी महाविद्यालय की श्रेणियों में पहुंचते ही समाज की सेवाका कार्य्य शुरुकर देते हैं, इसी लिये सर्व ब्रह्मचारी उत्तम व्याख्याता और उत्तम रीति से समस्त विपत्ती संस्कृत के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर सक्ते हैं।

गुरुकुल की सम्पत्ति—गुरुकुल का वार्षिक व्यय लगभग ४५ हज़ार रुपये के है, ३० सितम्बर १९१७को गुरुकुल की सम्पति ६३२३७।-)५½ थी, गुरुकुल का व्यय उस की आय से पूरा होजाता है, कभी घाटा नहीं रहता।

औषधालय—ब्रह्मचारियों की चिकित्सा डाक्टरी और वैद्यक दोनों प्रकार से होती है दोनों प्रकार की चिकित्सा के लिये डाक्टर और वैद्य नियत हैं और दोनों प्रकार के औषधालय गुरुकुल के अपने हैं, आस पास के दीन और दरिद्री पुरुषों को भी औषधि मुफ्त दी जाती है।

गोशाला—गुरुकुल से सम्बन्धित एक गोशाला भी है, जिस में गायें और कृषि आदि के कार्य्यों के लिये बैल भी रहते हैं।

स्वास्थ्य—स्वास्थ्य के लिहाज से वृन्दाबन बहुत अच्छा स्थान है, यहां प्लेग कभी नहीं हुआ, मलेरिया भी नाम मात्र को होता है, गुरुकुल में अधिक से अधिक रोगी एक समय में ५—६ से अधिक नहीं होने पाते, ब्रह्मचारी नियम-पूर्वक व्यायाम करते हैं उन्होंने प्रोफेसर राममूर्ति आदि के अनेक व्यायामों का अभ्यास कर लिया है, भरी हुई बैलगाड़ी का छाती से उतारना, मोटी लोहे की जंजीरों का तोड़ देना, मोटरका रोक देना आदि कार्य्य यहां के ब्रह्मचारी कर सके हैं। निदान शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की, उन्नति करने

करानेका पूरा यत्न किया जाता है, भारत-वर्ष के सभी प्रान्तों के ब्रह्मचारी गुरुकुल में प्रविष्ट हुए हैं और प्रतिवर्ष होते रहते हैं, गुरुकुल के प्रबन्ध विभागका समस्त कार्य्य गुरुकुल के अवैतनिक सेवकों के हाथ में है

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

स्थापना—श्रीमान् स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये संवत् १९५४ में स्थापित किया १९६५ में इस की रजिस्टरी करा कर सभा के आधीन कर दिया।

प्रबन्ध—श्रीमती रजिस्टर्ड सभा के आधीन है। जिसके प्रधान श्रीमान् बाबू ज्योतिःस्वरुप जी रईस व आनरेरी मैजिस्ट्रेट देहरादून। उपप्रधान श्रीमान् चौधरी रामशरणजी रईस अमृतसर। मन्त्री श्रीमान् पं० चन्द्रदेवसहाय व्यास जी हैं। सभा के........ सभासद हैं।

अन्दरुनी प्रबन्ध—निम्न लिखित महानुभावों के आधीन है।

भिषगाचार्य्य कविराज डा० पं० शिवदत्त काव्यतीर्थ विद्याभूषण एल. सी. पी. एस. मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् नाथूलाल जी रिटायरजज़ रियासत कृष्णागढ़ सहायक मुख्याधिष्ठाता। श्रीस्वामी शुद्धबोध तीर्थ जी (पं० गंगादत्तजी) आचार्य्य।

इमारत—विद्यालय के पास १५० बीघा जमीन है। इस में ब्रह्मचर्याश्रम, यज्ञशाला, पुस्तकालय, भोजनशाला, भण्डार, गोशाला, औषधालय, आरोग्यालय, पाठशाला स्नानागार, विद्यार्थ्याश्रम, आनन्दकूप, गणेशकूप, दर्शन-प्रेस, गृहस्थि कुटिर, तथा फुटकर मकानात हैं, जो लगभग ४००००) के हैं।

गणपति भवन—श्रीमान् परमपदारूढ़ पं० गणपति शर्म्मा जी की यादगार में एक भवन बनाने का विचार है। जिस पर १५०००) की लागत का तखमीना लगाया गया है। ३०००) के करीब आचुके हैं और दो हाज़ार के वायदे हैं।

ब्रह्मचारी—इस समय ७० ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

शिक्षा—प्राचीन प्रणाली पर दी जाती है। कोई फीस व खर्च नहीं लिया जाता। अन्न, वस्त्र, पुस्तकादि सब महाविद्यालय की ओर से दिया जाता है। पाञ्च क्लासे हैं। (१) आचार्य्य क्लास (२) उपध्याय क्लास (३) उपदेशक क्लास (४) वैद्यक क्लास (५) कृषि क्लास।

मिडल तक अंगरेजी की शिक्षा भी दी जाती है। संस्कृत विद्या की उच्च शिक्षा का पूरा प्रबन्ध है। योग्य ब्रह्मचारियों को काशी, कलकत्ता तथा पञ्जाब यूनिवर्सिटी की संस्कृत उपाधि परीक्षायें भी दिलाई जाती हैं। इस वर्ष तक व्याकरण न्याय, वेदान्त, सांख्य तीर्थ तथा शास्त्री की उपाधियें प्राप्त कर चुके हैं। महाविद्यालय सभा के आधीन एक हिन्दी प्राईमरी स्कूल ज्वालापुर में है। जिस से ज्वालापुर निवासियों को लाभ पहुंचता है।

स्टाफ—में १० अध्यापक तथा पाञ्च संरक्षक हैं, जिले कि बिलालिहाज़ लियाकत और प्रबन्ध से विद्यालय के कार्य को उत्तम रीति से चला रहे हैं। आचार्य्य श्री स्वामी शुद्धबोध तीर्थ जी तथा मुख्याध्यापक पं० पद्मसिंह जी हैं। दर्शन-शास्त्र के अध्यापक श्री गुरुवर पं० काशीनाथ जी कर रहे हैं, जिन से विद्यालय के ब्रह्मचारी दर्शन शास्त्री में विशेष योग्यता प्राप्त कर

चुके हैं। मुख्य संरक्षक का कार्य भी ब्रह्मचारी भगवान्स्वरूप जी बड़ी उत्तम रीति से कर रहे हैं।

आमदनी और खर्च–गत वर्ष १५०००) की आमदनी और उतना ही खर्च हुवा। महाविद्यालय का कोई मुस्तकिल फण्ड नहीं। प्रति वर्ष गजट के अनुसार धन एकत्रित करना पड़ता है। वर्तमान अधिकारी वर्ग इस यत्न में हैं कि इसका मुस्तकिल फण्ड स्थिर कर इस की बुनियाद को मज़बूत कर दिया जाय। आर्य्य जनिता को अधिकारियों की शुभ इच्छा को पूरा करने का यत्न करना चाहिये।

प्रचार–महाविद्यालय की ओर से वैदिक धर्म प्रचार भी होता रहता है। जब कभी कोई समाज वा आर्य्य पुरुष वार्षिकोत्सव और विवाहादि में बुलाते हैं भेजे जाते हैं। स्वतन्त्र भी प्रचार के लिये उपदेशक और भजनोपदेशक बाहर जाते रहते हैं इस समय २ उपदेशक और तीन भजनोपदेशक वैदिक धर्म प्रचार कर रहे हैं। और सभा से प्रचार के महत्व के सन्मुख रख कर उपदेशक और भजनोपदेशक की संख्या को बढ़ाने का विचार कर लिया है।

गुरुकुल गुजरांवाला।

गुरुकुल गुजरांवाला के लिये भूमि ला० भगत आनन्दस्वरूपजी ने दान दी थी जिस पर अब गुरुकुल की इमारत स्थापित है। यह गुरुकुल सन् १९०२ में स्थापन किया गया था इसका प्रबन्ध एक सभा के आधीन है, जो अधिकतर ब्रह्मचारियों के संरक्षकों में से बनाई गई है। जिस के प्रधान राय ठाकुरदत्तजी पिन्शनर और मन्त्री ला० रलारामजी हैं।

शिक्षा–इन्ट्रेंस तक दी जाती है, जो कि बजाय दस वर्ष के ८ वर्ष में पूर्ण हो कर समाप्त हो जाती है यह विद्यालय यूनिवर्सटी पंजाब के साथ सम्बन्धित है। श्रेणी ८ हैं। जिन में आजकल ८३ ब्रह्मचारी विद्या ग्रहण करते हैं। विद्यालय की इमारत अलग है और आश्रम भी पृथक है, सन्ध्या, हवन, व्यायाम प्रति दिन प्रातः व सायंकाल सब ब्रह्मचारी करते हैं।

रीडिङ्गरूम में दो से तीन घण्टा तक ब्रह्मचारी स्वाध्याय करते हैं।

ब्रह्मचारियों की अपनी हिन्दी और अंग्रेजी क्लब में होती है, जिन में वह भाग लेते हैं इनके अतिरिक्त आर्य्य-भाषा सम्बन्धिनी सभा है, जिसका प्रबन्ध ब्रह्मचारियों के हाथ में है। एक प्रबन्धकर्तृसभा और एक सेवक मण्डली है जिन के द्वारा प्रबंध करने की रिव्ट पैदा की जाती है और बीमारों की सेवा की जाती है।

आश्रम पर एक अस्पताल है एक सब असिस्टैन्ट सरजन रोगियों की देख भाल करता है। और एक कम्पौन्डर अहाते के अन्दर हर समय उपस्थित रहता है।

संरक्षकी और प्रबन्धके लिये ९ अध्यापक और ५ अधिष्ठाता हैं, ब्रह्मचारियों के लिये विद्यालय में एक पुस्तकालय है।

गत वर्ष सन् १९१९ में १५०३२) रुपये की आय हुई और १६८९६) रुपये का व्यय हुआ या आय इस समय १२०७) माहवारी फीस से वसूल होती है परन्तु खर्च आय से २००) अधिक बढ़ गया है। जो कि आर्य्य जनिता को पूरा करना आवश्यक है।

गुरुकुल पुठोहार—चोहाभक्तां।

विद्यालय-श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा भक्तां के कतिपय विद्या प्रेमिजनों के सदोत्साह तथा विशेष अनुरोध से धनादि संग्रह बिना ही ईश्वर विश्वास पर दिसम्बर सन् १६०८ में जारी हुआ और २६ मई सन् ०१ में नियमानुकूल प्रबन्धकर्त्तृ सभा की रजिस्टरी होकर कुल का सर्व प्रबन्ध उसी के हाथ में रहा।

आय व्यय-चार हजार के करीब वार्षिक व्यय है, जो जनिता के धन से पूरा होता रहता है कोई मुस्तकिल फण्ड नहीं। पिछले वर्ष में आय थोड़ा और व्यय अधिक होने से कमेटी प्रायः ऋणी रहा करती थी परन्तु सम्प्रति दयालु परमेश्वर की अपार दया से कमेटी पर कोई ऋण नहीं प्रत्युत छः मास का व्यय जमा रहता है।

छात्र-वैसे तो गुरुकुल के जन्म दिन से ही कुल के विरोधियों ने भी जन्म ले लिया था, जो आज तक समय २ पर कुल की खासी खबर लेते रहे हैं, यहां तक कि प्रथम वर्ष ही शत्रु दलने कुल के मकान भस्म कर दिये थे। यह वृत जनिता से अप्रगट नहीं। किन्तु गत वर्ष कुल पर एक और भयानक आपत्ति उपस्थित हुई कि अकस्मात् कमेटी के सदस्यों में ही कुल के स्थान परिवर्त्तन का वाद छिड़ गया, जिस से बहुत कुछ रुठा रुठी के कारण हानि उठानी पड़ी, विद्यार्थियों की संख्या भी पूर्वापेक्षा बहुत कुछ कम होगई इसी कारण सम्प्रति १५ विद्यार्थी हैं। २५ रखने का सभा ने निश्चय किया है, जो शीघ्र पूरा होजावेगा।

बड़ी श्रेणी के विद्यार्थी—काशी का न्याय दर्शन वात्सायन भाष्यादि ग्रन्थ पढ़ते हैं, ब्रह्मचारियोंमें से अभी स्कीम पूरी करके कोई छात्र बाहर नहीं निकला, हां उपदेशक कक्षा में से पं० यज्ञदत्तजी जो कि आजकल प्रादेशिक सभा लाहौर में उपदेशक हैं, पं धर्म्मवीरजी लोकमणी जी आदि निकले जो समाजों में कार्य्य करते हैं।

अधिकारी व कर्मचारी।

(१) पं० मुक्तिरामजी विद्यावारिधि मुख्याध्यापक (२) पं० सत्यव्रतजी मुख्याधिष्ठाता व अध्यापक (३) पं० सोमदत्तजी उप अधिष्ठाता व उपदेशक (४) पं० विष्णु दत्तजी व ब्र० पुरुषार्थीजी प्रचारक (५) प्रधान ला० रामदास सेठी रईस रावलपिंडी (६) उप प्रधान ला० सदा नितालजी हैं।

सम्पत्ति-इस समय कुल के पास अपनी मिलकियत ४४ बीघे भूमि है तथा ४४ बीघे रहन है। इस के अतिरिक्त १००००) की लागत के मकान और १२००) की लागत का एक कूप है। ५००) की लागत का एक कमरा अध्ययनालय प्रस्तुत होरहा है और एक तालाब बन रहा है। गुरुकुल के सम्बन्ध में एक गोशाला ब्रह्मचारियों के दूध पीने के लिये है जिस में सम्पत्ति छोटी बड़ी सब १२ गांय हैं।

गुरुकुल होशंगाबाद मध्यप्रदेश

गुरुकुल सन् १६१२ सं० १६६६ अप्रेल में स्थापित हुआ। वार्षिक आय प्रायः ५०००) और मासिक व्यय प्रायः ४००) से ५००) रु० गुरुकुल के पास इस समय प्रायः २०००) होंगे इस के अतिरिक्त १२ एकड़ भूमि है।

२४ ब्रह्मचारी आजकल पढ़ते हैं पढ़ाई छः श्रेणी तक है।

सब मिलकर ४ अध्यापक प्रबन्धकर्त्ता

समेत कार्य्य कर रहे हैं । एक संरक्षक श्री स्वामी ईश्वरानन्दजी हैं ।

प्रबन्धकर्त्ता ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द

अध्यापक श्री पं० विश्वम्भरदत्तजी विशारद

" श्री ज्वालाप्रसादजी

" श्री वाचस्पतिजी काव्यतीर्थ

यह गुरुकुल नर्वदानदी के किनारे निवास करता है। दोनों ओर सातपुला तथा विन्ध्या पर्वत आये हुए हैं। जल तथा वायु बड़े ही स्वास्थ्य कर हैं। दृश्य बड़ा ही रमणीय है। गुरुकुल अपनी आवश्यकताएं बराबर पूरी कर रहा है। इत्यादि

गुरुकुल मारवड़ मण्डावर जोधपुर

यह गुरुकुल २४-११-१२ को जोधपुर समाज की ओर से मण्डोवर की पहाड़ी पर एकान्त रमणीक स्थान पर स्थापित हुआ है।

अधिकारी-प्रधान चौ० मेघारामजी मंत्री म० लक्ष्मणजी कोषाध्यक्ष म० पोपाराम जी मुख्याधिष्ठाता म० लक्ष्मणजी हैं।

भवन-आश्रम तथा विद्यालय गौशालादि हैं, पुस्तकालय में ४००) की पुस्तकें हैं और औषधालय भी है ग्रामीण लोगों को भी दवाई दी जाती है।

इस पाठशाला में मुफ्त शिक्षा दी जाती है।

शाखा गुरुकुल सटीक-एटा

श्रीमति आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध ने राय साहिब श्रीराम रामनारायण जी के अनुरोध व कुछ स्थिर सम्मति देने पर गुरुकुल महाविद्यालय वृन्दाबन की शाखा स्थापितकी। पं०अम्बासहाय जी मुख्याधिष्ठाता हैं सहायक सभा शाखा का प्रबन्ध करती है और इस का कुल व्यय राय साहिब श्रीराम रामनारायण जी देते हैं।

मकान-इस समय १००००) का गृह राय साहिब ने दिया है और ५० सहस्र के स्थिर मकानात बनवाने को उद्यत हैं।

गुरुकुल सूर्य्यकुंड बदायूं

यह गुरुकुल स्वामि दर्शनानन्द जी द्वारा सन् १९०३ में स्थापित हुआ था। इस समय ४००००) रुपये के गृह हैं, गु०कु० में पुस्तकालय पाक भवन भण्डार कार्य्यालय तथा ३ कूप हैं।

पं० दीनदयालु जी व पं० पवनकुमार जी इसका प्रबन्ध करते हैं।

ब्रह्मचारी २०-तथा अध्यापकगण भी हैं इसका कार्य्य साधारणतया से चलता रहता है इसका उद्देश्य विद्या दान करना है।

गुरुकुल सिकन्दराबाद

स्थापना-सन्१९०० में श्री स्वामी दर्शनानन्द जी ने स्थापित किया था स्टेशन के निकट ही है।

इसका प्रबन्ध पं० मुरारीलालजी शर्म्मा तथा एक कमेटी के आधीन है।

कन्या गुरुकुल "ब्रह्मचर्य्याश्रम" काशी।

इस कन्या गुरुकुल की स्थापना आषाढ़ शुक्ल १५ सम्वत् १९७० वि० ता० १८

जौलाई १६१३ को हुई है, प्रवन्ध कन्या गुरुकुल सभा के आधीन है।

उद्देश्य—प्राचीन रीत्यानुसार ब्रह्मचारिणी कन्याओं को शास्त्रिणी और शीलवती बनाना है।

सभा के प्रधान पं० हरिशङ्करप्रसाद शास्त्री, मन्त्री पं० इन्द्रदत्त शर्मा जी हैं।

गुरुकुल की मुख्याधिष्ठात्री श्रीमती पं० सुमित्रादेवी धर्म्मपत्नी पं० इन्द्रदत्तशर्मा जी की है। अधिष्ठात्री श्रीमती शान्तिदेवी पुत्री बा० माणिकचन्द् वर्म्मा हिंगोली (निजाम) की हैं।

कन्यागुरुकुल की संरक्षिका श्रीमती महारानी साहबा जोधपुर, श्रीमती महारानी साहब डुंगरपुर (उदयपुर), श्रीमती रानी मैनपुरी हैं।

गुरुकुलका प्रारम्भ ३ ब्रह्मचारिणियों से हुआ था, अब १२ ब्रह्मचारिणियें जिस में १ अर्द्ध शुद्ध ११ अशुद्ध अध्ययन करती हैं।

इस गुरुकुलका चतुर्थ वार्षिकोत्सव ता० १, २, ३ जौलाई १६१७ को अच्छी सफलता के साथ हुआ।

गुरुकुल के विद्यालय और आश्रमादि अनुमानिक कुल आय १८००) रुपये और व्यय १६००) रुपया सभा ने स्वीकृत किया है।

कन्या गुरुकुल के आय की पूर्ति मासिक चातुर्मासिक, वार्षिक तथा स्फुटिक दान से होती है।

सभाने गुरुकुल मन्दिर निजका बनाना निश्चय कर लिया है। जिस के लिये दस हज़ार रुपये की आवश्यकता है, अब तक एक हज़ार रुपये का वचन तथा नकद में प्राप्त हुआ है।

इनके अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी की दो और शाखायें जिला रोहतक में झज्जर और मटिण्डू।

गत वर्ष में खुली हैं, गुरुकुल बरालसी में एक गुरुकुल हरपल जाम राजपट्टी में और इस प्रकार कई और छोटे २ गुरुकुल खुले हुए हैं।

श्रीमद्दयानन्दऐङ्गलोवैदिक कालेज लाहौर

स्थापना—यह कालेज महर्षि दयानन्द जी महाराज के स्मारक में १ जून सन् १८८६ ई० को हिन्दोस्तान भर की आर्य्य समाजों की एकाग्र सम्मति से एक साधारण स्कूल की सूरत में स्थापित किया गया। स्वामी जी महाराज का स्वर्गवास ३१ अक्तूबर सन् १८८३ ई० को हुआ। और ठीक एक सप्ताह के पश्चात् यानी ६ नवम्बर सन् १८८३ ई० को कालेज के स्थापित करने की तजवीज़ नियमानुसार सूरत में पेश हो कर ९ नवम्बर सन् १८८३ ई० को चन्दा इकट्ठा करने के लिये पब्लिक उत्सव हुआ। रुपया और कार्य्य कर्ताओं की न्यूनता के कारण यह तजवीज दो साल तक कार्य्य-रूप में न आसकी। यहां तक कि ३ नवम्बर सन् १८८५ ई० को लाला हंसराज जी, बी. ए. ने अपनी आयु भर के लिये दयानन्द कालेज की भेंट की और इस के ७ माह (मास) पश्चात् १जून सन् १८८६ ई० को दयानन्द स्कूल एक २०) रु० मासिक के किराये के मकान में जारी हुआ।

कालेज व स्कूल की मालियत—आज

३१ साल के पश्चात् इस की इमारत जो कालेज और स्कूल से सम्बन्ध रखती हैं, ७ लाख रुपये के लग भग की मालियत की है। और यह कालिज हिन्दुस्तान भर में एक वृहद कालेज माना जाता है। और बिला लिहाज़ तायदाद छात्रगण और बलिहाज वसअत दायरे काम दिन प्रति दिन उन्नति कर रहा है।

प्रबन्धकारणी सभा—एक छोटी हुई प्रबन्ध कारणी कमेटी के आधीन यह कालिज काम कर रहा है। प्रति पांच सहस्र रुपये देने वाली प्रत्येक समाज एक योग्य मेम्बर को चुन सकती है। कुछ संख्या मेम्बरों की बलिहाज भिन्न भिन्न योग्यताओं के चुनी जाती है। आज कल इस कमेटी के ८६ मेम्बर हैं। जिन में से ८४ चुने हुए हैं। आज कल प्रधान श्रीमान् महात्मा हंसराज जी बी. ए. उप प्रधान आनरेबल राय बहादुर बख्शी सोहनलाल व लाला दुर्गादासजी बी. ए. जेनरल सैक्रेटरी बख्शी टेकचन्द्र जी एम. ए. और जाइन्ट सैक्रेटरी लाला नन्दलाल पुरी बी. ए. लाला मुकुन्दलाल पुरी एम. ए. पं० नानकचन्द बी. ए. बैरिस्टर और लाला सुखदयाल जी मंत्री जायदाद लाला धर्म्मचन्द कोषाध्यक्ष सैक्रेटरी उपदेश व आयुर्वैदिक सब कमेटी लाला रामानन्द बी. ए. लिमिटेड।

लाइफ मेम्बरान—लाला सांईदासजी, एम. ए. लाला दीवानचन्दजी एम. ए. लाला हुकमचन्दजी एम. ए. लाला बख्शी रामरतन बी. ए. बी. टी.

छात्रों की संख्या और नतायज—इस समय केवल कालेज में एक सहस्र एक सौ छात्र विद्या ग्रहण कर रहे हैं। नतीजे प्रति वर्ष उत्तम रहते हैं युनिवर्सिटी के अतिरिक्त स्वलक के कालेज कमेटी की ओर से ४० के लग भग विद्यार्थी स्वलक पा रहे हैं। जिसका योग वार्षिक अढ़ाई हज़ार होते हैं।

कालिज स्टाफ—में ११ प्रोफैसर हैं जिन की एक साल की तनख्वाह २६ हज़ार बचती है। योग्यता व कर्तव्य परायणता के कालेज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सर्योग्य लाला सांईदास जी लाइफ मेम्बर जो कलकत्ता युनिवर्सिटी के बी. ए. पास हैं, इस कालेज के प्रिंस्पल हैं।

बोर्डिङ्ग हाऊस—इस समय बोर्डिंगहाऊस में ५०० से अधिक विद्यार्थीगण रहते हैं। इस की इमारत बड़ी ऊंची है, और शहर के बाहर खुले बाग़ में बनी है। हर सांयकाल को सब बोर्डर (विद्यार्थी) मिल कर सन्ध्या व हवन करते हैं। बोर्डिङ्ग हाऊस की वार्षिक आय दस हज़ार रुपये से कुछ अधिक है। और व्यय भी लग भग इतना ही है। बोर्डरों की जिस्मानी वरजिश के लिये जमनास्टिक क्रीकट फुटबाल और हाकी की टीमें हैं।

मज़हबी तालीम—हिन्दी सब विद्यार्थियों को लाजमी तौर पर पढ़ाई जाती है। सन्ध्या हवन मन्त्र सत्यार्थ-प्रकाश के चुने हुये और धर्म्म-शिक्षक पुस्तकों द्वारा मज़हबी तालीम का काम होता है।

शिक्षा इस समय प्राइमरी जमात से बी. ए. क्लास तक धर्मशिक्षा की रीडर्स (पुस्तकें) तय्यार हो चुकी हैं जो बाकायदा लाजमी तौर पर हर क्लास में पढ़ाई जाती हैं। और शास्त्र उपनिषद

द्वारा प्राचीन संस्कृत की शिक्षा दी जाती है।

वैदिक डिपार्टमेन्ट—वैदिक डिपार्टमेन्ट की चार क्लासों में ३१ दिसम्बर सन् १९१५ को ३८ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। युनिवर्सिटी की परीक्षा शास्त्री में ४ में से चार पास हुये और कुल सूबे भर में दोयम व चहारुम नम्बर आये विशारद में ४ में से २ और उपाध्याय में ८ में से ५ उत्तीर्ण हुये। पं० भगतराम जी वैद्यतीर्थ इस डिपार्टमेन्ट के हेड पंडित हैं। इस डिपार्टमेन्ट में साधारण संस्कृत से ले कर वेदों तक की शिक्षा दी जाती है। यहां से जो विद्यार्थी निकलते हैं। वह धर्म उपदेश का काम करते हैं। चुनाचें इस समय डेढ़ दर्जन के लग भग वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

आयुर्वैदिक क्लास—प्राचीन आयुर्वेदक चिकित्सा पढ़ाने के लिये बहुत समय से स्थापित है। इस क्लास के पढ़ने वालों को युनिवर्सिटी या क़ायदा सार्टीफिकेट देती है। १९१५ ई० में कविराज के इम्तिहान में १४ विद्यार्थी में से ९ पास हुए और वेद वाचस्पति में ४ में से ४ पास हुए, इस क्लासों में कुल विद्यार्थियों की संख्या ३१ थी, इस क्लास के विद्यार्थियों को ६ स्वल्क ३० रुपये माहवार के मिलते हैं।

दर्जी क्लास—में इस समय विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं, इनमें से जिन को स्वल्क मिलते हैं केवल २०) रुपये माहवार दिया जाता है। इस क्लास से दर्जी बन कर प्रति वर्ष निकलते हैं।

बढ़ई क्लास—यह कक्षा १९१५ में खोली गई थी, एक मिस्तरी ३०) मासिक पर काम करता है और विद्यार्थियों को बढ़ई का काम सिखलाता है। इस कक्षा में २० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। मेज़, कुर्सी, तिपाई और हर प्रकार की फरनीचर बनाते हैं।

उपदेशक क्लास—इस कक्षा के द्वारा विद्यार्थी संस्कृत और हिन्दी के धार्मिक साहित्य के द्वारा उपदेश के काम के लिये तय्यार किये जाते हैं। विद्यार्थियों से किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती है। बल्कि कई एक को भोजन का खर्च भी कमेटी की ओर से मिलता है।

पूंजी—इस समय कालिज की पूंजी १३४१०००) है। इस में से १६५०००) कालेज के हितैषियों ने पारितोषिक स्वर्णपदक और स्वल्क के लिये दे रक्खा है।

इमारत पर ६६६०००) खर्च आचुका और स्कूलों का डिपार्टमेण्ट निकालकर शेष ४७१५००) भिन्न २ बैंकों में जमा है। या दूसरे कायदों पर लगा हुआ है। जिस के सूद से कालिज का खर्च चलता है।

कालेज की विशेषता—कालिज संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा में विशेष भाग लेता है। कालिज के सूद का दो तिहाई हिस्सा संस्कृत की शिक्षा में व्यय होता है। शेष एक तिहाई और फीसों की आय से दूसरे विषयों में अङ्गरेजी हिसाब इत्यादि कालेज में पढ़ाये जाते हैं। कालेज देश को उत्तम मस्तिष्क के अच्छे मिश्नरी दे रहा है। और सुयोग्य प्रचारक व उपदेशक पैदा कर रहा है।

कालिज प्राचीन और नवीन विद्याको मिला कर ऐसे मनुष्य पैदा कर रहा है। जो पश्चिमी और पूर्वी विद्या में निपुण होने के कारण वैदिकधर्म्मप्रचार दूर २ तक करते हैं।

खर्च के लिहाज से मध्यम दर्जे के मनुष्यों के लिए विशेष कर कालेज भारी

सहायक है। इन कारणों से दयानन्द कालेज का नाम चमकता है। धन और सच्चे कार्य्य कर्ताओं की पूरी संख्या न होने के कारण अभी आदर्श की प्राप्ति में कई अंशों में न्यूनता है।

आर्य्य-स्कूल तथा पाठशालाएं-डी. ए. वी. हाईस्कूल लाहौर।

यह स्कूल पंजाब के कुल हाईस्कूलों में संरक्षक और यूनीवर्सिटी की परीक्षाओं के परिणामों में सब से उत्तम है, योग्य अध्यापकों के आधीन प्रति वर्ष उन्नति कर रहा है। इस समय इसमें १६५० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं प्रबन्धकारिणी सभामें अपने प्रस्ताव २८ नवम्बर १९१५ ऊंची श्रेणियों में भी विवाहित विद्यार्थियों का प्रवेश करना बन्द कर दिया है। यानी प्राइमरी की पहिली श्रेणी से इन्ट्रेंस की दसवीं श्रेणी तक एक वैदिक विद्या भी सम्मिलित नहीं इस प्रकार ब्रह्मचर्य्यादर्श की पूर्ति में यह स्कूल अधिक पाट ले रहा है।

हिन्दी-पहिली से ८ श्रेणी तक हिन्दी की धार्मिक पुस्तकें अवश्य पढ़ाई जाती हैं

धार्मिक शिक्षा-स्कूल के सम्बन्ध में एक नवयुवक समाज भी लगती है। विद्यार्थियों को विशेष कर धार्मिक शिक्षा और उपदेश इत्यादि नियमानुसार होते हैं।

इस स्कूल के हैड मास्टर बख्शीरामरत्न जी बी. ए. बी. टी. हैं। जो दयानन्द कालेज के लाइफ मेम्बर हैं, स्कूल मज़कूर के अतिरिक्त निम्न लिखित स्कूल भी दयानन्द वैदिक कालेज लाहौर की शाखा हैं।

(१) डी. ए. वी. हाईस्कूल होशियारपुर
(२) " " मुलतान
(३) गोविन्दसहाय एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल हाफिज़ाबाद
(४) " " ऐबिटाबाद
(५) सांईदास एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल जालन्धर
(६) एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल अम्बाला
(७) डी. ए. बी. हाईस्कूल रावलपिण्डी
(८) " हाईस्कूल अमृतसर
(९) " मिडल स्कूल बहरामपुर
(१०) " " मुक्तसर
(११) बी. बी. " जलालपुरजट

इन सब स्कूलों में जातीय शिक्षा की वही पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं और सब श्रेणियों में एक ही प्रकार की शिक्षा उपरोक्त लेखानुसार स्कूलों में दी जाती है। और दयानन्द कालेज कमेटी लाहौर की ओर से प्रति वर्ष एक पंडित जातीय शिक्षा के निरीक्षण के लिये बतौर इंसपेक्टर नियत होता है।

सन् १९१५ ई० में स्कूल की आय २५½ हज़ार रुपये और व्यय २१ हज़ार रुपये था। इस स्कूल के साथ एक २ आला (उत्तम) बोर्डिङ्गहाऊस भी है। जिस में २२५ विद्यार्थी रहते हैं, बोर्डिङ्गहाऊस की वार्षिक आय सन् १९१५ ई० में २१ हज़ार रुपये थी और खर्च तीस हज़ार रुपये।

आर्य्यस्कूल व पाठशालायें
पंजाब

(१) दुआबा हाईस्कूल जालन्धरशहर-स्कूल कमेटी के आधीन है जिस के प्रधान लाला रामकृष्ण जी हैं।

(२) जाजे दुआबा हाई स्कूल नवां शहर-मैनेजिंग कमेटी के आधीन है प्रधान

लाला कांशीराम जी वकील मन्त्री लाला भद्रसेन जी लागत मकान ६ हज़ार।

(३) समराय जिला जालन्धर-आर्य्य मिडल स्कूल है मैनेजिंग कमेटी के आधीन है धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध है।

(४) आर्य स्कूल अलावलपुर-मैनेजिंग कमेटी के आधीन है।

(५) आर्य्य मिडल स्कूल नकोदर-मैनेजिंग कमेटी के आधीन है।

(६) दुआबा मिडल स्कूल नूरमहल-समाज की ओर से मैनेजिंग कमेटी के आधीन है बोर्डिङ्ग बिल्डिङ्ग स्कूल अपनी है

(७) जिला स्यालकोट-आर्य्य मेघउद्धार सभा के आधीन है। सात स्कूल भिन्न भिन्न स्थानों पर है।

(८) जम्मूं- आर्य्य मिडल स्कूल है।

(९) माहिल पुर-लाला गुरांदित्तामल जी हैडमास्टर हैं अमला काफी है स्कूल मंजूर शुदा है।

(१०) पट्टी-डी. ए. वी. मिडल स्कूल है इसके सम्बन्ध में बोर्डिङ्ग हाउस भी है मकान अपना है चार हज़ार रुपये पूंजी है

(११) हुसोहा-डी. ए. वी. मिडलस्कूल है मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है। स्कूल और बोर्डिङ्ग हाउस की बिल्डिङ्ग शहर के बाहर है।

(१२) शाम चौरासी-डी. ए. वी. मिडल स्कूल १९०२ ई० से जारी है।

(१३) ऊना-डी. ए. वी. मिडल स्कूल ६ सन् १९११ ई० से जारी है मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है।

(१४) हरियाना-डी.ए.वी. मिडलस्कूल है लाला बरकतरामजी बी. ए. हैड मास्टर हैं

(१५) ब्रह्मपुर चन्द्रलहड़ी-ऐङ्गलो संस्कृत स्कूल प्राइमरी तक है।

(१६) बजवाड़ा-सरदार बहादुर अमीं-चन्द हाई स्कूल है। एक आर्य्य पाठशाला भी है।

(१७) लढ़या (मुजफ्फरगढ़)-आर्य्य स्कूल है लोअर प्राइमरी तक फीस माफ है। बिल्डिङ्ग अपनी है धार्मिक शिक्षा का भी प्रबन्ध है।

(१८) एङ्गलो संस्कृत स्कूल करोड़-जिला मुजफ्फरगढ़ मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है मकान अपना है।

(१९) नागरी पाठशाला भक्कर जिला मियांवाली-नियमानुसार मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है।

(२०) डी. ए. वी. हाई स्कूल कोयटा-अतरङ्ग सभा आर्य्य समाज के आधीन है ११०००) रुपये की अपनी बिल्डिङ्ग है।

(२१) पेशावर-नेशनल हाई स्कूल है आर्य्य समाज के आधीन मैनेजिङ्ग कमेटी है। धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है।

(२२) एङ्गलो संस्कृत स्कूल चैन्यूत-मेहता बहादुरचन्दजी मैनेजर हैं, मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है। धनपतरायजी हैडमास्टर हैं।

(२३) लायलपुर ऐङ्गलो संस्कृत मिडल स्कूल-आर्य्यसमाज के आधीन है महाराज कृष्णजी मैनेजर हैं धार्मिक शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है।

(२४) सेठ आयाराम टेकचन्द ऐङ्गलो संस्कृत स्कूल डेरागाजीखां-दसहज़ार रुपये पूंजी है इस में एक संस्कृत क्लास भी है सब हिन्दु मुसलमान लड़के आर्य्य भाषा में शिक्षा पाते हैं सन्ध्या प्रातः लाज़मी है।

(२५) श्रीनगर रनबीर गंज आर्य्य हिन्दी पाठशाला-अंतरङ्ग सभा आर्य्यसमाज के

आधीन है। पाठशाला समाज मन्दिर में लगती है।

(२६) रामजस हाई स्कूल देहली-बा-रोनक स्कूल है।

(२७) झज्जर—वैदिक पाठशाला थी जो गुरुकुल में परिवर्तन हो चुकी है। फीस माफ है महाशय बिशम्भरनाथजी मन्त्री हैं।

(२८) भटिन्डो की पाठशाला शीघ्र ही गुरुकुल में परिवर्तन होने वाली है।

(२९) रोहतक—जाटस्कूल जाटों की ओर से है।

(३०) पूनाहाना—वैदिक पाठशाला प्रधान चौधरी रामचन्द्र मन्त्री श्यामलालजी गुप्त मैनेजर रोशनलालजी लागत मकान ८००), पूंजी ४००), विद्यार्थी २० ।

(३१) सिन्ध जिला करनाल में पाठशाला है प्रायमरी तक शिक्षा दी जाती है। १३० लड़के पढ़ते हैं धार्मिक शिक्षा दी जाती हैं ८॥≈) आने सरकार में बाकी व्यय आर्य्यसमाज देती है। महाशय प्रभूरामजी अध्यापक हैं।

(३२) सफर—रात्रि पाठशाला १० लड़के आर्य्य भाषा पढ़ते हैं।

(३३) जतोई—जिला मुज़फ्फ़रगढ़—आर्य्य शास्त्री संस्कृत पाठशाला है शिक्षा शास्त्री तक निश्चित है इस समय प्राज्ञ आरम्भ है १० लड़के हैं लाला टिक्कनलालजी प्रधान म. टेकचन्दजी मन्त्री।

(३४) दौलतपुर जिला होशियारपुर—डी. ए. वी. स्कूल मिडल तक है विद्यार्थियों की संख्या ८० है।

(३५) अम्बाला शहर—स्कूल है ५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं।

(३६) अंबाला श०(का०से०) स्कूल है।

(३७) वोढ़िया—देव नागरी पाठशाला है २६ लड़के पढ़ते हैं।

(३८) सिरसा—जिला हिसार आर्य्य पाठशाला है २८ लड़के पढ़ते हैं पांच श्रेणी हैं पं० नानकचन्द अध्यापक हैं।

(३९) बलबगढ़—पहिली जनवरी से इस जगह चमारों में समाज की ओर से आर्य्य पाठशाला है जो कि शीघ्र ही सरकार से इम्दादी हो जायगी।

(४०) दीना नगर—प्राइमरी तक स्कूल शुद्ध हुये लोगों के लिये है ५० लड़के पढ़ते हैं बाबू नन्दलालजी मैनेजर हैं।

(४१) झांगी वाला—जिला मुजफ्फरगढ़ संस्कृत पाठशाला है प्राज्ञ तक शिक्षा दी जाती है, २६ विद्यार्थी पढ़ते हैं मन्त्री खुशन्दारामजी प्रधान लाला लक्ष्मीनरायणजी मन्त्री अधिकारियान ने निश्चय किया है। कि इस पाठशाला को विस्तृत किया जाय और इस का नाम सर्व विद्यालय रक्खा जाय। और इस में संस्कृत के अतिरिक्त हिकमत, वैद्यक, शिल्प, गायन विद्या और कोष विद्या भी सिखलाई जावे। साथ ही उपदेशक क्लास का भी प्रवन्ध किया जावे। एक वानप्रस्थ आश्रम भी हो इस कार्य्य के लिये भूमि वस्ती के बाहर ली गई है। और सभा की ओर से एक मुख्य पुरुष प्रबन्ध के लिये नियत हुआ है।

(४२) मुरिन्डा—जिला अम्बाला संस्कृत स्कूल है मुख्य अधिष्ठाता स्वामी विवेकानन्दजी शिक्षा प्राज्ञ तक अनाथालय साथ में है जिस में दस अनाथ बालक पढ़ते हैं।

(४३) रावलपिंडी शहर—समाज ने

एक उपदेशक आश्रम खोला है। जिस के मैनेजर जगन्नाथजी हैं आचार्य स्वामी विशुद्धानन्दजी हैं पांच विद्यार्थी पढ़ते हैं।

(४४) राजपुरा- रियासत पटियाला- अछूत पाठशाला है जिस में २५ लड़के पढ़ते हैं।

(४५) भदौड़ रियासत पटियाला— रात्रि पाठशाला है, ३५ लड़के पढ़ते हैं हिन्दी भाषा की शिक्षा मास्टर रौनकराम मुफ्त २ घंटे देते हैं पाठविधि पर विचार हो रहा है।

(४६) मीरपुर रियासत जम्मूं –में शुद्ध हुये लोगों के लिये तीन पाठशालायें हैं।

(४७) बस्तीगुजां जालन्धर---प्रायमरी तक आर्य्य स्कूल है। प्रधान महाशय मथादास मैनेजर महाशय मलावारामजी हैं।

(४८) कोटउद्द जिला मुजफ्फरगढ़–एक वैदिक पाठशाला है मैनेजर लाला किशनदासजी हैं ५० लड़के और प्राज्ञ तक शिक्षा है।

(४६) आर्य्यसमाज गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ने एक पाठशाला मौजेतुगलकाबाद में खोली है जिसके प्रधान पं० प्रियव्रत और मन्त्री निहालसिंह हैं २५ लड़के पढ़ते हैं पाठशाला प्रारम्भिक अवस्था में है।

(५०) हरीपुर जिला हज़ारा –संस्कृत पाठशाला है ३० बालक पढ़ते हैं।

(५१) मुस्तफाबाद---देवनागरी पाठशाला है, लालाबानूमलजी मैनेजर हैं।

(५२) हाफिज़ाबाद---आर्य्य स्कूल एन्ट्रेंस तक है ३०० लड़के हैं।

(५३) भूपालवाला—जिला स्यालकोट---आर्य मिडल स्कूल है १४० लड़के हैं लाला गंगाराम वकील प्रधान पंडित मूलराजजी मैनेजर हैं।

(५४) नजफ़गढ़---आर्य्य परोपकारिणी पाठशाला है चार श्रेणियों में कुल ३० लड़के पढ़ते हैं महाशय मनोहरलालजी प्रधान हैं।

(५५) करांची---एक मेघ सुधार सभा स्कूल आर्य्यसमाज के आधीन है काम लाला लाजपतराय व लाला जसवन्तराय की आधीनता में होता है।

(५६) शाहाबाद जिला करनाल---एक देवनागरी पाठशाला है जिस में अछूत जाति के बालक पढ़ते हैं हेडमास्टर चौधरी आशारामजी हैं।

(५७) फीरोज़पुर छावनी---नाइटस्कूल है २० लड़के पढ़ते हैं महाशय फतेहचन्दजी खजानची हैं।

(५८) मुलतान शहर---दयानन्द ऐंग्लो वैदिक हाईस्कूल है जिस में यूनिवर्सिटी की शिक्षा के अतिरिक्त धर्म शिक्षा भी होती है।

(५९) जगाधरी–दयानन्द रात्रि कल्यानी पाठशाला और देवनागरी पाठशाला दोनों अछूतों के लिये हैं, मैनेजर महाशय रलयाराम के युद्ध पर चले जाने के कारण मैनेजर लाला पूर्णचन्द्र हैं देवनागरी पाठशाला के मैनेजर लाला कश्मीरीलाल गुप्त हैं पढ़ाई प्रायमरी तक है लड़के ५० के लग भग हैं।

संयुक्त प्रान्त

(१) मुरादाबाद---आर्य्यसमाज की ओर से चमारों के लिये आर्य्य स्कूल है ५३ विद्यार्थी हैं।

(२) चन्दौसी---अछूत लड़कों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है।

(३) सम्भल—आर्य्य पाठशाला आर्य्यसमाज के आधीन है।

(४) सरधना जिला मेरठ- मिडल तक अंग्रेजी स्कूल है।

(५) नकोड़—ऐंग्लो बर्नी कुलर मिडल स्कूल है देवनागरी लाज़मी है।

(६) पाठशाला लामनगर—जिला बदायूं समाज मन्दिर में लगती है।

(७) गोला गोकरन जिला खीरी-जार्ज ऐंग्लो वैदिक पाठशाला है धार्मिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध है।

(८) लखीमपुर—पं० भगवानदासजी की स्मार्क में यह स्कूल स्थापित है यहां बिना फीस पढ़ाई होती है।

(९) किराना जिला मुजफ्फर नगर—अन्त्यज पाठशाला है। जिस में आर्य्यसमाज की ओर से अछूत जाति के बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध है।

(१०) भूड़ बरेली—संस्कृत पाठशाला मैनेजिंग कमेटी के आधीन है।

(११) दयानन्द पाठशाला करवी जिला बांदा—आर्य्य सभासदों ने नीच जाति के लड़कों के लिये खोली है उन को बिना फीस तालीम दी जाती है शेष बालक फीस दे कर पढ़ते हैं।

(१२) मवाना कलां जिला मेरठ ऐंग्लो वैदिक स्कूल है और एक पाठशाला भी है।

(१३) फैजाबाद डी. ए. वी. स्कूल है रायज़ादा बक्तरामजी इस के मैनेजर हैं।

(१४) पुरैनी जिला बिजनौर प्राइवेट आर्य्य मिडल स्कूल है।

(१५) धामपुर- अंग्रेजी पाठशाला मिडल तक है।

(१६) देहरादून- दयानन्द ऐंग्लो वैदिक हाईस्कूल है। मैनेजिंग कमेटी के आधीन है जिस के रक्षक लाला जोतीप्रसादजी रईस देहरादून हैं इस के सम्बन्ध में एक बोर्डिंगहाऊस है।

(१७) चौहड़पुर—डी. ए. वी. स्कूल है जिस के मैनेजर पं० राजारामजी हैं।

(१८) अलीगढ़ - डी. ए. वी. हाईस्कूल हैं मैनेजिंग कमेटी के आधीन है।

(१९) डी. ए. वी. पाठशाला ब्रांच अलीगढ़ — प्रबन्धकारिणी कमेटी के आधीन है धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है।

(२०) अत्रास - संस्कृत पाठशाला है।

(२१) गोरखपुर - मुहल्ला बक्शपुर आर्य्य कुमार पाठशाला है। अछूत बालक पढ़ते हैं।

(२२) फतेहपुर—ऐंग्लो संस्कृत मिडल स्कूल है जिस में दस्तकारी भी सिखलाई जाती है।

(२३) आगरा छावनी—आर्य्य पाठशाला है जो आर्य्यसमाज के आधीन है शिक्षा मुफ्त दी जाती है चमारों की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है।

(२४) मुस्करा जिला हमीरपुर —संस्कृत पाठशाला बहुत काल से जारी है।

(२५) आर्य्य पाठशाला भागलपुर ज़िला पटना पं० सरजूप्रसादजी आनरेरी काम करते हैं।

(२६) रुड़की समाज की ओर से रात्रि पाठशाला लगती है २० विद्यार्थी पढ़ते हैं जिन में अधिकतर अछूत जाति के हैं बाबू मथुरादासजी प्रधान महाशय बांकारामजी मंत्री हैं।

(२७) लखनऊ आर्य्य कुमार मंडल लोहारी बाजार रकाबगंज की ओर से एक हिन्दी पाठशाला स्थापित है १२० लड़के पढ़ते हैं ३ आनरेरी अध्यापक काम

करते हैं पाठशाला लगने से पूर्व ईश्वर प्रार्थना और अन्त में आर्ती कराई जाती है।

(२८) हल्दौर ज़िला बिजनौर—में पाठशाला है शिक्षा छठवीं श्रेणी तक ६८ विद्यार्थी हैं उन में ५ कन्यायें हैं। इस पाठशाला का उद्देश्य शुद्ध हिन्दी का प्रचार है प्रबन्ध के लिये कमेटी है प्रधान लाला ठाकुरदास मंत्री महाशय भवानीप्रसाद मासिक व्यय ५५) रुपये छः अध्यापक हैं पाठशाला की एक जायदाद भी है जिस की आय ३००) रुपये वार्षिक है। इस पाठशाला में उच्च जाति के बालकों के साथ चमारों के बालक भी पढ़ते हैं जिनकी संख्या आठ है।

(२९) फैजाबाद—में राजकरन वैदिक पाठशाला है जो महाशय राजकरन लाल जी रईस के दस हज़ार के दान से चलती है अपर प्राइमरी तक शिक्षा दी जाती है धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है विद्यार्थी ६५ हैं, मुख्य अध्यापक गुरु नानकप्रसाद इस के अतिरिक्त चार मास्टर और और हैं।

(३०) कालपी—बालकों की संख्या २८ है शिक्षा सातवीं क्लास तक, तहसीलदार साहेब ने गत वर्ष पारितोषिक बांटा था।

(३१) इटावा—डी. ए. वी. स्कूल है, आठवीं श्रेणी तक पढ़ाई १५० बालक पढ़ते हैं।

(३२) टमकोर—सी. पी. देवनागरी स्कूल है विद्यार्थी २५ हैं।

(३३) नौबतपुर जिला पटना—लोअर प्राइमरी पाठशाला है, विद्यार्थी ३० हैं।

(३४) जहांगीराबाद—आर्य्यसमाज वैदिकपाठशाला है, अधिष्ठाता निक्काराम जी पूंजी १२००)

(३५) भरतपुर-संस्कृतपाठशाला ५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं।

(३६) नगरनोशा जिला पटना—आर्य्य कुमार पाठशाला में १६ लड़के पढ़ते हैं।

(३७) मऊनाथभंजन—एक स्कूल विद्या मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है, ७ क्लास तक पढ़ाई है, आधे मेम्बर आर्य्यसमाजी हैं।

(३८) शाहजहानपुर—वैदिक पाठशाला २ श्रेणी तक लड़के ३५ हैं।

(३९) पीली भीत—अछूतजाति का एक स्कूल है लड़के २८ हैं।

(४०) गुरुकुल कांगड़ी जिला बिजनौर—५ पाठशालाएं पांचवीं श्रेणी तक पढ़ाई है, १००० विद्यार्थी हैं।

(४१) लाल कुर्ती बाजार मेरठ—दूसरी श्रेणी तक पढ़ाई २० लड़के हैं प्रधान मानसिंहजी हैं।

(४२) अजीतमल जिला इटावा—समाज की ओर से एक पैसों वरनीकुलर प्रायमरी स्कूल है ४० लड़के हैं, रात्रिपाठशाला में अछूत लड़के पढ़ते हैं। यहां से एक लड़के को १०) का वजीफा देकर प्रेम महाविद्यालय में शिक्षा के लिए भेजा है।

(४३) शिवपुरी डाकखाना दसवा जिला बरेली में एक आर्य्यपाठशाला है।

(४४) जहांगीराबाद—संस्कृत पाठशाला २६ विद्यार्थी भाषा के और २६ संस्कृत के शिक्षा पाते हैं एक अछूतपाठशाला भी है, जिस में ३० लड़के हैं।

(४५) काशी—आर्य्यसमाज के आधीन एक दयानन्द मिडल स्कूल है और एक वैदिकपाठशाला भी है जिस में विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते हैं।

(४६) मोरगंज—सहारन में एक आर्य्य नाइट स्कूल है, ४० लड़के हैं।

(४७) फरीदपुर जिला बरेली—१३ नवम्बर सन् १९१६ को यह पाठशाला स्था-

पित हुई लड़के ३५ हैं आर्य्य विद्या सभा बरेली के आधीन है, लाला गोपीनाथजी मैनेजर बाबू वेनीमाधो कोषाध्यक्ष और पं० यज्ञदत्तजी अध्यापक हैं।

(४८) हापड़—अछूत पाठशाला ४ वर्ष से है, २५ लड़के हैं।

(४९) एटा—ऐंग्लो वैदिक मिडल स्कूल है म० महादेवप्रसादजी मैनेजर व संचालक हैं लागत इमारत२५००) पूंजी ६६॥।)॥ है दीगर सामान १५०) रुपये ७१ लड़के हैं

(५०) मैनपुरी छः दर्जे तक डी. ए. वी. स्कूल है (२) अछूतजाति का स्कूल है।

(५१) ठठा (सिन्ध)—कन्या ब्रह्मचारी आश्रम २५० कुमारियां शिक्षा प्राज्ञ तक हैं प्रधान ताराचन्द्रजी एम. ए. हैं।

आर्य्यकुमार सभाएं या डिबेटिंग क्लब पंजाब।

(१) लाहौर—आर्य्यकुमार सभा है,जिस के इजलास श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कोठी में होते हैं, प्रधान पं० सातवलेकरजी मन्त्री महाशय प्राणनाथजी हैं सब लोकल कालिजों के विद्यार्थी इससे लाभ उठाते हैं विशेषतः बाहर के आए हुए भाई, बहुधा समयों पर कुमार सभा विशेष व्याख्यानों का प्रबन्ध करके धर्म्मप्रचार करती है।

(२) होशियारपुर—आर्य्यकुमारसभा है, जिस में १७० सभासद हैं और ११) रुपये मासिक चन्दा है। लाला देवीचन्द एम. ए. प्रधान और महाशय चिरंजीलालजी मन्त्री हैं इसके आधीन एक नाइट स्कूल है

(३) ऊना जिला होशयारपुर—नवयुवक आर्य्य समाज के विद्यार्थियों की ओर से प्रति बुधवार शहर में सत्संग होता है स्कूल से समाज तक नगरकीर्तन करते आते हैं।

(४) दसोहा—जिला होशियारपुर आर्य्य कुमार सभा है देवराजजी प्रधान व रसाल सिंहजी मन्त्री है।

(५) पट्टी जिला होशियारपुर—आर्य्य कुमार सभा है महाशय खुशीरामजी थर्ड मिडल मन्त्री हैं।

(६) स्यालकोट—आर्य्यकुमार सभा है महाशय लक्ष्मणदासजी मन्त्री हैं।

(७) चक्कोमती जिला स्यालकोट—आर्य कुमार सभा है जिस के प्रधान हाकिमराय और मन्त्री बरकतराम हैं।

(८) गुजरात—आर्य्य कुमार सभा है मन्त्री महाशय लक्षमणचन्द्जी हैं।

(९) मंगोवाल जिला गुजरात—आर्य्य कुमार सभा है जिस के मन्त्री देशराजजी और प्रधान सुन्दरदासजी हैं।

(१०) जलालपुर जट्टां जिला गुजरात—आर्य्यकुमार सभा है ४०० के लगभग सभासद हैं तीन रुपये चन्दा है प्रधान लाला देवीदासजी व मन्त्री मास्टर पृथ्वीराज हैं।

(११) डेरागाजीखां—आर्य्य कुमार सभा मित्र सभा है।

(१२) कोट छुटा—आर्य्य कुमार सभा है २०० सभासद और ३० सहायक हैं प्रधान चौ० जस्सूरामजी मन्त्री लाला लालचन्द्जी हैं चन्दा २) रुपये मासिक कार्य्य प्रेम से होता है प्रति शनिवार को सत्संग होता है।

(१३) अबूहर जिला फीरोजपुर—आर्य्य कुमार सभा है २७ सभासद हैं म० चानन-मलजी प्रधान हैं ऐंग्लो संस्कृत स्कूल के

अहाते में लगती है। आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब भी है।

(१४) मुलतान सद्र-आर्य्य कुमारसभा है। १८० मेम्बर हैं २॥) रुपये चन्दा है पं० अमीरचन्द्जी प्रधान बाबू सूर्य्यनारायणजी मन्त्री हैं आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब भी है।

(१५) जालन्धर सद्र-आर्य्यकुमार सभा है जिस के प्रधान मास्टर पंजाबरायजी हैं और पं० एस. डी. ऋषिजी मन्त्री हैं २१ सभासद् हैं प्रति मास के अन्त में सबसे अधिक सत्य बोलने और सन्ध्या करने वालों को पारितोषिक बांटा जाता है।

(१६) जालन्धर शहर-आर्य्यकुमारसभा है प्रधान ला० गुरांदित्तामल और मन्त्री लाला गिरधारीलालजी हैं।

(१७) बुजुर्गवाल जिला गुरदासपुर-आर्य्यकुमार सभा है।

(१८) पुन्डरी जिला करनाल-आर्यकुमार सभा है प्रधान पं० नत्थूरामजी मन्त्री मोहनीरामजी हैं २॥) मासिक चन्दा है।

(१९) लाडवा जिला करनाल-आर्य्य कुमार सभा है प्रधान ओंकारप्रसादजी और मन्त्री रामदत्तमलजी हैं।

(२०) लुधियाना-प्रधान ला० मिलखी-रामजी बी. ए. और मन्त्री पं० गूजरमलजी हैं।

(२१) जगरांव-आर्यकुमार सभा है १५० मेम्बर हैं ला० गंगारामजी प्रधान और म० बसन्तलालजी मन्त्री हैं।

(२२) झंग मघियाना-आर्यकुमार सभा है महाशय नन्दलालजी मन्त्री व प्रधान ला० रामदित्तामलजी और महाशय आया-रामहजी कोषाध्यक्ष हैं।

(२३) गुरदासपुर-आर्य्य कुमार सभा अच्छी दशा में है प्रधान ला० गिरधारी लालजी मन्त्री मथुरादासजी और भजनीक विश्वेश्वरनाथजी हैं ४२ मेम्बर हैं ४) रुपये मासिक चन्दा है मास्टर गिरधारीलालजी व मास्टर शंकरलालजी बी. ए. के उद्योग से गवरमेंण्ट स्कूल के लड़कों में आर्य्यसमाज का प्रचार होता है।

(२४) शेखूपुरा आर्य्यसमाज-प्रधान लाला देवीदयालजी मन्त्री लाला ज्ञानचन्द जी खन्ना।

(२५) आर्य्यसमाज निरवाना-डा० आत्मारामजी प्रधान ला० नन्दलालजी उप प्रधान ला० शादीरामजी मन्त्री हैं।

(२६) मलिकवाल-प्रधान ला०भगवान् दासजी मन्त्री लाला नानकचन्द

(२७) बन्नू-आर्य्यकुमार सभा है प्रधान मास्टर हुकमचन्द्जी और मन्त्री महाशय हीरालालजी हैं।

(२८) माहिलपुर-आर्यकुमार सभा है, बड़ा अच्छा काम कर रही है, बाबूराम प्रधान कलीरामजी मन्त्री हैं।

(२९) वस्तीगज़ां-आर्य्य कुमार सभा है जिस के प्रधान म० रामलालजी हैं और मन्त्री शामलालजी हैं।

(३०) वज़ीराबाद (कालिज पार्टी)-शिवरामदासजी प्रधान और म० जयदयाल जी मन्त्री हैं।

(३१) वज़ीराबाद (गुरुकुल पार्टी)-म० अभिमन्युजी प्रधान व म० प्रीतमदास जी मन्त्री हैं, २६ मेम्बर हैं चन्दा ५) मा०

(३२) मींटगोमरी-आर्य्यकुमारसभा है, म० जीवनलालजी मन्त्री हैं।

(३३) हाफिज़ाबाद-आर्य्यकुमारसभा है भगतराम कपूर मन्त्री लाला रामसहायजी बी. ए. प्रधान हैं।

(३४) एबिटाबाद्-यङ्गमैन आर्य्यसमाज

(३५) मजीठा-आर्य्यकुमारसभा है ला० किशनचन्द्जी प्रधान लाला मुंशीरामजी मन्त्री है।

(३६) पायल रियासत पटियाला-आर्य्य कुमारसभा है म० बृजदत्तजी प्रधान म० साईंदासजी मन्त्री हैं।

इन स्थानों पर भी आर्य्यकुमार सभाएं हैं।

(३७) मालीरकोटला, (३८) गुजरांवाला, (३९) अमीरपुर, (४०) कपूरथला, (४१) डेराइस्मायलखां, (४२) नौबतपुर, (४३) पालमपुर, (४४) फीरोज़पुर, (४५) रावलपिण्डी, (४६) दीनापुर,

(४७) झगीवाला जिला मुजफ्फरगढ़-में नई आर्य्यकुमार सभा स्थापित हुई है प्रधान लाला देवराजजी मन्त्री आशानन्दजी है। २५ सभासद, चन्दा २॥), हवन व सन्ध्या के बाद उपदेश होता है। और वैदिकसन्ध्या का नगर में प्रचार होता है।

(४८) कुलाची-आर्य्य सेवक मण्डली है, प्रधान ला० उत्तमचन्दजी टीचर।

(४९) जतोई जिला मुजफ्फरगढ़-कुमार सभा है, पाठशाला में लगती है। डिबेटिंग क्लब गर्मियों में होती है।

(५०) समुन्दरी-आर्य्यकुमारसभा है, प्रधान म० रघुपतिरायजी मन्त्री गणेशदत्त

(५१) दौलतपुर जिला होशियारपुर-डी. ए. वी. स्कूल की आर्य्यकुमार सभा है।

(५२) अम्बाला छावनी-आर्य्यकुमार सभा है, म० आत्मारामजी मन्त्री है।

(५३) अम्बाला शहर-आर्य्यकुमारसभा

(५४) जगाधरी-आर्य्यकुमारसभा है।

(५५) अम्बाला छावनी-(कालेजपार्टी) आर्य्यकुमार सभा है।

(५६) रादौर जिला करनाल-प्रधान म० परशुरामजी हैं।

(५७) रोपड़-आर्य्यकुमारसभा मन्त्री म० प्राणनाथजी २५ मेम्बर हैं।

(५८) खरड़-आर्य्यकुमार सभा है मन्त्री म० रत्नारामजी है।

(५९) मोरिण्डा-प्रधान मास्टर आशारामजी मन्त्री म० लम्भूरामजी

(६०) शाहपुर जिला काङ्गड़ा-आर्य्य कुमारसभा प्रति शनिवार को लगती है, बाजार में भी प्रचार होता है।

(६१) दीनानगर-प्रधान ला० लछमणदासजी और मन्त्री ला० सन्तरामजी।

(६२) श्रीगोविन्दपुर-प्रधान लाला दौलतरामजी वैद्य मन्त्री लाला अमरनाथजी ब्राज।

(६३) शामचौरासी जिला होशियारपुर-प्रधान महाशय मंगतराय मन्त्री गुरदाससिंह तालुकेदार २५ सभासद, हरमंगल को धूमधाम से लगती है।

(६४) रावलपिंडी शहर-प्रधान लाला वज़ीरचन्दजी मन्त्री लाला सीतारामजी आर्य्य हैं।

(६५) श्रीनगर (कश्मीर)-आर्य्यकुमार सभा के प्रधान म० माधो भाई जी मन्त्री म० रामचन्द्रजी

(६६) मुजफ्फरगढ़-आर्य्यकुमार सभा है ३० सभासद हैं, प्रधान म० गोपालदासजी

कन्या पाठशालायें

कन्या महाविद्यालय जालन्धर-का आरम्भ तीन कन्याओं से हुआ जब उस विद्यालय की नीव २६ सितम्बर सन् १८८६ ई० को डाली गई और उस समय से ज़नाना स्कूल के नाम से नाम करण किया गया आर्य्यसमाज जालन्धर ने इस की स्थापना के समय एक रु० माहवार व्यय करना स्वीकार किया इस ज़नाने स्कूल ने बहुत थोड़ा काम किया बाद में समाज ने एक रु० मासिक भी बन्द कर दिया सन् १८९० ई० में इसका नाम गर्लसस्कूल रक्खा गया १८९१ ई० में तीसरा नाम कन्या पाठशाला और १५ जून सन् १८९६ ई० को इसका नाम कन्या महाविद्यालय रक्खा गया।

कन्या आश्रम-चूंकि इस विद्यालय में जालन्धर से बाहर के स्थानों की कन्यायें भी शिक्षा के लिये आने लग गई हैं इसहेतु स्कूल के प्रबन्ध करने वालों ने उनके विश्राम के लिये एक आश्रम खोलने की आवश्यकता प्रगट की। चुनांचे १८९५ ई० में विद्यालय के साथ एक कन्या आश्रम भी जारी हो गया।

हिन्दुस्तान में यह अपनी प्रकार का प्रथम आश्रम था इसकी सफलता से लाभ देख कर स्त्री शिक्षा के हितकारियों ने अब स्थान २ पर आश्रम खोल दिये हैं।

इस समय कन्या महाविद्यालय जालन्धर एक बड़ा भारी शिक्षालय है जिस में शिक्षा ग्रहणार्थ पंजाब व उत्तरी दक्षिणी देश बलोचिस्तान सिन्ध, बम्बई, गुजरात, काठियावाड़ संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध बिहार बङ्गाल, बर्मा और तिब्बत के दूर दूर भागों से छात्रायें आती हैं।

इमारत-विद्यालय आश्रम, विधवाभवन और अनाथालय इस समय शहर से कोई एक मील की दूरी पर टांडा सड़क के किनारे एक बड़ी अधूरी इमारत में हैं विद्यालय कमेटी ने थोड़े वर्ष हुए बड़ी दूरदर्शिता से शहर से एक मील के फासले पर १८ ईकड़ भूमि विद्यालय का दिन बदिन बढ़ती हुई आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुए मोल लेली थी और इस समय उसके एक भाग पर आश्रम का एक भाग बनचुका है, जो अति अनूपम है। स्कूल और कालेज के लिये आरजी (थोड़े समय के लिये) मकान बनालिये हैं। मगर चूंकि कमेटी को यह विश्वास है कि उनके माली (ला० देवराज) के परिश्रम से थोड़े ही समय में वह इस फ़िक्र से बेफ़िक्र हो जायेंगे। इस लिये उनकी सारी तवज्जोह (ध्यान) और परिश्रम आश्रम भवन और अनाथालय की इमारत की ओर ही लगी हुई है। जिसकी पूर्ती के लिये तीन लाख रु० चाहिये हैं।

प्रबन्ध-विद्यालय का प्रबन्ध एक मुख्य सभा के आधीन है जो एक रजिस्टर्ड बौडी है। और जिस में आर्य्यसमाजों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त शिक्षा में निपुण बेवा दस्तकारी के कार्य्यों में भी सम्मिलित हैं। ख़बातीन की संख्या इस कमेटी में दिन प्रतिदिन-बढ़ती जाती है इस मुख्य सभा में से चुने हुये सभासदों की एक प्रबन्ध कारिणी सम्मिति है जो विद्यालय का सारा काम चलाती है, इस के सभासदों का मौजूदा चुनाव निम्न लिखित है। (१) प्रधान राय साहेब दीवान बद्री-

दास एम. ए. वकील चीफ़कोर्ट पंजाब (२) उपप्रधान श्रीमती सुभद्राबाईजी वलाला केशवरामजी गवर्मेंट पिन्शनर मन्त्री जेष्ठा-मलजी बी. ए. उप मंन्त्री लाला खैरायती-रामजी बी. ए. श्रीमती पंडिता कौशल्या-देवीजी प्रोफेसर क्वीनमेरी कालेज लाहौर कोषाध्यक्ष निरीक्षण लाला बृन्दाबनजी रईस जालन्धर कोषाध्यक्ष श्रीलाला कर्म-चन्दजी वज़ीटर श्रीलाला देवराजजी रईस प्रिंसिपल श्रीमती पंडिता सावित्रीदेवीजी।

कालिज और स्कूल—स्कूल कालेज और आश्रम का प्रबन्ध पंडिता सावित्रदेवी जी के आधीन है जिन्हें आचार्य्यों के नाम से पुकारा जाता है पंडिताजी ने अपना जीवन विद्यालय की सेवा के लिये अर्पण कर रक्खा है। और देवियां भी आपका हाथ बटा रही हैं। जो सब की सब इस कालिज की पैदाकी हुई हैं। पंडिता कुमारी लज्यावतीजी का नाम प्रसिद्ध है। आप अन्थक कर्मबीरा हैं। और कालेज में बतौर वाइस प्रिंसिपल काम करती हैं। कालिज और स्कूल का सारा बोझा आप ही के कन्धों पर हैं।

स्टाफ—पढ़ाने के अमले में ६ उस्ताद और दस अध्यापिकायें हैं। जिन में से उस्तानियां सब की सब विद्यालय की शिक्षत हैं और बिना वेतन के कार्य्य करती हैं।

ब्रांचस्कूल-खास जालन्धर शहर की लड़कियों के लिये शहर में एक ब्रांच जारी है। जहां प्राईमरी तक शिक्षा होती है। वहां का कोर्स खतम होने पर लड़कियां विद्यालय में जा सकती हैं।

आश्रम में इस समय दूर देशों से आई हुई कन्यायें रहती हैं जिन की संख्या डेढ़ सौ से ऊपर है।

आयु के लिहाज़ से उन की संख्या ६ साल से २० साल तक है। कन्या महाविद्यालय के साथ एक कन्या अनाथालय और विधवाभवन भी है। विधवाभवन विद्यालय की एक अच्छी संस्था है इस में विधवाओं को अध्यापिका और प्रचारिका बनाया जाता है विद्यालय कमेटी के आधीन है। पुस्तकों का काम भी जारी है और कई अच्छी २ पुस्तकें छप चुकी हैं।

आर्य्य कन्या पाठशाला लाहौर—यह पाठशाला आर्य्यसमाज अनारकली लाहौर ने ३० साल से खोल रक्खी है। इस समय इस पाठशाला में ३०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं। और मिडल तक शिक्षा होती है कोई फीस इत्यादि नहीं ली जाती इस के प्रबन्ध के लिये अतरंग सभा ने एक उपसभा बनाई है जिस के प्रधान पं० राजाराम और मन्त्री लाला दीवानचन्द्र और कोषाध्यक्ष ला० भगतरामपुरी और मनेजर रायबहादुर मंग्गूमलजी हैं।

व्यय—इस का मासिक व्यय २५०) है जो इस प्रकार पूरा होता है। लाहौर आर्य्यसमाज अनारकली २०) मासिक सहायता देती है और १४६) म्यूनीसिपलबोर्ड कमेटी की ओर से सहायता मिलती है। और बाकी रुपया मासिक चन्दा से इकट्ठा हो कर काम चलता है। स्कूल में से इस समय १३ उस्तानिया और एक हेडमास्टर पं० अविनाशीरामजी काम करते है और कन्याओं को बुलाने के लिये सात नौकरानी नियत हैं। गत वर्ष में २६०४॥) आय और २६५३॥)॥। व्यय हुआ।

पाठशाला की कन्याओं को ५२ वज़ीफ़े मिलते हैं २८ को चारसौ मासिक और १५ को १॥) मासिक और ६ को १) मा-

सिक फी कन्या के हिसाब से।

इस पाठशाला के साथ एक कन्या आश्रम भी है।

आर्य्य कन्या पाठशाला बच्छोवाली लाहौर—पाठशाला आर्य्यसमाज मन्दिर बच्छोवाली में लगती है आठ श्रेणी हैं।

(१) समाज की ओर से एक कमेटी के आधीन है जिस के प्रधान ला० रोशनलालजी हैं और मंत्री म० शिवदयालजी, इस कमेटी के १० सभासद हैं।

(२) पाठशाला को ७५) सरकार से सहायता मिलती है इस के अतिरिक्त १२ वज़ीफ़े सात रुपये के और पांच १) के मिलते हैं लाला हरगोबिन्दजी ने एक वज़ीफ़ा २) का नियत किया है।

(३) शिक्षा आर्य्य भाषा में होती है। प्राईमरी की पाठविधि कन्या महाविद्यालय जालन्धर के अनुसार है। और आगे गवर्नमेण्ट स्कीम के अनुसार सत्यार्थ-प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्य्याभिविनय रत्नमाला पढ़ाई जाती है। संध्या प्रतिदिन और अग्निहोत्र दोबार सप्ताह में लाज़मी है और समाजिक सिद्धान्त का व्याख्यान द्वारा प्रचार किया जाता है। दस्तकारी और सिलाई का काम भी सिखलाया जाता है इस के लिये दो मशीनें हैं, हेड अध्यापिका का काम स्वर्गवासी डाक्टर चिरंजीव भारद्वाज की धर्मपत्नी श्रीमती सुमंगलीदेवीजी करती हैं।

वैदिक पुत्री पाठशाला लाहौर—आठ श्रेणी हैं एक सौ कन्यायें पढ़ती हैं कमेटी तीन वज़ीफे देती हैं जनवरी १९१६ ई० से १३ सरकारी वज़ीफ़े दो साल के लिये मिले हैं। २०) मासिक १९०६ ई० से पंजाब एसोसीएशन से बराबर मिल रहा है। म्यूनीसिपल कमेटी ५१) रुपये मासिक की सहायता देती है पाठशाला के साथ में पुस्तकालय भी है।

वैदिक कन्या पाठशाला अमृतसर कटरा दूलू—यह पाठशाला एक कमेटी के आधीन है इस में दो सौ कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

डीआ भाई साल्हू अमृतसर—पुत्री पाठशाला १९०४ से स्थापित है। मिडल तक शिक्षा है नतीजा के ख्याल से प्रशंसनीय है। जून सन् १९१४ ई० से संस्कृत श्रेणी की प्राज्ञ खोली गई है।

लुधियाना—आर्य्यसमाज के आधीन है। कन्या पाठशाला के मैनेजर ला० गंगासहायजी हैं शिक्षा मिडल तक दी जाती है नतीजे अच्छे होते हैं कन्याओं की संख्या ७५ है धर्म शिक्षा लाज़मी, संस्कृत का प्रबन्ध अच्छा, सरकार की ओर से सौ रुपये से अधिक सहायता मिलती है। पूंजी पांच हज़ार है कन्याओं ने एक बाला समाज खोल रक्खी है।

कोटकपूरा—आर्य्य पुत्री पाठशाला पहिले पहिल सम्वत् १९७० में भाई टेकचन्द ने स्थापित कराई थी और १२५) वार्षिक देने का वचन दिया था परन्तु यह सहायता एक वर्ष से बन्द हो जाने से अब लोकल समाज उसे चला रही है। पाठशाला मन्दिर में लगती है। २०० कन्यायें पढ़ती हैं पांच श्रेणियां हैं अध्यापिका श्रीमती सौभाग्यवतीदेवीजी है। प्रधान म० दौलतरामजी और मैनेजर म० मूलचन्दजी मन्त्री हैं। एक देवी ने ८००) रुपये का मकान पाठशाला को देने का धर्म किया है जो कि बन रहा है।

पूनाहाना—कन्या पाठशाला प्रधान चौधरी रामचन्द्र मन्त्री श्यामलाल गुप्ता मैनेजर बाबू रोशनलालजी और २० सभा-

सद है। लागत मकान२०००) पूंजी ३००) और ५० कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

जगरांव - पाठशाला की अवस्था बहुत अच्छी है अध्यापिका श्रीमती आत्मादेवी-जी हैं १०१ कन्यायें दर्ज रजिष्टर हैं पांचवीं श्रेणी तक शिक्षा होती है। इस के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा और गृहस्थ सम्बन्धी भी दी जाती है।

मुलतान छावनी-पचास कन्यायें पढ़ती हैं पढ़ाई पांच श्रेणियों तक है अधिकारी पं० अमरनाथ व म० शोभानन्दजी हैं।

पेशावर सदर-सातवीं मिडल तक पढ़ाई है ७०० कन्यायें हैं मैनेजर ला० सर्वदयालजी हैं।

अलीपुर ज़िला मुज़फ्फरगढ़-४५ कन्यायें पढ़ती हैं पांचवीं श्रेणी तक शिक्षा दी जाती है।

सिकन्दर-५० कन्यायें पढ़ती हैं, अध्यापिका श्रीमती गंगादेवीजी हैं।

फरिदाबाद-५० से अधिक कन्यायें पढ़ती हैं मैनेजर रायसाहेब सेठ चौहड़मलजी हैं और मंत्री पं० फत्तूरामजी हैं।

कोयटा-हरीमिशन आर्य्य पुत्रीपाठशाला में २०० कन्यायें पढ़ती हैं और छठी श्रेणी तक शिक्षा दी जाती है।

कुआर्ची-८० कन्यायें पढ़ती हैं शिक्षा प्राइमरी तक है लाला चोखाराम जी मैनेजर हैं।

मानकी जिला गुजरांवाला-१६ कन्यायें और अध्यापक पं० बालकरामजी मैनेजर म० डोंगरमलजी

ठट्टा (सिन्ध)-६० कन्यायें हैं हिन्दी व सिन्धी पढ़ाई जाती है दो अध्यापिका हैं प्रधान ला० टोपनदासजी मन्त्री बाबू रूपचन्दजी

रोपड़ सोमनाथ आर्य्य कन्यापाठशाला है लग भग ५० कन्यायें शिक्षा पाती हैं पूंजी पांच सहस्र है।

मुण्डिा जिला अम्बाला-६८ कन्यायें शिक्षा ...क तक, ला० आत्मारामजी प्रधान और आत्मारामजी मैनेजर हैं।

कोहमरी-वैदिक कन्या पाठशाला है १४ लड़कियां पढ़ती हैं प्राइमरी तक पढ़ाई होती है।

कुल्लू-सन् १९०८ ई० से जारी है,प्राइमरी तक पढ़ाई होती है कन्या महाविद्यालय की पाठ विधि अनुसार २२० कन्यायें पढ़ती हैं। ला० ...रामजी मैनेजर हैं।

पट्टी जिला होशियारपुर-कन्या पाठशाला प्राइमरी तक है नकद पूंजी २७) है।

दासरा दीनपनाह-कन्या पाठशाला में ३० कन्यायें हैं मन्त्री म० लेखराम जी डिस्ट्रिक्टबोर्ड से १४०) वार्षिक सहायता मिलती है।

माहिलपुर जिला होशियारपुर-१८ कन्यायें पढ़ती हैं।

शाहपुर जिला कांगड़ा-कन्यापाठशाला में ३२ कन्यायें पढ़ती हैं अध्यापिका श्रीमती जीवनदेवीजी हैं।

पानीपत-पुत्री पाठशाला में ४० कन्यायें पढ़ती हैं।

चूहा मकान जिला रावलपिंडी-कन्या पाठशाला में संस्कृत पढ़ाई जाती है,पुस्तकें मुफ्त ४० लड़कियां हैं।

श्री गोविन्दपुर-राय कर्मचन्द कन्या पाठशाला १८९२ ई० से स्थापित है। ८०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं पं० मुकन्दरामजी मुख्य अध्यापक और ला० सोहनलालजी कन्या आश्रम के प्रबन्धकर्ता हैं।

होशियारपुर—कन्या पाठशाला में १०६ कन्यायें हैं ला० भिखारीरामजी वकील प्रधान और डा० मोतीसिंहजी मैनेजर हैं।

झोगीवाला जिला मुजफ्फरगढ़—२७० कन्यायें पढ़ती हैं प्राइमरी तक शिक्षा है ला० लक्ष्मीनरायण प्रधान ला० ईश्वरदास जी मन्त्री हैं।

खांडा खेडी जिला हिसार—पुत्रीपाठशाला जारी है ला० राजमल मैनेजर है १८० कन्यायें और प्राइमरी तक शिक्षा है।

बद्धचक जिला गुरदासपुर—कन्याओं की संख्या ३४ है शिक्षा प्राइमरी तक ला० हरीरामजी मैनेजर हैं।

क्रासवाला जिला स्यालकोट—अभी स्थापित हुई है, १०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

खैरपुर सादात जिला मुजफ्फरगढ़—३० कन्यायें पढ़ती हैं।

भदोड़ रियासत पटियाला—आर्य्यपुत्री पाठशाला में २५ कन्यायें पढ़ती हैं। प्रबन्ध अन्तरङ्गसभा के आधीन है। शिक्षा ५वीं श्रेणी तक २५) राज्य से सहायता मिलती है

मीरपुर रियासत जम्मू—कन्यापाठशाला है। तीन अध्यापक हैं।

शरकपुर—आर्य्यपुत्रीपाठशाला का मन्दिर २०००) की लागत से तय्यार हुआ है। शिक्षा प्राइमरी तक २५ कन्यायें शिक्षा पाती हैं। इस के प्रबन्धकर्त्ता ला० सोहनलालजी हैं।

शुजाबाद—कन्यापाठशाला में ५५ कन्यायें पढ़ती हैं, चौ० भगवानसिंहजी प्रधान म० रामदासजी मन्त्री हैं।

महतपुर जिला जालन्धर—पाठशाला में ३० कन्यायें हैं, ला० रामलालजी प्रधान म० हरीचन्दजी मन्त्री हैं।

वज़ीराबाद गुरुकुल सेक्शन—१०० कन्यायें पढ़ती हैं। मैनेजर ला० नन्दलालजी हैं ८०) मासिक का व्यय है।

हाफ़िज़ाबाद—८६ कन्यायें शिक्षापाती हैं। खर्च डा०मथुरादासजी देते हैं, प्राइमरी तक शिक्षा है।

किराची—कन्यापाठशाला में ११३ कन्यायें शिक्षापाती हैं, म० केशवदासजी मैनेजर हैं।

हरियाना भगवती पुत्रीपाठशाला—८वीं श्रेणी तक शिक्षा दी जाती है।

मुकेरियां—यहां प्राइमरी तक शिक्षा दी जाती है।

किला शोभासिंह—यह कन्यापाठशाला आर्य्यमेघ उद्धारसभा स्यालकोट की ओर से है, इस में एक उपदेशक और एक अध्यापक काम करता है।

पत्तोकी—आर्य्यपुत्रीपाठशाला ४ वर्ष से जारी है, ४ श्रेणी हैं व्यय चन्दा से पूरा होता है। और एक कमेटी के आधीन है।

हेला जिला गुजरात—पाठशाला प्राइमरी तक है फीस नहीं ली जाती, कलम, दवात, कागज़ भी मुफ्त दिया जाता है।

कमालिया जिला मान्टगोमरी—आर्य्य कन्यापाठशाला का मकान १५ हज़ार रुपये की लागत का है, शिक्षा मिडल तक कन्या महाविद्यालय जालन्धर की पाठ विधि अनुसार १० अध्यापिकायें हैं जो थोड़े व्यय पर काम करती हैं। एक विधवा और एक विवाहित स्त्रियों की श्रेणी भी है, ६०) सरकार से सहायता मिलती है ५०) मासिक के वज़ीफे सरकार की ओर से कन्याओं को मिलते हैं। पाठशाला के लिये सरकार ने ८०००) सहायता दी है।

लायलपुर—आर्य्यकन्यापाठशाला है जो

कमेटी के आधीन है और कमेटी आर्य्य समाज की ओर से है, शिक्षा मिडल तक और पूंजी २०००) के लगभग है।

बटाला जिला गुरदासपुर-आर्य्यकन्या पाठशाला है, ८० के लगभग कन्या शिक्षा ग्रहण करती हैं, ४ अध्यापिकायें कार्य्य करती हैं। अन्तरङ्गसभा आर्य्यसमाज के आधीन है, प्रधान आर्य्यसमाज के मैनेजर हैं ४००) मासिक व्यय है।

अबोहर जिला फीरोजपुर-आर्य्यकन्या पाठशाला बाबू किशनदयालजी मैनेजर के आधीन कार्य्य कर रही है। आर्य्यसमाज के आधीन है। दस्तकारी भी सिखलाई जाती है। ६ श्रेणी तक शिक्षा है ६० कन्यायें शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

फाज़िलका ज़िला फीरोज़पुर-४ वर्ष से जारी है। ५०) मासिक व्यय ४५ कन्यायें इस समय शिक्षा पाती हैं, म्यूनीसिपल से भी सहायता मिलती है।

देहली चावड़ी बाज़ार आर्य्यपुत्रीपाठशाला ६वीं श्रेणी तक है। २००) मासिक व्यय है, लगभग २५० कन्यायें शिक्षा पारही हैं। दिन प्रति दिन उन्नति पर है।

शिकारपुर जिला सखर-आर्य्यपुत्रीपाठशाला है। ८० कन्यायें पढ़ती हैं, मुख्य अध्यापिका धर्म्मार्थ काम करती हैं। ६५) मासिक व्यय है। सरकार की ओर से २५०) सहायता मिलती है।

झपाल जिला अमृतसर-आर्य्यकन्या पाठशाला १ अप्रैल सन् १९११ से जारी है जो कमेटी के आधीन है। सरदारसिंह साहेब रईस प्रधान हैं, ला० बेलीरामजी मन्त्री पाठशाला में पाठविधि कन्यामहाविद्यालय जालन्धर के अनुसार है। १६) मासिक डिस्ट्रिक्टबोर्ड से सहायता मिलती है।

बजवाड़ा जिला होशियारपुर-आर्य्य कन्यापाठशाला है, प्राइमरी तक शिक्षा दी जाती है।

जालन्धर छावनी-पुत्रीपाठशाला है, ला० पन्नालाल रईस ने दो मकान दिये हैं, ला० नानकचन्दजी वैश्य रईस अपने खर्च से बनवा रहे हैं।

झेलम-आर्य्यपुत्रीपाठशाला है, जो १ कमेटी के आधीन है। शिक्षा मिडल तक दी जाती है, धार्मिक शिक्षा को सर्वोपरि माना जाता है। ५०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

करियाला जिला झेलम-प्राइ पुत्रीपाठशाला है, भाई रामदास मैनेजर हैं, जो बड़े उद्योग और विशेष ध्यान से कार्य्य करते हैं। प्रायमरी तक शिक्षा है।

जलालपुर जट्टां-आर्य्यपुत्रीपाठशाला २० जोलाई को स्थापित हुई है, आर्य्यसमाज के आधीन है खुलने पर ५० कन्यायें प्रवेश हुई अवस्था उन्नति पर है।

शाहपुर सदर-हिन्दी गुरमुखी पाठशाला है, इस के अधिकारी बहुधा आर्य्य समाज के सभासद हैं। एक सब कमेटी के आधीन है जिस में हिन्दू आर्य्य सम्मिलित हैं।

जगाधरी-हिन्दू कन्यापाठशाला है, १ सब कमेटी के आधीन है, डिस्ट्रिक्टबोर्ड से सहायता मिलती है।

डेराइसमाईलखां आर्य्यकन्यापाठशाला १४ वर्ष से स्थापित है, आर्य्यसमाज गुरुकुल सेक्शन की ओर से एक सभा के आधीन है। जिसके प्रधान ला० बेलीरामजी एम. ए. हैं। और मैनेजर पं० तुलसीरामजी हैं। धार्मिक शिक्षा कन्यामहाविद्यालय जालन्धर के अनुसार है। संस्कृत चौथी प्राइमरी से आरम्भ कर दी जाती है।

अंग्रेजी फर्स्टमिडल से अख्त्यारी विषय रक्खा जाता है । जो कन्यायें अंग्रेजी में पढ़ें, उन को संस्कृत प्राज्ञ के लिये तय्यार किया जाता है, इस के साथ एक ब्रांच स्कूल है। जिस में ६० के लगभग कन्यायें लोयर प्राइमरी में पढ़ती हैं। इस के अतिरिक्त एक विधवा क्लास है। जिस में १४ विधवा स्त्रियां पढ़ती हैं और प्रत्येक को ३,४ रुपये वजीफा विधवा सहायक भण्डार से मिलता है। ३५० से अधिक कन्यायें इस समय पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करती हैं।

भेरा जिला शाहपुर-आर्य्य कन्यापाठशाला है १० श्रेणी तक शिक्षा है। संस्कृत चौथी श्रेणी से आरम्भ होती है। म० राम चन्द्रजी बी. ए. इनचार्ज हैं कुछ विधवायें भी शिक्षा पाती हैं पाठशाला रौनक पर है।

मरदां-आर्य्य पुत्री पाठशाला है कन्या महाविद्यालय जालन्धर की पाठ विधि अनुसार शिक्षा दी जाती है। आर्य्य पुरुषों की कामयाबी से चल रहा है।

डेरागाज़ीखां-आर्य्य पुत्री पाठशाला है जिसके सम्बन्ध में स्त्रीसमाज भी है, मकान किराये पर है, २०००) पूंजी है, २००) के लग भग कन्यायें शिक्षा ग्रहण करती हैं ६०) मासिक का व्यय है।

रावलपिंडी-आर्य्य पुत्री पाठशाला है जिसकी अपनी इमारत करीब पचीस हज़ार के है आठवीं श्रेणी तक शिक्षा है व्यय चन्दा से चलता है।

(७१) कोहाट आर्य्य पुत्रीपाठशाला है व्यय समाज अदा करती है ५० कन्यायें पढ़ती हैं समाज मन्दिर में लगती है।

(७२) स्यालकोट-आर्य्य कन्या पाठशाला है मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है।

(७३) सरस्वती कन्या विद्यालय कटरा नील देहली-यह विद्यालय एक कमेटी के आधीन है।

अन्य आर्य्य पुत्री पाठशालाएं।

निम्न लिखित आर्य्य समाजों के साथ कन्या पाठशालायें तो हैं परन्तु उनके विवरण ज्ञात नहीं हुए। इसलिये उन स्थानों के केवल नाम ही दिये जाते हैं।

(७४) हिसार (७५) सरगोधा (७६) नौशेहरा पुनवां (७७) पालमपुर (७८) मूरकोट जिला गुरदासपुर (७९) मुक्तसर (८०) नरवानां रियासत पटियाला (८१) शाहाबाद जिला करनाल (८२) जामपुर (८३) गोजरा (८४) रावलपिंडी सदर (८५) अड्डगढ़ (८६) नूरपुर जिला कांगड़ा (८७) धर्मशाला (८८) धीरा जिला कांगड़ा (८९) ठोली जिला करनाल (९०) नौशेहरा जिला पेशावर (९१) मूगा जिला फीरोज़पुर (९२) हैदराबाद सिन्ध (९३) काशा जिला अमृतसर (९४) टांक डी. आई. खां (९५) बन्नूं (९६) सब्जीमंडी देहली (९७) झंग मघियाना (९८) करतारपुर (९९) राहोन जिला जालन्धर (१००) मसाज्जिद मौठ देहली (१०१) करनाल (१०२) गुजरात (१०३) कसूर (१०४) खुशाब जिला शाहपुर (१०५) भूपालवाला जिला स्यालकोट (१०६) उच्चशरीफ (१०७) अम्बाला छावनी (१०८) बसी रियासत पटियाला।

संयुक्त प्रान्त

(१) लखनऊ गणेशगंज में वैदिक कन्या पाठशाला सर्व साधारण की ओर से जारी

है। समाज की ओर से २०) मासिक सहायता मिलती है शिक्षा पांचवीं श्रेणी तक है

(२) रुड़की—रुड़की पाठशाला में १०० कन्यायें पढ़ती हैं तीन श्रेणियों तक शिक्षा है अधिकारी बाबू राधेलाल बाबू मुसद्दीलालजी हैं।

झांसी सीपरी बाजार में पांच साल से जारी है ४१ कन्यायें है पाठशाला मैनेजिङ्ग कमेटी के आधीन है प्रधान बाबू हरिश्चन्द्रजी मंत्री रामप्रसादजी शर्म्मा हैं २५) रुपये सहायता मिलती है।

(४) देहरादून—श्रीमान् बाबू ज्योतिस्वरूप ने एक पाठशाला इन्ट्रेन्स तक खोली हुई है १३० लड़कियां पढ़ती हैं।

(५) गाज़ियाबाद—५० कन्यायें पढ़ती हैं शिक्षा तीसरी श्रेणी तक है बाबू हरनामदासजी मंत्री हैं।

(६) बेगमाबाद ज़िला मेरठ—१२ कन्यायें पढ़ती हैं चौथी श्रेणी तक शिक्षा है।

(७) इटावा—पाठशाला में ३० कन्यायें पढ़ती हैं।

(८) सिकन्दराबाद—कन्या पाठशाला है आर्य्यसमाज के प्रधान ला० गोपालदास जी मन्त्री हैं।

(९) नौबतपुर जिला पटना—कन्या पाठशाला में २३ कन्यायें पढ़ती हैं शिक्षा लोयर प्राइमरी तक है।

(१०) भरतपुर—कन्या पाठशाला में ४० कन्यायें पढ़ती हैं पढ़ाई मिडल तक मन्त्री बाबू सुन्दरलालजी हैं ६५) मासिक चन्दा और १७) मासिक सहायता।

(११) नजीबाबाद जिला बिजनौर—कन्या पाठशाला में चौथी श्रेणी तक शिक्षा कन्याओं की संख्या ७० के लग भग है। मैनेजर बाबू बेनीचरण मुख्तार प्रधान म० सूर्य्यभानुजी हैं।

(१२) मथुरा—कन्या पाठशाला में ७० कन्यायें पढ़ती हैं पुस्तक इत्यादिक मुफ्त पाठशाला से मिलती हैं।

(१३) चौसाना जिला मुजफ्फर नगर—१७० कन्यायें पढ़ती हैं मैनेजर बाबू जानकीनाथजी हैं।

(१४) मवाना कलां जिला मेरठ—४) कन्यायें पढ़ती हैं, शिक्षा दर्जा ४ तक, २०) सहायता मिलती है।

(१५) शाहजहानपुर—कन्यापाठशाला है, २३ कन्यायें पढ़ती हैं, दर्जा ३ तक शिक्षा है।

(१६) पीलीभीत—कन्यापाठशाला है, ५५ कन्यायें पढ़ती हैं, ६ वर्ष से जारी है।

(१७) पचरावां जिला मिर्ज़ापुर—कन्या पाठशाला है, ११ कन्यायें शिक्षा पारही है

(१८) लाल कुर्ती बाज़ार मेरठ—२५ कन्यायें पढ़ती हैं चार श्रेणी तक शिक्षा है, ५० मानसिंहजी प्रधान म० राजनरायण महता मन्त्री हैं।

(१९) जहांगीराबाद—कन्यापाठशाला में ६० कन्यायें पढ़ती हैं, देवी विद्यावतीजी अध्यापिका हैं।

(२०) गोरखपुर—कन्यापाठशाला में ३० कन्यायें पढ़ती हैं, महाविद्यालय जालन्धर की पाठविधि अनुसार पढ़ाई होती है।

(२१) मंसूरी जिला डेरादून—पाठशाला में पढ़ती हैं शिक्षा लोरप्राइमरी तक अन्तरङ्गसभा प्रबन्ध करती है।

(२२) भूड़ बरेली—आर्य्यकन्यापाठशाला है मिडल तक शिक्षा है प्रबन्ध कमेटी के आधीन है, डिस्ट्रिक्टबोर्ड से सहायता मिलती है बाकी खर्च चन्दे से पूरा होता है, दस्तकारी व धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है।

(२३) तिलहर जिला शाहजहानपुर—

जानकीपाठशाला है जो सेठ जानकीप्रसाद की यादगार में खुली हुई है।

(२४) नैनीताल–कन्यापाठशाला है, मिडल तक शिक्षा है, ३ अध्यापिकायें हैं, ६५ कन्यायें पढ़ती हैं, पूंजी १००० हज़ार के लगभग है

(२५) अजमेर–मथुराप्रसाद गुलाबदेवी पाठशाला है, जो सम्वत् १६६० में श्रीमती गुलाबदेवी ने स्थापित की वही प्रबन्धकर्ता रही अब देवी जी ने इस को आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को सौंप दिया है। ६१ कन्यायें शिक्षा पारही हैं। एक प्रबन्धकर्त्री सभा के आधीन है, जिस के प्रधान बाबू चन्दूलालजी भार्गव मन्त्री ग्यारसीलालजी हैं।

अन्य आर्य्य पुत्री पाठशालाएं।

निम्न लिखित आर्य्यसमाजों के साथ कन्यापाठशालायें तो हैं, परन्तु उनके समाचार नहीं मिले इसलिये उनके केवल नाम ही लिखे जाते हैं।

(२६) बढ़ापुर जिला बिजनौर, (२७) सहारनपुर, (२८) मुरादाबाद, (२६) अमरोहा, (३०) नीतगोन, (३१) धामपुर जिला बिजनौर, (३२) पिपलत जिला बदायूं, (३३) गोकुलपुरा जिला आगरा, (३४) पाखना जिला फ़रुखाबाद, (३५) कथावली जिला बुलन्दशहर, (३६) बदायूं, (३७) सरधना जिला मेरठ, (३८)कन्यामहाविद्यालय भूपाल (३६) इन्दौर छावनी (४०) बलाई ज़िला बिजनौर (४१) कोटारियासत (४२) कड़ैल जिला अजमेर (४३) जसपुर ज़िला फ़रुखाबाद (४४) रायपुर जिला सहारनपुर (४५) जोधपुर (४६) चौहड़पुर ज़िला डेराडून (४७) आर्य्यसमाज जमुनियांबाग फ़ैज़ाबाद (४८) टांडा अफ़ज़ल ज़िला मरादाबाद (४६) गढ़िया हनकोर ज़िला मैनपुरी (५०) बेल्दून ज़िला बुलन्द शहर (५१) कमलपुर (५२) कांशीपुर ज़िला नैनीताल (५३) फलावदा ज़िला मेरठ (५४) हापड़ ज़िला मेरठ (५५) डबाई ज़िला बुलन्दशहर (५६) सम्भल (५७) एटा (५८) फ़रीदपुर (५६) पल्वर (६०) जबलपुर (६१) किराना ज़िला मुज़फ्फ़रनगर (६२) कलकत्ता।

स्त्री समाजें

क़रीब क़रीब प्रत्येक स्थान पर जहां समाज है वहां स्त्री समाज भी है परन्तु यहां केवल उन स्त्री समाजों के नये विवरण लिखे जाते हैं जिन्होंने रिपोर्ट भेजी है।

पंजाब

(१) अलीपुर–स्त्रीसमाज है १० सभासद हैं।

(२) सक्खर	,,	२०	,,
(३) ऐबिटाबाद	,,	२०	,,
(४) कोयटा	,,	२५	,,

(५) अम्बाला छावनी कालेज व गुरुकुल पार्टी की स्त्री समाजें हैं।

(६) कोहमरी स्त्रीसमाज है।

(७) पट्टी ज़िला होशियारपुर–स्त्री समाज साधारण दशा में है।

(८) होशियारपुर–४० स्त्रियां सभासद हैं।

(६) झुग्गी वाला ज़िला मुज़फ्फ़रगढ़ स्त्री समाज है।

(१०) मुरिन्डा ज़िला अम्बाला हरवीरवार को लगती है हाज़री ५० वा ६० तक होती है

(११) अमृतसर—स्त्री समाज है ५० सभासद हैं।

(१२) जम्मू „ „ ८० „

(१३) मुजफ्फरगढ़ „ „ २५ „

(१४) शर्क़पुर „ „ १२ „

(१५) बरनाला „ „ १० „

(पटियाला)

(१६) महतपुर जिला जालन्धर स्त्री समाज है १२ सभासद हैं।

(१७) मान्टगोमरी स्त्री समाज है, १० सभासद हैं।

(१८) श्रीनगर—स्त्री समाज है, कभी लगती है, कभी नहीं।

संयुक्त प्रान्त।

(१) लखनऊ गनेशगंज-मन्त्री शन्नोदेवी ५० सभासद हैं।

(२) रुड़की—प्रति एकादशी को समाज लगती है।

(३) झांसी सिपरी बाज़ार-प्रति शुक्र को लगती है १३ स्त्रियां सभासद हैं

(४) देहरादून-४० स्त्रियां सभासद हैं।

(५) कटरा प्रयाग—आर्य्यसमाज में प्रति शनिवार को लगती है।

(६) भरतपुर राजस्थान—४० स्त्रियां सभासद, मन्त्री श्रीमती सरस्वतीदेवीजी।

(७) नजीबाबाद—प्रधान श्री हीरादेवी जी हैं।

(८) शाहजहांपुर—स्त्री समाज है २५ स्त्रियां सभासद हैं।

(९) जौनपुर-स्त्री समाज है १५ स्त्रियां सभासद हैं।

(१०) गुरुकुलकांगड़ी—जिला बिजनौर स्त्री समाज है २५ स्त्रियां सभासद हैं।

(११) गोरखपुर— स्त्री समाज है, मन्त्री भानुदेवीजी, कार्य्य शिथिल है।

(१२) मवानाकलां स्त्री समाज है।

(१४) मैनपुरी स्त्री समाज है।

आर्य्यसमाज का संन्यासी मंडल

श्री विरजानन्द संन्यासी आश्रम—यह आश्रम अलीगढ़ प्रान्त में हरदुआगंज के पास काली नदी के पुलपर चार साल से स्थापित है।

उद्देश्य इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य संन्यासी और उपदेशक पैदा करके देश देशान्तरों और द्वीपद्वीपान्तरों में वैदिक धर्म का प्रचार करना कराना है।

स्थान—यह आश्रम कालीनदी के पुल पर है पक्की सड़क के किनारे रमणीक और एकान्त स्थान पर है। कच्ची साठ आठ बीघा के लगभग भूमि है एक पक्का कूप बना हुआ है।

भूमि दान-यह भूमि श्री कर्णसिंहजी रईस ग्वालियर निवासी ने दान दी है जिस में कच्ची पक्की चार बड़ी कुटियां और भण्डारगृह, भोजनशाला, पाठशाला और समाजिक सज्जनों की सहायता से बनगये हैं। जिन पर लगभग एक सहस्र रुपये व्यय हुआ है।

अध्यक्ष—यह आश्रम आर्य्य संन्यासी सम्मति के आधीन है। जिसके प्रधान पूज्य

श्रीस्वामी सर्वदानन्दजी हैं। मन्त्री श्रीस्वामी कृष्णानन्दजी हैं।

छात्रों की संख्या—इस समय इसमें ६ संन्यासी और आठ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं।

अध्यापक पं० धर्मवीर जी शास्त्री हैं जो गुज़ारा मात्र लेकर शिक्षा देते हैं।

प्रचारक संन्यासी—आश्रम की ओर से वैदिकधर्म प्रचारार्थ श्रीस्वामीसर्वदानन्दजी स्वामी कृष्णानन्दजी व स्वामी विज्ञानभिक्षु जी स्वामी परमानन्दजी पथ पं० सत्या नन्दजी संयमी स्वामी विचारानन्दजी इत्यादि संन्यासी य[illegible]धा सामाजिक उत्सवों पर उपदेश करने के लिये जाया करते हैं।

इलाज इस आश्रम में यथाशक्ति रोगियों को यथाशक्ति बिना मूल्य औषधि दी जाती है और सर्व साधारण का इलाज भी किया जाता है।

वार्षिक आय व्यय—अक्टूबर सन् १९१६ ई० से १० अगस्त १९१७ तक ११८३।=)॥ आय और १११४।=)॥ व्यय हुआ और शेष ७०) रु० के लगभग है। इस साल एक सौ मन के करीब अनाज जमा हुआ जिस में से जिला सहारनपुर से ३८ मन मुजफ्फर नगर से ३१ मन अलीगढ़ से करीब ३० मन आश्रम में एक रसोइया और १ कहार और एक ग्वाला सेवक व ५ गायें छोटी बड़ी हैं।

दयानन्दवैदिकभिक्षुमंडल हरद्वार

उद्देश्य—इस आश्रम का उद्देश्य अन्य मत के साधुओं को विद्वान्, सदाचारी और वैदिक धर्मी बनाना है।

(२) साधुओं को ऐसे भिक्षु बनाना जो केवल भिक्षा पर निर्वाह करके अपना साधारण आयु से आयु भर वैदिकधर्म का प्रचार और इनके अनुसार ही इस आश्रम में लिये जाते हैं। आश्रम के साधारण नियम निम्न लिखित हैं।

आश्रम में प्रवेश के नियम।

(१) रोगी विवाहित और अबोध का प्रवेश न होगा, कम आयु वाले का भी प्रवेश नहीं हो सकता।

(२) प्रवेश के समय प्रतिज्ञापत्र लिखा लिया जाता है।

(३) प्रवेश से पूर्व संस्कृत देवनागरी उर्दू या फ़ारसी या अंग्रेज़ी का जानने वाला अवश्य हो, परन्तु संस्कृत व देवनागरी वाले को पहिले ही लिया जावेगा।

दर्शकों के लिये नियम।

(१) अधिष्ठाता की आज्ञा के बिना कोई भिक्षुओं से बातचीत न करे।

(२) दर्शकों को यदि कोई बात पूछनी होवे तो वह अधिष्ठाता जी से पूछे।

(३) कोई भी अतिथि अधिष्ठाता की आज्ञा बिना नहीं ठहर सकता।

(४) अतिथि महाशय पहिले अधिष्ठाता जी से मिलें।

(५) कोई अतिथि बिना किसी विशेष कार्य के तीन दिवस से अधिक नहीं ठहर सकता।

(६) कोई भी अतिथि मंडल में माद-कादि निषिद्ध पदार्थों का सेवन नहीं कर सकता।

(७) अतिथियों को मंडल के नियमों का बिना कारण विशेष के पालन करना आवश्यक होगा, यथा प्रातःकाल उठने की घण्टी पर उठना, हवन की घण्टी पर और भोजन की घण्टी में दोनों को सम्मिलित होना पड़ेगा। कारण विशेष से सम्मिलित

न होने की खबर (सूचना) अधिष्ठाता से पहिले से देनी होगी।

(९) भोजन करते समय व्यर्थ वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

भिक्षुओं के पठन के नियम।

(१) प्रत्येक को नियम से रहना होगा।

(२) आश्रम के सम्बन्धी आवश्यक काम प्रत्येक को करना होगा।

(३) अधिष्ठाता की आज्ञा के बिना कोई चिट्ठी रसां से डाक न लें।

(४) कोई अपने पास पैसा न रक्खे।

(५) कोई भिक्षु अकेला कोई वस्तु न खावे।

(६) अधिष्ठाता की आज्ञा के बिना एक दूसरे को वस्त्रादि न देवे।

(७) भ्रमण करने सब मिलकर जावें।

(८) अपनी दिनचर्या आश्रम के समय विभाग अनुसार रखनी होगी।

(९) भिक्षु परस्पर प्रेम से रहें झगड़ा कभी न करें।

(१०) आश्रम को अपना घर समझ कर उसकी रक्षा करें।

(११) अधिष्ठाता की आज्ञा जो धर्म अनुकूल हो उसका पालन करें। व्यायाम सिवाय रोगी के और सब करें।

(१३) दिन में सिवाय रोगी के कोई सो नहीं सकता।

(१४) अपना स्थान स्वच्छ रखें।

(१५) ब्रह्मचर्य्य व्रत से रहना होगा।

(१६) बाहर के मनुष्यों से वार्तालाप निषेध है।

(१७) रोगादि की सूचना अधिष्ठाता को देनी होगी।

(१८) सायंकाल को ५ बजे से ६ बजे तक हरिद्वार में प्रचार के लिये जा सकते हैं

भिक्षुओं के प्रचार सम्बन्धी नियम।

(१) भिक्षु मंडल का भिक्षु किसी पार्टी या प्रान्त विशेष से सम्बन्ध न रक्खेगा।

(२) नवीन स्थानों पर जहां समाज का प्रचार नहीं हुआ काम करना होगा।

(३) जहां वैदिक सिद्धान्त की हानि हो वहां पर कष्ट उठा कर भी पहुंचेगा।

(४) अपने दबाव या किसी आचरण से किसी आर्य्य को कष्ट न देना होगा।

(५) हर समय अपने सामने भिक्षु धर्मों को रखना होगा।

भिक्षु मंडल के संन्यासी और उनका काम।

इस आश्रम में स्वामी शिवानन्द भिक्षु जो पहिले पौराणिक और अच्छे योगी थे। भिक्षु मंडल के उद्योग से ही इस में आये हैं। रामानन्दजी पहिले सम्प्रदाय वैशनवी साधु थे। यह भी भिक्षु मंडल के प्रचार से ही आये हैं। तीसरे रामलोचन कबीरपन्थी थे। अब इनका नाम स्वामी वेदव्रत है।

इन के अतिरिक्त स्वामी चेतनान्दजी फौज़ में चले गये हैं। और एक वैरागी साधु भी कई दिनों से भिक्षु मंडल के उद्योग से इस में आये हुये हैं। इन का संस्कार वैदिक रीति से होगा दो और साधू भी आने वाले हैं। और स्वामी शान्तानन्द, स्वामी वेदानन्द, आत्मानन्द, स्वामी हितानन्द और स्वामी विज्ञानभिक्षुजी मंडल के संन्यासी हैं। इन के अतिरिक्त भिक्षु मंडल में सत्यव्रत, धर्मदत्त, वेदमित्र, बलराम, रामसिंह, धर्मानन्द, मनुदत्त और बलदेव ब्रह्मचारी भी आश्रम में रहते हैं। जनवरी सन् १९१७ ई० के अन्त से यह मंडल स्थापित हुआ है। और इस ने पंजाब जड़ांवाला बंगला चक नं १०८०

सैदपुर, तांदलियां वाला, समुन्द्री, डचकौत, गोजरा, मघियाना, हस्गोधा चक, झमरा, सांगला, लायलपुर और कई चकों में प्रचार किया है। और यू० पी० में हरिद्वार, पंचमढ़ी हरबंसवाल, ढगेर व ढकोली, खटोली नांगल, बीड़ा खजूरी, बावली, बजरोल, का इलाका खड़ और कई स्थानों पर प्रचार किया है। परन्तु हरिद्वार के साधुओं में जो प्रचार किया है। वह एक विशेष प्रभाव रखता है। इस का फल आर्य्यसमाज को कभी विदित होगा।

स्थान—यह स्थान गंगा के किनारे हरिद्वार से १½ मील ऋषिकेश की सड़क पर साधुओं के गढ़ और जंगल में है। स्थान अच्छा है प्रचार के लिहाज से विशेष स्थान है। भिक्षु मंडल दिन प्रति दिन उन्नति करता जाता है। विज्ञानानन्द दयानन्द भिक्षु मंडल हरिद्वार डाकखाना भीमगोड़ा।

प्रसिद्ध आर्यसंन्यासी महात्माओं के नाम व पते।

बहुत से संन्यासी महात्माओं के नाम व पते उपरोक्त संन्यासी आश्रम के विवरण में आ चुके हैं, शेष जो जो प्रसिद्ध महात्मा आर्य्यसमाज के कार्य्यक्षेत्र में कार्य्य कर रहे हैं, उन के नाम व पते निम्न लिखित हैं:—

(१) श्रीस्वामी अच्युतानन्दजी महाराज मंत्री आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब लाहौर द्वारा।

(२) श्रीस्वामी सर्वदानन्दजी महाराज विरजानन्द संन्यासी आश्रम पुल काली नदी डा० हरदुआगंज जिला अलीगढ़।

(३) श्रीस्वामी विश्वेश्वरानन्दजी महाराज, शान्तकुटी (शिमला ग्रीष्मऋतु में) जाड़े में बम्बई।

(३) श्रीस्वामी सत्यानन्दजी महाराज द्वारा मंत्री आर्य्यप्रतिनिधिसभा पंजाब लाहौर।

(५) श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज (महात्मा मुंशीरामजी) शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र डा० थानेसर ज़िला करनाल।

(६) श्रीस्वामी अनुभवानन्दजी महाराज शान्तिकुटी अलावाबाद ज़िला मेरठ।

(७) श्रीस्वामी स्वतंत्रानन्दजी महाराज मंत्री आर्य्यसमाज लुधियाना द्वारा।

(८) श्रीस्वामी प्रकाशानन्दजी महाराज हरिद्वार।

(९) विज्ञानभिक्षुजी संन्यासी आश्रम पुल कालन्द्री डा० हरदुआगंज जिला अलीगढ़

(१०) श्रीस्वामी विद्यानन्दजी महाराज द्वारा मंत्री आर्य्यप्रतिनिधिसभा पंजाब लाहौर

(११) श्रीस्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज मार्फत मन्त्री आर्य्यसमाज रावलपिंडी।

(१२) श्रीस्वामी ओंकारसच्चिदानन्दजी महाराज मार्फत मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा बम्बई।

(१३) श्रीस्वामी मुनीश्वरानन्दजी महाराज-मार्फत मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर।

(१४) श्रीस्वामी विशुद्धानन्दजी महाराज गुरुकुल चूहाभक्तां ज़िला रावलपिंडी।

(१५) श्रीस्वामी वेदानन्दजी महाराज गुरुकुल चूहाभक्तां ज़िला रावलपिंडी।

(१६) श्रीस्वामी कृष्णानन्दजी महाराज मार्फत आर्य्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रान्त (बुलन्दशहर)

(१७) श्रीस्वामी परमानन्दजी साधु आश्रम हरदुआगंज अलीगढ़।

नोट इन आर्य्य संन्यासी महात्माओं के अतिरिक्त और बहुत से संन्यासी महात्मा आर्य्यसमाज में काम कर रहे हैं जिन का ठीक पता मालूम नहीं हो सका।

आर्य्यसमाज के अनाथालय ।

१—अनाथालय आर्य्यसमाज फिरोज़पुर ।

यह अनाथालय १८७८ में आर्य्यसमाज ने स्थापित किया, पहिले वर्ष ४६ अनाथ थे । आगामी वर्ष में ८३, ७६, १३, २५७, ३०७, २४६, २७०, २३६, १७३, १५७, ११८६, १८८, १८१ व १८२ संख्या रही । १६० लड़के अपना व्यय स्वयं कमाने के लिये १९१३ के अन्त तक निकले १३५ कन्याओं का विवाह कराया गया, १० अनाथ बिना वारिस लोगों ने गोद लिये ११३ अनाथ संरक्षकों को वापिस दिये गये, दूर २ के प्रान्तों से २-३ वर्ष के बच्चे बहुत खराब अवस्था में मिले जिन को कोई न कोई आर्य्य पुरुष पता लगने पर ले आया ।

मन्त्री ला० सोहनलालजी

शिक्षा—एक दस्तकारी का स्कूल गवर्नमेण्ट से स्वीकृत है, इस को सरकार से भी सहायता मिलती है ।

श्रेणी ५ हैं—दर्जी बढ़ई लुहारादि का काम सिखाया जाता है ।

कुछ अनाथ शहर व छावनी के हाई-स्कूलों में पढ़ते हैं, कुछ बालकों को गुरु-कुल विधि अनुसार शिक्षा तथा निवास करवाया जाता है, उन को ड्राईङ्ग का काम भी सिखाया जाता है ।

२—अनाथालय मुजफ्फरगढ़ शाखा लाहौर ।

अनाथालय आश्रम चङ्गड़ मुहल्ला लाहौर बेरून मोरी दरवाज़ा—यह अनाथाश्रम अनाथालय मुजफ्फरगढ़ की एक शाखा है, इस में २४ विद्यार्थी रहते हैं, जिन में से छः लड़के दस्तकारी का काम, एक दर्जी का काम और शेष बालक दयानन्द कालेज लाहौर में संस्कृत पढ़ते हैं । इस आश्रम का प्रबन्ध आजकल श्री०पं०ठाकुरदत्तजी शर्म्मा मालिक अमृतधारा के हाथ में है । इनके आधीन एक अधिष्ठाता आश्रम में लड़कों की देख भाल के लिये नियत है । यह शाखा सम्वत् १९७३ में स्थापित हुई जिस को एक साल से अधिक होगया है । गत वर्ष ३ हज़ार के लगभग आय हुई, जो कि खर्च ही पूरा हुआ । यहां पर बालकों को गुरुकुल के ढङ्ग पर रक्खा हुआ है, भोजन में प्रति दिन दोनों समय एक दाल और भाजी के अतिरिक्त बालकों को एक बार दूध भी प्रति दिन मिलता है । यदि आर्य्य पुरुष इस शाखा की ओर विशेष ध्यान देंगे तो हर्ष पूर्ण आशा है कि यहां से आर्य्य उपदेशक और आर्य्य नर्नारी सब अच्छे तय्यार होकर निकलेंगे ।

३—अनाथालय मुजफ्फरगढ़ ।

यह अनाथालय सम्वत् १९६४ में स्थापित हुआ, पं० गङ्गारामजी प्रधान हैं आर्य्य समाज मुजफ्फरगढ़ ने इस अनाथालय की नींव डाली । और अनाथ बालकों को गुरु-कुल के ढङ्ग पर रखने का प्रबन्ध किया, इस समय इस अनाथालय में ५६ अनाथ पालन और शिक्षा पारहे हैं । शिक्षा केवल

संस्कृत, आर्य्य भाषा और प्राइमरी तक दी जाती है। इस की दो शाखायें एक बपरसोहनी जिला मुजफ्फरगढ़ में लड़कों को कमशीन का काम सिखाने के वास्ते खोली गई है और दूसरी शाखा जिला लाहौर में लड़कों को संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद और शास्त्री की परीक्षा दिलाकर उपदेशक उत्पन्न करने के लिये खोली गई है। वार्षिक आय तो सहस्र के लगभग है, और व्यय भी उतना ही होजाता है। अनाथालय के साथ एक गोशाला भी है। जिस कारण व्यय अधिक होता है। आय साधारण तौर पर भिक्षा दान इत्यादि और चन्दा मासिक से ही पूरी होता है।

४—आर्य अनाथालय बरेली।

इस के प्रधान इस समय मुंशीमसिंह जी, उपप्रधान ला० जयनारायणजी पेशकार और श्रीमान् पं० पूर्णदेवजी विद्यालंकार हैं। इस के मन्त्री बाबू सूर्यप्रसादजी बी. ए. एल. एल. बी. वकील और इस कमेटी के ३ ग र्नर हैं। बा० ब्रजदेवप्रसाद जी वकील बाबू द्वारिकाप्रसादजी और राय बहादुर डा० श्यामस्वरूपजी इस की मैनेजिङ्ग कमेटी के २५ सभासद हैं, जिस में १६ तो आर्य्यसमाज की ओर से और शेष ६ आम हिन्दू पब्लिक की ओर से इस अनाथालय में २६ लड़के और ६ कन्यायें हैं, दवाईखाना और एक जांच करनेवाली भी है। अनाथालय की अवस्था बहुत अच्छी है, एक प्रेस भी है, जहां से एक समाचारपत्र (आर्य्य पत्र) निकलता है। जो कि पहिले मासिक निकलता था। अब सप्ताहिक छपता है, अनाथालय का काम बहुत अच्छी तरह से चल रहा है।

५—अनाथलय नरसिंहपुर।

(मध्य प्रदेश) यह अनाथालय आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व बरार ने जून सन् १९०६ में स्थापित किया था, इस अनाथालय का प्रबन्ध सभा के आधीन है। १५ अधिकारी हैं, प्रधान सेठ घरूलालजी मन्त्री पं० राजारामजी तिवारी (रिटाइर्ड पोस्टमास्टर) हैं, अधिष्ठाता पं० गणेशप्रसादजी शर्म्मा सहायक मन्त्री सभा हैं।

संस्था की इमारत—स्वर्गवासी राजाराम सेठ व गोकुलदासजी जबलपुर निवासी ने दान दिया था। परन्तु यह बहुत होने के कारण सन् १९१४ में रहने के योग्य न रहने से खराब हो गया था। इस अवस्था में सभा ने अपना वैदिकपाठशाला भवन अनाथालय को प्रयोग में लाने के लिये दे दिया था, इसी भवन में यह अनाथालय अभी तक नरसिंहपुर में मौजूद है। अब अनाथालय कारकुन सभा ने नया भवन बनवाने का विचार किया है। इस वर्ष भवन बनाने के लिये सभा की ओर से प्रबन्ध किया जावेगा। और पुराना भवन बेच दिया जायगा।

१ अप्रैल सन् १६ से ३१ मार्च १७ तक इस खण्ड में कुल आय १२५४।-)६ हुई थी, खर्च ११०६।≈) हुआ था। इस अनाथालय को अनेक सज्जन पुरुष नियत सहायता प्रति मास दिया करते हैं।

जब से यह अनाथालय खोला गया है तब से इस में बहुत से अनाथ प्रवेश हुए। और घटते भी हैं, एक समय में ४० तक बढ़ गये थे। परन्तु अब केवल १८ ही हैं, इस प्रान्त में इस के अतिरिक्त और कोई अनाथालय नहीं है।

६--अनाथालय झेहलम ।

प्रबन्ध--अन्तरङ्ग सभा के आधीन है।

मंत्री -ला० बोधराजजी।

मकान--अनाथालय का अपना मकान ४०० की कीमत का है।

चंद अनाथ बालक हैं।

७--आर्य अनाथालय (मुंगेर)

इस अनाथालय के मैनेजर शीतलप्रसाद जी हैं ४० अनाथ अनाथालय में हैं।

कन्याओं को जालन्धर कन्या महा-विद्यालय के अनुसार शिक्षा दी जाती है और बालकों को गुरुकुलों के अनुसार, बढ़ई सिलाई आदि का काम भी सिखलाया जाता है।

८-हिन्दु अनाथालय कानपुर

१६६६ में इस अनाथालय की स्थापना हुई प्रबन्धकर्तृ सभा के आधीन है।

११ कर्मचारी वैतनिक हैं ६० अनाथ हैं जिन में ५५ बालक ३५ कन्यायें हैं।

शिक्षा--दस्तकारी के सिवाय आर्य्य स्कूल में शिक्षा दिलवाई जाती है।

९-आर्य अनाथालय दानापुर

नियमानुसार प्रबन्धकर्तृ सभा है २० अनाथ हैं।

१०--दरवारी गोपाल परमेश्वरी

अनाथालय (डेरागाजीखां) रजिस्टरी सुदा है

संख्या १५ अनाथ हैं तीन आर्ट स्कूल और ११ हिन्दू स्कूल में शिक्षा पाते हैं।

११--आर्य अनाथालय जोधपुर।

यह अनाथालय १६०७ में स्थापित हुआ आर्य्यसमाज सभा के आधीन में है। धार्मिक शिक्षा तथा अन्य शिक्षाओं का भी प्रबन्ध है।

१२--श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर।

सन् १८६५ में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी की वसीयत द्वारा स्थापित हुआ भारतवर्ष के प्रत्येक देश से इस में अनाथ बालक आते हैं।

मकान--लड़के और कन्याओं के पृथक२ हैं उन में सुपरिण्टेण्डेण्टों के क्वाटर भी हैं।

मन्त्री--और मुख्याधिष्ठाता का कार्यालय व मैनेजर का कमरा है।

एक औषधालय भी है मकान १५००००) रुपये की लागत का है इस के आधीन १ गोशाला, १ वर्कशाप है, जहां दस्तकारी काम सिखलाया जाता है।

शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध है, उपदेशक और भजन मण्डली से प्रचार होता है, धार्मिक शिक्षा का सुप्रबन्ध है।

१३--श्रीमद्दयाचन्द अनाथालय आगरा।

स्थापना--यह आर्य्यसमाज की ओर से सन् १६०० में स्थापित हुआ अन्तरङ्गसभा के आधीन है पं० श्रीरामजी मैनेजर हैं।

शिक्षा--नागरी की दी जाती है।

सिलाई, लुहार, जिल्दसाज़ी, दरी व मौज़ों का बुनना सिखलाया जाता है।

१ बालक गुरुकुल बृन्दावन में पढ़ता है इस की ओर से ४ भजन मण्डली काम करती हैं और चन्दों के सिवाय शहर की ओर से आटा फण्ड की सहायता है धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

आर्य्यकुमार सभाएं या डिबेटिंग क्लब पंजाब

पृष्ठ ७८ से ८० तक जो आर्य्यकुमार सभाएं आगई हैं, उनके अतिरिक्त निम्न लिखित आर्य्यकुमार सभाएं हैं।

(६७) क्लास वाला जिला स्यालकोट-आर्य्यकुमार सभा के प्रधान म० जगतराम जी मन्त्री म० सन्तराम जी पुरी हैं।

(६८) अमृतसर-आर्यकुमार सभा और डिबेटिङ्ग क्लब दोनों हैं।

(६९) जम्मू-आर्य्यकुमार सभा है प्रधान म० अमरनाथजी मन्त्री म० देवीशरणजी हैं

(७०) बहरामपुर-जिला गुरदासपुर मास्टर अनन्तरामजी प्रधान म० गुरचरणदत्त जी मन्त्री २२ सभासद हैं।

(७१) बरनाला रियासत पटियाला-डिबेटिङ्ग क्लब है मन्त्री ला० पृथ्वीचन्द्रजी वकील हैं।

(७२) शकरगढ़-जिला गुरदासपुर आर्य कुमार सभा के प्रधान ला० बाबूरामजी मन्त्री म० साईंदासजी हैं।

(७३) नजफगढ़-डिबेटिङ्ग क्लब है, पं० विष्णुदत्तजी प्रधान म० रूपचन्दजी मन्त्री हैं।

(७४) कैथल जिला करनाल-आर्य्य-कुमार सभा है, ३७ सभासद हैं और अच्छा काम कर रही है।

(७५) मघियाना जिला झंग-में आर्य्य कुमार सभा है, जिस के ५५ सभासद हैं प्रधान ला० रामदित्तामलजी और मन्त्री वासुदेवजी हैं एक रीडिङ्गरूम व एक लाय-ब्रेरी है।

(७६) लायलपुर-आर्य्य कुमार सभा अच्छा काम कर रही है, डा० सत्यपाल जी कुमार सभा के प्रधान व म० रायलसिंह जी विद्यार्थी मन्त्री हैं।

(७७) बटाला जिला गुरदासपुर-म० सांईरामजी प्रधान म० गोबिन्दस्वरूपजी मन्त्री हैं।

(७८) फतेहपुर-जिला करनाल श्रीमान् म० गुरबख्शसिंहजी मन्त्री हैं।

(७९) पेशावर शहर-म० नन्दलालजी कुशल मन्त्री हैं।

(८०) कुरुक्षेत्र-म० काकारामजी गुप्त मन्त्री हैं।

(८१) मुलतान छावनी-म० मंगलराम जी मन्त्री हैं।

(८२) पिसरोर-म० देसराजजी मन्त्री म० धनीरामजी प्रधान हैं।

बिलोचिस्तान व सिन्ध

(१) सक्खर-म० हंसराजजी प्रधान म० मूलचन्द्रजी मन्त्री हैं।

(२) कोयटा-प्रधान चौधरी हंसराज जी मन्त्री मालिक मोतीलालजी ४० सभा-सद चन्दा ५) मासिक एक लायब्रेरी कुमार सभा के आधीन है।

(३) करांची-म० किशोरीलालजी प्रधान व म० रामसहायजी मन्त्री हैं।

(४) खूसर-आर्य्यकुमार सभा है, बाबू सिद्धारामजी प्रधान और म० बिहारीलाल जी मन्त्री हैं।

(५) खैरपुर-नाथनशाह।

संयुक्त प्रान्त

(१) कपसाड़ा-आर्य्यकुमार सभा है, १७ सभासद हैं चन्दा १॥) मासिक चन्दा

है। प्रधान भारतीप्रकाश वर्मा मन्त्री मानसिंह और बिहारीलाल गुप्ता कोषाध्यक्ष हैं

(२) मुजफ्फरनगर-आर्य्यकुमार सभा है, ३३ सभासद हैं ५) मासिक चन्दा है म० छज्जूसिंहजी प्रधान व म० हरद्वारीलालजी मन्त्री हैं।

(३) सलावा जिला मेरठ-आर्य्यकुमार सभा हैं, १२ सभासद हैं १) मासिक चंदा है शान्तीप्रकाश प्रधान और म० मानसिंह जी मन्त्री हैं।

(४) गोरखपुर-आर्य्यकुमार सभा मुहल्ला अलीनगर में है ६० सभासद हैं।

(५) नागल जिला बिजनौर-आर्य्य कुमार सभा है, मुरलीधरजी मन्त्री हैं।

(६) अलीगढ़-आर्य्यकुमारसभा है, म० गुरदयालजी प्रधान बाबू कन्हैयालालजी मन्त्री व बाबू रामस्वरूपजी उप प्रधान हैं।

(७) नजीबाबाद-आर्य्यकुमारसभा है, म० बनारसीलालजी मन्त्री हैं।

(८) इटावा-आर्य्यमित्रसभा है, चन्दा १०) मासिक है।

(९) हमीरपुर-आर्य्यकुमारसभा है, गङ्गानारायण वर्म्मा प्रधान हैं।

(१०) बहड़ायच-आर्य्यकुमारसभा है, प्रधान पं० जगमोहननाथजी मन्त्री म० रामभरोसेजी है, सभासद २० हैं।

इन स्थानों पर भी आर्य्यकुमार सभाएं हैं।

(११) नकोड़, (१२) बान्दा, (१३) सरखड़कलां, (१४) सीतापुर, (१५) प्रतापगढ़

(१६) मेरठ सदर-आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब है प्रधान बाबू कालीचरण मन्त्री बाबू रामचन्द्रजी वर्म्मा हैं।

(१७) लखनऊ-गणेशगंज आर्य्यकुमार सभा है, प्रधान बाबू रामनारायण वर्मन बी. एस. सी., मन्त्री महावीरसिंहजी है, ६३ सभासद ४॥) मासिक चन्दा है।

(१८) रुड़की-कुमारसभा का काम अच्छा है, ८वें दिन शहर में लोगों के घरों में हवन होता है। यह सभा आर्य्य हवन प्रचारिणीसभा के नाम से प्रसिद्ध है।

(१९) लोहारी बाज़ार रकाबगंज लखनऊ-डाकखाना यहिया यहां आर्य्यकुमार मण्डल सन् १९१६ से स्थापित है, प्रधान म० विजयसिंहजी मन्त्री म० ईश्वरीदयालु जी, २४ सभासद हैं, ६ सहायक ९ जिज्ञासु हैं, मकान २) मासिक किराये पर आय व्यय बराबर है। साप्ताहिक अधिवेशन होते हैं शहर में भी प्रचार किया जाता है मेलों पर भी प्रचार होता है।

(२०) झांसी सीपरी बाज़ार-आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब ६ मास से काम करती है, हर बृहस्पति वार को समाज मन्दिर में भिन्न२ विषयों पर वाद विवाद होता है। आर्य्य कुमारसभा के १५ सभासद हैं।

(२१) डेरादून-आर्य्यकुमारसभा व बाल सभा हैं।

(२२) इटावा-आर्य्यमित्र सभा है, म० नन्दरामजी प्रधान और म० राधामोहनजी मन्त्री हैं।

(२३) फैज़ाबाद-आर्य्यकुमारसभा के अधिकारी म० रामभरोसेलालजी प्रधान म० अयोध्याप्रसादजी मन्त्री हैं ३०सभासद हैं इस के अतिरिक्त बाल सभा भी है। जिसके प्रधान पं० शिवनाथ और मन्त्री बैजनाथजी हैं।

(२४) भरतपुर-आर्य्यमित्र सभा है दशा साधारण है।

(२५) गजाधरपुर ज़िला बस्ती-आर्य्य कुमारसभा है मन्त्री पृथिवीपतीजी तिवारी प्रधान म० केदारनाथजी तिवाड़ी।

(२६) गङ्गवा ज़िला सहारनपुर-आर्य्य बाल सभा सन् १९१० से स्थापित है।

(२७) जयपुर-में, आर्य्यकुमारसभा है, ३५ सभासद है।

(२८) लखनऊ शहर-एक आर्य्यकुमार मण्डल है। जो अच्छा काम कर रहा है, शास्त्रार्थ शङ्कासमाधान इत्यादि काम इस के आधीन हैं और एक हिन्दी पाठशाला भी यह मण्डल चला रहा है, इस मण्डल ने अछूतजाति में खूब काम किया है।

(२९) पुरनी ज़िला बिजनौर-प्रधान म० ध्यानपालसिंहजी, मन्त्री मुंशी ठाकुरसिंहजी हैं ७० सभासद हैं।

(३०) मथुरा-कुमारसभा है। बाबू रामनाथजी प्रधान ला० जीवनरामजी मन्त्री

(३१) भजोई-जिला मुरादाबाद आर्य्य कुमार सभा है, मन्त्री म० गंगासहायजी हैं

(३२) शाहजहानपुर-आर्य्यकुमार सभा है प्रधान म० ज्योतिस्वरूपजी, मन्त्री म० रामदत्तजी हैं।

(३३) पीलीभीत-आर्य्यकुमार सभा में २७ सभासद हैं म० डालचन्दजी प्रधान, म० छोटेलालजी मन्त्री हैं।

(३४) जौनपुर-आर्य्यकुमार सभा है प्रधान म० अशर्फीलालजी हैं।

(३५) लालकुर्ती बाज़ार मेरठ-डिबेटिङ्ग क्लब है बाबू कालीजी प्रधान म० श्यामकृष्ण जी मन्त्री हैं।

(३६) बिजनौर-आर्य्यकुमार सभा, बाबू गंगाशरणजी मन्त्री और पं० जयनारायणजी प्रधान हैं।

(३७) मोरगंज सहारनपुर-आर्य्यकुमार सभा है प्रधान म० फीरोजीलालजी हैं।

(३८) मलावाकलां ज़िला मेरठ--आर्य्य कुमार सभा है।

(३९) मैनपुरी-कुमार सभा है बाबू बद्रीप्रसादजी विद्यार्थी प्रधान, कुवर फूलन सिंह विद्यार्थी मन्त्री हैं।

(४०) एटा-ऐग्लो वैदिकस्कूल की एक सदाचार सभा है, जिस के इजलास प्रति शुक्रवार को होते हैं। हवन सन्ध्या व उपदेश होता है।

बङ्गाल व ब्रह्मा इत्यादि

(१) कलकत्ता-आर्य्यकुमार सभा है, जो अपना स्वतंत्र काम करती है। समाज से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है।

(२) झालरा पाटन-आर्य्यकुमारसभा है १० सभासद हैं।

(३) रंगून-प्रधान ब्रह्मचारी शम्भूदयाल जी मन्त्री म० आधारसिंहजी है, सभासद ३०, नक़द पूंजी २७४I) लायब्रेरी में ४५ पुस्तकें २६III) की हैं एक भारी पुस्तकालय खोला जारहा है।

राजस्थान

(१) शाहपुर मालवा-आर्य्यडिबेटिङ्ग क्लब है, सुखरामजी गुप्त मन्त्री हैं।

(२)फुलेरा-(अजमेर) में बाल सभा है।

शुद्धि सभायें

शुद्धि सभा मीरपुर रियासत जम्मूं व कश्मीर-सहस्रों की संख्या में वशिष्ठ जाति के मनुष्य उपस्थित हैं, जिनको सर्व साधारण अछूत कहते हैं। इस जाति को गले लगाने के लिये १३ श्रावण सम्वत् १९६९ से आर्य्यसमाज ने इनकी शुद्धि का बीड़ा उठाया और प्रथम दिन ही बाविजूद सख्त विरोधता के ११७ आदमियों को शुद्ध किया

इसके अनन्तर आर्य्यसमाज मीरपुर ने पं० भगतराम और पं० रामदित्तामल को बुलाकर विशेष ढंग पर इस इलाके में शुद्धि के प्रचार के लिये भेजा। जिससे विरोधता और भी अधिक बढ़ गई, पहले अन्त में सम्वत् १९६९ में थोड़े नामधारी ब्राह्मणों ने एक वशिष्ठ को ज़बरदस्ती पकड़ कर उस का यज्ञोपवीत तोड़ डाला और लोहे की गर्म पातरी से उसके बदन पर लेकर छिड़क दी। पोपों के इस अत्याचार को देख इस इलाके के वशिष्ठ बहुत डर गये अदालत में इन पर सभों के प्रतिकूल मुकदमा चलाया गया, जहां से उनको छै छै मास कैद की सज़ा मिली। इस समय तक नौ सौ मनुष्य शुद्ध हो चुके हैं। और आर्य्यसमाज मीरपुर का ५२००) जमा हो चुका है, अब १२ ज्येष्ट सम्वत् १९७३ से शुद्धि का काम आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने अपने हाथ में लिया है

शुद्धि सभा होशियारपुर।

८ जौलाई सन् १९१३ को आर्य्यसमाज होशियारपुर में स्थापित की गई। शुद्धि का काम तो इस सभा की स्थापना से पूर्व भी जारी था। परन्तु इस सभा की स्थापना के बाद अधिक शीघ्रता के साथ आरम्भ होगया

कार्य्य की घोर विरोधता की मुकद्दमे बाजी तक भी नौबत पहुंची। परन्तु परमात्मा की कृपा है कि विजय आर्य्यसमाज की ही हुई। ३१ जौलाई सन् १९१५ ई० तक लग भग दो हज़ार कबीरपन्थियों ने आर्य्यसमाज में प्रवेश किया, इस के बाद सभा ने कई भिन्न २ स्थानों पर उत्सव करके बहुत से कबीरपन्थियों को वैदिक धर्म्म में प्रवेश किया, शुद्ध हुये लोगों और उन के बच्चों को शिक्षा देने के लिये सभा ने चार स्कूल खोल रक्खे हैं।

(१) प्राइमरी स्कूल सन् १९०८ ई० से लड़ौली में जारी है। उस को ७) मासिक सरकार से सहायता मिलती है

(२) स्कूल मौज़े गुड़ैत में १९१३ में।

(३) स्कूल मौज़े डडियां तहसील दुसोहा में स्थापित है, इस को सरकार से ३) रुपये मासिक सहायता मिलती है।

(४) स्कूल मौज़े भेड़ा तहसील दुसोहा में ८ अक्टूबर १९१६ को खोला गया था।

(५) सभा ने बजवाड़ा में भी स्कूल खोला था, परन्तु अध्यापक के चले जाने पर बन्द हो गया।

(६) मौज़े हार में भी स्कूल खुलने की तय्यारियां हो रही हैं।

ढलियारा के ब्राह्मणों और राजपूतों ने भी स्कूल खोलने के लिये सभा को लिखा है, इसी तरह जहां २ स्कूल खुल रहे हैं। शुद्धि का विरोध कम होरहा है। सभा के आधीन एक उपदेशक ठाकुर सर्वजीतसिंह कार्य्य कर रहे हैं, जिन के कार्य्य का क्षेत्र ज़िला काङ्गड़ा और होशियारपुर है। शुद्धि का कार्य्य अब अधिक करके ज़िला काङ्गड़ा में हो रहा है, सभा के पास इस कार्य्य के लिये कुछ अधिक रुपया नहीं है।

मास्टर रामदासजी इस सभा के मन्त्री और पं० गुरुदासरामजी वकील प्रधान हैं, परन्तु इस के विशेष कार्य्यकर्त्ता म० देवीचन्दजी हैं।

सभा फरुखाबाद।

१ जनवरी सन् १९१६ को सनातनधर्म सभा के मन्दिर में स्थापित हुई, जिसके

आर्य्यसमाजी और सनातनधर्मी सभासद और सहायक हैं। यहां के मुसलमान लोग बड़े कट्टर थे, और वैदिकधर्म के सुनने में पक्षपात की वजह से बहुत कम भाग लेते थे। परन्तु अब म० शान्तिस्वरूपजी की वजह से शुद्धि सभा के द्वारा हर बहस और व्याख्यान में बड़े शौक से भाग लेते हैं बल्कि यहां तक कि चन्दा भी देते हैं। परन्तु डेढ़ वर्ष के समय में लगभग ३० शुद्धियां हुई हैं। और १०० की संख्या में वैदिकधर्म्म की लाइट (प्रकाश) का सिक्का मान गये हैं। १०० की संख्या है कि जिन में घर २ फिर कर वैदिकधर्म का सन्देशा पहुंचाया जा चुका है। आर्य्य जनता का ध्यान और धन के अभाव से बहुत कुछ कार्य्य में रुक कर हो रहा है।

म० शान्तिस्वरूपजी ने शुद्धि सभा फ़रुखाबाद के पौदे को हरा भरा किया है भविष्य में बहुत कुछ इस में फल लगने की आशा है, आर्य्य जनता के विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शुद्धि सभा दीना नगर व गुरदासपुर

दीनानगर और गुरदासपुर की आर्य्य समाजें इस समय तक हज़ार डोमों को शुद्ध कर चुकी हैं। पं० रामभजदत्तजी वकील लाहौर और लाला बख्शीरामजी के उद्योग से प्रशंसा के योग्य हैं शुद्ध किये हुये महाशयों के लिये एक पाठशाला भी जारी है। परन्तु एक पाठशाला से कार्य्य नहीं चल सकता, यदि आर्य्य प्रतिनिधि सभा सहायता दे तो इस इलाके में कई हज़ार और शुद्धि हो सकती हैं।

शुद्धि सभा भटिण्डा।

इस सभा में नियमानुसार तो कोई शुद्धि सभा नहीं। परन्तु वहां के आर्य्य पुरुष कई जन्म के मुसलमानों की शुद्धियां कर चुके हैं। आर्य्यसमाज भटिण्डा की ओर से यह आम नोटिस है कि जो समाज किसी कारण से शुद्धि न कर सकती हो वह शुद्ध होने वाले महाशयों को भटिण्डा भेजदें।

इन्द्रप्रस्थ अछूत सुधार सभा।

राजपूत जातियों को ईसाइयों से बचाने के लिये यह सभा स्थापित की गई है। अछूत बालकों की शिक्षा के लिये एक पाठशाला स्थापित की गई है। मुन्नालाल गुप्त इस के मन्त्री हैं।

भारत शुद्धि सभा आगरा

भारत शुद्धि सभा का जन्म १९०९ ई० में आर्य्यसमाज आगरा के उत्सव पर हुआ और २१ जून सन् १९११ ई० में इसकी रजिष्ट्री कराई गई। शुद्धि के सम्बन्ध में इस सभा से बहुत कुछ आशायें बांधी गई थीं। परन्तु श्रीमान् पं० भोजदत्त के स्वर्गवास होने के पश्चात् काम में शिथिलता आगई है।

इस सभा के आधीन आगरा में एक मुसाफ़िर विद्यालय स्थापित है जिस में प्रचारक उत्पन्न करने का उद्योग हो रहा है। डाक्टर लक्ष्मीदत्त जी इसके प्रबन्धकर्त्ता हैं।

आर्य्यसमाजों का सूचीपत्र

जिला	संख्या	नाम समाज	डाक घर	रेलवे स्टेशन	प्रधान	मन्त्री	मेम्बरों की संख्या	लागत मन्दिर	वार्षिक चन्दा	नवीन मेम्बर
	१	नजफगढ़	खास	बहादुरगढ़	बाबू किशनलाल,	मुसद्दीलाल	२०	२५००)	६३)	३
देहली	२	देहलीसदरबाज़ार	,,	खास	चौ० भगवानदास,	भोलानाथ	७२	७०००)		
	३	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ,	बदरपुर,	तुगलकाबाद,	प्रियव्रत	गोवर्धन	१७			
	४	शाहदरह	खास	खास	बुलाकिदास	बाबूराम	३०	१५००)	३००)	५
	५	सब्जमंडी, देहली	खास	खास	चौ० बुधसिंह,	जगन्नाथ	२२		७८)	
	६	शामापुर	बादली	बादली	बुधराम	हरसिंह	८		६०)	
	७	नरेला	खास	खास	अभयसिंह	फिङ्गसिंह				
	८	रामपुर	नरेला	नरेला	दिलदारसिंह	दाताराम				
	९	बिवाना	खास	नरेला ४ मील	मलेचौधरी	धनामल	१५		१२०)	
	१०	दारयापुर	हिलालपुर	नरेला	गोवर्धन	भूरीसिंह				
	११	समराला	नानलोई	नागलोई	नेकीराम	हरिलाल				
	१२	विचावड़ा			डूँगरसिंह	मूलचन्द्र	२५			
	१३	शाहपुरजटा	मसजिदमोठ,	निजामउद्दीन,	कुंवरलाल,	दाताराम	१५			
	१४	महरौली	खास	निजामउद्दीन,	बिहारीलाल,	दीवानचन्द			२४)	
	१५	मसजिदमोठ	खास	,,	श्रीराम	मिलखीराम	१०		२००)	
	१६	नांगल	हिलालपुर	नरेला	शिवनाथ	हरी			२४	
	१७	सुल्तानपुर	नांगलोय	नांगलोय	चेतराम	बुद्धमल				
	१८	कश्मीरीदर०	खास	देहली	मथुरादास	लालजीप्रसाद				
	१९	मुगलपुर	नांगलोय	नागलोय	शामसिंह	अनूपसिंह			३४०)	
	२०	लानीदीना		सोनीपत	दीवानसिंह	मुलचन्द्र				
	२१	जटोला	खास	नरेला	गङ्गाराम	भगवन्तराय				
	२२	चावड़ीबाजार देहली,	खास	देहली	निहालचन्द,	जानकीनाथ		५०००)	६४ मा०	
	२३	माहरा	खास	खास	फकीरचन्द्र					
	२४	नामक	नरेला	नरेला	गुरुदयालसिंह	मनोहरलाल				
	२५	पंजगाई	तख्नीदास			फतेहसिंह				

इनके अतिरिक्त और भी आर्य्यसमाजें निम्नलिखित हैं, जिनके हालात प्राप्त नहीं हुवे।
बादली, रानीखेड़ा, बांकनेर, शाहबाद, बाजिदपुर, उवास, प्रहलादपुर, कराला, मूठछोटी, किराड़ी, सुलेमान नगर, टोकरी, माज़रा, ढीलवाल, विचाऊ, कैर,

शम्शपुर, घुमनहेड़ा, दौलतपुर, कांगनहेड़ी, धूलसिर्स, गोयला, हासी, ककरोला, अम्बरहाई, विजयासन, महिपालपुर, कामसहेडा, महरौली ।

गुड़गांवा

१ वलभगढ़ खास खास श्यामसुन्दरलाल भीखमसिंह २१ भूमि है ६३७) ६
२ नूह खास भवन खेमचन्द्र राधेलाल १० २००)
३ कामन पाहारी पातल सदाराम रामजीदास १० २४)
४ धारोहीड़ा धनसिंह केवलराम
५ पोनाहाना खास गुड़गांव रामचन्द्र श्यामलाल २ २४)
६ होड़ल खास खास चौ० मंगलसिंह गोरीराम १२ १८)
७ सुहना खास गुड़गांवा ज्वालाराम सिद्धीचन्द्र १०
८ गुड़गांवासदर खास खास गंगाबख्श रोशनलाल १००)
९ पलोल खास खास कृपाराम रामदयाल १०८
१० हथेन खास पलोल ५ मील रणजीतसिंह

इन के अतिरिक्त और भी निम्नलिखित समाजें हैं जिन के हालात प्राप्त नहीं हुये । झाड़िया, डोंडाहीड़ा, शिकोहाबाद, नखड़ोला, खवासपुर, वामन, खेड़ाघोसगढ़, पातली, अलीपुर, पंचगांव, मोकलदास, ढानी, फाजिलपुर, वलीबाजाट, भुआथल, काहड़ीदास, जूनिदास बीकानेर, मड़ोला, सुन्दरोज, सुनारी, टोकी, रामगढ़, भगवानपुर, रनवीरपुर, फरावड़ा, वांमा, सुपेडातिगवां, फरीदाबाद, मजरौदा, अंकीर, दवसिआ, सीही, बोहतादास, ढैराना, नूहनगीना ।

रोहतक

१ झज्जर खास बहादुरगढ़ जगन्नाथ रामचन्द्र १८ ५०००) १००) २
२ सोन्डाना कानोर रोहतक बोचन मटरूसिंह २०
३ रोहतकशहर खास खास रामस्वरूप मामचन्द ७०००) ८४
४ बूहर रोहतक रोहतक ३ मील, भोंरासिंह, हरदेवसिंह
५ बड़ीमकड़ोली ,, रोहतक ५ मील, मोतीसिंह
६ छोटीमकड़ोली ,, ,, ४ मील
७ सतपुरा ,, राममल मीठीसिंहजी
८ कन्हली ,, ,,
९ डोभा ,, रोहतक ३ मील
१० डीघल डीघल खरावर ५ मील
११ मुहिम खास रोहतक १५ मील, रामचरनदास, बनवारीलाल २६ ६०)
१२ बेरी खास रोहतक
१३ सांपला खास खास कन्हईलाल
१४ शुमालीइसमाइल, सांपला, सांपला २ मील
१५ लोरखेड़ी सांपला ,, ४ मील
१६ समजाना खरखोदा सांपला १४ मील मत्थूसिंह जी
१७ भंसीरू सांपला सांपला ४ मील

१८ गढ़ीसांपला ,, ,, १ मील नेगीसिंह
१९ रसौड़ा ,, ,, २ मील
२० झापड़ौदा ,, ,, ४ मील भाईसिंहजी
२१ छारा छारा ,, ५ मील अमृतसिंह
२२ गढ़ीप्रहलादपुर असूदा आसदा४मील प्रेमसिंह ज्ञानीसिंह
२३ देसावरखेड़ी ,, ,, ४ मील
२४ मेलाढ़ी खरखोदा८मील सांपला, लक्ष्मणसिंह,भरतसिंह
२५ कंझावर बहादुरगढ़ बहादुरगढ़४ मील,
२६ ,, ,, श्रीरामजी २०००) ४२)
२७ सांखों बहादुरगढ ,, १ मील
२८ मांडूठी आसूदा ,, ६मील नेकीराम रूपचन्द ८ २४)
२९ दोवन्धन झज्जर बहादुरगढ़१२मील, बल्देवसिंह
३० झज्जर झज्जर ,, १८ मील विष्णुहरनामसिंह, २०००)
३१ रइया झज्जर ,, मौजीराम
३२ आखोदा आसूदा आसूदा१मील जोरसिंह
३३ आसूदा खास खास नेकीसिंहजी
३४ ठकोरा खास आसूदा शिवरामसिंह
३५ सोनीपत खास खास जगन्नाथ
३६ बघान सोनीपत सोनीपत मास्टरपत्रसिंह
३७ गढ़ीब्रह्मणा सोनीपत सोनीपत
३८ भटगाम भटगाम ,, दानीचन्द
३९ तलहेडी सरसौली गनौर४मील
४० भोई भटगाम सोनीपत ८ मील
४१ चन्धरौली सोनीपत सोनीपत
४२ जसवालामाजरा, भटगाम सोनीपत ८ मील, सहरासिंह
४३ भैंसवाला ,, ,,१२मील रामजीलाल
४४ गोहना ,, ,, १०मील
४५ तोयड़ी लडसौली गनोर ८मील, तुलासिंहजी
४६ फरमाना खास सोनीपत टेकलालसिंह इच्छारामजी
४७ दुराना गुहाना पानीपत १२मील, केहरीसिंह श्रीराम ११)
४८ आंवली फर्माना रोहतक १मील, बाघसिंह
४९ गुमाना ,, ,, ८मील
५० मटन्डो रोहना सांपला शिवलाल २०
५१ बगोना सांपला रामकलासिंह

५२ रोहना रोहना सांपला सामलसिंह नन्दरामजी
८मील
५३ गढ़ी ससाना ,, ,, भरतसिंहजी रामजीलल
५४ भालोर बोहर रोहतक७ मील
५५ गढ़ीकुंडल हिलालपुर बहादुरगढ भगवंतराय गंगारामजी १० २६)
५६ रिवाडी फर्माना बहादुरगढ शालिरामसिंह
५७ निज़ाममांजरा ,, रोहतक १२मील
५८ हिलाना गुहाना खरीडीपट्टी १० मील,
५९ हुमायुंपुर ककरोवा रोहतक
६० बांहना सोनीपत सोनोपत ७मील प्रेमराजसिंह
६१ खडीखुमार झज्जर रोहतक १७मील भोलासिंह कालुराम
६२ सलानासलानी ,, ,२०मील
६३ पिपलीखेडा पानापाखाधकोरा सांपला हुकमचन्द जगमलालसिंह

इन के अतिरिक्त निम्न लिखित समाजे वह है, जिनके वृत्तान्त प्राप्त नहीं हुये। अनूठी, मोकरा, पलहडा, झरोद, जटोला, घाहनो, चोखे, नीलोठी, बडिया, दामन, छीसा, गढी सुल्तान, गढी खुमार, सासडी, सुनपीडा जसीपुर, शेखपुरा, फतेह-पुर, घघनोली, जगदीशपुर, भुवापुर, नसीरपुर, वलीकुतुबपुर, पुरखास, इन्दरपुर, महलाना, माहरा, उद्द भोर, माजरी, बनियाना, सालारपुर, माजरा, कलाना, भटाना, त्योडी, बजाना, मोहाना शेदीपुरखुर्द, ईश्वरमहीडा मलढा, जोंधी, जलाना, सोरहती, गरावड, जहाजगढ, पावदा, कोसली, छोगुड, धामड, बलियाना नोनोड, खेडी सांघर, टटोली अडमीत, किलोही छलराना गिलोढ, बीधल, ऊखी इस्वाखुर्द, जवारा मदीना, भराई, खरखडा, जायब, नान्दल भलखा निराना सामाना, भीनी सुरजन, भीनी बारयावाली, खेरटी, फीरोज़पुर, ओहन्दी, झिझोली, जाखोल, विढालाक।

हिसार

१ सिरसा सिरसा सिरसा केशवरामजी गणपतराम ४० २०००)
२ तडकांवाली जमाल रामसुख रामजस
३ चवावला ,, डिडग मामचन्द नानकचन्द
४ भिवानी खास खास शिवरामजी रघुनाथसहाय ३२ २००८ ६३॥)
मासिक
५ खांडाखेडी खास फमाना उदयराम शिवरामसिंह ९० ४५००)
६ खतरांवाला कालवाली कालावाली गजनसिंह किशनसिंह ११
७ शेरगढ मंडीडबवाली भैरोंदत्त भूदेव १० ३६
८ नारनोनध खास हांसी फतेहसिंह बारूराम २५
९ नोरङ्ग खास हांसी३मील
१० हिसार खास खास हरीलाल चूडामणि १५ ८०००) ६००)

११	हांसी	खास	खास					
१२	भिवानीकटरा नन्दराम,	खास	खास	रामसिंह	रामबिलास			
१३	मांजला	खास	भिवानी	लालचन्द	रामसिंह			
१४	मिर्चपुर	खास	जींद					
१५	बरसोला			शिवनाथ	अहिराम			
१६	कापडो			मौजूराम	रलाराम			
१७	खानपुर			कांशीराम	हरधोसिंह			
१८	खेद्ड			नत्थूराम	मायाराम			
१९	कटोहाना	खास	खास	जयसिंह	भगवन्तसिंह		१६००)	४
२०	तालू	बवानीलाखो		मुसद्दीराम	बाबूराम			
२१	ठोंडी	घरोंदा		शेरसिंह	छजूराम			
२२	खांडा	खास	खास	राजमल				

करनाल

१	पानीपत	खास	खास	राम कुसुमचन्द	शादीराम	२०	है	
२	कोल	,,	ढाड	तुलसीराम	गोपीनाथ	३०		
३	हलधर	जटलाना	जगाधरी	मूलराज	दौलतराम	२६	४०००)	१०)
४	कुञ्जपुरा	खास	करनाल७मील	साहूराम	रणजीतसिंह	२०		
५	कठरांली	खास	जगाधरी	सदाराम	दलेलसिंह	१०	१०)	१०)
६	ज्याना	इन्द्री	तरावडी	छुट्टनलाल	बख्तावरलाल	१०	१०)	१५)
७	रादौर	खास	जगाधरी			१०किराये६२)		
८	खाना	कैथल	सजूमा	रामजीदास	रामानन्द	१३	२)	
९	सालून	असिन्धा,	सफेदा	ताराचन्द	सिंगारासिंह	२३	१५०)	
१०	कुरुक्षेत्र	खास	खास .	राजाराम	परशुराम	२५	३६)	
११	शाहाबाद	खास		रामप्रसाद	पुन्नूलाल			
१२	गढ	घरोंडा	घरोडा	मुन्शीराम	प्रभुदत्त		२०)	
१३	मांडी	नवलथा	समालखा	पालसिंह	भूपसिंह	७	५६)	
१४	करनाल	खास	खास	हरिशङ्कर वी०ए०,	नरसिंहदास	२६	५०००)	
१५	घोघडीपुर	करनाल	करनाल	चौ.राजाराम	विजयसिंह	२०	२०००)	
१६	करनाल	करनाल	करनाल	,,	चौ.तुलसीराम			
१७	खोडीदावदा	लाडवा	थानेसर	मुकुन्दलाल	बाबूराम	६		
१८	लाडवा	,,	,,	दाताराम	रामकृष्ण	३०		
१९	शाहाबाद	,,	खास	बाकूमल	नाथूराम	३२	५०००)	६०)
२०	कैथल	,,		विनायकराव	गनपतिराय			
२१	मनाणा	समालखा	समालखा	देसराज	मनभरसिंह			
२२	सैंक	अटलाना	करबन्धू	रामानन्द	केहरसिंह			
२३	चबाव	करनाल	करनाल	निहालसिंह	बेलीसिंह			

२४	बुधानालाव्‌	नवलथा	पानीपत	ख्यालीराम	हीरासिंह			
२५	ठोल	ठसका	शाहाबाद्	कृष्णसिंह	केवलराम			
२६	कुंजपुरा	खास	करनाल	माधोराम	बुधराम			
२७	इस्माइलाबाद्	,,	शाहाबाद्	गंगाराम	बद्रीप्रसाद्			
२८	पांडरी	,,	टेक	देवतराम	अमरसिंह			
१९	फतेहपुर	,,	टेक	हरविलासराय,	मनसाराम			
१०	पाथरी	मरलाना	सफेदूं	देवीराम	भोलाराम			
११	अलुपुर	खास	पानीपत	दाताराम	देवीराम			
३२	पाई	खास	कैथल	ऋषिराम	कोडामल			
३३	घान्दा	नवलथा	समालखा	ललितसिंह	कोड़ासिंह			
३४	फूंसगढ	करनाल	करनाल	कृपाराम	जमुनादास			
३५	गमथलागढ	खास	ढांड	नरसिंहदास	नन्दलाल			
३६	पुंडरी	,,	टेक	रामकृष्ण	सूरजभान	२५	१००००)	१५०)
३७	पलडी	,,	पानीपत					
२८	नवलथा	,,	,,	रामस्वरूप				
३९	बंझोल	पानीपत	,,	नागरमल	ख्यालीराम			
४०	ग्वालेरा	समालखा	समालखा		मंगतराम			
४१	अजाबा	नवलथा	पानीपत					
४२	मलसराना	,,	,,	हरिसिंह	लालूसिंह	८		
४३	बहावलपुर	अलहर	,,	बेजा	उद्यमी	१२		
४४	कारसा	नसङ्ग	करनाल	कन्हैयालाल	मूंगाराम	३५		
४५	डढबारी	नवलथा	पानीपत	दीवानसिंह	सूरतसिंह	२५		
४६	स्वाह	पानीपत	पानीपत	लक्ष्मणसिंह	जमुनाराम			
४७	बजारा	खास	नवलथा	रामजीलाल				
४८	जवाहीसरदा				ताराचन्द्			
४९	गोंदा	घरौंडा		भगवानाराम	प्रभुराम			
५०	सोता	माराकला		साडाराम	रामधारी			
५१	कथरा			कुन्दनलाल	निहालाराम			
५२	बडग्राम	पानीपत	पानीपत					
५३	कमला	खास		झंडासिंह	जनाराम			
५४	शेखूपुर	घरोंडा		रतीराम	रामलाल			
५५	कपलाहेडी	मंहग		हंसराज	देसराज			
५६	आटां							
५७	बेलरवाला							

अम्बाला	१	सुहाना	खास	राजपुरा	हरिद्वारलाल,विश्वनाथ					
	२	मुरन्डा	,,	सरहिन्द	आशाराम	नौबतराय	२१	४०००)	२५)	१
	३	कालिका	,,	कालिका,	सुजामल	केशवराम	२२	२०००)	३००)	१०
	४	मुस्तफाबाद	,,	खास	अमोलकराम,तेलूराम		२०	२ ००)		६०
	५	अंबाला छा.	,,	खास	दौलतराम	लालचन्द	२५	है	१२००)	
	६	अ०शहर	,,	,,	बद्रीप्रसाद	नत्थासिंह		किराये	५००)	
	७	अ.शहर(क),		,,	रामचन्द्रजी	रत्नलाल				
	८		भटिन्डा,	जगाधरी,	बख्तावरलाल,	प्रभूराम	१५		२०)	१
	९	दाऊदपुर	,,	,,	जयमल	दौलतराम	१२			१५
	१०	जगाधरी	,,	,,	कश्मीरी	गजाधर	१५	है	१००)	
	११	छछरौली	,,	,,	रामानन्द	रामस्वरूप	६	है	३६)	७
	१२	खिज़राबाद	,,	,,	वीरसिंह	दौलतराम	१०			१०
	१३	बूड़िया	,,	,,	मुन्शीराम	मुसद्दीलाल	१२	किरायेपर		१२
	१३	अंबालाश.(ग)	खास	खास	धर्ममल	शोभाराम	४३			४३
	१५	अ.छा. (क)	,,	,,	प्रभुराम		३०		१०००)	
	१६	मुलाना	,,	बराड़ा	मक्खनलाल,राजाराम		१७	मुफ्त	७६)	६
	१७	साढौरा	,,	,,	मुकुन्दीलाल,बुलाकीराम					
	१८	रूपड़	,,	सरीना	बिशम्भरनाथ,जगकृष्ण		४०	है	१२००)	१५
	१९	खरड़	,,	,,		गंगाराम	१५			
	२०	नैगल	,,	अ.शहर	बीरचन्द		१०			
	२१	रामगढ़	,,	घगर	सुन्दरलाल,गोपीराम		१०			२४
	२२	कसौलीपहाड़	,,	कालिका						
	२३	नरायनगढ़	,,	बराड़ा	हरिदास	प्रभुदयाल				
	२४	शहजादपुर	,,	अ.शहर	मुरलीधर	केवलराम	८			
	२५	नाहनराज्य	,,	बराड़ा	बहादुरसिंह,हीरालाल		१२	२०००)	१८)	
	२६	थमबड़	,,	,,	आशाराम					
	२७	शाहपुर	,,	अ.छा.	मानाराम	रल्याराम	१०	५२६)	३४॥)	
	२८	बलाना	अम्बा	अम्बा.	रणसिंह	राधाकृष्ण	१८	७॥।≈)॥।	६५।)	
	२९	डेरावसी				गोविन्दराम				
शिमला	१	शिमला	खास	खास	मोहनलाल,रामचन्द्र		११०	४५०००)		
	२	क	,,	,,	,, अमरसिंह	ईश्वरदास	९०	२००००)		
	३	कोहडगशाई	,,	धर्मपुर	जैनीराम	रामजीदास				
लुधियाना	१	रायकोट,	खास,	मदनपुर,	रणधीरसिंह,	गुरुप्रसाद	१८	४००००)	६००)	
	२	भगवतीपुर	,,	खन्ना		गंगराम	१	९००)		
	३	समराला	,,	,,	श्रीराम	मुकुन्दलाल	२१	१५००)।	४००≈)	५

	स्थान		तहसील	नाम				
	४ लुधियानाशहर	,,	खास	शिवप्रसाद,गुरुदासमल				
	५ जगरांओं	,,	,,	कृष्णगोपाल लभुराम	७	२०००)	१५)	
	६ बागड़िया	,,	झटावाला,	तिलकराम, रामनाज	१०		६०)	
	७ खन्ना	,,	खास	भानाराम गोकलचंद्र			४८॥)	
	८ बसियां	,,	जगराओं	छज्जूराम शादीराम			२४)	
	९ पखोवाल	,,						
	१० भीनीअरोड़ा		तस्याला अहमदगढ़	हरिसिंह				
	११ बनोलपुर			भूमि है				
फीरोज़पुर	१ कोटईसाखां,	खास	मूगर	मेलाराम हुकमचन्द	१७		३५॥)	
	२ अबोहर	,,	खास	दौलाराम शेरसिंह	१७	६०००)	१६००)	
	३ फीरोज़पुर सदर	,,	,,	गोपालदास,बलरामसहाय	२५	७०००)	१२०)	
	४ ,, (क)	,,	,,	रोशनलाल, जगतराम				
	५ मोगा	,,	,,	दौलाराम देवीदयाल	३५	७०००)	८४)	
	६ फीरोज़पुर श.(क)	,,	,,	लक्ष्मणदास तुलसीदास		८०००)		
	७ फ़ाज़िलका (क)	,,	,,	कांशीराम गौरीशङ्कर	८		३६)	
	८ फ़ीरोज़पुर शहर	,,	,,	विष्णुदत्त तुलसीराम				
	९ मुक्तसर	,,	,,	मोहनलाल बुद्धराम		८०००)	१०८)	
	१० चनो	,,						
जालन्धर	१ बस्तीगज़ां	,,	जालन्धर	मयादास मलावाराम	११			
	२ समराय	,,	नकोदर	भानचन्द्र लालचन्द्र	१०			
	३ नवांशहर	,,	खास	काशीराम,नोहरियाराम	१९	६०००)	१०००)	
	४ महतपुर	,,	,,	गण्डाराम,हरिचन्द	१९	२५००)	५००)	१
	५ मुकुन्दपुर	,,	बिसराम	रामसिंह मूलराज	१३		१०५)	१
	६ जालन्धर सदर	,,	खास	नरायणदास,मूलराज		७०००)	१२१॥)	
	७ ढलवां	,,	,,	मक्खीराम रामजीदास	१३			
	८ फगवाड़ा	,,	,,	पोहूमल मथुरादास	२२		६०)	
	९ अपरा	,,	फिलौर	वसन्तराम रामचन्द्र	८		२७)	
	१० नूरमहल	,,	खास	जगन्नाथ लभूराम		१००००)		
	११ कर्तारपुर	,,	,,	ठाकुरदास सूरजभान				
	१२ जालन्धर शहर	,,	,,	रामकृष्ण बृन्दाबन		१५०००)		
	१३ ,, ,,(क)	,,	,,	राधाराम गुरांदत्ता				
	१४ औड़	,,	फिलौर	जागीरीमल,लक्ष्मणदास	२०			
	१५ नकोदर (क)	,,	,,	मेलाराम रामजीदास				
	१६ जालन्धर किला	,,	,,	गुरांदत्तामल				
	१७ राहो	,,	फगवाड़ा,	रामरतन हरप्रकाश				

१८	बङ्गा	बङ्गा		कृपाराम	रल्लाराम	१२		१०)	
१९	पारुताआड़का,	खास	बङ्गा	शादीराम	गङ्गासिंह				
२०	अलावलपुर	,,	जालन्धर		सोमचन्द्र				
२१	शाहकोट				मोतीराम				
२२	मलसियां	,,	जालन्धर,	रतीराम	सन्तराम				
होशियारपुर									
१	शामचौरासी	,,	खास	रामचन्द्रलाल,	नौबतराय	२०	२८००)	५०)	
२	दुसोहा	दुसोहा,	दुसोहा,	रामलाल	गङ्गाराम	३०	३०००)		
३	होशियारपुर	खास	खास	मिलखीराम	दुर्गादास	५८	३५००)	१७७।-)	१
४	पट्टी	,,	होशियारपुर,	विलायतीराम,	इन्द्रराम	१३	२०००)	१३)	
५	माहिलपुर	,,		प्रतापसिंह,	गुरांदत्तामल	३२		४३)	२०
६	हरियाना	,,	होशियारपुर,	गोपालदास,	अमरनाथ			४८)	
७	मुकेरियां	,,	गुरदासपुर		जगदीशमित्र				
८	भदसाली,	पिंडोगा,	होशियारपुर,	दीवानचन्द,	भगतराम	२५		४८)	
९	खड़	खास							
१०	ऊना	,,	होशियापुर,	पूर्णलाल	लछमणदास	४२		३६)	
११	बहरामपुरभंदेड़ी,	,,	,,	रामदत्तामल,	देवराज	२०	५००)	२४)	
१२	साहिबा	,,	प.गवाड़ा	प्रतापसिंह	श्रीराम	१५		३०)	
१३	जेजूं	,,	खास	कन्हैयालाल	लछमीदास	१९		६)	
१४	रोड़मज़रा	,,		लभुराम	नन्दलाल				
१५	लकस्मियां	,,		गुज़रमल	गङ्गाराम				
१६	अम्ब	,,	होशियारपुर	लछमणदास	बालकराम		१०००)	३०)	
१७	राजपुरा	,,		मङ्गलराम	अमृतलाल				
१८	बेड़लाहारटा,	,,	होशियारपुर	कुज्जूराम	दिवानचन्द			१२)	
१९	उरमरटांडा	,,	,,	कन्हैयालाल	तीर्थराम		५००)	३०)	
२०	दरकारपुर	,,			रामशरण				
२१	काइयां	,,	दुसोहा	रामकृष्ण	मुकन्दलाल		मकान		
२२	दौलतपुर			शिवदयाल					
२३	कानिया								
२४	उडयाल								
२५	कोटफतोही	खास							
२६	अरडौली								
२७	भेट								
२८	बजवाड़ा								
२९	सन्तोखगढ़								
३०	भङ्गला	खास							

३१ वाड़ियाकलां

कांगड़ा	१ मंडी रियासत	खास		चातूराम	रामेश्वरराम	७८		६०)	
	२ कल्लू	,,	पठानकोट	गोविन्ददास	नानकचन्द	१३	१५००)	१२।-)	२
	३ शाहपुर	,,	,,		शिवदयाल	२८	२०००)	५०)	
	४ नूरपुर	,,	,,	जयन्तीराम	दुदराम	१०	२५०)	३६)	
	५ नगरोटाभगवान	,,	,,	लक्ष्मणसहाय	बुधराम	१०		२०)	
	६ इन्दौरा	,,	,,	रामसिंह	चरनदास	१५		२८)	
	७ पालमपुर	,,	,,	ईश्वरदास	तुलाराम	४३	१५००)	२५०)	
	८ तीखर	हमीरपुर		सिङ्गारसिंह		१०		२०)	
	९ धर्मशाला	खास	पठानकोट	हनुमन्तदास	नारायणदत्त	२३		५४)	
	१० प्रागपुर	,,	जालन्धर	हजूरीमल	बंशीलाल				
	११ भवन	,,	पठानकोट	माधोराम	बिशनदास	३०		७२)	
	१२ धेरा	,,	,,	अयोध्याप्रसाद	राधाकिशन		१०००)	६०)	
	१३ भवाना	,,	,,						
	१४ कांगड़ा	,,	,,	वज़ीरचन्द	बिशनदास				
	१५ खड़ोही	,,	,,	सतारचन्द					
	१६ सुजानपुर	,,	,,	ताराचन्द	प्रेमनसिंह				
	१७ डेराखजूरी	,,	,,						
	१८ हमीरपुर	,,							
गुरदासपुर	१ घनियेकेबांगर	खास	जयन्तीपुर	मूलचन्द	हीरानंद	१२		१४)	
	२ गुरदासपुर	,,	,,	विशम्भरनाथ	दीवानचन्द	१६	१००००)	४००)	
	३ श्रीगोबिन्दपुर	,,	,,	बिशनदास	बेलासिंह	२०	६०००)		
	४ सुचानियां	कूंना	कूंना	सन्तराम भंडारी	हरभगवान	१५	स्थान है		
	५ शकरगढ़	खास	गुरदासपुर	जयदयाल	बेलीराम	२१	२०००)	५१॥=)	६
	६ दोधून्च क	,,	,,	हरीराम	बेलीराम	६	३००)	१६)	
	७ कादियान	खास	वटाला	वासुदेव	दाताराम	१७	५००)	३२५)	१
	८ मराड़ा	,,	दीनानगर	सुखदयाल	लभूराम	१४	नहीं		
	९ सुजानपुर	,,	पठानकोट	जयकिशन	भगवानदास	८	है		
	१० बहरामपुर	,,	दीनानगर	दीनानाथबी.ए.	रामशरनदास	४६	है		
	११ दीनानगर	,,	,,	बख्शीराम	देवदत्त	२८	८०००)		
	१२ सहारी	,,	धारीवाल	गंडासिंह	बसावासिंह	२०			
	१३ डलहौज़ी	,,	पठानकोट	बखशीशसिंह	रलाराम				
	१४ पठानकोट	,,	,,	गुरदित्तसिंह	पूर्णचन्द	१८	४०००)		
	१५ नूरकोट	गुरदासपुर	गुरदासपुर	फग्गूमल	सांजीमल	६०	१५००)	२४)	
	१६ कोटलीसू[illegible]मल	खास	वटाला	नत्थूराम	गनपतिराय	६			

१७ कल्वानूर ,, गुरदासपुर दीवानचन्द दयाराम १६ ४८)
१७ धारीवाल ,, खास बालकृष्ण मुन्शीराम
१६ बटाला ,, ,, कर्मचन्द दीवानचन्द५०,१०००० १२०)
२० ,, ,, ,, अमरचन्द नत्थूराम ८००) १३८)
२१ गुरदासपुर ,, ,, मोतीराम गुरदित्तसिंह ४०००)
२२ अब्दुलासपुर ,, दीनानगर नौरङ्गसिंह सरजूदास ४० १००) १२०)
२३ फतेहगढ़ ,, बटाला पूर्णचन्द मनोहरलाल२० ४८)
२४ छीना ,, अमृतसर सुचितसिंह
२५ कोटसन्तोषराय,,धारीवाल गुरदित्तामल कृपाराम ८ २४)
२६ घरकलटरणघावी,,बटाला मलिकराज काशीराम १० ६०)
२७ डेरानानक ,, बटाला
२८ मंडेडीनानगर,, ,, गिरधारीलाल फकीरचन्द २०
२६ तेजियाल ,, बटाला भगतराम पूरणचन्द
३० बुजुर्गवाल,छीना छीना दीवानचन्द राधाकिशन
३१ कोटनैनां खास ,, जगतराम

अमृतसर
१ नौशेहरापुनवां,खास,जंडोके अमीचन्द शादीराम १४ १०००) ३४) २
२ जंडया-गु. ,, खास रल्याराम मेलाराम २० ४००)
३ अमृतसर ,, ,, जगन्नाथ केशवचन्द्र १२५ ५६०००) ४
४ महेलावाला,मानसेहरा,अमृतसर,गंडासिंह,चुन्नीलाल ५००)
५ मजीठा खास कत्थूनंगल गौरीशंकर दुर्गादास ४०
६ तला खास अटारी नानकचंद किशनचंद १४
७ भंगाली खास
८ तरनतारन ,, खास सीताराम
९ अमृतसर ,, ,, उत्तमचन्द
१० जलालावा ,, ,, गणपतराय
११ रमदास ,, अमृतसर सुखरामदास

लाहौर
१ लाहौरछ- खास खास बैजनाथजी गिरधारीलाल ३७ २०००) १००) १०
२ शर्कपुर ,, ला-षिशाह योगीराम सोहनामल ५० १५००) ६६) ६
३ अना-लाहौर,, लाहौर राजाराम गिरधारीलाल १०० ५०००) १४००)
४ ला-वछोवा, ,, रायरोशनलाल,जगन्नाथ १६५ २००००) १०००) ३०
५ कसूर ,, ,, उमादत्त
६ पत्तोकी ,, ,, लाहौरीमल सौदागरमल ५ ६००००) १२०)
७ पट्टी ,, ,, भगतराम ध्यानदास १० ५०००) २६)
८ बाबकवाल,, शाहदरा हरिचन्द

मिन्टगोमरी	१	पकापटन,	खास	खास	चम्पतराय	रामलोक	१०	५०००)	४०)	१
	२	मान्टगोमरी,	,,	खास	राधाकृष्ण	भवानीदास	४०	४०००)	२००)	६
	३	दिपालपुर	,,	उकाड़ा				३००)	भूमि मुफ्त	
	४	गोगीरा								
	५	कमालिया	,,	खास	लछमणदास	सत्यपाल		२४०००)		
	६	सैदवाला	,,	वाराधाराम						
गुजरांवाला	१	वज़ीराबाद	खास	खास	ठाकुरदास	दौलतसिंह	२६	१००००)	८०-)	
	२	पिंडीभटिया	,,	लखेकी	तुलसीदास	बुड्ढामल	२२	६०००)	४५६)	१
	३	हाफिजाबाद	,,	खास	रामसहाय	हवेलीराम	१२	२०००)	२५।)	
	४	हाफिजाबाद(क)	,,	,,	रलयारामकपूर,	रलयाराम	२५	२०००)	१०)	२५
	५	कन्यानवाला	,,	हाफिजाबाद,	नन्दलाल	बुड्डाराम	११	१५००)	१६)	
	६	खानपुर	,,	किलासिताशाह	हकीकतराय,	ईश्वरदास	२२	१०००)	३६)	
	७	खानकी	,,	मंसूरवाल	काशीराम	जयराम	१७	७५०)	१६१॥)	११
	८	शर्कपुर	,,	लाहौर	सरस्वतीप्रसाद	सोहनलाल	६४	११००)	६६)	
	९	रामनगर	,,	अकालगढ़	गोबिन्दसहाय			१०००)		
	१०	दिलावर	,,	जामकीचट्ठा,	भगोलीप्रसाद,	जीवनमल	१४		२४)	
	११	मान	,,	गुजरांवाला						
	२२	खानकाडोगरां,	,,	सुखेकी	ठाकुरदास	बर्कतराम	२०	२०००)	४८)	
	२३	जलालपुरभटिया,	,,	हाफिज़ाबाद	दयाराम	शामदास	३०	१०००)	३०)	
	२४	गुजरांवाला	,,	खास	मेलाराम	अमरनाथ	२०	८४)		
	२५	अकालगढ़	,,	,,	चरणदास	गंगाबिशन				
	२६	वज़ीराबाद	,,	,,	अमीचन्द	गोकुलचन्द		२०००)	१०८)	
	२७	गुजरांवाला	,,	,,	सर्दारीलाल					
	२८	पेमनाबाद	,,	,,	बरकतराम	मेलाराम				
	२९	कामोकी	,,	,,						
	३०	शेखूपुरा	,,	,,	देवीदयाल	ज्ञानचन्द		विना बमा		
	३१	फीरोजवाला,		,,						
स्यालकोट	१	स्यालकोट	खास	खास	देवीदयाल	गंगाराम	६५	१०००)		
	२	भूपालवाला,		समरीसियाल	पं-मूलराज	हाकिमराय		६०००)		
	३	सीकिनविन्ड	,,	पिसरोर६मील	लालाप्यारेलाल	परशुराम	१७	३००)	२८)	
	४	क्लासवाला	,,	पिसरोर	गुलजारीलाल	मलिकराज	६०	५०००)	७)	
	५	भागिया	बद्दोमली,	पेमिनाबाद	शिवदयाल	खुशीराम	२३	६२६।आ-)	६७॥=)॥	
	६	डसका	खास	समरीसियाल	मनोहरलाल	देवीदास	१०	१२००)		
	७	मलिकपुर	खास			दीवानचन्द				
	८	मीरोवाल	,,		राधाकृष्ण	कर्मचन्द्र	३२			

	९	बद्दोमली	,,	अमृतसर	मूलामल	गोपालदास	२०	१५००)	१२०)
	१०	साहुवाला	,,	अगोके	हवेलीराम	जीवनमल	१०		७६॥)
	११	नारोवाल	,,	खास	हवेलीराम	रामनाथ	२१		३७।)
	१२	पिसरौर	,,	स्यालकोट	चरनजीव	रलाराम		३०००)	
	१३	सरावाली	,,	गुजरांवाला	मोहनलाल	हरवंशसिंह	८		१२)
	१४	किलासोभासिंह	स्यालकोट						
	१५	पंजगुरांई	किलासोभासिंह	ईश्वरदास					
	१६	मुंडेकेगुराइयां	,,	गुजरांवाला	कृपाराम				
	१७	जफरवाल	,,	स्यालकोट	महाराजकृष्ण	रलाराम			
	१८	गलांके	,,	भोचरनंगल	भोलासिंह	नौबतराय	१०		३६)
	१९	सुमेड़याल	खास	खाम					
	२०	वद्दालासिन्धवां	गुजरांवाला						
	२१	घड़तल	,,	खास					
	२२	कोटलीलोहारां	,,	स्यालकोट					
कामिलपुर	१	कामिलपुर	खास	खास		नत्थूराम			
	२	हज़रो	खास	खास					
मियांवाला	१	ईसाखील	खास	खास	तेजभान	जसराम	२१	१५००)	५६४)
	२	मियांवाली	,,	,,	गोकुलचन्द,बालकराम			है	
	३	भखर	,,	,,	चान्दीराम	दौलतराम		७००)	२४)
	४	कमरमशानी	,,	,,	नौबतराय	शालिगराम			३०)
शाहपुर	१	खुशाब	,,	,,	लभुराम	कृष्णचन्द्र	१६	१२००)	
	२	शाहपुर सद्दर	,,	खुशाब		लक्ष्मीदास	८	८०००)	७८)
	३	भेरा	,,	खास	गोकुलचन्द	हरिराम	१३	६०००)	१४४)
	४	सरगोधा	,,	खास	मोहनलाल,लक्ष्मणदास				१२०)
	५	,,	,,	,,	हरभगवान,परशुराम		३६	१५०००)	६०)
	६	मियानी	,,	,,	देशराज	रलाराम			
	७	झावरिया	,,	भेरा	रामचन्द	रामलाल		१०००)	६०)
	८	मण्डी फुलरवां	,,	खास	विश्वेश्वरनाथ,ईश्वरदास				
	९	सिलावाली	,,	,,	मेहता हरिचन्द,म.हरिचन्द			७००)	
	१०	शाहपुर शहर	,,	खुशाब	खजानसिंह	कर्मनारायण			
हज़ारा	१	ऐबटाबाद	,,	हवेलियां	चूहड़मल	फत्तूराम		६०००)	
	२	हरीपुर	,,	खास	भोलाराम	ईश्वरदास	१०	५०००)	१००)
		मानसेरा	,,	हवेलियां	गुरदासमल	देवीदयाल	८		३६)

जिला										
कैमलपुर	१	कैमलपुर	,,	,,		नत्थूराम				
	२	हजरू	,,	,,						
गुजरात	१	मङ्गोवाल	,,	गुजरात	बालमुकुन्द	हरिचन्द	१८			
	२	भाग नगर	,,	सरायआलमगीर,	आत्माराम	मनोहरलाल	१३			
	३	शादीवाल	,,	गुजरात	बुलाकीराम	मुकुन्दलाल	२४			
	४	फातियाकीमा	,,	भावउद्दीन	अर्जुनसिंह		१०	१५००)		
	५	गुजरात	,,	खास	प्रभुदयाल	मूलराज		१०००)		
	६	दौलत नगर	,,	लालामूसा	बूटामल	मेलाराम	२०	भूमि है	३६)	
	७	कादिराबाद	,,	भाव उद्दीन	भगवानदास,	बूटाराम		१०००)		
	८	डिङ्गा	,,	खास	भगतराम	रलाराम	१५	भूमि		
	९	कुंजा	,,	गुजरात	रलयाराम	गणेशदास	१८	,,	७२)	
	१०	जलालपुरजटां	,,	,,	जगन्नाथ	देवीदास	५०	७००)	१२०)	
	११	मलकवाल	,,	खास	भगवानदास,	नानकचन्द		धर्मशाला		
	१२	लखनवाल	,,	गुजरात	विष्णुदास	रामचन्द्र		१०००)		
	१३	हीलां	..	चलियांवाला,	शिवरामदास,	मुकुन्दलाल				
	१४	घनियां	..	गुजरात	हरनामदास					
	१५	रसूल	..	पिंडीभावउद्दीन,	ऊधोराम	मथुरादास				
	१६	पीरूशाह	,,	गुजरात	फकीरचन्द	चरणदास				
झेलम	१	पिंडी सैदपुर	,,	हरीपुर	देवीदयाल	गुरांदत्तामल	१०		२५)	
	२	भवन	,,	खास	मकुन्दलाल	अमोलकराम	१०	१२७५)	४॥)	४
	३	पिंड दादनखां	,,	,,	मेहरचन्द	चुन्नीलाल	१०	१५००)	२)	
	४	झेलम	,,	,,	देवीसहाय	फेरीराम		७००)	१८०)	४
	५	,,	,,	,,	बोधप्रसाद	बेलीराम				
	६	चकवाल	,,	खिवड़ा		कालूराम	१०	२०००)	३०)	
	७	,,	,,	,,		फकीरचन्द				
	८	डडवाल	,,	,,	ज्ञानचन्द	गोविन्दराम		४००)	१०)	१८
	९	लल्ला	,,	,,	सनातकचन्द्र,	गुरदासमल				
	१०	जलालपुर कीकना	,,	पिंडीभावउद्दीन,	राजाराम,	देवीदास	२०		७२)	
	११	डन्डोतकालरी	,,	हरीपुर		गोपालदास				
	१२	मौंग रसूल	,,	पिंडीभावउद्दीन,	गौरीशङ्कर,	ऊधोराम				
रावलपिण्डी	१	चोहाभक्तां	,,	गूजरखां	भगत सुदर्शन,	कुसुमराज	२५	किराये	१४३)	१
	२	कोहमरी	,,	रावलपिण्डी,	श्रीराम	गौरीदास	२६	३०००)		
	३	रावलपिण्डीश.	,,	,,	हरीराम सा.	हाकिमराय	४५	२००००)	६२००)	११
	४	गूजरखां	,,	,,	शोभासिंह	अवतारसिंह				

	५ रावलपिंडी स. ,,	,,	सीताराम	सुन्दरदास				
	६ रावलपिंडीश.(क) ,,	,,	नानकचन्द	ठाकुरदास		१५०००)		
पेशावर	१ पेशावर सदर ,,	पेशावर छा.	सर्बदयाल	शङ्करदास	४५	३५००)	(३६॥≶)	
	२ ,, शहर ,,	खास	रायराम	रामनारायण	५०	८०००)	४८०)	
	३ मरदां ,,	,,		शिवरामदास		१०००)		
	४ नौशहरा ,,	,,	नन्दलाल	रामकृष्ण				
	५ होती ,,	मरदां	राधाकृष्ण					
	६ पेशावर (क) ,,	खास	बिहारीलाल	लभाराम				
कोहाट	१ कोहाट ,,	,,	अमरचन्द	पृथिवीचन्द	२८	५०००)	१२०)	
	२ हङ्गो ,,	,,	अकतामल	गुरांदित्तामल	२२	१६००)	४८)	
बन्नू	१ बन्नू ,,	,,	लाड्याराम	सखायाराम		१०००)		
लायलपुर	१ समुन्दरी ,,	तादलियांवाला	विष्णुदास	शोभाराम	१२	५२५)		
	२ लायलपुर ,,	खास	जैमनीजी	बालमुकुन्द	६३	६०००)	२४०)	
	३ टोबाटेकसिंह ,,	,,	संसारचन्द	मेलाराम				
	४ गुजरा ,,	,,	बद्रीदास	धनीराम		२५००)		
	५ तादलियांवाला ,,	,,	रोशनलाल	ठाकुरदास		२०००)		
	६ लायलपुर(क) ,,	,,	रामचन्द्र	विशम्भरदास		२०००)		
	७ जड़ांवाला ,,	,,	भगवानदास	शिवनाथ		१२००)		
	८ झमरा ,,	,,		कुन्दनलाल				
	९ साङ्गलाहिल ,,	,,		मोहनलाल				
झंग	१ अहमदपुरस्याल ,,		रामचन्द्र	राजपाल	२४	नहीं		
	२ मघियाना ,,	खास	जिन्दाराम	रामदित्तामल		३०००)	४८)	
	३ शोरकोट ,,	रोड़	रामलाल	गुरांदित्तामल		५००)		
	४ चनिवट ,,	खास						
	५ चनिवट(क) ,,	,,	मघराम					
	६ मघियाना(क) ,,	,,	हीरानन्द	काशीराम			१२)	
	७ झंग ,,	,,		आयासिंह				
	८ पीरकोट ,,	झंग		जीवनदास	१२			
मुजफ्फरगढ़	मुजफ्फरगढ़ ,,	खास	गङ्गाराम	रामचन्द्र	३५	२५००)	४४)	३
	झोगीवाला ,,	मुजफ्फरगढ़	लक्ष्मीनारायण	ईश्वरदास	१४	१०००)	५४०)	
	३ दायरादीनपनाह ,,	खास	आशाराम	लेखराम		है		
	४ सीतपुर ,,	चनीगोठ	खुशहालचन्द	लोकराम	११	किराये	३६)	५
	५ खैरपुरसादात ,,	,,	मूलचन्द्र	बुड्डाराम	१५	१०००)	१७)	
	कोटअद्दू ,,	,,	गिरधारीलाल	छुट्टनसिंह	२५	१०००)	१५०)	२
	७ खानगढ़ ,,	मुजफ्फरगढ़	भगतराम	गिरधारीलाल	१२	२०००)		

	८ अलीपुर	,,	चनीगोठ	स्वामी श्रीराम	टोपनदास	४२	१०००)	१०)	१०
	९ जतोय	,,	मुजफ्फरगढ़	तुलसाराम	नन्दलाल	२१	१३००)	३६)	६
	१० सनावां	,,	खास	मुलतानीराम	सोभाराज	६	१५००)	२६)	१५
	११ रङ्गपुर	,,	मुलतान		मूलचन्द्र	१२			
	१२ अहसानपुर	,,	,,	ढोलाराम	गङ्गाराम				
	१३ करोड़	,,	,,	गङ्गाराम	मोतीराम	१२	१५००)	६०)	
	१४ लइया	,,	,,	मेलाराम	टेकचन्द्र	२७	१०००)	७२)	
	१५ लइया (क)	,,	,,						
मुलतान	१ सरायसिद्ध	खास		अब्दुलहकीम, साधुराम,	कन्हैयालाल	४८	कोशिश जारी	३५०)	३०
	२ शुजाबाद	,,	खास	शिवदयाल	हुकमचन्द	३०	५०००)	८००)	१०
	३ मुलतान छा.	,,	,,	बख्शी गणपतराय,	सुन्दरलाल	२२,	२०००)	८१)	
	४ मुलतान बूहड़दरवाजा	,,	,,	मोतीराम	बोधराज		१२००)		
	५ ,, (क)	,,	,,	ईश्वरदास	घनैयालाल				
	६ मेलसी	,,							
	७ वोधवां								
	८ मुलतान गुरुकुल सेक्शन	,,							
बहावलपुर	१ अहमदपुर	,,	डेरानवाब	शोभराज	ठाकुरदास	१३			
	२ उच्च	,,	,,	लक्खूराम	परमानन्द				
	३ अहमदपुर गरबी	,,	सादिकाबाद,	सुखराज	बजायालाल				
	४ खानपुर	,,	खास	ज्ञानचन्द	दयालराम				
	५ बहावलपुर	,,	,,		रामदयाल				
	६ मकलोड़गंजरोड़	,,	,,	कांशीनाथ	जियाराम	१५		८४)	
डेरागाजीखां	१ कोटछुरा	,,	गाजीघाट १२मी.	बूचाराम	हरनाम	१५	२७००)	न्यून होगये	
	२ चोकअतरा	खास	,,	साधनराम	सेवाराम	१२		२४)	
	३ दाजल	,,	गाजीघाट	नरायणदास	मेघराज	५०	१०००)	७२)	१
	४ डेरागाजीखां	,,	,,	जैमुनीदास	मलिक गोबिन्दलाल	५२,	३०४०)	११४।ॽ)	८
	५ गदाई	,,	,,	दत्ताराम	मोहनलाल	१५	पंचायती	२०)	
	६ डरोर	यारो	,,	लखीराम	होतीराम	२५	धर्म्मशाला	२४)	
	७ जामपुर	खास	,,	डीडाराम	मक्खनलाल	५०	२६००)	१२०)	
	८ राजनपुर	,,	चाचड़ांन,	डल्लूराम	सुन्दरलाल	२५	१०००)	६०)	
	९ फाजिलपुर	,,							
	१० महतम								
	११ पायगाह								
डेराइस्माइलखां	१ टांक	,,	खास	इन्द्रभानु	चन्द्रभान	२५			८
	२ कलाची	,,	टांक	बेलीराम	देवीदास	५०	१५००)	१००)	
	३ डेराइस्माइलखां	,,	दरियाखां,	बेलीराम	चेलाराम		१५००)		
	४ ,, (क)	,,	,,	जिन्दाराम	नारायणदास		६०००)	१०८)	

बिलोचिस्तान	१	खूसकोलरी	,,	खास	हंसराज	भंजाराम	११		३०२॥)॥	
	२	कोयटा	,,	,,	गणेशदास	ईश्वरदास	७६	५००००)	४५००)	१५
	३	,, (क)	,,	,,	रतूराम	लक्ष्मीदास		६०००)		
	४	फोर्टसन्डेमन	,,	,,	नौबतराय					

सिन्ध प्रान्त।

किराची	१	ठट्ठा	,,	जङ्गशाही	नरसिंहलाल	चिम्मनलाल	१२	४०००)		
	२	किराची	,,	खास	दयाराम	केशवप्रसाद	४३	२०००)	१६१॥=)	
	३	कमारीबन्दर	,,	किराची	नत्थूराम	सर्वदयाल			१३२)	
	४	दाऊद	,,	खास	बूटाराम	हुकूमतराय			६०)	
लड़काना	१	लड़काना	,,	,,	सज्जनदास		१८	है		
	२	खैरपुरनाथनशाह	,,	सीतारोड़	सलामतराय	वैद्य शादीराम	१५		३६)	
	३	थड़ी महबत	,,		येदाराम	आसूदामल	१०			
मीरपुर	१	मीरपुर	,,	खास	मूलचन्द	गु नामल	१६	२०००)	१४७)	
	२	मीठी	,,	क्रों						
सक्खर	१	सक्खर	सक्खर	खास	हरीसिंह	सङ्गतराय	५६	१००००)	१८०)	१०
	२	शिकारपुर	,,	,,	चान्दूमल	शिवदास	६८	६०००)	६०)	

पंजाब की रियासतें

जम्मू व कश्मीर	१	रनवीरसिंहपुरा	खास	खास	ठाकुरदास	तुलसीराम	३८	नहीं बना	२२)	
	२	मीरपुर	,,	झेलम	रघुनाथजी	रामलोचन	४७	२१५०)	२)	
	३	नौशहरा	,,	कहारियां	मेलाराम					
	४	श्रीनगर	,,	रावलपिंडी	गोबिन्दसहाय	नन्दलाल	३४	३४००)		२
	५	जम्मू	,,	खास	बख्तराम	मा जसराम		५०००)		१
	६	रामपुराजौरी	,,	कहारिया		साईंदास	१६	है		
	७	रनवीरगंजबाजार	खास	रावलपिंडी २०० मील	रामचन्द्र					
	८	ब्यास								
	९	अनन्तनाग								
	१०	उधमपुर	,,	जम्मू	फकीरचन्द	प्रह्लादभगत				
	११	वरहाल	,,	अलीशेख	रामगुलाम	पुल्लूलाल				
	१२	बजारखाता	रामपुर सरगढ़		मुन्नालाल					
	१३	रहमतगंज	,,	,,	शान्तिप्रिय					
	१४	बसोही	,,							
पटियाला	१	राजपुरा								
	२	बनोड़	खास	राजपुरा	उदयराम	पूर्ण गुप्ता	१२			
	३	बाना	निरवाना	सजोमा	सरजूप्रसाद	वीरसिंह	१२		२४)	

	४ भटिण्डा	खास	खास	भगवानदास	सत्यपाल	२१	७०००)	७०)	२०
	५ रामामण्डी	,,	,,	रौनकसिंह	मुकुन्दलाल	१०	६००)	१५)	
	६ बरनाला	,,	,,	वंशूमल	पृथिवीचन्द	२६	३०००)	४४०)	६
	७ राजपुरा	,,	,,	नत्थूराम	राधाकृष्ण	१४			
	८ गढ़नवा	,,	सरहिन्द	रामकृष्ण	प्रभुदयाल	७		१५)	
	९ भदोड़	,,	बरनाला	रौनकराम	भगतसिंह	१५	३०००)	२५०)	
	१० घसी	,,	सरहिन्द	महबूबचन्द	अकवालचन्द				
	११ सरहिन्द	,,	खास	मनीराम	प्यारेलाल	१५	हूँ		
	१२ निरवाना	,,	,,	हितराम	कांशीराम	३४	५०००)		
	१३ पटियाला	,,	,,	अतरचन्द	नानकचन्द				
	१४ नारनौल	,,	,,	कुंजबिहारीलाल,	चन्दनलाल	३०	१०००)		
	१५ भावा	भत्रा	बरमीठा	मनसाराम	नानकराम		१०००)		
	१६ पायल	खास	चावापायल	अनन्तराम	आत्माराम		१०००)	६२)	
	१७ सनाम	,,		प्रभुदयाल	श्रीराम				
	१८ शुत्तकाइन								
	१९ माहिलकलां								
	२० चांगली	खास		साहबदयाल	खुशीसिंह				
	२१ मण्डीरामां	,,		मोहनलाल	गणेशदास				
	२२ पटियाला सरहद	,,	खास	अमीचन्द	बाबूलाल	१०			
	२३ कलोहाकलां	,,	डचाना						
	२४ मानसा	,,		राधाकृष्ण	आत्माराम				
जींद	१ जीन्द	खास	खास	मिट्ठनलाल	सन्तराम	१५		४४)	
	२ बागड़	बुड्ढाखेड़ा	सफेदों	मुखराम	खेमलाल				
	३ हरीगढ़	,,	,,	शान्तिनाथ	झावरसिंह				
	४ सफेदों	,,	,,		बनवारीलाल				
	५ जीन्दस्टेशन			मंगतराम	गनेशदास				
	६ बैरी	,,	,,						
	७ छाड़ा	जीन्द	जीन्द						
	८ संगतपुर	,,		दुर्गादास	शङ्करराम				
	९ खेड़ीजाजवां,			शादीराम	जागीरमल				
	१० सिरसीकलां	,,	इलाकादादरी		शिवचन्द				
मलेरकोटला	१ मलेरकोटला,	खास	खास	साधनराम	गुरदत्तसिंह				
	२ धुनेर		,,						

संयुक्त प्रान्त

जिला										
डेरादून	१	मन्सूरी	खास	डेरादून	रामचन्द्र	दिवानचन्द	४०	२०००)	१५००)	३
	२	चौहड़पुर	,,	,,	मकुन्दलाल	कन्हैयालाल		१०००)	७०)	३०
	३	चकरोता	,,	,,	गोमतीप्रसाद	शंकरलाल	२०	३०)	२)	
	४	डेरादून	,	,,	ज्योतिस्वरूप	अमरनाथ	८०	१००००)		८
	५	खब्बरखानालाढौर,मन्सूरी,डेरादून१२मील								
	६	दोईवाला	पम्मीवाला	,, १०	मेहीलाल	ईश्वरचन्द्र				
सहारनपुर	१	दावकीखेड़ी,	लुक्सर	लुक्सर	जयमलसिंह	रसालसिंह	४३			
	२	गङ्गवा	खास	नानोता	रहतूलाल	मथुरादास	२१	२६००)	६५)	
	३	मोरगंजसहारनपुर,	.	,,	हरिशंकर	ठाकुरदास	२०	नहीं	७५)	
	४	रामपुर	,,	रामपुर	रघुवरशरण	अतिसुन्दर		४००)		
	५	तीतरो	,,	थानाभोन	रामसिंह	सुन्दरलाल	३६	४२००)	९०)	४
	६	खेड़ाअफगानां	,,	सिरसा	शकनचन्द्र	गनेशलाल	१२	बन रहा है	२६।।।)	
	७	लिबेरहेड़ी	मंगलौर	रुड़की	हुकमचन्द	मिठ्ठनलाल	५३			
	८	भगवानपुर	खास	चड़याला	कुसम्बरदास	राजाराम	३५	१००)		
	९	ज्वालापुर	,,	खास	जवाहरसिंह	रामचन्द्र	२४	१०००)	४०)	
	१०	नगलीखथेली	,,	नागल	निहालचन्द	गेंदालाल	२०			
	११	केराना	,,	शामली	गुरुचरणदास,	प्यारेलाल	१६	१७४४)	२)	
	१२	देवबन्द	,,	खास	सीताराम	बुलाकीराम	२६			
	१३	आमीठ	,,	सहारनपुर	अयोध्याप्रसाद,	हरपतिराय	२२	१००००)		
	१४	लखनौती	,,	नानोता	प्यारेलाल	ज्योतिप्रसाद				
	१५	सहारनपुर	,,	खास	मेलाराम	जगन्नाथ				
	१६	रुड़की	खास	खास	राधेलाल	मथुरादास	२६	१५००)	१२५)	
	१७	खुड़ियाला	रुड़की	रुड़की	मुसद्दीलाल	मनोहरदत्त				
	१८	रायपुर	खास	सहारनपुर	मोतीराम	जादूराम	५		३६)	
	१९	नकोड़	,,	,,	मथुरादास	धनीराम	१५		६०)	
	२०	मेवड़	रुड़की	रुड़की		दीवानसिंह				
	२१	कनखल	खास	हरिद्वार	बेनीप्रसाद	विद्याधर	२१			
	२२	बेट	खास	,,						
	२३	गढ़ीअब्दुलाखां,		,,	काशीनाथ	शेरसिंह	१४		४)	
	२४	हरीपुर	बेट	,,	सालिगराम	अनन्तराम	१८		६०)	
	२५	मानोता	खास	खास	श्रीराम	कुन्दनलाल	२८			
	२६	मंडलाना	मंगलौर		कुन्दनसिंह	हरनन्दलाल	२४		८४)	
	२७	जम्होरा	खास	खास	चुन्नलाल	ताराचन्द	१०			

२८ दाबकी मुक्तसर मुक्तसर जयमलसिंह
२९ गुदड़ी देवबन्द देवबन्द
३० नकुल ,, ,, कुन्दनलाल
३१ गंडहेड़ी सिरसावा,सिरसावा,फतेहचन्द
३२ भेड़ा खास सहारनपुर
३३ तासीपुर रुड़की रुड़की
३४ खड़ाजट छार देवबन्द
३५ नामकपुर ,, तेजपुर महाराजसिंह
३६ मङ्गलौर खास लंडोरा मिट्ठनलाल
३७ पनारचन्दापुर,रुड़की

मुजफ्फरनगर

१ गढ़ीपुख्ता खास डेन्ड काशीनाथमिश्र,हरनरायणसिंह२२ ६००) ४८) १
२ कांधला ,, खास जीवनसिंह रामजीलाल १७ २००)
३ खातौली ,, ,, शालिगराम रोशनलाल १५ १००) ३
४ बुढ़ाना ,, कांधला कुन्दनलाल किशनलाल २२ ३०००)६३।।-) १
५ थाना भवन ,, खास गोर्धनदास मुसद्दीलाल १६ १२२५) ४६।।) १
६ चौसाना ,, थानाभवन जानकीनाथ वजीरसिंह १० ६००) ३३)
७ जसोई ,, ,, मक्खनलाल नौबतराय २४ १५) २४)
८ चाथावल ,, मुजफ्फरनगर,जयदयालसिंह,बनारसीलाल२७ ५०००)
९ बघरा ,, , माडेसिंह हुकमचन्द २५ ४६५) ३०) ५
१० भुकरहड़ी ,, ,, बलदेवसिंह भरतसिंह २१ ५)
११ मुजफ्फरनगर ,, खास चरणसिंह रतनलाल ५५ १००००) १६२)
१२ मुबारकपुर ,, मनसूरपुर हरगुलालसिंह,शङ्करलाल ११
१३ हसनपुरलोहारी , शाहदरा गोकुलचन्द्र रामचन्द्र ५ १०००) २४)
१४ केराना ,, शामली गुरुचरणदास प्यारेलाल २३ २०००) ६०)
१५ जसौला कधौली कधौली प्यारेलाल नत्थूलाल
१६ कुमाली बसन्त शामली गङ्गाराम कुन्दनलाल २० ५००) २१)
१७ नबत ,, ,, रूपचन्द हरीराम ४१ ६०)
१८ खरड़ बुढ़ाना कल्याणदत्त काशीसिंह
१९ जवालसी थानाभवन,थानाभवन मूलराज
२० ऊधी बसन्त
२१ लोहारी
२२ पलम
२३ जानसठ

मेरठ

१ लालकुर्तीबाज़ार खास छावनीमेरठ, रामचन्द्रसहाय, हरगोविन्दप्रसाद २६ ८000) १०७)
२ सरधना ,, सरधनासड़क, रघुवीरसिंह सुन्दरसिंह ४७ ४००) ५२)
३ मवानाकलां ,, शहरमेरठ मथुरादास जगन्नाथ ४४,८५७२) २५८२)
४ छपरौली ,, बड़ोत केहरिसिंह लक्खीराम १२५ ३००)
५ बड़ोत ,, खास भोलनीसिंह प्यारेलाल २३ ४10)
६ बेगमाबाद ,, ,, हंसराजसिंह कूड़ेसिंह १६,५०००)
७ गाज़ियाबाद ,, ,, लखपतिराय गोकुलचन्द ५१,४000) ६६)
८ सलावा ,, खातौली मुसद्दीलाल मंगलनाथ २२,१४४१) २५)
९ परीक्षितगढ़ ,, मेरठशहर दुर्गाप्रसाद जोतीस्वरूप ३२,१२००) ४०)११
१० हापोड़ ,, खास मोहनलाल गोबिन्दसिंह
११ मेरठ ,, ,, घासीराम मुख्तारसिंह १००,२०000)
१२ कपाड़ा सलावा सकोतीटांडा, सुखदेवसिंह रनवीरसिंह १५००)
१३ मेरठसदर मेरठ मेरठ रामचन्द्र प्रथीराम
१४ मवानाखुर्द खास ,,
१५ करठल खास कासिमपुर मेहरसिंह हरज्ञानसिंह
१६ फलावदा ,, ईश्वरप्रसाद बनारसीदास
१७ मरैना धोलाया छत्रसिंह भगवानसिंह
१८ सनोता खास सरधना दुर्गाप्रसाद जीवनलाल
१९ खेकड़ा ,, खास जगन्नाथ अयोध्याप्रसाद
२० छुर ,, सरधना फूलसिंह गंगसहाय
२१ नगलाहरिरू फलावदा, खतौली मुन्नालाल बद्रीप्रसाद
२२ भोया खास
२३ ठकौली डोला खेकड़ा शिवसहाय तरखालाल
२४ जलालाबाद मेरठ

बुलन्दशहर

१ बुलन्दशहर खास खास गोपालनरायन रामप्रसाद ५३,३०००)
२ डबाई ,, डबाई गणेशदत्त त्रवेनीशंकर २४,२०००) १२५)
३ जहांगीराबाद ,, बुलन्दशहर सीताराम शिवदयाल २६,३०००) ५००)
४ पक्कालामुईउद्दीन, खुरजा, खुरजा नरायनसिंह रूपसिंह सारगांवआर्यमकानपंचा २०, मंदिर है २००)
५ जहांगीरपनाहभुसाला, खास, बुलन्दशहर, टिकीराम देवीप्रसाद
६ भदोरह झाझर
७ भुनबहादुरसिंह, बिठला रामप्रसाद कृष्णदेव २० ३००) २४)
८ लालगढ़ी खास अतरौली बुधसेन लक्खीचन्द ३५ २१)
९ साबितगढ़ पासु खुरजा गिरवरसिंह हरदेवसिंह २०
१० केतावली सांखनी डबाई सुन्दरलाल गंगासहाय ३० ७२)
११ सीकड़ा खुरजा सिकन्दरपुर

	१२	सीखनी	खास	बुलन्दशहर	प्रशादीलाल	मातारास			
	१३	देहाती				रामचन्द्र			
	१४	डेराफीरोजपु,	खास,	सवाना	गङ्गाशरन	गणेशलाल			
	१५	बेलून	नरोरा	डबाई	रघुनन्दनलाल	केदारनाथ	२०	६०००)	७२)
	१६	सिकन्दराबाद,	खास,	खास		मुरारीलाल			
	१७	रोही	थोरा	खुरजा	चन्दनसिंह	कुं.निहालसिंह,	१०		८४)
	१८	अनूपशहर,	खास	अतरौली					
	१९	बालका	बुलन्दशहर.	बलंदशहर,		मोहनलाल			
	२०	फासू							
	२१	घूघरवाली	,,	,					
	२२	नगलियाउद्यमान	,,						
	२३	खुजरा	खास	खास					
अलीगढ़	१	सिकन्दराबाद	खास	खास	गोपालसहाय	देवकीनन्दन	३३	२०००)	६५)
	२	अगनास	,,		हीरासिंह	शिवनारायण	३३	६२७)	२१)
	३	अलीगढ़	,,	,,	पन्नालाल	गङ्गाप्रसाद	५४	४०००)	२१६)
	४	मरसा	,,	,,	कुन्दनसिंह	बनवारीलाल			
	५	बरोठा	हरद्वागंज	अलीगढ़	कर्णसिंह	खुमानसिंह	३५		१४४)
	६	सिकन्दराराव,	खास	खास	गोपालसहाय,	देवकीनन्दन	३३	५०००)	२२)
	७	छत्रपुर	सलीमपुर	हाथरस,	दीपसिंह	छत्रसिंह	४८	५०००)	१२०)
	८	कोड़ियागंज	खास	अलीगढ़.	बुद्धसेन	ताहरमल		मकान	
	९	काज़िमाबाद	,,	अतरौली,	केसरीसिंह	मुकुन्दलाल	१३	४००)	७॥)
	१०	विजयगढ़	,,	नकलावती,	रामलाल	फूलचन्द			
	११	अतरौली	,,	अतरौली	कालीचरण	चिरंजीलाल	२२	१३००)	
	१२	अलीगढ़	वैदिकाश्रम,,						
	१३	हाथरस	,,	,,	किशनप्रसाद				
	१४	खेर	,,	,,	शिवदयालसिंह				
	१५	पहाड़ी नगला	गोड़ा		जसवन्तसिंह	बाबूलाल			
	१६	अलीगढ़ सदर	खास	खास	मोहनलाल	रघुवरदयाल			
	१७	विरला	विरला						
	१८	हरद्वागंज	खास						
	१९	शाहगढ़	,,						
नैनीताल	१	नैनीताल	,,	काठगोदाम,	रामप्रसाद	रामादत्त	२०	२०००)	६०)
	२	कांशीपुर	,,	खास	वृन्दावन	कश्मीरीलाल	२०	३०००)	३६)
	३	हल्द्वानी	,,	,,	चेतराम	चिरंजीलाल	१२	३०००)	२४)
	४	जसपुर	,,	कांशीपुर	जमुनाप्रसाद,	मुसद्दीलाल		४००)	

	५ रामनगर	,,	खास	अनूपसिंह	हरप्रसाद	१४	२०००)	२४)	
	६ काठगोदाम	,,	,,	चेतराम	रामदत्त				
अलमोड़ा	१ अलमोड़ा	,,	काठगोदाम	महावीरप्रसाद,	उमेदसिंह	१४		८४)	
खेड़ा	१ खेड़ा	,,	खास						
	२ चखोदरा								
बिजनौर	१ धामपुर	,,	,,	ईश्वरीप्रसाद,	बलदेवसहाय		६०००)	भूमि है	
	२ नजीबाबाद	,,	,,	हरगुलालसिंह,	लक्ष्मीप्रसाद	२६	१०००)	१००)	
	३ हल्दौर	,,	चान्दपुर	लेखराज	ठाकुरदास	१७			१
	४ शिवालाकलां,	रतनगढ़,	नगीना,	कृपाराम	केवलसिंह	४०		२५)	२७
	५ गुरुकुलकांगड़ी,	खास,	हरिद्वार	प्रो० बालकृष्ण	चन्द्रमणि	३०	६००)		
	६ बिजनौर	,,	नगीना	रामस्वरूप	जसालाल	३४	१०००)	६०)	५
	७ पुरैनी	,,	नाजावाली	हरदयालसिंह	गुमानीसिंह		३०००)	६४-)	५
	८ नागल कु. स.	,,	खास.	मुर्लीधर	बाबूराम	१६			
	९ सिऊहाड़ा	,,	खास	रणजीतसिंह	श्यामसिंह	१२	भूमि है	२५)	
	१० बाशठा	,,	चान्दपुर	छत्रपतिराय	हरिप्रसाद				
	११ लालढांग	शामपुर	हरिद्वार	बुद्धसिंह	मानसिंह				
	१२ असकरीपुर,	नूरपुर	सिवड़ा	ब्रह्मशङ्कर	ऋषिराम	२०		४८)	
	१३ बढ़ापुर	खास	नगीना	रामस्वरूप	नारायणदास	३०	१५००)		
	१४ चान्दपुर	,,	खास		शंकरलाल		४००)		
	१५ नगीना	,,	,,	हरिशङ्कर	कुन्दनलाल	५०	१००००)	१२०)	
	१६ दतियाना	बाशठा		शिवसहाय	रामचन्द्र				
	१७ सैदवाड़ा	चान्दपुर	चान्दपुर	जार्जसिंह	हरिदयालसिंह				
	१८ परगनपुर	खास	बुन्दकी	चन्द्रपालसिंह	कल्याणसिंह	१०			
	१९ भैंसा	रतनगढ़	चान्दपुर,	गुलजारसिंह	गोविन्दराम				
	२० गुदावर	नूरपुर	सिवहाड़ा,	कन्हैयासिंह	मुकुन्दसिंह				
	२१ मुहम्मदपुर	खास	जन्दक	प्रतापसिंह	जालिमसिंह	१८		३१॥)	
	२२ पजाई	हल्दौर	,,	मनोहरसिंह	बख्शीराम	६	३००)	१२)	
	२३ मानियावालीगढ़ी,	खास,	धामपुर		रामस्वरूप				
	२४ नाठौर	खास	धामपुर						
	२५ खटाई	नूरपुर	,,						
	२६ पीपलमिबाना,	चान्दपुर,	चान्दपुर	उदितस्वरूप	ब्रह्मस्वरूप				
	२७ शेरकोट				अमृतलाल				

मुरादाबाद	१ कान्ट	खास	खास	प्रियदत्तशास्त्री	तोताराम	१२		१७॥)
	२ अमरोहा	,,	,,	बाबूराम	बृजभूषणलाल	३०		१५०)
	३ भजोई	,,	,,	प्यारेलाल	प्यारेलालगुप्त	१७	५००)की भूमि	३६॥।)
	४ मुरादाबाद	,,	,,	नारायनप्रसाद	शिवनरायन	६	,५०००)	३५॥-) मासि
	५ सरखड़ा	,,	दलीपपुर	कल्यानचन्द	फकीरचन्द,	१०	२००)	१२)
	६ सम्भल	,,	खास	बृजरतनलाल	रामसरूप	६०	,१००००)	३०)
	७ मुगलपुर	,,	,,	भारतसिंह	रामसरूप	१८		३०)
	८ चन्दौसी	,,	,,	गणेशलाल	भवानीप्रसाद	१	,१२६००)	१५)
	९ दढ़ियाल	,,	अलीगंज	रामलाल	मिठूलाल	१३		
	१० टांडाअफजल,सुरजननगर,सिवहारा			चन्द्रकालाल,	भगवानचंद	४०		२४)
	११ डडलावा	खास	बिलारी	गंगाराम	बल्देवसहाय			
	१२ धनौरा	,,	खास	जानकीप्रसाद	बिन्द्राप्रसाद,	१०	१५०)	
	१३ इसलामनगर	,,	चन्दौसी					
	१४ सुरजननगर	,,	सिवहाड़ा	रामसरूप	अयोध्याप्रसाद	२२	,१०००)	२४)
	१५ फतेहपुर	मुगलपुर	मुगलपुर					
	१६ उचयाति	हकीमपुर,	हकीमपुर					
	१७ ठाकुरद्वारा	खास	अलीगंज	धर्मसिंह	बालमुकन्द			
	१८ सिरसी	,,						
रामपुर	१ रामपुर	खास	खास	ललिताप्रसाद	जुगलकिशोर,	३५	१५००)	२१)
	१ कारखाना	सवार	सरखड़ा	जयराम	बिहारीलाल			
	३ रहमतगंज	खास	,,	चूड़ामनी	शान्तिप्रिय			
बदायूं	१ रसौली	सिरमौल,उझियानी		नवाबसिंह	भूपसिंह	३०		२०) २
	१ दातागंज	खास	बदायूं	निरंजनलाल	डालचन्द्र	३४	५००)	
	३ बदायूं	,,	खास	युगलकिशोर	मंगलसेन	२०	१५००)	२४०)
	४ उझियानी	,,	,,	सीताराम	हरदयाल	९	६००)	६०)
	५ इसलामनगर	,,	चन्दौसी	लक्ष्मणप्रसाद	हेतसिंह	१८	२०००)	३६)
	३ अमलापुर	,,	बैराला					
	७ गनवा	,,	,,					
	८ मरवाली	खास	उझियारी	कुवरडालसिंह	शिवसहायसिंह			
	९ वलसी	,,						
	१० वसौली	,,						
	११ मुहम्मशमपुर,	हजरतपुर						
	१२ सेहरा	सुवालागंज						
	१३ हरदई	धनारी						
	१४ धगवना	जरीफनगर						

५ पलपत हज़रतपुर,तिलहर बलदेवसहाय सत्यपाल २६ ५०) ७२)

शाहजहाँपुर

१ शाहजहानपुर,खास खास रघुनाथसहाय जगन्नाथप्रसाद ५१ ६०००) २५२)
२ खण्डहर खास तिलहर जयलालसिंह यदुनाथसिंह १४
३ खुदागंज ,, मीरांपुर जानकीशरण रामविलास २००)
४ पुवायां ,, ,,
५ तिलहर ,, तिलहर श्यामसुन्दरलाल,लक्ष्मीनारायण १८ १८००) ४८)

बरेली

१ शिवपुरी टसवा टसवा विद्यास्वरूप कल्याणदेव ३००)
२ फ़रीदपुर खास पितम्बरपुर,बाङ्केलाल श्यामलाल १५ नहीं
३ बरेली ,, खास मुरलीधर श्यामस्वरूप ७००)
४ भूड़ बरेली ,, ,, बिहारीलाल १० ८००) ३६)
५ डलमऊ ,, ,, बाङ्केविहारीलाल,गजाधरप्रसाद १० ८००) १४)

मथुरा

१ मथुरा ,,मथुराछावनी,क्षेत्रपाल रतनलाल ३१ ६००)११४॥=)
२ चौमुहा जीत कोंकरा जवाहरलाल राजबहादुर
३ नगरा रसूलपुर,लाजनपट्टी पन्नालाल
४ लोईका खास खास सावनसिंह गोधनदास
५ फरुख ,, ,, नारायणप्रसाद,टीकाराम १५
६ आंगटी बलदेव
७ सुरेर सुरेर
८ सौंख
९ बेरी बरारी
१० वृन्दाबन खास खास

आगरा

१ आगरा ,, ,, रामप्रसाद श्रीराम ६००)
२ आगरा सदर ,, ,, लक्ष्मीदत्त प्यारेलाल १८ १००) ६६)
३ गोकुलपुरा,आगरा,आगराराजामंडी,शालिगराम,नाथूमल ५००)
४ फीरोज़ाबाद खास खास हजारीलाल भद्रदत्त ५० ४००)
५ कागारोल ,, करावली माधोसिंह नरायणसिंह ४० ५०००) २४)
६ नामनेर आगरा ,, आगरा तुलसीराम टीकाराम
७ रङ्केत रङ्केत आगरा,रङ्केत
८ खोड़ी अछनेरा अछनेरा
९ मिलपुरा आगरा आगरा
० एटा

मैनपुरी

१ बेवर खास भोंगांव-मील,गङ्गाप्रसाद गोवर्धनलाल १४ २॥)
२ गढ़ियाहनकोरा,राजपुर,भोगांव श्रीकृष्णसिंह,गौतमसिंह
३ मैनपुरी खास खास विशम्भरनाथ,श्यामसुन्दरलाल ३२ ६०००) १८०)
४ भूगांव ,, ,,

जिला	स्थान								
	५ सिरसागंज								
	६ ,,	खास							
	७ डरावर	मदनपुर							
	८ लखनपुर	,,							
	९ शिकोहाबाद	खास							
	१० भारौल								
फर्रुखाबाद	१ फर्रुखाबाद	खास	खास	सूर्य्यप्रसाद	रामदुलारे	४०	५०००)	१०१)	७
	२ तेराजाकट	,,	गुरसहायगंज	शिवसहाय	चऊपाल	२४	२००)	२४)	३
	३ पत्नखाना	मीरापुर	कायमगंज	गोविन्दसिंह	जादोसिंह	२७			
	४ कायमगंज	खास	खास	गोविन्ददास	रामस्वरूप		२०००)		
	५ जलालाबाद	,,	,,	प्रयागदत्त	मुंशीलाल				
	६ कम्पल	,,	कायमगंज	कृष्णसहाय	रामलाल				
	७ मोतेपुर	फतेहगढ़	फतेहगढ़						
	८ कनौज	खास	खास	लक्ष्मीनरायण	सूर्य्यप्रसाद	३६	२६५०)	४८)	
	९ जसबुराबुर	,,	फतहपुर	ललिताप्रसाद	रामकुमार	७	२००)	२४)	
	१० रसीदाबाद	कम्पल							
	११ सौढेपुर	अलीगढ़							
	१२ विहारीपुर								
	१३ दोहली	सराय प्रयाग							
इटावा	१ अजीतमल	खास	इटावा	मोहनलाल	रामकृष्ण	३४	५५०)	७५)	६
	२ इटावा	,,	खास	जोरावरसिंह	प्रभुलाल		१०००)		
	३ जसवन्तनगर	,,	,,	प्रभुदयाल	गङ्गासहाय	२०	८००)	१२५)	
	४ औरइया	,,	फफूंद	दर्शनसिंह	रामचन्द्र	३१		३६)	
	५ उमरापुर	सायत	कचौसी	रूपसिंह	नरायणप्रसाद	१७		१२)	
एटा	१ जलेसर	,,	जलेसररोड़	रामस्वरूप	किशनलाल	३५	१०००)		
	२ बाबस्टरकलां	रामपुरराजा	रोडायन	द्वारकाप्रसाद	राजाराम	१२	३००)	१०)	
	३ एटाचौकबाजार	खास	सिकन्दराबाद	राजबहादुर	रामस्वरूपसिंह	२२		१२)	
	४ सरायअघेत	,,	मोटा	जगन्नाथप्रसाद	जगदम्बाप्रसाद	११		२४)	
	५ अलीगंज	,,					१००)		
	६ चौकबाजारसरायअघेत	,,	मोटा	सालिगराम	हरीहरप्रसाद	११			
	७ ऊचागांव	जलेसररोड़	जलेसररोड़	विहारीलाल	हरदेवप्रसाद	२५		३-)॥	
	८ बुलाकीनगर	अलीगंज							
	९ जटोली	फिलौर							
	१० बेरी	मारहरा							
	११ बघोलीकलां	खास							

	१२ कासगंज	खास						
	३ स्कौट							
	४ नरदौली	कादिरगंज						
	५ नरगावा							
कानपुर	१ अकबरपुर	खास	रायपुर	मनोहरलाल वृन्दाबन	१६	१८००)	६६)	
	२ नयागंज	कानपुर	खास	गणेशप्रसाद				
	३ कानपुरठंडीसड़क	,,	,,	आनंदसरूप ज्वालाप्रसाद	१००)	१५०००)	४०)	
	४ सेचडी	,,		गंगासेवक रामलाल				
	५ कानपुरसिटी	,,	खास					
	६ बुधन							
	७ सैदअलीपुर	मुहम्मदपुर						
	८ भूसानगर	खास						
	९ सरिया	चौबेपुर						
	१० अकबरपुरकिला							
जालौन	१ कालपी	खास	खास	दौलतराम शिवचरनलाल	६	१७००)		
	२ जालवन	,,	,,					
	३ उरई	,,	,,	गोपालदास कुन्दनलाल	१८	२००)	१२)	
	४ कोंच	,,	,,					
झांसी	१ झांसी	खास	खास	रायशंकरसहाय,प्यारेमोहन	७०	३०००)	३६०)	
	२ सिपरीबजार	,,	झांसी	हरिदत्त रामप्रसाद	१८	[illegible]००)	६८)	८
बांदा	१ बान्दा	बान्दा	खास	किशनप्रसाद.आनन्दीप्रसाद	१	,३०००)		
	२ करवी	खास	,,	मातादीन परमेश्वरीदयाल				
	३ बेरू	,,	बांदा	रामरतन लाल,सेठ	६			
	४ [illegible]			अमानदीन जगन्नाथप्रसाद				
	५ सन्धनकलां,बलाना		पांडा	शिवसहाय श्यामनरायन				
	६ परसौली	बेरू	बदौसा	जयनरायन रावासिंह				
	७ मरथवा			इन्द्रजीतसिंह,लायकसिंह				
हमीरपुर	१ मुसकरा	खास	महोबा	साहुराम लाल,कालिकाप्रसाद	१०	१ ०)	२७)	
	२ राठ	खास	कुलपहाड़	गुरबख्शसिंह			१६३)	
	३ हमीरपुर	खास	,,	अयोध्याप्रसाद				
इलाहाबाद	१ कटराप्रयाग				३६	३[illegible])		
	२ रानीमंडी	इलाहबाद	खास	गल्लासिंह रोशनलाल	३८	१०००)	३०)	
	३ इलाहबाद	खास	खास	गयाप्रसाद बैजनाथ				
	४ कटड़ा	,,	,,	बालमुकुन्द छज्जूलाल				
	५ चौकइलाहबाद,		,,	रामजीलाल सालिगराम	२५	४०००)	१४४)	

६ कीटगंज प्रयाग

७ शङ्करगढ़ खास खास बलदेव बैजनाथ

बनारस

१ बनारसशहर ,, ,, गौरीशङ्कर राधारमण ८० ८००)

२ शिवपुर ,, ,, जयकृष्ण शिवनारायण १० ३०)

३ मुग़लसराय

मिर्ज़ापुर

१ पचरांव सेखर डगमगपुर रामनाथ सूर्यदत्त २६ ५)

२ मिर्ज़ापुर खास खास

३ रामगढ़ ,,

फतेहपुर

१ फतेहपुर खास खास लक्ष्मीनाराय बजरङ्गलाल १० ३००)

२ बिन्दकी ,, ,, बैजनाथ ज्वालादत्त २० १०) १२०)

३ जहानाबाद

४ राजनपुर किशनपुर,खास ज्ञानदत्त बाल्मीक ८

५ हतगाम खास खास लक्ष्मीनारायण,ब्रजभूषण लाल

जौनपुर

१ जौनपुर ,, ,, प्रतापनारायण,हरिकृष्ण ७५ ३०) ६०) १०

२ मछलीशहर ,, अगोई भगवतीप्रसाद महादेवप्रसाद ३४ २१≋) २३

३ तड़वा ,, किराकत गिरजाशरणसिंह,सुखरामसहाय

४ रामनगर जन्ती नगोई गंगाप्रसादसिंह चन्द्रदत्त

५ वाजिदाबाद खास जन्ती नगंज,सुखमङ्गलसिंह,भागराम

६ चीरगांव ,, जौनपुर रामशरणसिंह,गङ्गाप्रसाद

७ सीतापुर किराकत, किराकत जादोनाथसिंह,रामजगतसिंह १० १०)

गाज़ीपुर

१ बहरियाबाद,खास,सादात प्रेमधरजी मगनबिहारीलाल११ ३५) ३५०)

२ गाज़ीपुर ,,

आज़मगढ़

१ आजमगढ़ ,, ,, गणपतिराय हेमचन्द्र १२ १००)

२ मऊनाथभंजन, मऊजंकशन रामगोपाल रामरत्न २१ १००) ८०)

३ गोढा दोहरीघाट,दोहरीघाट तीर्थराम विद्यासागर १० ३६)

४ देवगांव खास डोभी दीनदयाल रामानन्द २००)

गोरखपुर

१ भागलपुर खास तुरतिया,डालचन्द्रदास मातादीनलाल नहीं

२ गोरखपुर ,, खास नरसिंहसहाय हृदयनारायण १०६ ३०००)१२४६) ११

३ देवरिया ,, ,, हरिपतिराय विन्ध्याचलप्रसाद१३ ३६)

४ सलीमपुर ,, ,, छोटेलाल गणपतिराय

बस्ती

१ बस्ती ,, ,, दुर्गाप्रसाद जयन्तीप्रसाद १२ १५००) १७०) २५

२ गजाधरपुर,बानपुर,खलीलाबाद शिवभीख श्यामसुन्दर २३ २०) २०

३ हिन्दावल खास जलालाबाद,श्यामसुन्दरलाल,शीतलप्रसाद ६०)

सीतापुर

१ सीतापुर खास खास रामानन्द हरगोविन्द १२००)

बाराबंकी	१ बाराबंकी	,,	,,	रामचन्द्र	नानकप्रसाद		५०००)		
रायबरेली	१ रायबरेली	,,	,,	गौरीशंकर	शिवनरायन		५००)		
लखनऊ	१ लखनऊ	खास	खास	नारायनप्रसाद,देवीप्रसाद		८०	६१००)	४००)	
	२ गनेशगंज	लखनऊ खास		देवदत्त	रासबिहारी	१६०,	१७५०)	२६६)	
	३ मऊ	मोहनलालगंज		मोहन,दलथम्मनसिंह,सुन्दरलाल		३१		८४)	१२
उन्नाव	१ उन्नाव	खास	खास	राधाकृष्ण	रामभरोसे				
	२ पुरवा	,,	बीघापुर	गौरीशंकर	विश्वेश्वर				
	३ नवाबगंज	,,	अजगैन	रामगोपाल	ज्ञानदीन				
	४ फांकपुर	सोहा							
पीलीभीत	१ पीलीभीत	खास	खास	जगदम्बाप्रसाद,जगन्नाथ		३५	३०)	६०)	
	२ पूरनपुर	,,	,,	नत्थूमल	गौरीशंकर	२८	१०००)	५४)	
	३ सरखड़ाकलां	खास	भूपतिपुर	टीकाराम	होरीलाल				
हरदोई	१ हरदोई	खास	खास	रायकेदारनाथ	ब्रजकिशोर		१५००)		२५
	२ बावन	,,	हरदोई	बिन्द्राप्रसाद	बालकृष्ण				
	३ शाहाबाद	,,	पाली	शिवनरायन	राधाशरण		३०००)		
	४ मलावा	माधौगंज	खास						
	५ माधौगंज	खास							
	६ नीर	टंडियावा							
खीरी	१ महम्दी	खास	गोला	महादेवप्रसाद	केदारलाल		८००)	२०)	
	२ लखीमपुर	खास	खास	सीताराम	प्यारेलाल		५०००)		
	३ हैदराबाद	गोला	खास	भास्करप्रकाश	गौरीशंकर				
	४ गोलागोकरननाथ	खास		बिहारीलाल	मूलचन्द				
फ़ैज़ाबाद	१ फ़ैजाबाद	खास	खास	गोकुलचन्द	मोहनलाल	५४	५०००)	१७६)	८
	२ भदरसा	भरतखंड	भरतकुन्ड	श्यामनरायन	छोटेलाल	३०		१५॥)	
	४ टांडा	खास	खास	बिहारीलाल	बच्चूमल	१२	४०००)	६४॥)	
	५ कोमिया	मया							
बहराइच	१ बहरायच	खास	खास	टंकोप्रसाद	गोबिन्दप्रसाद				
	२ पयागपुर	खास	खास		रघुवरदयाल				
सुल्तानपुर	१ सुल्तांपुर	खास	खास						
	२ कटांवा	,,	सुलतापुर	गोकुलप्रसाद	रामहर्षसिंह	१५			
गोंडा	१ गोंडा	खास	खास	शम्भूप्रसाद	सरजूप्रसाद				

प्रतापगढ़	१ प्रतापगढ़	,,	,,	सरजूप्रसाद	रामहित	१०	४५)
अजमेर	१ नसीराबाद	खास	खास	गंगाराम	रामदयाल १६	३०००)	१८)
	२ अजमेर	कैसरगंज	खास	बंशीधर	आर्यरत्न	४००००)	
	३ कड़ैल	खास	अजमेर	लक्ष्मीनारायन,	बजरङ्गजी १२	१५००)	२४)
	४ जोवनेर	खास	आसनपुर,	नरेंद्रसिंह			
मारवाड़	१ ब्यावर	खास	खास	बिहारीलाल	मातादीन ३५	२०००)	७८)
जोधपुर	१ जोधपुर	खास	खास,	रावराना श्रीतेजसिंहजी,	लक्ष्मणजी २४	६६०००)	१२१।≈)
	२ मथानियाँ	खास	जोधपुर	प्रभूदान	समेरदान		
	३ सोजत	खास	खास	गिरधारीलाल	ब्रह्मदेव	२०००)	
	४ बाढ़ैल	,,		बैजनाथ	हीरालाल		
	५ मकराना	खास	जोधपुर	नानकराम	सेवाराम		
जयपुर	१ जयपुर	खास	खास	नरायनदास	सूर्यनारायण ३५	४०००)	१००)
	२ फतेहपुर	,,	रतनगढ़	रामलाल	नागरमल	२५००)	
	३ रामगढ़	,,	देवालसर,	नरसिंहनन्द	विष्णुशर्म्मा		
	४ फुलेरा	,,	खास	गोविन्दराम	मोहनलाल १५	६००)	४२)
बीकानेर	१ बीकानेर	खास	खास	आसाराम	अमूलकचंद्र ४०		६०)
	२ सुजानगढ़	,,	,,	बेजाराम	जयरामशर्मा	२०००)	
धौलपुर	१ धौलपुर	खास	खास	जमुनाप्रसाद	जौहरीलाल ४२	२००)	१२६)
	२ माड़ी	,,	धौलपुर				
बिलासपुर	१ बिलासपुर	खास	खास	महेशस्वरूप	गोकुलचन्द्र ८८	१५०००)	४००)
	२ रूपवास	,,	,,	रामचन्द्र	बुद्धसेन		
	३ दुर्ग	,,	भरतपुर	घनश्यामलाल	रामचन्द्र वर्मा १६	३१०)	३१॥)
ग्वालियर	१ भलसा	खास	खास	भगवानस्वरूप,	द्वारकाप्रसाद २४		६०)
	२ सीपरी			देवीदयाल	जंगबहादुर		
	३ लशकर	,,	,,	हरस्वरूप	प्रभूदयाल		
	४ रतलाम	,,	,,	मोहनलाल	सरूपचन्द्र		
	५ जादों	,,	केसरपुर		शामलवैद्य	बनरहा है	
अलवर	१ अलवर	खास	खास	जुगुलकिशोर	दुर्गाप्रसाद	५००)	
कोटा	१ कोटा	,,	,,	राजविजयसिंह,	गुरुदत्तसिंह ४२	४०००)	२६४)

टोंक	१ टोंक	,,	,,						
शाहपुर	१ शाहपुर	खास	सरेरी	पं० रामदत्त	सलोहरसिंह		४०००)		
	२ फलीसाबड़ा	,,	,,						
उदयपुर	१ उदयपुर	,,	खास	जगन्नाथ	हीरालाल	२६	४०००)	३०)	
	२ नन्द्राय	मांडलगढ़	चित्तौरगढ़	उदयसिंह	मदनसिंह				
मालवा	१ नीमच	खास	खास	शंकरलाल	बालकृष्ण				
	२ शाजापुर	,,	वरीछा११मी.	गुर्धनलाल,	गोपालसिंह	१२		५७)	
	३ नयागांव	,,	केसरपुरा,	हीरालाल	रामहरशर्मा	१३	१००)	२१)	
उज्जैन	१ उज्जैन	,,	खास						
धार	१ धार	,,	मज	मक्खनलाल	अटलबिहारी		२०००)		
	२ बांसवाडा	,,	,,	अम्बालाल	श्रीनिवास				
इन्दौर	१ देवास	,,	इन्दौर	गोवरधनलाल	रामगोपाल	२५	है	१७५)	२
	२ सनाऊद	,,		घनश्यामजी	मांगीलाल	५			
	३ कसराऊद	,,		कालूराम	गोविन्दराम				
	४ इन्दौरसदर	,,	खास	शम्भूदयाल	किशनलाल				
	५ ,, शहर	,,	,,	गणपतिलाल	नन्दकिशोर		३००)		
	६ मनऊ	,,	,,	ओंकारलाल	गेंदालाल				
	७ कोटगई	,,	,,						
	८ अमझोट	,,	इन्दौर						
	९ महतपुर	,,	महतपुर	मेघराज	बल्लभराम	१६	[illegible])	[illegible])	
झालावार	१ गरनादो	,,	श्रीछत्रपुर,	देवलालशर्मा	मोतीलाल				
	२ सदरझालावार		थोडरक						
	३ झालरापाटन		श्रीछत्रपुर,	भज्जूराम	अमीरसिंह		२०००)		
भूपाल	१ अछावर	खास	सहुवा	प्रेमनरायन	हरिवल्लभ	१८		३०)	
	२ कुसुम्भी	लाडू	जसवंतगढ़						
किशनगढ़	१ किशनगढ़,	खास	खास	शंकरशर्मा	मोतीलाल	५०			
बड़वानी राज	१ बड़वानी	खास	मऊ	देवीप्रसाद	खुशहालीराम	१८	५००)	३०)	
	२ दोजार	मन्डनू	जस्वन्तनगर,	जुझारसिंह,	मोतीराम		६००)		
	३ बड़नगर	खास	खास						

मध्य प्रदेश व बरार ।

नरसिंहपुर	१ नरसिंहपुर	खास	खास	कन्हैलाल	गणेशप्रसाद	२१	
	२ पुहा	,,	गुड़खारा	ठा० मानसिंह	भोलानाथ	१२	
	३ मोहपानी	,,	,,	नारायणदास	मूलचन्द	६	
	४ गाड़खाड़ा	,,	खास	रामगुलाम	रामसहाय		
दुर्ग	१ दुर्ग	,,	,,	अहगोविन्दसिंह,घनश्यामसिंह			
	२ बेमतरा	,,	,,	रामधन शर्म्मा	स्वरूपनारायण	८	
चन्दवाड़ा	१ चन्दवाड़ा	,,	,,		छुट्टलाल		
होशङ्गाबाद	१ होशङ्गाबाद	,,	,,	पूर्णानन्द	मलिकराज	१५	
	२ हरदा	,,	,,	चन्द्रगोपालसिंह,सन्तजी		६	
	३ पचमढ़ी	,,	परिया	हीरासिंह	कांशीराम	१२	
	४ सुहागपुर	,,	खास	काशीराम	राजबहादुर	२०	
निमाड़	१ बरहानपुर	,,	,,	हरीकृष्ण	हरकिशनजी	१०	
	२ खण्डुवा	,,	,,	खुशालीराम	रामलाल	१३	
	३ मोह	,,	,,	माधोजी	चुन्नीलाल	४	
	४ रुस्तमपुर	,,	,,	राजाराम	बिहारीलाल	१४	
महुवाखेड़ा	१ महुवाखेड़ा	,		ह.नामसिंह	भगवानसिंह	१६	
हरसूद	१ हारम	,,			बलभद्रप्रसाद		
	२ सरोज						
रायपुर	१ रायपुर	खास	खास	दुर्गाराम	शिवप्रसाद	४०	
	२ बलुआबाजार	,,	,,	चन्द्रधर	सूर्य्यमल	८	
	३ बुढ़ापारा	,,	,,		सीताराम		
आकोला	१ मुरतज़ापुर	,,	,,	कन्हैलाल	रामदुलारे	६	
	२ आकोला	,,	,,	गोविन्दसिंह	रावजी	२३	
	३ होड़खेड़ा	,,	,,	किशनगुणजी	भग्गूलाल	२४	
	४ अकोट	,,	,,	हीरालाल	जगदीशनारायण	६	
अमरावती	१ अमरावती	,,	,,	बालमुकुन्द	केशवलाल	२५	२०००)
	२ धामनगांव	,,	,,	रामसुमेर	चन्द्रभान	११	
	३ चांदोर	,,	,,	चन्द्रभानु	मुन्नालाल		
नागपुर	१ नागपुर सी.पी.	,,	,,	शम्भु शर्म्मा	काशीराम	२४	भूमि ५०)

जबलपुर	१ जबलपुर सी.पी.	,,	,,	क्षेमराज	समेश्वरान गायकिवाड़४५	१७०००)	२००)
	२ कटनीमड़वारा	,,	,,	रामराजसिंह	बालाप्रसाद	१०	
	३ समतपुरा	,,	,,				
बिलासपुर	१ बिलासपुर	,,	,,	सालिकराम			
	२ भद्दोरा	,,	,,	आत्माराम	बलरामजी		
सागर	१ सागर	,,	,,	कुन्दनलाल	वासुदेवप्रसादसिंहन	२०००)	१६॥≈)
राजनोगांव	१ डण्डीलोहारा	,,	राजनोगांव				
	२ राजनोगांव	,,	,,	उजियारीलाल,बादलेलाल		८	२४)
वरधा	१ वरधा	,,	खास	बिशुनचन्द्र	गणपतिराय		
बालाघाट	१ बालाघाट	,,	,,				

बङ्गाल व बिहार ।

कलकत्ता	१ कलकत्ता	कॉर्नवालिसस्ट्रीटकलकत्ता	खास	सुखदेव वर्मन	५०००)
	२ खिद्दुपुर	खास	खास	नन्दलालजी	
	३ बड़ाबाज़ार	,,	,,	शम्भूनाथ	
	४ खड़गपुर	,,	,,		
बर्दवान	१ आसनसोल	,,	,,	बलरामसिंह	
	२ रानीगंज	,,	,,		
मानभूम	१ झरिया	,,	,,	रोशनसिंह	मन्दिर है
	२ कतरासगढ़	,,	,,	जगतनरायणसिंह	
रांची	१ रांची	,,	,,	जयनारायणसहाय	
गया	१ गया	,,	,,	शिवगोबिन्दसिंह	
दार्जिलिङ्ग	१ दार्जिलिङ्ग	,,	,,	रघुनाथशरण	
चम्पारन	१ बेतिया	,,	,,	शिवनन्दनराघत	

मुज़फ्फरपुर	१ लालगंज	खास	मुज़फ्फरपुर	सत्यनारायण	
	२ हाजीपुर	,,	खास	दशरथ चौधरी	
	३ सीतामढ़ी	,,	,,	रामअवतारलाल	
दरभंगा	१ रोसड़ा	,,	,,	रासबिहारीलाल	
	२ समस्तीपुर	,,	,,	रामशरण	
	३ कमतौल	,,	,,	महेश्वरप्रसाद	
भागलपुर	१ निर्मली	,,	भागलपुर	शिवनन्दनसिंह	मंदिर है
	२ बाङ्का	,,	,,	रामचरणसिंह	
	३ भागलपुर	,,	,,	सेवालालसिंह चौधरी	
छपरा	१ छपरा	,,	,,	रामकृष्णलाल	
	२ हरपुरजान	राजापट्टी	मसरखा	कृष्णबहादुरसिंह	
	३ सिवान	खास	खास	वैद्नाथप्रसाद	
	४ सुवरना	निराव	सन्ता		
	५ पंचमढ़ी	खास	खेड़ी	भगवतप्रसाद	
मुंगेर	१ मुंगेर	,,	खास	परमेश्वरप्रसाद	
	२ खगड़ियान	खगड़िया	,,	रामेश्वरप्रसाद	
	३ गोगड़ीजमालपुर	खास	मुह्हीमखारे	मङ्गलप्रसाद	
	४ तारापुर	,,	परियारपुर	लटोरी तिवारी	
	५ जमोई	,,	खास	बद्रीनाथ शर्म्मा	
आरा	१ आरा	,,	,,	मकुन्दलाल	
	२ बकसर	,,	,,	राजाकिशोरपांडे	
	३ रघुनाथपुर	,,	,,	रामनन्दनशाह	
	४ नवलखा	,,	,,	गनपति शर्मा	
	५ सहराव	,,	,,	बलदेव शर्मा	
पटना	१ बांकीपुर	खास	खास	नीलाम्बरप्रसाद	
	२ पटनाशर्कीदरवाजा		,,	गोवर्धनलाल	१०००)
	३ पटनामगरबी	,,	,,	हरीकृष्ण	१०००)
	४ विहार	,,	,,	घनश्याम मिश्र	५००)भूमि
	५ वाढ़	,,	,,	भगवानदास	
	६ खुसुरूपुर	,,	,,	रघुनन्दनप्रसाद	३०००भूमि
	७ नगरनोसा	,,	फतोहा	मौजीलाल	
	८ फतोहा	,,			
	९ निसरपुरा	फुलवारी	दानापुर	मूरतलाल	

१० मसूढ़ी	खास	खास	अशर्फीलाल	
११ हसनपुर	फुलवारी	दानापुर	कमलाशरण	
१२ खगौल	खास	खास	बिहारीलाल	५००)
१३ नौबतपुर	,,	दानापुर	सरजूनरायन	५००)
१४ मुर्तज़ापुर	खगौल	,,	हरीनरायन	
१५ मुनेर	खास	भीरा	फकीरचन्द	
१६ बियापुर	,,	,,	गदाधरप्रसाद	
१७ मठियापुर	दानापुर	दानापुर	हेमनाथ	
१८ गोनपुरा	फुलवारी	,,	सम्पतिसिंह	
१९ बेला	पुनपुन	पुनपुन	नन्दलाल	
२० दाऊदपुर	खास	दानापुर	नत्थनीप्रसाद	
२१ कोथवा	खगौल	,,	नरायनसिंह	
२२ मेहनावा	मनेर	,,	रामजीभितसिंह	
२३ दरियापुर	बांकीपुर	,,	मुखबीरलाल	
२४ दानापुर	खास	खास	देवदत्त	३०००)
मद्रास १ मद्रास	खास	खास		
२ मंगलौरसदर	,,	,,		

बम्बई काठियावाड प्रान्त

बम्बई की ओर से आर्यसमाजें अपने वृतान्त छपने के लिये बहुत कम भेजती हैं बार २ लिखा गया श्रीमति आर्य प्रतिनिधि सभा से भी निवेदन कियागया, परन्तु वृतान्त फिर भी पूरे ज्ञात नहीं हुए हां यह ज्ञात हुआ है कि कुल ७२ समाजें बम्बई प्रान्त में हैं उनके नाम यह हैं । बम्बई गिरगांव, सागर, माडी, सूरत, बेमल हमील पाड़ी, औंगत, नागतधारा, मरतगांव तलवाड़ा, देवगांव, पाटोदर, सालेज, हिलधरी, मरसून, कोसाढ़, दीवन, बलसार, बड़ौदा, कण्डारी, नड़याद, कर्मसद, नवगांव, म्राण कलाड़, ओड़ा, अहमदाबाद, वीरगांव, काठियावाड़, भडोज, सनपुर, वीरपुर, भावनगर, कच्छ, पवोला, नासिक, देवलालि, धावाड़, ओबली, अहमद नगर, मतिको, हदर, सूबा मद्रास में कब समाजें कायम होंगी । भारतवर्ष की आर्य्य समाजों की फैरिस्त, समाप्त करते हुए । सूबा मद्रास में कभी प्रचार का ध्यान सब सभाओं को दिलाना आवश्यक ज्ञात होता है। स्वामीजी मृत्यु से पहिले जहां एक ओर इङ्गलेण्ड आदि स्थानों का विचार कर रहे थे। वहां उनके बाद पत्रों से ज्ञात होता है कि वह मद्रास के विषय में भी कई बार जिक्र करते थे कि इस प्रान्त में सुस्ती हो रही है शोक है स्वामीजी के पश्चात् भी इतने वर्षों से इस प्रान्त की सुध न ली गई । इसलिये आर्य पुरुषों से यह प्रश्न है कि सूबा मद्रास में कब समाजें स्थापित होंगी ॥

ब्रह्मा

१ मेमऊं	खास	खास	गोबिन्दराम गुरुदत्त	६०००)
२ रंगून			एस०एस० हुलकारजी	
३ मांडले	,,	,,	रामदेवजी	
४ मीनाभजांग				
५ मचीना				
६ शेवो	,,	,,	मुन्शीराम मथुरादास	

अफ्रीका।

अफ्रीका में निम्न लिखित आर्यसमाजें हैं, जिन में नैरोबीका समाज सब से शिरोमणि है उस के मन्त्री म० तुलसीदासजी हैं।

१ मूमबासा, २ नैरोबी, ३ कुसोमों, ४ पुरथन, ५ जंजबार, ६ मजनार।

इङ्गलेण्ड।

१ लण्डन डा० धर्मवीर एफ. आर. एफ. जी, आर. एस. थूलेर ४० २५०)

फिजि टापू।

महाशय एस. आर. एम. ए. सरस्वती समाजिकहित के लिये अपनी पूरी सामर्थ्य से यत्न कर रहे हैं, आप पतित जातियों में विद्या तथा वैदिकधर्मप्रचार के लिये बहुत काम कर रहे हैं।

अमरीका।

यहां श्रीमान् पंडित केशवदेवजी शास्त्री के पहुंचने से बहुत कुछ धार्मिक आन्दोलन होना आरम्भ हो गया है. पादरी लोग आप के कार्य के बहुत विरुद्ध रहे हैं, फिर भी आप एक सच्चे आर्य्य पुरुष की न्याई दृढ़ता से सारे विघ्नों को दूर किये जाते हैं। चिकागू में आर्य्यसमाज भी कायम हो चुका है जिसके मन्त्री डा०फरैन्डजी फाक्स हैं।

आर्य्यसमाज के संगठन से लेकर इस समय तक की प्रसिद्ध घटनाएं

श्रीस्वामी दयानन्दजी के जीवन सम्बन्धी
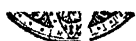
(सन् १८२४ ई० से १८८३ ई० तक)

सन् १८२४ ई० में स्वामी दयानन्दजी मौज़े टंकारा मौरवीराज्य काठियावाड़ गुजरात में पं० अंबाशङ्कर उदीच ब्राह्मण के घर में पैदा हुये।

सन् १८२६ ई० में स्तोत्र, मंत्र और श्लोक आप ने कंठाग्र कर लिये।

सन् १८३२ ई० में आप को सन्ध्या,उपसना सिखलाई गई और शिवकी पूजा करने लगे।

सन् १८३४ ई० में आप साधारण तौर पर प्रार्थन पूजन करने लगे।

सन् १८३८ ई० में आपने शिवरात्री का व्रत रक्खा और उसी रात आप को ज्ञान हुआ कि शिव पत्थर का नहीं हो सकता।

सन् १८४० ई० में आपकी बहिन का हैज़ा से स्वर्गवास हो गया और आप के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि किस प्रकार से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सन् १८४३ ई० में आपके चचा का स्वर्गवास हो गया, जिस से आपके मन के अन्दर वैराग्य पैदा हो गया इस वैराग्य को देखकर उनके माता पिता ने उनकी शादी का प्रबन्ध आरम्भ कर दिया।

सन् १८४४ ई० में आपने पिता जी को यह कहना आरम्भ किया कि उनको काशी भेज दिया जाय, परन्तु उनको शादी की खातिर रख लिया गया।

सन् १८४७ में वह घर से निकल गये और जङ्गलों बियाबानों और पहाड़ों में साधुओं, सन्यासियों की खोज करते रहे।

सन् १८४८ ई० में स्वामीजी जंगलों में घूमते हुये अहमदाबाद बड़ौदा गये। और वहां से नर्वदा पर चान्टर दो कन्याली में पहुंचे।

सन् १८४९ ई० में आपने सन्यास ले लिया और मूल शंकर की जगह आप का नाम दयानन्द सरस्वती रक्खा गया।

सन् १८५० ई० में योग सीखने के लिये व्यास आश्रम अहमदाबाद नर्मदा भवानी गिरी की चोटी और कोहआबू के दूसरे स्थानों पर घूमते रहे।

सन् १८५४ ई० तक इसी प्रकार घूमते रहे और योग साधन करते रहे।

सन् १८५५ ई० में हरिद्वार के कुम्भ के मेले पर पहिली बार गये और ऋषिकेश में रहकर योग करते रहे। उसके बाद दुश्वार गुजार जंगलों में गुजरे। और एक लाश को चीर फाड़ कर देखा।

सन् १८५६ ई०में कानपुर और इलाहाबाद के दर्मियान सैर करते रहे।

सन् १८५७ ई० को नर्वदा जहां से निकलती है उस ओर रवाना हुये घने और अंधेरे जंगलों में घुसे। आपके कपड़ों के चिथड़े उड़ गये। और बदन से खून निकलने लगा पांव घायल हो गये। नर्वदा के निकलने का स्थान देखकर फिर दो तीन वर्ष तक नर्वदा के किनारे भ्रमण करते रहे।

सन् १८६१ ई० में आप मथुरा आये और स्वामी विरजानन्दजी से मिले स्वामी-

शिआनन्द की आयु उस समय ८७ वर्ष की थी।

सन् १८६२ ई० तक कोई दो साल तक मथुरा में वेद विद्या पढ़ते रहे और फिर आगे चले गये।

सन् १८६३ ई० आगरे ही में गुजरा।

सन् १८६४ ई० में आगरे से ग्वालियर चलेगये। वहां से करौली, जयपुर, लश्कर होते हुये अजमेर पहुंचे।

सन् १८६७ ई० को फिर आप हरिद्वार पहुंचे और वहां पाखंड खंडनी झन्डी लगा कर उपदेश करने लगे।

सन् १८६८ ई० में आप फरुखाबाद पहुंचे अब आपने बाकायदा वैदिक धर्म प्रचार आरम्भ किया। फरुखाबाद से कानपुर और वहां से प्रयाग गये। प्रयाग में आप को मारने के लिये बहुत से मनुष्य आये परन्तु उनकी साजिश कामयाब न हुई।

सन् १८६९ ई० प्रयाग से रामनगर गये और फिर रामनगर के महाराज के कहने पर काशी के पंडितों से शास्त्रार्थ करने के लिये गये।

काशी में पंडितों को पराजित करके अनूप शहर गये। वहां से मूर्ति-खंडन से दिक होकर एक ब्राह्मण ने आप को पान में विष दे दिया स्वामीजी को यह हाल मालूम हो गया। इसलिये आपने फौरन न्योली कर्म किया, और बचगये विष देने वाले को पकड़ लिया गया, परन्तु स्वामी जी ने छुड़वा दिया। और कहा, मैं लोगों को कैद कराने नहीं वरन छुड़ाने आया हूं।

सन् १८७२ में स्वामीजी केवल एक लंगोटी पहिनते थे सख्त सर्दियों में जब आप समाधि लगाते तो बदन से पसीना की बून्द गिरने लगजाती थीं। अब आपके उपदेशों से लोगों ने मूर्ति-पूजन छोड़ना आरम्भ करदिया। करनवास, बेलन, रामघाट, अतरौली, छलेसर व गढ़िया, सोरोन कासगंज में प्रचार करते रहे। और पंडित अंगदजी से शास्त्रार्थ भी हुआ।

सन् १८७२ में कानपुर के बहुत से पौराणिकों ने आपके उपदेश सुन कर मूर्तियां दरिया में फेंक दीं।

सन् १८७३ में फिर काशी में पधारे। और अब के बाकायदा शास्त्रार्थ हुआ।

कोई पंडित वेदों से मूर्ति-पूजा सिद्ध न कर सका। अब तक आप चार बार काशी में जाचुके थे। और बार बार चैलेंज करते थे कि किसी को अगर वेदों में मूर्ति-पूजन मिला है तो लावे।

सन् १८७४ में कलकत्ता, लखनऊ, इलाहबाद, कानपुर, जबलपुर इत्यादि स्थानों में प्रचार किया।

सन् १८७५ फरुखाबाद, काशी इत्यादि में संस्कृत पाठशालायें स्थापित कीं इसी वर्ष बम्बई पधारे। और आर्यसमाज स्थापित किया। इसी साल आर्याभिविनय बनाई।

सन् १८७६ बम्बई से अहमदाबाद पहुंच गये और फिर राज कोट में धर्म उपदेश किया। फिर पूना में कई महीने रहे अब आप की आयु पचास वर्ष की हो चुकी थी इसी वर्ष फरुखाबाद गये। फिर बनारस, जौनपुर, अयोध्या और लखनऊ में गये। इसी साल में आपने विलायत जाने का इरादा किया। इसके बाद शाहजहानपुर, बांसबरेली, करनवास में पधारे।

सन् १८७७ देहली दर्बार के मौके पर स्वामीजी देहली गये, प्रतिदिन पंडितों से मुबाहिसा होता था।

सन् १८७७ तक आप दस हज़ार मंत्रों और श्लोकों का तर्जुमा करचुके थे देहली में प्रचार करने के अनन्तर स्वामीजी मेरठ से सहारनपुर गये, उसी साल आपने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका लिखनी आरम्भ की। इसी साल आपने पादरी स्कॉट साहेब से बहस की और पादरी साहेब को निरुत्तर कर दिया।

इस शास्त्रार्थ के अनन्तर आप मार्च सन् १८७७ में सबसे पहिले। लुधियाने पधारे। उसी वर्ष आपने संस्कार-विधि छपवाई अप्रैल १८७७ को लाहौर आये जून सन् १८७७ को लाहौर में आर्य समाज स्थापित किया गया। फिर अमृतसर गये और अगस्त को अमृतसर में समाज स्थापित हो गया, फिर गुरदासपुर जाकर २४ अगस्त सन् ७७ में समाज स्थापित किया। [illegible] स्थापित किया। नवम्बर में फीरोज़पुर छावनी में जाकर उपदेश किया। और आर्य समाज स्थापित हो गया। दिसम्बर में रावलपिंडी पहुंचे और उनकी उपस्थिति ही में समाज स्थापित हुई, उसी वर्ष आपने आर्योद्देश्य रत्नमाला बनाई और इसी वर्ष से आपने ऋग्वेद का भाष्य करना आरम्भ कर दिया।

सन् १८७८ वजीराबाद में धर्म प्रचार करने गये, जहां स्वामीजी पर ईंटों की वर्षा की गई वहां से गुजरांवाले गये। यहां पादरियों से बड़ा भारी शास्त्रार्थ हुआ। फिर मुल्तान और दूसरे शहरों में गये और फिर ३१ जुलाई सन् १८७८ को रुड़की में पधारे वहां से अलीगढ़ मेरठ होते हुये देहली पहुंचे। और वहां ६ अक्टूबर से ४ नवम्बर तक प्रचार करते रहे। वहां से आप अजमेर आये और फिर नसीराबाद छावनी गये और वहां से रिवाड़ी पहुंचे इसी वर्ष वेदभाष्य भूमिका को सम्पूर्ण किया और छपवाया यजुर्वेद का भाष्य इसी वर्ष प्रारम्भ किया।

सन् १८७९ में आप देहरादून, मुरादाबाद, बदायूं, बरेली, शाहजहानपुर, लखनऊ, और फ़रुखाबाद पहुंचे। कानपुर, प्रयाग, मिर्ज़ापुर, दानापुर में प्रचार करते रहे। और साथ ही आर्यसमाजें भी स्थापित करते रहे। इसी वर्ष पादरी साहेब से शास्त्रार्थ भी हुआ।

सन् १८८० में आप फिर लखनऊ, फ़रुखाबाद और मैनपुरी में गये। और मेरठ, आगरा इत्यादि में भी पधारे। "गौकरुणानिधि" पुस्तक इसी वर्ष छपवाई।

सन् १८८१ में आप बम्बई पधारे फिर आप राज्य जयपुर, मसऊद, भरतपुर राज्य रायपुर व नसड़ा, चित्तौड़गढ़, इन्दौर, उदयपुर मेवाड़ भी गये।

सन् १८८२में बम्बई का वार्षिक उत्सव हुआ और स्वामीजी भी इस में सम्मिलित हुये। और फिर बम्बई, खंडुवा, इन्दौर, रतलाम इत्यादि की ओर गये इस वर्ष आप ने सत्यार्थ-प्रकाश शुद्ध करके छपवाया।

सन् १८८३ में आप शाहपुर गये वहां से अजमेर पधारे और फिर महाराज जोधपुर का पत्र आने पर जोधपुर चलेगये चार मास तक वहां रहे।

२६ सितम्बर सन् १८८३ को आप को दूध में विष दिया गया फिर आप वहां से चले आये और घूमते हुये अजमेर पहुंचे। और ३० अक्टूबर दिवाली के सायंकाल को ६ बजे स्वामीजी मुक्त धाम को पधारे।

जौलाई १८७८ में वैदिक यन्त्रालय अजमेर की स्थापना।

जनवरी १८८१ में हिन्दोस्तान भर के पंडितों की एक सभा कलकत्ता की टाउन-हाल में इसलिये हुई कि हिन्दोस्तान भर के पंडितों की सम्मति स्वामी दयानन्द के विरुद्ध प्रकाशित की जाय, इसमें देश भर के तीन सौ पंडित एकत्रित हुये। स्वामीजी को इसमें नहीं बुलाया गया। इसलिये निर-पक्ष लोगों...की दृष्टि में इस सभा की कुछ इज्ज़त नहीं हुई।

सन् १८८२ में देशी राज्यों में प्रचार करते हुये उदयपुर राज्य में आये। और परोपकारिणी सभा की रजिष्ट्री कराई और प्रधान महाराजा सज्जनसिंह उदयपुर के महाराज को बनाया।

मई १८८३ में स्वामीजी ने जोधपुर राज्य में बड़ा भारी प्रचार किया। और यहां ही उनको विष दिया गया। जिस से ३० अक्टूबर सन् १८८३ को उनका अजमेर में परलोक गमन हुआ।

स्वामीजी की मृत्यु समय कोई पैंतीस समाजें थीं, परन्तु आर्यसमाज के अति प्रचार से सन् १९०२ तक पंजाब में २५०, बिलोचिस्तान और सिन्ध में दस, संयुक्त प्रान्त में ३०३, मध्यप्रदेश में २६, हैदराबाद दक्षिण में ३०, सूबे बम्बई में २०, मद्रास में २, बिहार बङ्गाल में २२, ब्रह्मा में ५, आसाम में ३ और विलायत में दो आर्यसमाजें स्थापित हो चुकी थीं। इन साढे छः सौ आर्यसमाजों से डेढ़ सौ समाजों के अपने मन्दिर थे।

१८८५ में प्रचार के कार्य्य को नियमानुसार चलाने के लिये आर्य्य प्रतिनिधि सभा लाहौर में स्थापित की गई और सन् १८९५ इसकी रजिष्ट्री कराई गई।

सन् १८९० में पं० गुरुदत्तजी एम. ए. का देहान्त तपेदिक के रोग से हुआ।

सन् १८९३ में मांस भक्षण के कारण आर्य्यसमाज दो पार्टियों में विभाजित हो गया।

६ मार्च सन् १८९७ को धर्मवीर पं० लेखरामजी लाहौर में एक बद किरदार मुसलमान के हाथ से बलिदान हो गये। इसी समय दोनों पार्टियों में मिलाप हो गया। परन्तु खेद है कि यह मिलाप अधिक काल तक स्थिर न रह सका।

सन् १८९५ में फिर समाज के दो भाग हो गये।

सन् १९०० में सत्य धर्म प्रचारक पर पहिला लायबिल केस हुआ।

२ दिसम्बर सन् १९०१ में इस अभियोग का फैसला सुनाया।

सन् १८९९ में महात्मा मुन्शीरामजी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्कीम पेश की।

सन् १९०० में वह विकालत को छोड़ कर यह प्रतिज्ञा करके घर से निकले कि जब तक तीस हज़ार रुपये गुरुकुल के लिये जमा न होगा वापस न आऊंगा।

सन् १९०१ में दानवीर मुन्शी अमरसिंहजी ने अपना सारा गांव कांगड़ी गुरुकुल के लिये दान दिया।

२४ मार्च सन् १९०२ को गुरुकुल स्थापित किया। मार्च सन् १९०३ में इसका पहिला वार्षिक उत्सव हुआ।

सन् १८८३ में दयानन्द कालिज की तजवीज हुई। तीन साल तक समाजों में चन्दा होता रहा।

सन् १८८६ में लाला हंसराजजी ने अपनी सेवा से आर्य्यसमाज मन्दिर में दयानन्द स्कूल खोला।

सन् १८६५ में गुरुकुल कांगड़ी की विरोधता में गुजरांवाले में एक गुरुकुल खोला गया। जो बहुत काल के बाद स्कूल में परिवर्तन किया गया।

सन् १८६७ में संयुक्त प्रान्त में दयानन्द कालिज खोलने की सम्मति हुई। और··· के समाज में इस कालिज का स्कूल खोला गया।

सन् १८६६ में स्वामी दर्शनानन्दजी ने अपना पहिला गुरुकुल सिकन्दराबाद में खोला सो वही गुरुकुल बाद में फरुखाबाद में होता हुआ आजकल बृन्दावन में बड़ी सफलता से चल रहा है।

गुरुकुल के कारण से मुतास्सिर होकर सन् १८६६ में ही नरसिंहपुर मध्यप्रदेश में गुरुकुल के ढङ्ग पर एक वैदिकपाठशाला खोली गई। और इसी वर्ष यानी नवम्बर १८६६में अलीगढ़ में वैदिकपाठशाला जारी की गई।

सन् १८६६ ई० में कन्यामहाविद्यालय जालन्धर स्थापित हुआ।

सन् १८६८ में फीरोज़पुर का अनाथालय खोला गया। सन् १८८४ में बरेली का अनाथालय और सन् १६०२ में आगरे का अनाथालय खोला गया। सन् १८६५ में अजमेर का अनाथालय खोला गया।

मार्च १६०३ में मेघउद्धारसभा स्यालकोट में स्थापित हुई, १४ जून सन् १६०३ को आर्य्यसमाज गुजरांवाला ने अब्दुलगफूर बी. ए. को शुद्ध करके धर्मपाल बनाया। जो बाद फिर पतित हो गया।

कार्य्य रूप में जाति-बन्धन तोड़ने की खातिर सन् १६०२ में महात्मा मुंशीरामजी ने बावजूद खत्री होने के अपनी पुत्री का विवाह अरोड़वंश में किया आर्यसमाज के इतिहास में यह पहिली उपमा थी।

सन् १६०७ में आर्यसमाज के विरोधियों ने हुक्काम को आर्यसमाज के प्रतिकूल भड़का दिया। और प्रत्येक स्थानों पर आर्यसमाजियों पर आपत्ति पड़ने लगी।

पहिलीवार पटियाला में राज्य की ओर से आर्यसमाजियों पर अभियोग चलाया गया। जिस में अन्त को आर्यों की जय हुई।

सन् १६१० में दूसरीबार खालसापन्थ की हकीकत नामी पुस्तक पर म० रौनकराम और म० विशम्भरदत्त के प्रतिकूल अभियोग चलाया गया परमात्मा की कृपा से दूसरीबार भी आर्य्यों को विजय प्राप्त हुई।

१३ अप्रैल सन् १६१६ में महात्मा मुंशीरामजी ने सन्यास लेकर आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया।

नोट-मैं चाहता था कि लगातार आर्य समाज के प्रसिद्ध समाचारों को लिखना आरम्भ किया जावे। परन्तु शोक है कि समय न मिलने के कारण इस बार उस को पूर्ण न कर सका। अगले वर्ष यह कमी पूरी कर दी जावेगी।

सन् १९१६ ई० की लिखने योग्य सामाजिक घटनाएं

फरुखाबाद में जन्म के मुसलमान की शुद्धि १७ दिसम्बर सन् १९१६ को श्रीमान् लालमणि भट्टाचार्य्य वकील मन्त्री सनातन धर्मसभा के मकान पर ग्यारह जन्म के मुसलमानों की शुद्धि हुई।

आर्यकुमार सम्मेलन का सालाना उत्सव २५ या २८ दिसम्बर को सन् १९१६ को लखनऊ में प्रो० बालकृष्ण के सभापतित्व में हुआ, आगामी वर्ष के पंडित जगन्नाथ निरुक्तरत्न प्रधान और म० हरमुख और म० चान्दकरण मन्त्री चुने गये आगामी इजलास इलाहाबाद में होगा।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना के बाद १२ से १४ जौलाई तक २५ ब्रह्मचारी नये प्रवेश हुए।

ब्रह्मा में पंडित परमानन्दजी बी. ए. उपदेशक आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब ने बड़ी योग्यता से वैदिक धर्मप्रचार किया।

आर्य धर्म परिषद् बम्बई का वार्षिक उत्सव आनन्द ग्राम बड़ौदा राज्य में दस हज़ार मनुष्यों की उपस्थिति में हुआ।

नया आर्य उपदेशक विद्यालय महेशपुर डा० कैलिया जिला जालवन आर्य प्रचारक तय्यार करने के लिये खोला गया। म० पन्नालालजी उस के मन्त्री हैं।

आर्य समाज जबलपुर पर आपत्ति—आर्यसमाज मन्दिर के बनवाने की वजह से आर्यसमाज के अधिकारियों पर आपत्ति पड़ गई।

श्रीमान् लाला हंसराजजी जनवरी के तीसरे सप्ताह गुरुकुल मुलतान में पधारे और व्याख्यान दिया।

आर्य भाषा सम्मेलन दक्षिणी अफ्रीका २५ दिसम्बर सन् १९१६ ई० को डर्बन (नाटाल) में हुआ। म० आर. जी भल्ला प्रधान थे।

पौराणिक उपदेशक रामचन्द्र इस वर्ष में कई बार भिन्न २ स्थानों पर आर्यसमाज से पराजित हुआ। परन्तु उस की कठोर बाणी में कोई फर्क नहीं आया।

श्रीमान् लाला हंसराजजीने २१ जौलाई सन् १९१७ को गुरुकुल काङ्गड़ी में प्रथमबार पदारोपण किया, ब्रह्मचारियों के अभिनन्दन पत्र के उत्तर में आप ने कहा कि इस संस्था की तह में त्याग और भक्ति की लगन है।

अमृतसर आर्यसमाज ने फरवरी के मास में एक बड़े ऊंचे ईसाई कुटुम्ब के मेम्बर मिस्टर रतनचन्द्र मायाराम को बड़े भारी उत्सव में शुद्ध किया।

३०० ईसाइयों की शुद्धि-रसड़ा जिला बलिया में ६ जनवरी सन् १९१७ ई० को ३०० ईसाइयों की शुद्धि आर्यसमाज ने की यह लोग जन्म के चमार थे।

३ बार पंडित अखिलानन्दजी को पराजित—इस वर्ष में पंडित अखिलानन्द को लाहौर, सिकन्दराबाद, शाहजहानपुर और ज्वालापुर में आर्य पंडितों ने ३ बार पराजित किया।

ऋषिबोधउत्सव-२० फरवरी सन् १९१५ ई० को सब आर्यों ने बड़े उत्साह के साथ बोधउत्सव (शिवरात्रि के दिन) मनाया

वीर उत्सव-मार्च के महीने में आर्य समाजों ने पंडित लेखरामजी का यादगारी (स्मार्क) दिन मनाया।

आर्यसमाज सुजानपुर टीरा के प्रधान म० ताराचन्द को २६ फरवरी सन् १९१६ ई० को किसी वैरी ने मार डाला।

फरवरी के महीने में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के उपदेशकों ने बलिया में ३०० ईसाइयों की शुद्धि की।

मद्रास में पंडित लेखरामजी की प्रसिद्ध पुस्तक नुस्खे खब्त अहमदिया के तलङ्गी भाष्य पर अभियोग चलाया गया जो खारिज हो गया।

अयोध्या में प्रो० महेशचरणसिंह ने उद्योग गुरुकुल स्थापित किया।

जगाधरी—आर्यसमाज के प्रधान चौधरी गङ्गारामजी १९ अप्रैल को मार डाले गये।

---

४०० सहस्र डोमों की शुद्धि—पहिली अप्रैल से १५ अप्रैल तक पंडित रामभजदत्त जी की कोशिश से ४०० डोमों की शुद्धि जिले गुरदासपुर में हुई।

श्रीदेवेन्द्रनाथ मुकरजी ऋषि दयानन्द के बङ्गला जीवन चरित्र के कर्ता का देहान्त बनारस में मार्च के प्रथम सप्ताह में हुआ।

इराक, अरब में रणभूमि में गये हुए, आर्य पुरुषों ने गुरुकुल के लिये चन्दा जमा किया।

पण्डित लेखरामजी कृत ग्रन्थों का भाष्य तिलङ्गी भाषा में—मद्रास प्रान्त में पं० लेखरामजी कृत ग्रन्थों का भाष्य तिलङ्गी भाषा में होगया। जिस के प्रतिकूल मुसलमानों ने दावा किया जो खारिज होगया

नगरकीर्तन—आर्य समाज सोनीपत का नगरकीर्तन १ मार्च को होने वाला था जो कि बन्द किया गया।

अयोध्या में गुरुकुल प्रो० महेशचरण सिंह ने अप्रैल के महीने में उद्योग गुरुकुल खोला। जिस में ब्रह्मचारियों को दस्तकारी सिखलाई जाती है।

महात्मा मुंशीरामजी का संन्यासआश्रम में प्रवेश—१ वैशाख सम्वत् १९७४ को मायापुर में सहस्रों नर व नारियों की उपस्थिति में संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। और अपना नाम स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती रक्खा।

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक उत्सव ६, ७, ८, ९ अप्रैल को बड़ी धूम से किया, ७३ हज़ार रुपया एकत्रित हुआ। ८ स्नातक गुरुकुल से उत्तीर्ण होकर निकले।

महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिक उत्सव भी इन्हीं तारीखों में हुआ। ९हज़ार रुपये जमा हुआ। और पंडित अखिलानन्दजी ने पश्चाताप लिख कर दिया, परन्तु कुछ दिन बाद फिर भ्रष्ट होगया।

---

५०० स्त्री पुरुषों की शुद्धि—७ अप्रैल को शङ्करगढ़ जिला गुरदासपुर आर्य्यसमाज में पं० रामभजदत्तजी वकील और पं०पूर्णचन्द्रजी उपदेशक ने ५०० अछूतों की शुद्धि की

रियासत धौलपुर के महाराना साहेब ने किसी भूल में पड़ कर आर्यसमाज मन्दिर गिरा दिया। आर्यसमाज का डिपोटेशन जाने पर उस को फिर से बनवाने की आज्ञा दी।

यू. पी. गवर्नमेण्ट ने अपनी रिपोर्ट में दूसरी बार आर्य्यसमाज के प्रतिकूल लिखा और मुसलमानों की बड़ाई की आर्य्यसमाजों ने प्रोटेस्ट किया जिस पर मि० जेम्स मैस्टन छोटेलाट, साहेब ने आर्यसमाज के

डिपोटेशन को वचन दिया कि वह इस शिकायत को दूर कर देंगे ।

बसरा में वैदिकधर्मप्रचार-रणक्षेत्र में गए हुए आर्य पुरुषों ने बसरे में अपने धर्म का प्रचार किया और गुरुकुलके लिये चन्दा जमा करके भेजा ।

बिहार प्रान्त के गुरुकुल मुस्तफापुर विद्यालय का वार्षिक उत्सव २६ ता० २८ मई का निर्विघ्न समाप्त हुआ । कन्या महाविद्यालय के डिपोटेशन ने जून के महीने से हमारे पंजाब का दौरा आरम्भ किया । पंडिता लज्जावती के व्याख्यानों की धूम मच गई और २५ हज़ार से अधिक चन्दा जमा हो गया ।

आर्यसमाज अमृतसर ने साढ़े छप्पन हज़ार रुपये में आर्य्यसमाज मन्दिर के लिये भूमि मोल ली ।

बहादुरगढ़ जिला रोहतक में आर्य्य समाज के लिये एक जमीन खरीदी गई, और तामीर मन्दिर के आरम्भ में इस में कुंआ यज्ञशाला बनवाई गई । कि जिस में से इसी ज़मीन पर कमेटी को मण्डी बनाने का विचार आगया । इस लिये वह भूमि जब्त कर ली गई । कमेटी की इस कार्वाई पर सारे आर्य्यसमाजों में खलबली मच गई । हुक्काम के पास मेमोरियल भेजा गया । जिस से यद्यपि भूमि के वापस मिलने की आशा होगई है, परन्तु अभी फैसला नहीं हुआ ।

श्रीनगर कश्मीर में जौलाई के महीने में आर्य्यसमाज की अच्छी चर्चा होती रही रामदास सरलिया उर्फ प्रकाशानन्द ने आर्य्यसमाज के प्रतिकूल बहुत ऊधम मचाया और आर्य्यसमाज के प्रतिकूल लेखबध व व्याख्यानों द्वारा काम किया मगर आर्य्यसमाज का बाल बांका न हुआ । इस आन्दोलन से आर्य्यसमाज का बहुत प्रचार हुआ ।

नैरोबी (अफ्रीका) में गुरुकुल स्थापन करने के लिये एक दानी महाशय अपनी ६० हज़ार की पूंजी (जायदाद) देदी है, जिस की मासिक आय ५०० रुपये हैं ।

स्वामी श्रद्धानन्दजी(महात्मा मुंशीराम) ने आर्यसमाज के इतिहास की तय्यारी अन्त सितम्बर से आर्य्यसमाजों का दौरा आरम्भ किया, जिस से आर्य्यसमाजों को बहुत लाभ पहुंचेगा ।

सन् १९१६ के मुख्य शास्त्रार्थ ।

मांझा रियासत पटियाला में ८ पौष सम्वत् १९७३ वि० को पं० पूर्णानन्दजी महोपदेशक और पं० रामनारायण पौराणिक से मूर्ति-पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ ।

गुरदासपुर में दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आर्यकुमारसभा के उत्सव पर पं० पूर्णानन्द और पं० गौरीशंकर से नमस्ते पर शास्त्रार्थ हुआ ।

सराय सिद्धू जिला मुलतान में २८ जनवरी सन् १९१७ को पं० लोकनाथजी का पं० यदुकुल भूषण के साथ सृष्टि उत्पत्ति इत्यादि २-३ विषयों पर शास्त्रार्थ हुआ ।

जड़ांवाला में स्वामी विज्ञानभिक्षुजी का पं० किशनजी के साथ नमस्ते शब्द पर शास्त्रार्थ हुआ ।

मुरिण्डा जिला अम्बाला में सनातन धर्मसभा के उत्सव पर २१ मार्च को पं० लोकनाथ और मुंशी राजनरायण से मुक्ति से पुनरावृति के विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। मुंशी साहिब का खूब काफिया तंग हुआ।

कादियान में २५ मार्च को मौलवी कासिमअली एडीटर फारोक और स्वामी विज्ञानभिक्षु से आवागमन पर शास्त्रार्थ हुआ।

२ अप्रैल को पं० शेरसिंह और मुंशी राजनरायण से श्राद्ध विषय पर शास्त्रार्थ हुआ।

जेजूं जिला होशियारपुर में १३, १४ अप्रैल को जैनियों के साथ पं० नरसिंहदेव जी ने शास्त्रार्थ किया। और काठगढ़ जिला होशियारपुर में २५, २६ अप्रैल को सर्दार बख्तावरसिंहजी आनरेरी मजिस्ट्रेट के सभापतित्व में म० धर्मवीर आर्य मुसाफिर और स्वामी भिक्षु के साथ मिस्टर मुहम्मद यूसुफ और हाफिजरोशनअली कादियानी के साथ कुरानी खुदा के विषय पर वादा विवाद हुआ।

क़ासवाला जिला स्यालकोट में पं० रामशरण उपदेशक और पं० रामचन्द्र पौराणिक पंडित से श्राद्ध विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। पं० रामचन्द्र को खूब जक उठानी पड़ी।

अमृतसर में सनातनधर्मकुमारसभा के वार्षिक उत्सव पर पं० यदुनाथ निरुक्तरत्न से श्राद्ध विषय पर शास्त्रार्थ हुआ।

मधियाना में लाला हीरानन्दजी प्रधान आर्यसमाज ने मुंशी राजनारायण और राम चन्द्रजी को शास्त्रार्थ करके परास्त किया।

कुंजपुरा जिला करनाल में सनातनधर्म सभा के उत्सव पर पं० पूर्णानन्दजी ने मुंशी राजनरायण को खूब परास्त किया।

दीनानगर में २३ सितम्बर को मुंशी राजनरायण और बख्शीरामजी से शास्त्रार्थ होना निश्चय पाया। परन्तु मुंशीजी को शास्त्रार्थ करने की सत्ता न हुई। और वहां से भाग निकले।

शिमले में २ सितम्बर को कादियानी जमाअत के उत्सव में पं० रामचन्द्र देहलवी और मीर कासिमअली एडीटर फारोक़ से शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज को बड़ी विजय प्राप्त हुई।

कुंजाह में आर्यसमाज के उत्सव पर पं० धर्मवीर और मीर कासिमअली से शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ में मीर साहिब की अर्बी यानी की हकीकत खुल गई।

जीवन को सफल करने वाली पुस्तकें

स्वामी सत्यानन्दजी की सत्य उपदेश माला—हिन्दी में मू० ॥।)

स्वामी सर्वदानन्दजी का आनन्द-संग्रह हिन्दी ॥) उर्दू ।=)

मोतियों का हार-श्रीमान् ला० हंसराज बी. ए. के वर्षों के परिश्रम और अनुभव का फल (उर्दू में) मूल्य ॥=)

फूलों का गुच्छा-लेखक प्रोफैसर द्दीवानचन्दजी एम. ए. (उर्दू) ॥=)

काशी-यात्रा—सर्व साधारण और विशेष कर स्त्रियों में धर्म्म प्रचार के लिये अत्यन्त उपयोगी है। (हिन्दी में) मूल्य =)

पता—मैनेजर आर्य्य पुस्तकालय, लाहौर

निःसन्देह ऐसी औषधि सब को पास रखनी चाहिये ।

एक ही औषधि मात्रा दो तीन बूंद और न केवल लग भग सब रोगों का जो घरों में बहुधा बूढ़ों, बच्चों, जवानों, स्त्री पुरुषों को होते रहते हैं, हुक्मी इलाज है, वरन् पशु रोगों में भी गुणकारी है ।

हर जेब, हर घरमें, हरऋतु में मौजूद रहने चाहिये ।

रजिस्टर्ड) **अमृतधारा** (रजिस्टर्ड

अपनी प्रकार का दुनिया भर में नवीनाविष्कार है, जिस ने एक वार आजमाया सदा यार बनाया, बीसों दुःखों और सैंकड़ों के खर्च से इस की एक शीशी बचा सकती है ।

कीमत २॥) आधी शीशी १) नमूना ॥) है

२०हज़ार प्रशंसापत्र मौजूद हैं ।

सविस्तर वृत्तान्त के वास्ते "अमृत" पुस्तक मुफ्त मंगावें । दो तीन नीचे पढ़िये–

मिसिज़ ऐच, पैटरसन साहिबा अमेरिका से लिखती हैं:–

"अमृतधारा को मैंने कुटुम्ब में सेवन कराया, अन्तःकरण से अनुमोदन करती हूं कि जिन रोगों के वास्ते लिखा है, यह लाभदायक प्रमाणित हुई है" ।

श्री० महात्मा मुंशीरामजी गुरुकुल काङ्गड़ी से लिखते हैं:–

"प्रिय महाशय पं० ठाकुरदत्तजी, नमस्ते !

२९ नवम्बर की रात को मेरे पेट में दर्द हुआ, ३० नवम्बर की सुबह ५ बजे तक होता रहा, तब आप से लेकर 'अमृतधारा' पी, इस से कुछ कुछ दर्द ठहरा, दूसरी वार पीने से सर्वथा दर्द दूर होगया" ।

श्री स्वामी नित्यानन्दजी सरस्वती राजोपदेशक शांतिकुटी शिमला:–

"आप की बनाई अमृतधारा को मैंने और अन्य सज्जनोंने सेवन करके देखा है, सचमुच रामबाणौषधि है, जिन रोगों को आप ने लिखा है, उन में से कुछेक पर सेवन किया तो जैसा लिखा है, वैसा ही पाया, मेरी सम्मति में प्रत्येक मनुष्य के पास अमृतधारा रहनी चाहिए" ।

विज्ञापक– **मैनेजर–अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा सड़क, अमृतधारा डाकखाना, लाहौर ।**

पत्र व तार के वास्ते इतना पता पर्य्याप्त है:– **"अमृतधारा" ("ब्रांच) लाहौर**

नवीन पुस्तकें।

जिन का स्वाध्याय प्रत्येक आर्य पुरुष के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

ईशोपनिषद्-का स्वाध्याय पं० सातवलेकरजी कृत-पं० जी ने अति परिश्रम से इस पुस्तक को रचा है, बड़े २ विद्वानों ने पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की है इस एक पुस्तक के अवलोकन से आप को उपनिषदों और वेदों के सम्बन्ध में बहुतसा ज्ञान हो जावेगा। मूल्य ॥≥)

स्वामी सत्यानन्दजी महाराज रचित सन्ध्या-योग है-जिसका तीसरी एडीशन छप कर तय्यार है सन्ध्या पर यह बड़े मार्के का पुस्तक है मूल्य रिआयती हिन्दी ≈)॥ उर्दू ≥)॥

सन्ध्या-रहस्य-श्रीयुत महाशय चम्पतरायजी बी. ए. कृत सन्ध्या फिलासफी पर यह अमूल्य पुस्तक है, पुस्तक हाल ही में छपी है और लोग बहुत पसन्द कर रहे हैं रिआयती मूल्य ।)

आर्य जन्त्री तथा डायरेक्टरी-इस वर्ष जन्त्री व डायरेक्टरी में बड़े२ गूढ़ विषय और सब आर्यसमाजों और सामाजिक इन्स्टीट्यूशनों के हालात से भरपूर है, हरप्रकार की सामाजिक वाक़फीयत इस में भर दी गई है। मूल्य हिन्दी ।) उर्दू ।) आना।

आर्य-डायरी-(उर्दू हिन्दी दोनों इकट्ठी) सुनहरी जिल्द ।≥) डायरी भी सामाजिक हालातका एक छोटा कोष है, दरिया को कूज़े में बन्द कर दिया गया है। उर्दू हिन्दी जानने वाले दोनों प्रकार के महाशय इस से लाभ उठा सकते हैं।

भजन अमृत आर्यसामाजिक भजनों के सम्बन्ध में आम तौर पर जो शिकायत सुनी जाती है उस को इस पुस्तक में दूर कर दिया गया है। कोई भजन सिद्धान्त के प्रतिकूल या बे तुका दर्ज नहीं किया गया, सब प्रचलित भजन पुस्तकों का यह एक बेहतरीन इन्तिख़ाब है। जो साप्ताहिक अधिवेशनों के लिये विशेष करके तय्यार किया गया है। मूल्य लागत के बराबर रक्खा गया अर्थात् ।)॥ आना

पुष्पाञ्जली-ठाकुर नत्थासिंह, पं० अमीचन्द म० गिरधारीलाल म० चन्द्र कवि और अन्य प्रसिद्ध भजनीकों के अतिरोचक भजनोंका संग्रह तीसरीवार छपकर तय्यार है और हाथोंहाथ बिकरहा है।

मूल्य उर्दू ≥)॥ हिन्दी ।)॥

ऋग्मन्त्र व्याख्या महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद मन्त्रोंका अनुवाद पं०भगवतदत्तजी बी. ए. ने तय्यार किया है वैदिक धर्मियों के लिये यह एक अपूर्व ग्रन्थ है। मूल्य ।–)

आदिम सत्यार्थ-प्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धान्त-स्वामी श्रद्धानन्दजी कृत आर्य समाज में यह एक अद्भुत पुस्तक है। जिस में सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में कुल एतराजों का उत्तर दिया गया है। मूल्य ॥)

सत्यार्थप्रकाश अंग्रेज़ी-डा० चिरंजीव भारद्वाजकृत सम्पूर्ण१४समुल्लास में, मूल्य २)

आर्यसमाज और पं० भीमसेनजी के चन्द चौंका देनेवाले सबूत-मूल्य ।) आना

ऋषि जीवन कथा माला-महर्षि दयानन्द के जीवन सम्बन्धी अति मनोरंजक शिक्षादायक कहानियां उर्दू ॥) हिन्दी ॥≥)

पुस्तक मिलने का पता—

राजपाल मैनेजर आर्य-पुस्तकालय व सरस्वती आश्रम अनारकली, लाहौर।